मुनि लब्धि विजयजी कृत हरिबल मछीनो रास.

जीवदयाफलमाहात्म्यरूप.

ए रासने यथामति शुद्ध करी करुणामय सम्यक्दृष्टि जनोने वांचवाने अर्थे

श्रावक भीमसिंह माणेकें

श्री मोहमयी पत्तन मध्ये

निर्णयसागर नामक मुद्रा यंत्रमां छपावी

प्रसिद्ध करयो छे.

संवत् १९४५ सने १८८९

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

अथ

पंडित लब्धिविजय विरचित श्री
हरिबलमच्छीनो रास प्रारंभः

॥ दोहा ॥

॥प्रथम धराधव जगधणी,प्रथम श्रमण पण एह॥
प्रथम तीर्थंकर जग जयो, प्रथम गुरू पभणेह ॥ १ ॥
विश्वस्थिति कारक प्रथम, कारक विश्व उद्योत ॥ धा
रक अतिशय आदि जिन,तारक भवनिधि पोत॥ २ ॥
लघुवय इच्छा इक्षुनी, पारण दिन पण तेह ॥ मिष्ट
इष्ट जेहने सदा, नाभिनंदन प्रणमेह ॥ ३ ॥ सिद्धव
धूना संगमें, अठक ठक्यो दिन रात॥ हुं तस पदपंक
ज नमुं, नित्य उठी परभात ॥ ४ ॥ हंसासन जे स
रसती, वरसति वचन विलास ॥ कविजन केरा हृद
यमें, करती बुद्धि प्रकाश ॥ ५ ॥ ते हुं प्रणमुं भारती,
वारति जड अंधार ॥ मुझ मन मंदिरमें वसी, करवा
मुझ उपगार ॥ ६ ॥ माता मुझ महोटो करी, देजे व
चन रसाल ॥ रंगरंगीली जनसभा, सांभले थइ उज

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

माल ॥ ७ ॥ जे डुं चाडुं चित्तमें, ते तूं करजे मात ॥ वचननी रचना रस दियो, वाधे तुझ आख्यात ॥ ॥ ८ ॥ गुरु ज्ञाता माता पिता, गुरुथी अधिक न कोय ॥ देवधर्म गुरु उलख्या, बलिहारी गुरु सो य ॥ ए ॥ ते गुरु चरण नमी करी, नवियणने हित कार ॥ रास रचुं हरिबल तणो, पुण्य उपर अधि कार ॥ १० ॥ पुण्यें वंछित पामीयें, पुण्यें लहि नव नीध ॥ पुण्यें महिला संपजे, पुण्यें रूड समृड ॥ ११ जीवदया पाली जिणें, तिण उपराज्युं पुण्य ॥ सुर नर तस सानिध करे, माने ते दिन धन्य ॥ १२ ॥ जीव दयाथकी पामियो, हरिबल मछी राय ॥ तास संबंध सुणतां थकां, सघलां पातक जाय ॥ १३ ॥ रास स रस सुणतां थकां, जे को करशे वात ॥ तेहने तस व छित तणा, सम देउं उउं सात ॥ १४ ॥ जिम मृग नाद लिणो रहे, निसुणे थइ एकरंग ॥ तिम सुणजो नवि यण तुमें, आणी चित्त अनंग ॥ १५ ॥

॥ ढाल पहेली ॥

॥ रसीयानी देशी ॥ लड योजननो रे जंबुद्वीप ए कह्यो, शाश्वत वर्तुलाकार ॥ सोभागी ॥ तेहमें क्षे त्र ए नंद सोहामणुं, कुलगिरि सात कह्या सार ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

सो० ॥ १ ॥ नाव धरीने रे नवि तुमें सांनलो ॥ रसि या देई रे कान ॥ सो० ॥ सुणतां सुणतां रंग रस ऊ पजे, मुखमें राख्यां जिम पान ॥सो० ॥२॥ना०॥ क्षेत्र तिनमें करमी वसे तिहां, असि मशि कृषी रोजगार ॥ सो० ॥ आजीविकायें जीव जीवाडवा, आख्या ए तीन व्यापार ॥सो०॥३॥ना०॥ बीजां क्षेत्र जे जुगलां धर्मनां, नाख्यां अकरमि उदार ॥ सो० ॥ तिहां को व्यापार तीनमें नवि लहे, ले कल्पवृक्षना आहार ॥ सो०॥४॥ना०॥ तेहमें षटयुगलादिक क्षेत्र जे, नरत ने ऐरवत विदेह ॥ सो० ॥ ए नव क्षेत्र जंबुद्वीपमां, शो नित शोने ले एह ॥सो०॥५॥ना०॥ ए नव क्षेत्र सात ले कुलगिरि, तेहनो अतिही विस्तार ॥ सो० ॥ क्षेत्र समास में गुरुमुख सांनली, धाख्यो तास विचार ॥ सो०॥६॥ना०॥पण इहां हरिबल मछी रायनुं,चरित्र सु णो चित्त लाय ॥ सो० ॥ लोक उखाणो जगमां इम कहे, जे परणे ते गवाय ॥ सो० ॥ ७ ॥ ना० ॥ हवे इहां जंबुद्वीपें अति नलुं, नरत क्षेत्र कहाय ॥ सो० ॥ पांचशें छवीश योजन षटकला, धनुषाकारें सोहा य ॥ सो० ॥ ८ ॥ ना० ॥ सहस बत्रीश ते जन पद तेहमां, तेहना खत खंम होय ॥ सो० ॥ तिण

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

वचमें पड्यो वैताढ्य रजतनो, जोयण पचासनो जोय ॥ सो० ॥ ए ॥ ना० ॥ षटखंडमें खंड तिन तिन तेणें कह्या, दक्षिण उत्तर श्रेणि ॥ सो० ॥ सो ल सोल सहस ए जनपदमें रहे, वसती अनार्य नी तेण ॥ सो० ॥ १० ॥ ना० ॥ साढा पचवीश आरय अति भला,केकै अर्ध समेत ॥ सो० ॥ श्रीजि नधर्मनो वास तिहां लहे, सहस बत्रीश मध्य एत ॥ ॥ सो० ॥ ११॥ना० ॥ ते माटे इहां आरय देशमां, कनकपुरी अभिधान ॥ सो० ॥ साव सोनामय सुंदर शोभती, अमरपुरी उपमान ॥ सो० ॥ १२ ॥ ना० ॥ नलिनीगुल्म विमान तणी परें, एकविश भूमि आ वास ॥ सो० ॥ रतन जटितमें गोख विराजता, कर ता तेज प्रकाश ॥ सो० ॥ १३ ॥ ना० ॥ कुंतीआ वण परें हटश्रेणि राजती, भाजती विजयनी पंक्ति ॥ सो० ॥ देश देशांतर विणज करे बहु, वरसे वसु धारा शक्ति ॥ सो० ॥ १४ ॥ ना० ॥ धनवंत धनद भंडारी सारिखा, वसे तिहां नगरीमां लोक ॥ सो०॥ पंच विषयना रसमेंलीणा रहे, भोगी चातुर लोक ॥ ॥ सो० ॥ १५ ॥ ना० ॥ षट दरशनना पोषक जन बहु, पाले निज निज धर्म ॥ सो० ॥ घर घर शत्र

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

कार करे घणा, लेह्वा शिव सुख ह्मे ॥ सो० ॥ १६ ॥
॥ ना० ॥ जिनशासनना देउल दीपतां, बत्रीश थडा
प्रासाद ॥ सो० ॥ चोराशी मंडप अति चोंपशुं, कर
ता स्वरगशुं वाद ॥ सो० ॥ १७ ॥ ना० ॥ दंडधजा
अतिपवनें फरहरे, नाचे माचे मनरंग ॥ सो० ॥ ध
न्य दिवस मुज जिन शिर हुं चढी,पावन करवा मुऊ
अंग ॥ सो० ॥ १८ ॥ ना० ॥ श्रीजिन केरी नगति करे
सदा, नविक जीव अपार ॥ सो० ॥ तीर्थंकर पद ते
उपराजता, रावणनी परें सार ॥ सो० ॥ १९ ॥ ना० ॥
वरण अढार वसे तिण नगरीयें, जाणियें सुर अव
तार ॥ सो० ॥ गढ मढ मंदिर पोलि शोना घणी, नू
रमणी उरहार ॥ पाठांतर ॥ नगर कनकपुरनामें शोन
तुं, स्वर्गपुरी अनुहार ॥ सो० ॥ २० ॥ ना० ॥ नंदनवन
सम परिमल वाटिका, चिहुंदिशि नगरीनी पास ॥
॥ सो० ॥ वापी कूप सरोवर जल नर्यां,खटऋतु फलें
सुखास ॥ सो० ॥ २१ ॥ ना० ॥ काल डुकाल ते को
नवि उलखे, अहोनिश सुखनी बे वात ॥ सो० ॥ ईति
उपड्व सुपनें नवि जाणे, पुह्वीयें प्रगटीए ख्यात
॥ सो० ॥ २२ ॥ ना० ॥ कनकपुरीना ए गुण सां
नली, लाजी लंका तिवार ॥ सो० ॥ जलनिधिमां

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

जइ बूडी बापडी, जाणे सकल संसार ॥ सो० ॥ ॥ २३ ॥ ना० ॥ स्वर्गपुरी पण नन्नमां जइ रही, नि सुणी तेहना अवाज ॥ सो० ॥ एह नगरी कनक पुरी तणी, दिन दिन चढती छे लाज ॥ सो० ॥ २४ ॥ ॥ ना० ॥ कनक पुरीनां रे वयण वखाणतां, पन्नणी पहेली ए ढाल ॥ सो० ॥ लब्धिविजय कहे नवियण सांभलो, आगल वात रसाल ॥ सो० ॥ २५ ॥ ना० ॥

॥ दोहा ॥

॥ तिण नगरीयें राजवी, वसंतसेन नूपाल ॥ न्याथि निपुण वसुदेव ज्युं, करुणावंत कृपाल ॥ १ ॥ वाक्य वज्रल हरिचंद जिस्यो, भुजबलि भीमसमान ॥ अरिय ण सघला वश करी, ऊताख्यां तस मान ॥ २ ॥ पर जाने पाले सदा, करे हथेली छांह ॥ दाण जगात दिसे नही, करदंम बंधन क्यांह ॥ ३ ॥ करदंम मुनि देवल शिरें, बंधन स्त्रीशिरकेश ॥ वसंतसेन नृप इ णि परें, पाले राज्य विशेष ॥ ४ ॥ तस पटराणी पद मिनी, रूपें रंभ समान ॥ शील सुरंगी शुभमती, व संतसेना अभिधान ॥ ५ ॥ मालती मधुकरनी परें, प्रीतडी जिम जल मीन ॥ तिम नृपराणी एकमना, रंगें रहे लय लीन ॥ ६ ॥ दोगुंदक सुरनी परें, पंचविषय

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

सुख भोग ॥ नृपराणी विलसे सदा, पूर्वपुण्य संयोग॥ ७॥

॥ ढाल बीजी ॥

॥ रहो रहो रहो रहो वाल्हा ॥जगजीवन ॥ ए देशी ॥

विलसे भोग ते राजवी, वसंतसेना साथ लाल रे॥ जन्म सफल लेखे गणे, जाणे पाम्यो आथ लाल रे ॥ १ ॥ सुगुण सनेहा सांभलो, आगल वात रसाल ला० ॥ जीवदया पाली जिणें, ते लह्यो मंगल माल ला०॥ ॥ २ ॥सु०॥ राज रुद्धि रमणी घणी, पूरवपुण्यपसाय ला० ॥ सुरपतिनी परें राजवी, पुहवीयें ते गवराय ला० ॥ ३ ॥ सु० ॥ पण तस पुत्र ते को नही, तेणें चिंतातुर होय ला० ॥ आय उपाय करे घणा, टेकी न लागे कोय ला० ॥४॥सु०॥ देव दाणव लख जो मले, तो पण तिणथी न थाय ला० ॥ कर्म आगल चाले नही, जो करे लक्ष उपाय ला० ॥ ५ ॥ सु० ॥ माहा देव महोटो महीयलें, लोकमांहे परसिद्ध ला० ॥ पार्वती सरखी नारीने, करमें पुत्र न दीध ला० ॥ ॥ ६ ॥ सु० ॥ तो बीजानुं शुं गजुं, ए सवि कर्मनां काम ला० ॥ कर्म सखाई जो हुवे, मनवंछित फले ताम ला० ॥ ७ ॥ सु० ॥ एकनें शुन कर्मे करी, पुत्र तणे घरे पुत्र ला० ॥ नाम करे चिहुं खूंटमां,

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

राखे घरनां सूत्र ला० ॥ ८ ॥ सु० ॥ एकने पुत्र विना सही, सूनां तस आगार ला० ॥ प्रेत मंदिर सम जाणीयें, पुत्र विना घरबार ला०॥ ए ॥सु०॥ पुत्र विना गति को नही, पुत्र विना नही स्वर्ग ला०॥ लौकिक मतना शास्त्रमें, नाषे ऋषिजन वर्ग ला० ॥ १०॥सु०॥

उक्तंच ॥ गाथा ॥ गेहं तंपि मसाणे, जब्ब न दीसंति धूलि धूसरछाया ॥ उवंत पडंत रडंत, दो तिनि झिंना न दीसंति ॥ १ ॥

॥ श्लोक ॥ अपुत्रस्य गतिर्नास्ति, स्वर्गोनैवच नैवच॥ तस्मात्पुत्रमुखं दृष्ट्वा, पश्चात् धर्मं समाचरेत् ॥

॥ पूर्व ढाल ॥

॥अहोनिश इम चिंता करे, वसंतसेन नूपाल ला०॥ तिण अवसर एक ज्योतिषी, आवी मल्यो ततकालला० ॥ ११ ॥ सु० ॥ आगम नीगमनी कहे, शास्त्र तणे अनुसार ला० ॥ एहवो पंमित देखीने, नरपति हरख्यो अपार ला० ॥ १२ ॥ उठीने प्रणीपत करे, नाव धरी मनमांहि ला० ॥ मुझ सहित फल फूलशुं, पुस्तक पूजे उछाहि ला० ॥ १३ ॥ सु० ॥ बे कर जोडी वीनवे, कीजें करुणा कृपाल ला० ॥ प्रश्न जुवो प्रनु माहरे, होशे बाल गोपाल ला०॥ १४ ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

सु० ॥ तव पंडित तक जोइने, वेला साधी सार ला० ॥ १५ ॥ सु० ॥ लगनबलें कहे रायने, सांभलजो सुविचार ला० ॥ पुत्र तो तुझ करमें नही, पूरव नावी जोग ला० ॥ पण एक पुत्री छे सही, पूरव पुण्य संजोग ला० ॥ १६ ॥सु० ॥ रूपें रंनासारिखी,नंदिनी तोहोशे तुझ ला० ॥ जाणीयें बीजी शारदा, प्रगट होइते गुझ ला०॥१७॥सु०॥एम कहीने विप्र ते गयो, लेइ वंडित दान ला०॥ नृप मनमें हरख्यो घणुं, जिम रवि कज इकतान ला० ॥ १८ ॥ सु० ॥ विप्र वचन ते योगथी, राणी गर्न धरेय ला० ॥ वसंत ऋतु फल फूलशुं,शोजित सुपना लहेय ला०॥सु०॥१९॥जागी तव नृपने कहे, सुपना तणो अधिकार ला० ॥ सांजली नृप हरख्यो घणुं, त्रूठा श्रीकिरतार ला० ॥ २० ॥ ॥ सु० ॥ हरखित थइ राणी हवे, करे ते गर्नजतन ला०॥ अनुक्रमें मास पूरा थई,जन्मी पुत्री रतन्न ला० ॥ २१ सु०॥ हुवां हरख वधामणां,घर घर मंगलमाल ला० ॥ लब्धिजय रंगें करी, पनणी बीजी ढाल ला०॥

॥ दोहा ॥

॥ जन्मोछव अति हे करे, वसंतसेन नूपाल ॥ मणि माणक मोती घणा, वरसे ज्युं वरसाल ॥ १ ॥ कुंकुम

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

केशर गटणां, छीज करेह विशाल॥सोहव सवि टोलें म
ली, गावे गीत रसाल ॥ २ ॥ घर घर गूडी उबले, घर
घर झोणी माल ॥ घर घर तोरण बांधीयां, दीसे झा
क झमाल ॥ ३ ॥ नृत्य करे नटुवा नला, खेले नवनव
खेल ॥ बंदीजन मूक्या परा, उपजावे रंगरेल ॥ ४ ॥
इम उछव करतां थकां, वोल्या दिन ते बार॥नगरीजन
सहु पोषीया, देई मिष्ट आहार ॥ ५ ॥ निज कुटुंब
मेली करि, पुत्री नाम ठवीज ॥ सुपन तणा अनु
सारथी, वसंतसिरी ते कहीज ॥ ६ ॥ कुमरी ते दिन
दिन वधे, ज्युं वधे इन्दुकंद ॥ चंद्रकलाजिम बीजथी, वाधे
तेज अखंम ॥ ७ ॥ इम करतां वधती थइ, पंचवरसनी
बाल ॥ शुनलग्न लेई करी, लइ थापी नीशाल ॥ ८ ॥
खटदरशननां शास्त्र जे, तेहमां थई प्रवीण॥रंग राग ना
टक कला, यंत्रवाजित्र मिलीन ॥ ए ॥ षट नाषा लह
ती मुखें, चोशठ कलानिधान ॥ अनिनव जाणे शारदा,
प्रगट थइ सावधान ॥ १० ॥ इम करतां तें अनुक्रमें,
वरस थयां जब शोल ॥ नवयौवन नारी तणा, उलट्या
काम कलोल ॥ ११ ॥ मात पिता हरखे घणुं, पुत्री देखी
॥ रतन्ना वरनी चिंता चित धरे, करतां कोटियतन्न ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ ढाल त्रीजी ॥

॥सुमति सदा दिलमां धरो॥ए देशी॥ तिण नगरीमें इक रहे,धीवर हरिबल नाम॥सनेही॥जलचर जीव हणे सदा,मेले दुष्कृत ताम ॥सनेही॥ १॥ हवे सुणजो तेहनी कथा,मूकी सघलो प्रमाद ॥ स० ॥ साकर द्राख तणी परें, विण पइसे व्यो स्वाद ॥ स० ॥२॥ह०॥ धीवर ते जाणे नही, जीवदयानो धर्म ॥ स० ॥ उद्यम उदर ने कारणें, करे नित्य करणीकुकर्म ॥स०॥३ ॥ ह० ॥ धिग्धिग् दुरजन पेटने,पेट करावे वेठ ॥स०॥ उत्तम म ध्यम प्राणीने, पेट ते हरावे नेट ॥ स० ॥४॥ ह० ॥ पेटने कारणें जीवडा, जावे देश प्रदेश ॥ स० ॥ जावे जलनिधिमारगें, पेटने हेतविशेष ॥ स०॥५॥ह०॥अ गम्यांनी करणी करे, चोरी हेरी प्रत्यक्ष ॥स० ॥पेटना अर्थी जे अडे, न गणे नक्ष अनक्ष ॥स०॥६ ॥ ह० घात कला खेले घणुं, नटुआ नटवी जोर ॥ स० ॥ मावीत्र वेचे ढोरुने, पेटने अर्थे घोर ॥ स०॥७॥ह०॥ जिनवरआदि मुनिवरा, नावें जे लीये दिक्ष ॥ स० ॥ ते पण पेटने कारणें, घर घर मागे भीख ॥ स० ॥ ॥ ए ॥ ह० ॥ पांमव पांचे रडवड्या, पेटने कारणें धीर ॥ स० ॥ हरिचंद सरिखा राजवी, कुंब घरे

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

वह्यां नीर ॥ स० ॥ ए ॥ ह० ॥ तिम ए उदरने कार णें, हरिबल मछी जेह ॥ स० ॥ धीवरकुल जनम ल ही,जीव हणे छे तेह ॥स०॥ १०॥ह०॥ हलुआकरमी छे घणुं, पण ते लह्युं कुल नीच ॥स०॥ कुलाक सब आ वी पड्यो, मेले ते कर्मना कीच ॥स०॥११ ॥ ह० ॥ एक दिन हरिबल मछीयें, जलमें नाखी जाल ॥स०॥ ते जलकंठें मुनिवरु, बेठो छे सुकृतमाल ॥ स० ॥ ॥ १२ ॥ ह० ॥ हवे जलमें जाल नाखी तदा, मुनि बोल्यो ततकाल ॥ स० ॥ धीवरने प्रतिबोधवा, दे उ पदेश रसाल ॥ स० ॥ १३॥ह०॥ रे प्राणी ए तुं शुं क रे, विण अपराधें कर्म ॥स०॥ छे महोटो संसारमां, जी वदयानो धर्म ॥स०॥१४॥ह०॥ जीवदया पाली जिणें, लहे कुल उत्तम सार ॥ स० ॥ दुर्गति पडतां जी वने, धर्म निश्चें आधार ॥ स० ॥ १५ ॥ ह० ॥ पारेवुं शरणें राखवा, काप्युं ते निज अंग ॥स०॥ जो तुं मेघरथ राजवी, दो पदवी लही रंग ॥ स० ॥१६॥ ह० ॥ शिवादेविनंदन नेमजी, तजि निज राजुल नार ॥स०॥१७॥ह०॥ पशुवाडो छोडावियो,आणीमन उपगार ॥स०॥ जीवदया जे पाले नही,पामे ते दुःख अपार॥स०॥१८॥ह०॥सुनूम ब्रह्मदत्त चक्री दो,पडीया

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

नरक मझार ॥ स० ॥ १९ ॥ ह० ॥ माता पितादिक बंधवा, पामे वियोग ते मंद ॥ स० ॥ दालिद्र दोहग नवि टले, मले न वल्लभवृंद ॥ स० ॥ २० ॥ ह० ॥ हेम दिये को दिन प्रतें, देवे को दान सुपात्र॥स०॥ तेहथी दश गणो लाभ ले, जीवजतन करे गात्र ॥ स० ॥ २१ ॥ ह० ॥ इम उपदेश ते सांभली, बोले मछी तिवार ॥ स० ॥ शुं करीयें अमें साधुजी,ले अम कुल आचार ॥स० ॥ २२ ॥ ह० ॥ धीवर कुलें आ वी पड्या, क्यां रहे गुरुनुं ज्ञान ॥ स० ॥ आजी विका ए पेटनी,दीधी करमें निदान ॥स०॥२३॥ह०॥ ॥ पण गुरुजी तुम वचनथी, आजथी में पण लीध ॥ स० ॥ पहेली जालमां जीव जे, तेहने में जीवित दीध ॥ स० ॥ २४ ॥ ह० ॥ इणि परें अभि ग्रह आदरी, हरिबल वलियो ताम ॥स०॥ मुनि पण ईर्य्या शोधता, पहोता बीजे ठाम ॥ स० ॥२५॥ह०॥ हलुआ करमी जीव जे, तरत लहे उपदेश ॥ स०॥ जारे करमी जीवडा,माने नही लवलेश ॥ स० ॥ २६॥ ह० ॥ पापीने प्रतिबोधतां, पत पोतानुं जाय ॥ स० ॥ टपलो सराणे चडावीयें, आरीसो नवि थाय॥स० ॥ २७ ॥ ह० ॥ हरिबलनी परें प्राणीया, गुरुमुखें

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

होवे जेह ॥ स० ॥ गुरुनां वचन हृदय धरे, मनवं छित लहे तेह ॥ स० ॥ २८ ॥ ह० ॥ लब्धिविजय रंगें करी, नाखी ए त्रीजी ढाल ॥ स० ॥ हरिबल जीवदयाथकी, लेहशे मंगलमाल ॥ स० ॥ २९ ॥

॥ दोहा ॥

॥ हरिबल अनिग्रह लेइने, पाछो वलियो जाम ॥ तिण अवसरें सुर प्रगटियो, सुस्थित जलनिधि स्वाम ॥ १ ॥ अवधी ज्ञानी देवता, रूप करे ततकाल ॥ धीवरनुं मन खोभवा, मछ हुवो मुछाल ॥ १ ॥ धीव र ते जलमें जइ, लांबी नाखी जाल ॥ आव नरा णो जालमां, लांबो मछ पुछाल ॥ २ ॥ तव धीवर ते मछने, मूके करुणावंत ॥ गुरुनुं वचन हृदे धरी, पा ले ते उलसंत ॥ ४ ॥ वली बीजे थानक जइ, उंमा ऽहमां जाल ॥ नाखी तव फरि मछ ते, आव्यो जा ल मछराल ॥ ५ ॥ ते पण वलि मछ मूकीयो, नीय म निज संभार ॥ नाखी धीवर जलधिमां, जाल ते त्रीजी वार ॥ ६ ॥ वलि फरीने मछ आवियो, जाल मां त्रीजी वार ॥ ते पण धीवर मूकीयो, आणी म न उपगार ॥ ७ ॥ तव धीवर कहे फरि फरि, आवे ए जलमछ ॥ तो सहिनाणी हुं करुं, जिम उलखाये

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

स्वछ ॥ ८ ॥ हरिबल चित्त इम चिंतवी, कर ग्रह्यो जलजात ॥ कोटें उलखवा सही, कोडी बांधी सात ॥

॥ ढाल चोथी ॥

॥ इमर आंबा आंबली रे ॥ए देशी॥ हरिबल हवे आघो गयो रे, उंडुं छे जल ज्यांह ॥ उरजर उदरने कारणे रे, जाल नाखी जइ त्यांह ॥ १ ॥ सूरिजन सांजलजो अवदात ॥ एतो रंग रसीली वात ॥ सू० ॥ फरी पाछो ते जालमां रे, आव्यो चोथी वार ॥ कोटें कोडी देखी करी,मूक्यो मछ विचार ॥२ ॥ सूरि० ॥ पांचमी छठी सातमी रे, फरि फरि नाखे जाल ॥ तेम तेम ते आवी रहे रे,जालमां मछ मुगाल ॥ ३ ॥ सू० ॥ तिम तिम ते मछ उलखी रे, मूकी ये ततकाल ॥ हरिबल व्रत महेल्युं नही रे, गुरु उपदेश रसाल ॥ सू० ॥ ४॥इम करतां दिन निर्गम्यो रे, मेहेनत करतां तेह ॥ तोही पण क्षोन्यो नही रें,मछी हरिबल जेह ॥ ॥ ५ ॥ सू० ॥ मछीनी परीक्षा लही रे, प्रगट थयो सुरराज ॥ सुर कहे हरिबल माग तुं रे, हुं तूठो तुक आज ॥ ६ ॥ सू० ॥ सुर वाणी ते सांजली रे, हरिबल बोल्यो तिवार ॥ दालिद्र दुःख दूरें करी रे, समस्या करजो सार ॥ ७ ॥ सू० ॥ सांजलि धीवर सुर

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

कहे रे, आणी मन उल्लास ॥ संजारिश मुज जे घ
डी रे, ते घडी हुं तुज पास ॥७॥ सू० ॥ एम वचन
देई करी रे, ते सुर गयो निज थान ॥ मल्ली पण निज
मंदिरें रे, वलियो थइ साव धान ॥९॥सू०॥ धीवर म
नमें हरखियो रे, धन धन गुरुनुं वचन्न ॥ फलि
यो अजिग्रह माहरे रे, तूठो सुर दिन धन्य ॥ १० ॥
सू० ॥ सागर देव पसायथी रे, हुं थयो महोटो सनाथ
॥ आजथी जीव हणुं नही रे,जो ग्रही महोटी बाथ
॥ ११ ॥ सू० ॥ इम करतां संध्या थई रे, आव्यो न
यर नजीक ॥ पण निज मंदिर नारीनी रे, मनमें आ
णी बीक ॥ १२ ॥ सू० ॥ पेट जराइ जडी नही रे,
जांमशे रांम कुहाड ॥ जाइश जो खाली घरे रे, बेस
शे लेई राड ॥ १३ ॥ सू० ॥ काली नागणनी परें
रे, रोषें जरी ठे चंम ॥ ठोकरडांने मारे घणुं रे, बोले
ज्युं खोखर जंम ॥१४॥ सू० ॥ मुखमांथी जोंठा पडे
रे, कोइ बोलावे बोल ॥ वलगे वाघणनी परें रे, राखे
नहि तस तोल ॥ १५ ॥ सू० ॥ दीवालीनो परोडी
यो रे, दीसंती जाणे अलछ ॥ आंगण आवे को मा
नवी रे, देखी जाये गछ ॥ १६॥ सू० ॥ कूडा बोली
कर्कशा रे,दे वली अठतां आल ॥ गुण अवगुण जा

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

ए नहीं रे, परिणामें विकराल ॥ १७ ॥ सू० ॥ उ तरे जे वर्ष सातनी रे, जेह पनोती कहाय ॥ पण लागि पनोती जन्मनी रे, ते किम उतरी जाय ॥१८ ॥ सू० ॥ जाणी बंबुल कोयला रे, एहवुं रूप नीहा ल ॥ खाधानी संख्या नही रे, जाणीयें पेटमें काल ॥ १ए ॥ सू० ॥ धीवर कहे मुऊ नारीनां रे, केतां क रुं दुं वखाण ॥ पूर्ण पापना जोगथी रे, मली ए कर्म प्रमाण ॥ २० ॥ सू० ॥ हरिबल चितशुं चिंतवे रे, न जड्यो जलचर जीव ॥ घरे जावुं तो बोकडी रे, रूठी करशे रीव ॥ २१ ॥ सू० ॥ ते माटे वनमें रही रे, रजनी लेउं विशराम ॥ दिन उगे घर जाइशुं रे, जडशे जीविक ताम ॥ २२ ॥ सू० ॥ इम जाणी ते वनमें रे, हरिबल रहियो ताम ॥ कालीकाने देवलें रे, लीधो तिहां विश्राम ॥ २३ ॥ सू० ॥ धीवर सू तो चिंतवे रे, धन धन जीवदया धर्म ॥ एक में जीव उगारीयो रे, तो वाधी मुऊ शर्म ॥ २४ ॥ सू० ॥ तो में निश्चें आजथी रे, हणवो नही कदि जीव ॥ जल निधिनो धणी देवता रे, फलशे मुऊ सदीव ॥ २५ ॥ सू० ॥ परतख देखी पारखुं रे, धीवर हरखें पइठ ॥ जीवदया धर्म उपरें रे, बेठो रंग मजीठ ॥ ॥ २६ ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

सू० ॥ रजनी मध्य गई तिहां रे, हरिबल सूतो ज्यां ह ॥ तिण अवसरें जे नीपजे रे, ते सुणजो उछाह ॥ सू० ॥ २७ ॥ चोथी ढाल पूरी थई रे, प्रगटी पुण्यनी वेल ॥ लब्धि कहे गुरु देवथी रे, नाखीयें दुःखने ठेल ॥ २८ ॥ सू० ॥

॥ दोहा ॥

॥ हवि तिण नगरीमां वसे, बीजो हरिबल नाम ॥ वडवखती सुखीयो सदा, व्यवहारी अभिराम ॥ १ ॥ पंडित गुणित सघली कला, शीख्यो छे सावधान ॥ रूपें रतिपति सारिखो, उंपे रूप निधान ॥ २ ॥ चतुराइ तो चकोर ज्युं, कंठें कोकिल कंठ ॥ जोगी केत की भृंग ज्युं, वाको वंस निगंठ ॥ ३ ॥ इक दिन चहुटे संचर्यो, लेइं निज परिवार ॥ नजरें हरिबल निरखियो, कुमरीयें गोख मझार ॥ ४ ॥ वसंतसिरी नृपनी धुआ, उलखी हरिबल तेह ॥ बिहुंनी दृष्टि मिली तिहां, वाध्यो नवलो नेह ॥ ५ ॥ कुमरीनुं मन वेधियुं, देखी हरिबल रूप ॥ कामातुर अतिही थई, वर वानी थइ चूंप ॥ ६ ॥ राजभुवनने मारगें, हरिबल चाल्यो जाय ॥ गोखतलें आव्यो जिसे, खिण एक तिहां विलमाय ॥ ७ ॥ गोखेंथी पत्री लखी, पडती

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

मेहली तेह ॥ हरिबल वांची समजियो, वश्य तुं मुज ससनेह ॥ ८ ॥ ऊंची दृष्टि जोइने, करी समस्या सार ॥ वाचा देइ आवियो, हरिबल निज आगार ॥ए॥ कुमरीयें पत्री जे लखी, ते सुणजो अधिकार ॥ राम नुं सुहणुं जरत परि, फलशे ते श्रीकार ॥ १० ॥

॥ ढाल पांचमी ॥

॥ निंदडी वेरण हुइ रही ॥ ए देशी ॥ हांजी काली चउदशने दिने, कालिकानुं हो देवल ळे ज्यांह के ॥ अखुट खजानो लेइने, मध्यरात्रें हो हुं आवुं बुं त्यांह के ॥ १ ॥ कुमरीयें पत्रीयें लखी, हरि बलने हो तिहां कीधो संकेत के ॥ शीघ्रगति तुमें आवजो, वरवाने हो घणुं आणी हेत के ॥ कु० ॥ २ ॥ व्यवहारी हरख्यो घणुं, कुमरीनुं हो देखीने चित्त के ॥ एतो साचें आवशे, निज घरनुं हो लेईने वित्त के ॥ कु० ॥ ॥३॥ पण ए नृपनी नंदिनी, मुजथी केम हो निरवाहो थाय के ॥ किहां शशली किहां सिंहनी, किहां हंसिणी हो किहां बगलुं कहाय के ॥ कु० ॥ ४॥ किहां अलसी किहां नागणी, किहां हाथणी हो किहां अज बलवंत के ॥ किहां कुमरीने हुं कीहां, किहां सरशव हो किहां मेरु महंत के ॥ कु० ॥ ५ ॥ जाति गरीब वणी

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

क तणी, मर राखे हो सघले संसार के ॥ तो किम कुं वरी हुं वरुं, उठी जावे हो जेह ले व्यवहार के ॥कुं०॥ ॥ ६ ॥ जो नृप जाणे वातडी, घडि एकमें हो नाखे तस वेर के ॥ सबल कुटुंब जे पलकमें, लुसी मूके हो तेहमें नही फेर के ॥ कुं० ॥ ७ ॥ तो किम वात ए हुं करुं, कुल लाजे हो निज तातनुं जेह के ॥ मुझ घ रमें ले पदमणी, किम देहुं हो तेहने हुं लेह के ॥ ८॥ कुं० ॥ कडुवां फल ले एहनां, परनारी हो साथें धरे राग के ॥ पग पग दोष लहे घणो, नवि पामे हो कि हां बेठानो लाग के ॥ ए ॥ कुं० ॥ किंपाकनां फल सारिखां, देखंतां हो घणुं फूटडां जोर के ॥ पण ते फल चाख्याथकी, जीव पामे हो मरणांत कठोर के ॥ १० ॥ कुं० ॥ जगमें चाले वातडी, करे हासी हो सहु मलीने लोक के ॥ जिन वचनें पण जाणीयें, दुर्गतिनां हो फल पामे रोक के ॥ ११ ॥ कुं० ॥ राव ण मुंझ तणी परें,शीश रडवडे हो नूमितलें जेह के ॥ परनारीना संगथी, बीजानी हो गति निपजे एह के ॥ १२ ॥ कुं० ॥ इम जाणी मन वालियुं, व्यवहारी हो निज कुल संनाल के ॥ तिहां जावुं नही माहरें, जिहां कीधो हो संकेत विशाल के ॥ १३ ॥कुं० ॥ हवे

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

कुमरी विरहें करि, थाये व्याकुल हो जावाने तेह के ॥ केइ घडी ले एहवी, जइ देखुं हो हरिबल ससनेहके ॥ १४ ॥ कुं० ॥ जेहने लागे प्रीतडी, जाणे तेहने हो लाग्युं ले प्रेत के ॥ शूनी फरे तस देहडी, विरहानल हो चूसी बल लेत के ॥ १५ ॥ कुं० ॥ मन लाग्युं जस उपरें, तस आगल हो बीजो न सुहाय के ॥ खिण घरमें खिण आंगणे, रहि न शके हो जाणे लागी बलाय के ॥ १६ ॥ कुं० ॥ बुद्धि अकल जाये परी, नवि उकले हो निज घरनुं काम के ॥ फुरि फुरि पंज र कश करे, कामी मन हो लुब्ध्युं जे ठाम के ॥ १७ ॥ कुं० ॥ मात पितादिक नवि गणे, नवि माने हो निजकुल मरजाद के ॥ गुरु गोत्रज पण नवि गणे, विरहें करि हो मांमे उनमाद के ॥ १८ ॥ कुं० ॥ कु मरी कामातुर थई, हरिबलनो हो विरहो न खमाय के ॥ अन्न उदक दो नवि रुचे, वरवाने हो घणुं आ कुली थाय के ॥ १९ ॥ कु० ॥ मणि माणिक हीरा घ णा, हेम रजत नें हो मुगलाफल लेय के ॥ थरमां पा मरी सावटु, जरतारी हो जलां वस्त्र जरेय के ॥ २० ॥ कुं० ॥ सामग्री सघली करी, जावाने हो जिहां की धो संकेत के ॥ उंट सात जरिया जला, अश्व रतन हो

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

कुमरी दो लेत के ॥ २१॥ कुं० ॥ रजनी मध्य समे वही, दास दासी हो वलि सार्थे लीध के॥ दरवाजे दरवानने, द्रव्य आपी हो घणुं राजी कीध के ॥ २२॥ कु० ॥ पोल उघाडी पोलीये, वहि कुमरी हो जिहां संकेत कीध के ॥ कालीकाने देउलें, तिहां पहोती हो मनवंछित सिद्ध के ॥ २३ ॥ कु० ॥ धीवर सूतो ले जिहां, तिहां कुमरी हो आवी उजमाल के॥ लब्धि विजय रंगें करि, ढाल पांचमी हो कही रंग रसाल के ॥ कु० ॥ २४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ कुमरी कहे जागो प्रभु, मूको निद्रा दूर ॥ आपण वहीयें बे जणां, आगल पंथ सनूर ॥ १ ॥ अखुट खजानो लेइने,आवी बुं नरपूर ॥ करहा सात द्रव्यें न खा, एह लें तूम हजूर ॥ २ ॥ अश्व रत्न दो लेइने, आवी बुं तुम कछ ॥ वंध तजी उतावला, आवी च डो थइ सछ.॥३॥ हरिबल वणीक ते जाणीने, विन वे कुमरी ताम ॥ धीवर सूतो जागीयो, केहने कहे अ अभिराम ॥४॥ हरिलंकी अप्सर समी, देखी कुमरी रूप ॥ धीवर मन विव्हल थयुं, ए शुं दीसे सरूप ॥ ॥ ५ ॥ चमत्कार चित्तमें लही, धीवर चिंते ताम ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

कोइक वात विचार ठे, मौन कस्यानुं काम ॥ ६ ॥ अणबोल्यो ऊठयो तुरत, करी असवारी सार ॥ कुम री मन हरखित थई, चाल्यां पंथ विचार ॥ ७ ॥ पा णीपंथा घोडला, तेहवुं करहा जोर ॥ पंथें चाल्या चडवडी, पहोतां जे वन घोर ॥ ८ ॥ वसंतसिरी कु मरी हवे, टाली सघली बीक ॥ हरिबलने बोलाववा, आवी पास नजीक ॥ ९ ॥

॥ ढाल ठही ॥

॥ पारकर देशथी आयो ॥ ए देशी ॥ हवे हरिबल प्रभुजी बोलो, मनवल्लभ मनडुं खोलो रे ॥ माहरा जीवनजी तुमें बोलो ॥ हवे कोई डर मत आणो, प्रभु मेंल्यो तुम अम टाणो रे ॥ मा० ॥ १ ॥ मुझ सरखी तुम नारी, विण पैसे मलि सुख कारी रे ॥ मा० ॥ कनक रयण ठे साथें, तुमें वावरो सुखें निज हाथें रे ॥ मा० ॥ २ ॥ पेहरो नव नवा वाघा, जरतारी बांधो पाघा रे ॥ मा० ॥ खटरस रसवती सारी, करी पीरसुं मोहनगारी रे ॥ मा० ॥ ३ ॥ तुम संगें रहुं क र जोडी, करुं टेहल ते आलस ठोडी रे ॥मा०॥ हुं हुं तुम प्रेम विलुब्धी, आवी हुं हुं तुम सूधी रे ॥ मा० ॥ ॥ ४ ॥ हवे तुम वयण न लोपुं, जीवित लगें वरमा

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

ला रोपुं रे ॥ मा० ॥ करहा जे साते उप्या, लेई तुम गुं जे सोंप्या रे ॥ मा० ॥ ५ ॥ तन मन धन तुम केरुं, करि लेखवजो ए जलेरुं रे ॥ मा० ॥ एक तुम मेहेरनी आशा, अमें राखुं प्रेमना पाशा रे ॥ मा० ॥६॥ इणि परें कुमरी बोले, पण हरिबल वाचा न खोले रे ॥ मा० ॥ तव तिहां कुमरी विमासे, शुं ले ए वणिक न जासे रे ॥ मा० ॥ ७ ॥ इम करतां थयुं ते वाहाणुं ॥ दीतुं मुख श्याम ज्युं जाणुं रे ॥मा० ॥ दिन उगमतें ते दीठो, दीन वस्त्र विहूणो धीठो रे ॥ मा०॥ ॥ ८ ॥ जाणे आलोकनो पिंम, जाणे पाड्यो देवें दंम रे ॥ मा०॥ देही ले गलीयल वान, वलि जाणे को किल मान रे ॥ मा० ॥ ए ॥ जाती धीवर जाणी, तव कुमरी मन उलजाणी रे ॥ मा० ॥ सुंदरी थई ते निराशी, चिंते थइ हाणी ने हासी रे ॥ मा० ॥१०॥ सहकारज केरे जरूसे, फल चाख्यां आक आलूसे रे ॥ मा० ॥ जाण्युं सुरतरु पामी, पण निमड्यो कनक निकामी रे ॥ ११ ॥ मा०॥ प्रभुयें मेरुयें चढावी, पण दैवें नूयें अथडावी रे ॥ मा० ॥ कुल मरजादा मूकी, पण पानीयें मति चूकी रे ॥ मा० ॥ १२ ॥ करस ण टोतां सोई, गोला गोफण पण खोई रे ॥ मा० ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

तिम ए उखाणो मेव्यो, निज मंदिर कुल अवहेव्यो रे ॥ मा० ॥ १३ ॥ जाण्युं जोबनवेशें, लेशुं ते ला हो विशेषें रे ॥ मा० ॥ उलव्यो मदन एराकी, तव वणिकें मूकी न बाकी रे ॥ मा० ॥ १४ ॥ विटल वणिकें विमासी, दीधी ज्युं कूपके फांसी रे ॥ मा०॥ वणिकनो जे करे संग, तस जनम ते खोटो ढंग रे ॥ मा० ॥ १५ ॥ जाण्युं जे वणिकने वरशुं, निज जनम ते सफलो करशुं रे ॥ मा० ॥ पापीयें वाचा न पाली, विण गुनहे मूकी बाली रे ॥ मा० ॥ १६ ॥ जननी तात मूकावी, मूकी ते विरह जगावी रे ॥ ॥ मा० ॥ ज्ञो तुऊ खोटा दिलासा, तो शाने दीजें आशा रे ॥ मा० ॥ १७ ॥ फिट रे देव तुं हेव्यो, धी वरने किहां तें मेव्यो रे ॥ मा० ॥ तें किहां रची ए गोडो, कस्यो अण मलतो ए जोडो रे ॥ मा० ॥ १८ ॥ दीसे ए धोबड धिंग, वलि जाणे ऊबके ऊोटिंग रे ॥ मा० ॥ जगती जोतां जडियो, मुऊ करमें ए वर घडियो रे ॥ मा० ॥ १ए ॥ शी विधें मुऊ मन बेसे, माहारुं जोबन एलें वहेशे रे ॥ मा० ॥ इम सुंदरी विल पंती, लही मूर्छा पडी ते धरती रे ॥ मा० ॥ २० ॥ तव तिहां धीवर ऊरे ॥ मनशुं ते पुण्य अधूरे रे ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ मा० ॥ में ते ए शुं कीधुं, निज मंदिर मूकी दीधुं रे ॥ मा० ॥ २१ ॥ लवलेश पोंक न खाधो, निजकर्मै हाथे दाधो रे ॥ मा० ॥ जे कहे लोक उखाणो, ते में तो नजरें पिछाण्यो रे ॥ मा० ॥२२॥ फोगट सुंदरी साथ, आवी खोई घरनी आथ रे ॥ मा० ॥ ए दुःख के हने दाखुं, एहवो नही कोइ जाखुं रे ॥ मा० ॥२३ ॥ सुख दुःख जे लख्यां पाने, ते जोगवे जीव एक ताने रे ॥ मा० ॥ धीवर मनमें विमासे, रोइ राज न पामे उल्लासें रे ॥ मा० ॥ २४ ॥ एतो सुंदरी मोहोटी, किम रांक घरे रहे त्रोटी रे ॥ मा० ॥ रूपें रंजसमान, किम सुंदरी दे मुझ मान रे ॥ मा० ॥ २५ ॥ धिग मुझ जीवित एह,धीवर पणुं लह्युं में जेह रे ॥मा०॥मा हरुं कुरूप देखी, कुमरीयें नाख्यो उवेखी रे ॥ मा० ॥ ॥२६ ॥ धिग धिग जाति अकामी, मुझ देखी मूर्छा पामी रे ॥ मा० ॥ धीवर दुःखीयो अपार, वहे नयणें आंसु धार रे ॥ मा० ॥ २७ ॥ किहां गयो सागर देव, मुझ काम पडे इहां हेव रे ॥ मा० ॥ सुंदरी जे मूरछाणी, करे जीवित ते सुख खाणी रे ॥ मा० ॥ ॥ २८ ॥ जलनिधि सुर तव आवे, धीवरने हर्ष उपा

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

वे रे ॥ मा० ॥ लब्धि कहे ढाल छट्ठी, कुमरीने करे हवे बेठी रे ॥ मा० ॥ २९ ॥

॥ दोहा ॥

॥ धीवर तनमें संक्रमे, ततखिण सागर देव ॥ अमृत जल लेई करी, कुमरी छांटी हेव ॥ १ ॥ रंजा फल पत्रें करी, कस्यो पवन उपचार ॥ तव कुमरी साजी थई, पामी चेतन सार ॥ २ ॥ आंख उघाडी निरखियुं, हरिबल केरुं रूप ॥ बाला चमकी चित्तमें, ए शुं देव सरूप ॥ ३ ॥ कालो वरण मटी गयो, प्रगट्यो सोवन वान ॥ अद्‌भुत कांति शरीरनी, दीपे देव समान ॥ ४ ॥ एतो धीवर कुल नही, मन श्म चिंते बाल ॥ ए साचुं के सूहणुं, के दीसे इंद्र जाल ॥ ५ ॥ तिण समे सुरवाणी थई, सांभल कुमरी सुजाण ॥ हरिबल मछी रूप ए, वश्य तुं पति गुण खाण ॥ ६ ॥ एह थकी सुख संपदा, दिन दिन अधिकी होय ॥ भाग्यबलें तुझ वर मल्यो, अण चिंतवियुं सोय ॥ ७ ॥ तव कुमरी हरखित थई, सांभली देव वचन्न ॥ आरत चिंता सवि टली, उलस्युं ते निज मन्न ॥ ८ ॥ वसंतसिरी हरिबल प्रतें, वर वरियो धरी प्रीत ॥ शीतल मन बेहुनां थयां, बांध्यो अविहड हीत ॥ ए ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

पय प्रणमी हरिबल तणा, देई वर ससनेह ॥ सागर सुर निज थानकें, पहोतो ते गुणगेह ॥ १० ॥ मान व नव सफलो करी, दंपती नोगवे नोग ॥ रामनुं सु हणुं नरतने, फलियुं पुण्य संयोग ॥ ११ ॥

॥ ढाल सातमी ॥

॥ शीयालो नलें आवियो ॥ ए देशी ॥ हुआ हे ह रख वधामणां, बेहु जणनां हे मनवंछित सीध के ॥ कुमरी हरिबल वर वरी, मनुनवनो हे फल लाहो लीध के ॥ १ ॥ हु० ॥ किहां नृपनंदिनी सुंदरी, किहां हरिबल हे मछी अवतार के ॥ अणमलतो ए ताक डो, पुण्यजोगें हे मेल्यो किरतार के ॥ २ ॥ हु० ॥ एक में जीव उगारीयो, तस पुण्यथी हे नूठो निधि राज के ॥ परतख दीतुं पारखुं, गुरुवयणथी हे मुऊ वाधी लाज के ॥ ३ ॥ हु० ॥ धन धन गुरुनां वयण ने, मुऊ कीधो हे महोटो उपगार के ॥ कीडीथकी कुंजर कह्यो, नलें प्रगट्यो हे सद्गुरु संसार के ॥ ४ ॥ हु० ॥ इम चिंतवतां बे जणां, पंथें चाल्यां हे ते वन हमऊार के ॥ रंग विनोदनी वातडी, वहे करतां हे एक चित्त उदार के ॥ ५ ॥ हु० ॥ वाट विषम जे आकरी, गिरि गव्हर हे वली विषमा घाट के ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

झंगि झाडी जे रूंखनी, परि उतखा हे निज पुण्यने थाट के ॥ ६ ॥ द्रु० ॥ तिण समे कुमरी चिंतवे, न वि जाणुं हे पियुनी कुल नाति के ॥ तो हवे जोवुं एहनी, करुं परीक्षा हे ए शी छे जाति के ॥ ७ ॥ द्रु० ॥ जोवुं वली तस पारखुं, पराक्रमें हे केहवो छे सधीर के ॥ जीवित सूधी माहरो, मन राखी हे केहवो मेले हीर के ॥ ८ ॥ द्रु० ॥ तव प्यारी पियुने कहे, सुणो प्री तम हे थया खरा बपोर के ॥ पाणीनी तिरषा घ णी, पीयु लागी हे घणुं अति हे जोर के ॥ ए ॥ द्रु० ॥ तव हरिबल तिहां सज थयो, अबलानां हे सुणी दीन वचन्न के ॥ केड बांधी काठी खरी, नीर जोवा हे निकल्यो ते वन्न के ॥ १० ॥ द्रु० ॥ अटवीमां जो तो फरे, नवि दीसे हे क्यांह नदी नवाण के ॥ तव एक तरु ऊपर चढी, दृष्टें जोवे हे चिहुं दिशि जल ता ण के ॥ ११ ॥ द्रु० ॥ तव तिहां दूरथी पेखियो, सरो वर हे जल नरियुं नीर के ॥ तिहां जइ जल नरि पो यणें, लावि पावे हे निज प्यारीने नीर के ॥ १२ ॥ द्रु० ॥ अंग उखां जल पीवतां, मनथी लह्यो हे पियु माहाबलवंत के ॥ हरखित थइ तव सुंदरी, मुख व खतें हे पियु मलियो संत के ॥ १३ ॥ द्रु० ॥ धन्य

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

दिवस धन ते घडी, धन वेला हे मुझ प्रगट्यां भाग्य के ॥ मनवंछित पियुडो मल्यो, थयां परगट हे मुझ सुख सौभाग्य के ॥ १४ ॥ ढु० ॥ सुरवाणी साची मली, जेवी भाखी हे तेहवी नजरें दीठ के ॥ मुह मा ग्या पासा ढल्या, राजकुमरी हे मन हरख पइठ के ॥ १५ ॥ ढु० ॥ दंपती बेहुने प्रीतडी, एकतारी हे ब नी ज्युं नख मांस के ॥ एकंगी जल मीन ज्युं,तिम बे ढुने हे बनीयुं तन हंस के ॥ १६ ॥ ढु० ॥ इम क रतां ते अनुक्रमें, विघनाटवी हे परि उतर्या तेह के॥ दूरथी दीठुं सोहामणुं, एक मोटकुं हे शोभित शिं ग जेह के ॥ १७ ॥ ढु०॥ कनकजडित शिंग डुगे ले, कोशीसां हे मणिमय दीपंत के॥ जाणीयें नूरमणी करें, सोहे कंकण हे रवितेज झिपंत के॥१८॥ढु०॥ नं दन वन सम वाटिका,फलि फूली हे चिहुं दिशि सोहंत के ॥ सजल सरोवर जल भर्या, देखीने हे वर नारी मोहंत के ॥ १९ ॥ ढु० ॥ नगर समीपें आवीयां, वाडीमां हे उतारा कीध के ॥ तिण समे तिहां एक आवियो, वैताल कहे भलि आशिष दीध के ॥ २० ॥ ढु० ॥ पूछे हरिबल तेहने, कहो बारोट हे आ नग रीनुं नाम के ॥ कुण नृप राज्य करे इहां, अधिकारी

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

हे ठे कुंथ अनिराम के ॥ २१ ॥ हु० ॥ तव हरि बलने ते कहे, वेतालक हे सुणो पंथी साथ के ॥ मदनवेग ठे नूपति, वीशाला हे नगरीनो नाथ के ॥ २२ ॥ हु० ॥ अरियण सघला वश करी, राज्य जोगवे हे सुरपतिनी समान के ॥ पायक गज तुरी ठे घणा, सप्त लक्ष्नी हे ठकुराइएं मान के ॥ २३ ॥ हु० ॥ वरण अढार वसे इहां, पुण्य करणी हे करतां सहु लोक के ॥ पापनी बुद्धि मले नही, जोगीजन हे वसे चातुर कोक के ॥ २४ ॥ हु० ॥ बार जोयण पोली कही, नव जोयण हे दीर्घ शोजित पोल के ॥ कनक रयणमय मालियां, चोराशी हे चहुटानी उल के ॥ २५ हु० ॥ जाणीयें स्वर्गपुरी जली, वीशाला हे नगरीनुं नाम के ॥ सुखीयां लोक वसे सहु, दुःखीयानुं हे नवि दीसे ठाम के ॥ २६ ॥ हु० ॥ एहवो व्यतिकर मांभीने, वैतालकें हे कह्यो थइ उजमाल के ॥ सांजलि बेहु राजी थयां, लब्धि कहे हे ए तो सातमी ढाल के ॥ २७ ॥ हु० ॥

॥ दोहा ॥

॥ नगरी नृपनी वारता, वैतालें कहि जाम ॥ वात वधामणि हरिबलें, दीधी मुद्रा ताम ॥ १ ॥ चित ठरियुं वैतालनुं, देखी पीली वस्त ॥ हरिबलने चरणे न

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

मी, जइ दिधि स्त्रीने हस्त ॥ २ ॥ हवे कुमरी पियुने कहे, सांजलो जीवन प्राण ॥ वास वसीयें इहां कणे, इण नगरी इण गण ॥ ३ ॥ तव हरिबल कहे नारी ने, सुणो प्रिया मुज वाच ॥ तुम अम मनडुं एक बे, जे कहेशो ते साच ॥ ४ ॥ एम कही ऊचयां तुरत, लेई निज परिवार ॥ नगरीमां जातां थकां, शकुन थयां श्रीकार ॥ ५ ॥ डुर्गा काक ने श्वान शुज, जावी जैरव संत ॥ सांढ सारस खर तुरी, जिमणां लाली हुंत ॥ ६ ॥ अंगज दशरथ सुततणो, बांधे तोरण सार ॥ शकुन थयां जमणी दिशें, करतां पुर पेसार ॥ ७ ॥

॥ ढाल आठमी ॥

॥ बन्यो रे सगुरुजीनो कलपडो ॥ ए देशी ॥ जीरे शुज लगनें शुज मुहूरतें, एतो नगरीमें कीध प्रवेश रे ॥ सुजाण ॥ तिण समे सनमुख वली थया, शुज कारी शकुन विशेष रे ॥ सु० ॥ १ ॥ शु० ॥ कन्या पांच स हामी मली, एतो लेइ दीप उद्योत रे ॥ सु० ॥ गज रथ शणगार्या जला, मलि सनमुख रयणनी ज्योत रे ॥ सु० ॥ २ ॥ शुज० ॥ जीरे एहवे शकुनें नग रीमें, एतो हरिबलें पगलुं दीध रे ॥ सु० ॥ तिण समे एक व्यवहारियो, मल्यो सनमुख प्रणिपत कीध

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

रे ॥ शु० ॥३॥सु० ॥ तव हरिबल पूछे वणिकने, अ
म कोइ बतावो गेह रे ॥ सु० ॥ वास करुं अमें ज
ई तिहां, एतो लहीयें सुख ससनेह रे ॥ सु० ॥ ४ ॥
॥ शु० ॥ जीरे तव कर जोडी वणिक ते, हरिबलने
करे मनुहार रे ॥ सु० ॥ अम घरे आवो प्राहुणा,
अमें देशुं मोहोटुं आगार रे ॥ सु० ॥ ५ ॥ शु० ॥
जीरे आग्रह करीने वणिक ते, तेडी आव्यो निज
आगार रे ॥ सु० ॥ जगति जुगति जलि साचवी, ए
तो देइ मीठा आहार रे ॥ सु० ॥ ६ ॥ शु० ॥ जीरे
वणिक हरीबल कारणें, रहेवाने दीधा आवास रे
॥ सु० ॥ कनकरयणमय मालीयां, एतो सोहे रवि
ज्युं प्रकाश रे ॥ सु० ॥ ७ ॥ शु० ॥ एतो वास कर्यो
जइ तेहमें, एतो हरिबलें आणि उल्लास रे ॥ सु० ॥
शकुनतणा परजावथी, एतो पुण्यें लहियो सुवास
रे ॥ सु० ॥ ८ ॥ शु० ॥ हवे हरिबल पूछे वणिकने,
तुम नाम कहो गुणवंत रे ॥ सु० ॥ तव व्यवहारी
कहे प्रभु, मुझ नाम छे श्रीपति संत रे ॥ सु० ॥ ए ॥
॥ शु० ॥ एतो नाम सुणी तव हरिबलें, श्रीपति बं
धव कीध रे ॥ सु० ॥ व्यवहारी सनमानीयो, एतो
सिरपाव देइ प्रसिद्ध रे ॥ सु० ॥ १० ॥ शु० ॥ हवे ह

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

रिबल सुख जोगवे, एतो वसंतसिरीनी साथ रे ॥ सु० ॥ मानवजव सफलो करे, एतो जाणे पामी आथ रे ॥ सु० ॥ ११ ॥ शु० ॥ एतो शत्रुकार मांमयो घणो, एतो देवे दान उछाह रे ॥ सु० ॥ बंदीजन बिरुदाव ली, ए तो हरिबलनी बोले अथाह रे ॥ सु० ॥१२॥ शु० ॥ ताल कंसाल मृदंगना, एतो वाजे नाद अचंज रे ॥सु०॥ हरिबल आगल शोनता, एतो होवे नाटा रंज रे ॥सु०॥ १३ ॥ शु० ॥ चाली पुरमें वातडी, ए तो हरिबलनी आख्यात रे ॥ सु० ॥ मदनवेग नृप आगलें, एतो हरिबलनी थइ वात रे ॥ सु० ॥ १४॥ शु० ॥ एतो क्षत्रीवंशें राजवी, एतो वीरबल केरो धी र रे ॥ सु० ॥ भुजबली नीम समो वडी, एतो दानें विक्रम वीर रे ॥सु०॥१५॥शु०॥ आव्यो आपणा नय रमां,एतो परदेशी प्राहुणो जोर रे ॥ सु० ॥ वसंतश्री तस नारजा, एतो रूपें रंज चकोर रे ॥ सु० ॥ १६ ॥ शु० ॥ एहवी थइ दरबारमां, एतो हरिबल केरी वा त रे ॥ सु० ॥ क्षत्री वंश शिरोमणी, एतो वीरबल के रो जात रे ॥ सु० ॥१७॥ शु० ॥ मदनवेग नृप सां जली, एतो मनमें दुउ हेराण रे ॥ सु० ॥ तो बोला वुं एहने, एतो जोवुं ते अहिनाण रे ॥ सु० ॥१८॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

शु० ॥ इम जाणीने नृप तदा, एतो सचिवनें दीध आदेश रे ॥ सु० ॥ आग्रह करि तस तेडीने, तुमें आवजो अत्र विशेष रे ॥ सु० ॥ १९ ॥ शु० ॥ तत खिण सचिव तिहां जई, हरिबलने कीध प्रणाम रे ॥सु०॥ नृपनुं तेडुं तुम अछे, तुमें आवो आतमराम रे ॥ सु० ॥ २० ॥ शु० ॥ उठी हरिबल ततखिणे, च ढ्यो अश्व रत्न गुण गेह रे ॥ सु० ॥ भेट भली नृप आगलें, जइ मूकी नृप प्रणमेह रे ॥ सु० ॥ २१ ॥शु०॥ नृप पण हरिबलने तदा, एतो उठीने दीधी बांह रे सु०॥ बेठा एकण गादीयें, एतो हरिबल नृप उछा ह रे ॥सु०॥२२॥ शु०॥ आगम नीगमनी करी, एतो बे घडी वातनी गोठि रे ॥ सु० ॥ अन्यो अन्य राजी थया, जिम कर चढे साकर पोठि रे ॥ सु० ॥ २३ ॥ शु० ॥ सागर देव प्रसादथी, एतो हरिबल केरुं तेज रे ॥ सु० ॥ राज्यसन्मादिक नृप तणुं, एतो देखी वा ध्युं हेज रे ॥ सु० ॥ २४ ॥ शु० ॥ बंदीजन बि रुदावली, एतो बोले क्षत्री वंश रे ॥ सु० ॥ माता वीरायें जनमीयो, एतो वीरबल कुल अवतंस रे ॥ सु० ॥ २५ ॥ शु० ॥ हरिबल गुण नृप सांभली, एतो मंत्रीसर पद दीध रे ॥ सु० ॥ आभूषण अंगें

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

ठवी, एतो नृपें निजबंधव कीध रे ॥ सु० ॥ २६ ॥ ध्रु० ॥ अश्व अमूलक पालखी, एतो हरिबल च ढवा काज रे ॥ सु० ॥ एतो आपे नृप हर्षे करी, एतो प्रबल वधारी लाज रे ॥ सु० ॥ २७ ॥ ध्रु० ॥ एतो नलें आव्या तुमें नयरमें, तुम आवे वध्युं हम हेज रे ॥सु०॥ नगरी अम पावन थई, एतो दिन दिन चढते ते ज रे ॥सु० ॥ २८ ॥ ध्रु० ॥ इम सनमानी बोलावियो, एतो वसंतसिरीने गेह रे ॥ सु० ॥ लब्धि कहे ढाल आठमी, एतो पुण्यें लच्छे एह रे ॥सु० ॥ २९ ॥ ध्रु० ॥

॥ दोहा ॥

॥ हरिबल ते निज मंदिरें, आव्यो करी आरंग ॥ वसंत सिरि हरखित थई, देखी पियुनो रंग ॥ १ ॥ म दन वेग नृपनी सदा, सारे निशदिन सेव ॥ बांध लो ड दरबारनी, हरिबल करे ततखेव ॥ २ ॥ हाल हुकु म हरिबल तणो, थयो विशालामश्न ॥ जीरण सचिव कोरें रह्या, अलगा थई अकङ्क ॥ ३ ॥ हरिबल नृपनुं एक मन, दीसंता तन दोय ॥ बाजी पूरण प्रीतडी, ज्युं नख मांसने होय ॥ ४ ॥ वसंतसिरि अपउर स मी, पामी पुण्य संयोग ॥ दोगुंडक सुरनी परें, हरिब ल जोगवे जोग ॥ ५ ॥ एक दिन बेठा रंगमें, दंपति

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

करे विचार ॥ नृप नगरीने नोतरी, दीजें नोजन सार ॥ ६ ॥ तव प्यारी पियुने कहे, सांनलो प्राणा धार ॥ इण वातें कुण ना कहे, करतां पुण्य उपचा र ॥ ७ ॥ पण एक वात विचार ले, धारो चित्त म झार ॥ दीपक लेइ देखाडवो, तेडी नृप आगार ॥ ८ ॥ नृप मंत्री ने चाडीयो, काग अही सोनार ॥ एता नोहे आपणां, कीजें कोडि प्रकार ॥ ए ॥ तें माटे तुमने कहुं, करजो समजी काम ॥ नृप नगरी ने नोतरी, दो नोजन अनिराम ॥ १० ॥ सांनल गोरी माहरी, साच कही तें वात ॥ जो ले दाहाडा पाधरा, शुं करशे नृप घात ॥ ११ ॥ पुण्यें वैरी आं धला, पुण्यें पाप विलाय ॥ पुण्य प्रबल जो कीजियें, तो सघलां दुख जाय ॥ १२ ॥ ते माटे सांनल प्रि या, जो प्रभु दीधी आथ ॥ जिमणे हाथें दीजियें, तो ते आवे साथ ॥ १३ ॥

॥ ढाल नवमी ॥

॥ गणधर दश पूर्वधर सुंदर ॥ अथवा; एम कही आव्यो जब रातें ॥ ए देशी ॥ हवे हरिबल मनहरख धरीने, आतमरंगें नेली रे ॥ गोधूम तंडुल मिशिरी खंमा, घृत सामग्री मेली रे ॥ १ ॥ खटरस नोजन

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

सार निपाई, सागर देव प्रजावें रे ॥ नोतरुं देवा नृप दरबारें, हरिबल पोतें जावे रे ॥ ख० ॥ २ ॥ आग्र ह करि निज आसन आपे, हरिबलने नृप हेतें रे ॥ मदनवेग कहे हरिबलने, तुमें छो जीवन जेते रे ॥ ॥ ख० ॥ ३ ॥ तव नृपने हरिबल कर जोडी, जांखे सांजलो स्वामी रे ॥ हुं सेवक हुं तुम पद केरो, तुमें मुज अंतरजामी रे ॥ ख० ॥ ४ ॥ तुमथी महोटा थाउं अमें महोटा, तुमें छो वंछित पोटा रे ॥ तुमें छो गिरुवा सायर पेटा, तुम नजरें थाउं घेटा रे ॥ ख० ॥ ॥५॥ तुम शिर महोटो छे परमेसर, जगशिर प्रभु तुमें सहुना रे ॥ तुमें छो जगमें कर्ता हर्ता, शुं कहीयें किं बहुना रे ॥ ख० ॥ ६ ॥ इणिपरें मीठे वचने नृपनें, रीझवी हरिबल बोले रे ॥ अरज सुणो एक प्रभुजी अमारी, नोतरुं वचन ते खोले रे ॥ ख० ॥ ७ ॥ नग र सहित तुमें राज पधारो, अम घरे जोजन करवा रे ॥ हुं आव्यो हुं तेडवा सारु, तुमने जमण आचर वा रे ॥ ख० ॥ ८ ॥ तव हरखित थइ नृप परिवारें, हरिबल मंदिर आवे रे ॥ सोवन थाल कचोलां मां मी, निजस्त्री पासें पिरसावे रे ॥ ख० ॥ ए ॥ कुमरी नवनवा शणगार पेहरी, नृपने जोजन प्रीसे रे ॥ ह

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

रिबल पण नृप जमता नाखे, पंखे पवन जगीसें रे ॥ ख० ॥ १० ॥ एकविश जातनी सुखडी पिरसी, फलने मीठा मेवा रे ॥ सिंहकेसरीया मोदक महो टा, देव आरोगे एहवा रे ॥ ख० ॥ ११ ॥ अमृत पाक ने आंबां पोली, श्रीखंम सीरा सुंहाली रे ॥ शा ल दाल ने घृत परनालि, पिरसे ज्युं गंगा वाली रे ॥ ॥ ख० ॥ १२ ॥ खारां खाटां तीखां व्यंजन, बत्रीश जातिनां धामे रे ॥ नृप आदें नगरीमहाजन ते, जम तां तृप्ति न पामे रे ॥ ख० ॥ १३ ॥ जमतां जमतां अन्योअन्यें, रसवती जीनें वखाणे रे ॥ के शुं देव आकर्षी रसोइ, हरिबलें करि इण टाणे रे ॥ ख० ॥ ॥ १४ ॥ रसीयावाले मल्यो जन ऊपर, फूले मन आ ल्हादें रे ॥ अमली नंगी जंगी जन ते, कीधां नोजन स्वादें रे ॥ ख० ॥ १५ ॥ पान सोपारी तंबोल रंगें, दें मुखवासनी बूकी रे ॥ इण परि नगरी सारी जमाडी, नागोलें चोखा मूकी रे ॥ ख० ॥ १६ ॥ पुरमें जस पडहो वजडावी, हरिबलें ते जस लीधुं रे ॥ धीवर कुल जहि हरिबल पोतें, सुकृत कारज कीधुं रे ॥ख०॥ ॥ १७ ॥ मदने वेगें रसवती जमतां, वसंतसिरी ते दीठी रे ॥ मृगनयणीनुं रूप सुकोमल, देखत जागी

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

मीठी रे ॥ ख० ॥ १७ ॥ नृपनुं मन विह्वल थयुं ज मतां, काममें कीधो जोरो रे ॥ नृप चिंते मुक स्त्री ठे न लेरी, पण नहि एह्वो तोरो रे ॥ ख० ॥ १९ ॥ ख टरस नोजननी सुघडाई, नृपना मनमें बेठी रे ॥ कामज्वरथी नोजन नूल्यो, स्त्रीनी चिंता पेठी रे ॥ ॥ ख० ॥ २० ॥ खाधुं न खाधुं करीने नृपते, मन विमनो थइ ऊठ्यो रे ॥ असेनियो थइ नृप घरे वली यो, जाणे जगदीश रूठ्यो रे ॥ ख० ॥ २१ ॥ चमकी चितमें चतुरा ततखिण, दीठुं नृप मन बिगड्युं रे ॥ तव प्रीतमने कहे निज प्यारी, चेतो नृप हेत उघ ड्युं रे ॥ ख० ॥ २२ ॥ तव हरिबल कहे सांनल प्यारी, नावी हशे ते थाशे रे ॥ खणाशे ते पडशे खाईमां, आपणुं कांइ न जाशे रे ॥ ख० ॥ २३ ॥ चिहुं जगमें हरिबलनी कीर्त्ति, बोले गुणिजन जीहा रे ॥ सुखें समाधें दंपति दोये, सुखमें काढे दीहा रे ॥ ॥ ख० ॥ २४ ॥ जोजो नविया धीवर जाति, एक जो जीव उगार्यो रे ॥ सुरसानिध मनवंछित फलि युं, जगमें जस विस्तार्यो रे ॥ ख० ॥ २५ ॥ शुद्ध परं पर सोहमस्वामी, हीरविजय सुरिराया रे ॥ साह अकब्बर जे प्रतिबोधी, जैनमार्ग दीपाया रे ॥ ख० ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ २६ ॥ तस शिष्य धर्मविजय धर्मधोरी, सयल गु णें करि छाजे रे ॥ कोविदशिर मुकुटामणि सोहे, तस शिष्य धनहर्ष राजे रे ॥ ख० ॥ २७ ॥ तस शिष्य कु शलविजय कविराया, दिनमणि तेज सवाया रे ॥ तस बंधव गणि कमल विजय शुभ, तस श्रुतज्ञान सुहाया रे ॥ ख० ॥ २८ ॥ तस शिष्य पंडित लक्ष्मी विजय गुरु, सोहे साधु नगीना रे ॥ ज्ञान क्रिया दो विधिशुं आराधी, आतम साधन कीना रे ॥ ख० ॥ ॥ २९ ॥ तस शिष्य दो हुवा साधु शिरोमणि, कुमती मद झोपंता रे ॥ पंडित केशर अमर दो भ्राता, रवि शशिपरें दीपंता रे ॥ ख० ॥ ३० ॥ ते गुरुचरण प सायें लब्धि, पुण्य उपर परबंध रे ॥ पहेलो उल्लास कह्यो नव ढालें, हरिबल केरो संबंध रे ॥ ख० ॥ ३१ ॥ ॥ इति श्रीहरिबलचरित्रे हरिबल राजर्षि पुरवर्णन नृपवर्णनादि प्रथमउल्लासः संपूर्णः ॥ १ ॥

॥ अथ द्वितीउल्लासः प्रारभ्यते ॥

॥ दोहा ॥

॥ परम ज्योति परकाश कर, त्रिभुवन तिलक स मान ॥ गरिब निवाज गोडी धणी, जयजंजन जग

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

वान ॥ १ ॥ अविनाशी अव्यय अरुप, अशरीरी अ
अरिहंत ॥ ज्योतिरूप जगदीश जे, ते प्रणमुं शुन सं
त ॥ २ ॥ कविजन हृदय महीतलें, शारद मात वि
शाल ॥ वचनामृत वरसें सदा, प्रगट थई उजमाल
॥ ३ ॥ मूरख मूंगां बोबडा, अकलविहूणा जेह ॥ त
स घट नीतरमें वसी, सुरगुरु सम करे तेह ॥ ४ ॥
परउपगारी मातजी, बाला त्रिपुरा सोय ॥ ते हुं प्रण
मुं नारती, जिम मुझ वंछित होय ॥ ५ ॥ कोविद के
शर अमरना, चरण कमल नमि तास ॥ हरिबल म
छीरायनो, पनणुं बिजो उल्लास ॥ ६ ॥ रंग रंगीली
जनसजा, सांजल वेधक जाण ॥ मधुकरनी परें रस
लीए, गुणवंत नाव प्रमाण ॥ ७ ॥ सरस नीरस र
सिया लहे, चातुर वेधक जेह ॥ पण मूरख पशु बा
पडा, शुं जाणे रस तेह ॥ ८ ॥ सरस निरस मधुक
र लहे, जे सेवे वनराय ॥ घूण शुं जाणे जीवडो, सू
कां लक्कड खाय ॥ ए ॥ खटपद सरिखा चतुर नर,
वेधक वचन रसाल ॥ राचे सरस कथा सुणी, विक
था तजी विचाल ॥ १० ॥ वक्ताने श्रोता सुणी, सा
हामो साहामी दृष्ट ॥ एक सरीखी जो हुवे, सु
णतां उपजे मिष्ट ॥ ११ ॥ तेमाटे नावुक तुमें, सां

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

जलजो चित लाय ॥ पण ते सुणतां मत करो, महि षी किन्नर न्याय ॥ १२ ॥ नृपने तेडी हरिबलें, की धी नक्ति विख्यात ॥ ते सुणजो नवियण तुमें,शी शी निपजे वात ॥ १३ ॥

॥ ढाल पहेली ॥

॥ आले लालनी देशी ॥ तेडी नृपने आगार,जोयण देइ सार ॥ आले लाल॥हरिबलें कीध पहेरा मणी ॥ मणि माणक लख लेय, अंग आनूषण देय ॥आ०॥ बोलाव्यो नृप गृह जणी ॥ १ ॥ मदनवेग नृप ताम, मंदिर वलियो जाम ॥ आ० ॥ वसंतसिरी मनमें व सी ॥ अंगनारूप निहालि, मनमां थइ चकचाल ॥ आ० ॥ नृप मननी मगली खसी ॥ २ ॥ जीव रह्यो ललचाय, ज्युं मधु खग लपटाय ॥ आ० ॥ काम व शें करी जूरियो ॥ कामातुर थयो राय, आकुल व्या कुल थाय ॥ आ० ॥ कामज्वरें नृप पूरियो ॥ ३ ॥ परवश थइ नृप देह, असमंजस बोले तेह ॥आ० ॥ विकलमूर्त्ति परें नयो ॥ खिण बाहिर खिण मांहि,जक न पडे खिण क्यांहि ॥ आ० ॥ कामिनीवाहण वहि गयो ॥ ४ ॥ न गमे कुसुमनी सेज, न गमे अंतेउरी हेज ॥आ०॥ राज काज पण नवि गमे ॥ न गमे पान

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

तंबोल, न गमे वात टकोल ॥ आ० ॥ अन्न उदक म न नवि रमे ॥ ५ ॥ क्षत्री परजापाल, मदनवेग म हराज ॥ आ० ॥ वीराधि वीर हतो खरो ॥ मोह बा ण लागां अशेष, पडयो गिडंदा पेच ॥ आ० ॥ का मिनीयें कह्यो जाजरो ॥ ६ ॥ नृप थयो मूरछा अचे त, जाणीयें लाग्यो केत ॥ आ० ॥ सघला सचिवने तेडीया ॥ पहेरी नव नवा वेश, धव धव धाइ अ शेष ॥ आ० ॥ आया मंत्री न जेडिया ॥ ७ ॥ जा ण्या जोषी विशेष, पट्टा जे खाता हमेश ॥ आ० ॥ तेडया ते वैद राजने ॥ दशो दिशें दोडया सर्व, जाण प्रवीण ते सर्व ॥ आ० ॥ आव्या तेडी नवाजने ॥ ॥ ८ ॥ नरडा नूवा जेह, कारण काढे तेह ॥ आ० ॥ आया ते शीश धुणावता ॥ जडी बुट्टीना जाण, गा रुडी करता वखाण ॥ आ० ॥ आया ते आप वखा णता ॥ ए ॥ वीराउला जे कहाय, हनुमंत हाक ब जाय ॥ आ० ॥ आया ते शक्ति उपासनी ॥ नगत वेरागी धाय, लांबां टीलां बनाय ॥ आ० ॥ आया ते दंत उवासनी ॥ १० ॥ इणि पेरें मलिया लोक, उद रने कारण फोक ॥ आ० ॥ चिकित्सा करवा नृप त णी ॥ निज निज ते कला सर्व, करवा मांमी अगर्व

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ आ० ॥ निज निज जश लेवा नणी ॥ ११ ॥ कहे एक नाडी देख, नृपने तो रोग अशेष ॥ आ० ॥ दाह ज्वर मूर्छा लही ॥ हांकी बोले वैद्य, ले मुझ गोली सद्य ॥ आ० ॥ बत्रीश रोग हणे सही ॥ १२ ॥ जे हता वैद्य ते सर्व, मनशुं राखता गर्व ॥ आ० ॥ पाली मत पोषी रह्या ॥ बहु ते कीध उपाय, पण नृपरोग न जाय ॥ आ० ॥ वैद्य प्रमुख पोथी वह्या ॥ १३ ॥ बोल्या जोषी जाण, नांखे लगन प्रमाण ॥ आ० ॥ ग्रह पीडा ले रायने ॥ ते माटे करो होम, जाय ज्युं रोगनो जोम ॥ आ० ॥ गोदान द्यो तुम्हें लायने ॥ १४॥ जाप जपो सवा लक्ष, जिम ग्रह होवे प्रत्यक्ष ॥ आ० ॥ ते ग्रह नृपनी रक्षा करे ॥ बोल्या नगतजन एम, मानो ते बिष्णु जेम ॥ आ० ॥ हमणां नृप मुख उच्चरे ॥ १५ ॥ एक कहे पेटमें नार, ले अजीर्ण आहार ॥ आ० ॥ रेचनी गोली कीजियें ॥ कहे एक गांतनो रोग, पीहो बल्ली योग ॥ आ० ॥ चूरण बूकी दीजियें ॥ १६ ॥ नूवा बोले जगीश, नृपने झोटिंग खवीस ॥ आ० ॥ वेलाबली विलगण थइ ॥ धूणे धूणावी शीश,पाडे बहुली चीस ॥ आ० ॥ वाण उतारे चिंता जइ ॥ १७ ॥ मांमथां मांमलां के

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

य, वाज्यां ऊांकलां जेय ॥ आ० ॥ पण लेखे को ना
वियां ॥ जेणें कह्युं जे जेम,तेणें कह्युं ते तेम ॥ आ०॥
पण नृप चित्त न नावियां ॥ १७ ॥ एम अनेक उपा
य, नलनला जाण कहाय ॥ आ० ॥ जाणपणुं पट
की वल्या ॥ विराजता हता जेह, परबंधी पण तेह
॥ आ० ॥ सिद्ध साधक सघला गल्या ॥ १९ ॥ न
गत संन्यासी कूण, गलिया ज्युं पाणी लूण ॥आ० ॥
फोगट गाल फुलावता ॥ जडी बुट्टीना जाण, वादी
गर गया गाण ॥ आ० ॥ जाणपणुं जे डुलावता ॥
॥ २० ॥ तिणसमे मंत्री एक, जाणे शास्त्रविवेक ॥
॥ आ०॥ मेहर नामें मंत्रीसरु ॥ जिहां पोढथा छे रा
य, तिहांकिण आव्यो धाय ॥ आ० ॥ नाडी जोइ
तिहां गुणकरु ॥२१॥ लाधो नाडी नेद,मंत्री लह्यो ते
उमेद ॥ आ० ॥ कामज्वरें ते नृप नडयो ॥ मूरछ
लह्यो तिण योग, पूरव कर्मना नोग ॥ आ० ॥ काम
अनल कुंमें पडयो ॥ २२ ॥ जेह छे नृपने रोग, तेह
शुं जाणे लोग ॥ आ० ॥ अंतरगतनी कुण लहे ॥
कामनुं ऊहर अथाह, नृपने ते लाग्यो दाह ॥आ०॥
कहो ते रोगने कुण ग्रहे ॥२३॥ जिहांथी प्रगटयुं दुः
ख, तिहांथी होये सुख ॥ आ० ॥ अगनि बल्यो अग

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

नी उरे ॥ विरहानलनी बाफ, जेहने रहि तन व्याप ॥ आ० ॥ ते शीतल रमणी करे ॥ २४ ॥ इम चिंती मनमांहे, सजा समरु उछाहे ॥ आ० ॥ मेहर मंत्री इम जणे ॥ नृपने रोग न कांय ॥ फोगट कीधा उपा य ॥ आ० ॥ जाण प्रवीणने अवगुणे ॥ २५ ॥ आं खनुं उंषध कान, कीधुं तेम निदान ॥ आ० ॥ सि६ साधक मूरख मल्या ॥ अंतरगतनी पीड, कामज्वर नी रीड ॥ आ० ॥ ते कुणे नवि अटकल्या ॥ २६ ॥ जे लहे शास्त्र विचार, होवे जे गुरु मुख सार ॥आ०॥ ते जाणे सघली कला ॥ शुं करे चिकित्सा कर्म, न जा णे शास्त्रनो मर्म ॥ आ० ॥ ते करे उशने बाकला ॥ २७ ॥ सजा विसर्जी ताम,सदु पोहोता निज धा म ॥ आ० ॥ मंत्री हवे वेदूं करे ॥ बीजा उल्लासनी ढाल, पहेली कही उजमाल ॥ आ० ॥ लब्धिविज य इम उच्चरे ॥ २८ ॥ आ० ॥ इति ॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे मेहर मंत्रीसरु, लोकोने दे शीख ॥ नृप नी पीडा टालवा, बेठो आइ नजीक ॥ १ ॥ कामा तुर नृपने लही, सचिव करे उपचार ॥ राणी सघ ली तेडीयो, शोल सजी शणगार ॥ २॥ रम झम क

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

रती आवीउं, रूपें अपरछर सार ॥ मदन तणी जे वाटिका, कामीने सुखकार ॥ ३ ॥ आवी नृपना प ग तलां, उल्लासें उल्लास ॥ पवन करे रंज्ञादलें, आं जे नेत्र बरास ॥ ४ ॥ पटराणी जे पदमणी, नृपनुं लीडी अंग ॥ शयन कस्युं घडि दो लगें, उतस्यो ताम अनंग ॥ ५ ॥ कोकशास्त्र तणे बलें, कीधो ए उप चार ॥ आंख उघाडी ततखिणें, मह्पितियें तिण वार ॥ ६ ॥ कामज्वर हलको थयो, पाम्यो चेतन सार ॥ मेह्र मंत्री जस लह्यो; वरत्यो जयजय कार ॥ ७ ॥ मदनवेग हरख्यो घणुं, देखी बुद्धि निधान ॥ सन्मान्यो मंत्रीसरु, देई बहुलुं मान ॥ ८ ॥ बीजा सचिव दूरें कस्था, राख्यो एह प्रधान ॥ मुजने मोहोटो गुण कस्यो, दीधुं जीवितदान ॥ ए ॥ नृप कहे मंत्री तुं थयो, म ह्वारा डुखनो जाण ॥ में राख्यो तुजने सही,तन मन करिने प्राण ॥ १० ॥ तव कहे मंत्री नृप सुणो, हुं बुं तुमारो दास ॥ केहशो ते करचुं अमें, तन मन क रि एकरास ॥ ११ ॥ पण मुजने साची कहो, ए का रण थयुं केम ॥ अंतरगतनी वातडी, जाणी जाए जे म ॥ १२ ॥ वगर कहे किम जाणियें, पारका मननी वात ॥ तव नृप मंत्रीने कहे,मांमी सघली घात॥१३॥

॥ ढाल बीजी ॥

॥ नदी जमुनाके तीर, उडे दोय पंखीयां ॥ ए देशी ॥ नृप कहे सांजल मंत्री, कहुं तुऊ नीपनी ॥ हरिबल केरे मंदिर, जमतां जे ऊपनी ॥ हरिबल केरी नारि, वसंतसिरी सदा ॥ प्रीसवा आवी जोजन, में दीठी तदा ॥ १ ॥ रूप अनोपम जाणीयें, अजिनव अपछरी ॥ के रंजा के उर्वशी, के विद्याधरी ॥ नागकुमारी ए जाणुं के, लखमी किन्नरी ॥ एहवी रूप निधान में, दीठी ए सुंदरी ॥ २ ॥ ए रूप आगल बीजी, स्त्रीयो बापडी ॥ मान गुमान ते मूकी, दशो दिशि त्रापडी ॥ रंजा उर्वशी अपसर, जइ नजमें रही ॥ पद्मद्रहमें लखमी, रही अंबुज ग्रही ॥ ३ ॥ नागकुमारी किन्नरी, जूतलें जइ वसी ॥ वैताढयें विद्याधरी, रही जइने खसी ॥ जे रमणीनी उपमा, ते देतां सही ॥ वसंतसिरी को आगल, मांझि शकी नही ॥ ४ ॥ ते अंगनानुं रूप, देखि हुं वश थयो ॥ खटरस जोजन जमतां, ते जूली गयो ॥ मन ललचाणुं मुऊ, जमर जिम केतकी ॥ जिम मधु खग लपटाय, थयुं तिम एथकी ॥ ५ ॥ कोइक चोघडी यानी जे, आवी हिये चडी ॥ खिण खिण सांजरे वीसरे, नही ते अध घडी ॥ चित्रलिखित जो माव

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

त, गजथकी उतरे ॥ तो मुऊ हृदयथी वसंत,सिरी ते वीसरे ॥ ६ ॥ ते विण जे घडि जाय ते, मास स मान ज्युं ॥ मास ते जाणीयें होवे, वरस प्रमाण ज्युं ॥ मोहविलुऊो जीव, फूरे दिन रातडी ॥ साले साल समान, खुई निज जातडी॥ ७ ॥ मत कोइने प्रभु लागो, एकांगी प्रीतडी ॥ बाले सुरंगी देह, पतंग ज्युं रीतडी ॥ अगनी झंपापात, करेवी सोहिली ॥ पण विरहानल बाफ, सहेवी दोहिली ॥ ८ ॥ संग्राम करतां लागे ते,जलकां सोहिलां ॥ पण ते कामिनी जलकां,खमवां दोहिलां ॥ जिम रोगी ज्वरयोगथी, सेजें तडफडे ॥ तिम विरही नर काम, ज्वरथी लडथडे ॥ ए ॥ चिंता चिता दोमें, अधिकी कुण वहे ॥ चिता दहे निर्जीव, सजीव चिंता दहे ॥ जिहां सूधी ते नयणें न, निरखे अति भले ॥ घरनां कारज तिहां सुधी, कांहि न ऊकले ॥ १० ॥ लोनीनी परें जीव, रहे निज ते कने ॥ खाधा पिधानी सूध, नही ते जीवने ॥ शूनी फरे तस देह के, मन विण मानवी ॥ जय लागी घणुं जोर जे, ललना अजिनवी ॥ ११ ॥ विरुउ विषय विकार के, दृष्टि लागे जिका ॥ वीषयीनो दिल दाह, जाणे केवली तिका॥ मदिरा पीधे जीव,घुमाई ज्युं रहे ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

विरहनो लीणो जीव, मुंझाइ त्युं वहे ॥ १२ ॥ जोजो नवियां प्रीतडी, लागे जेहने ॥ होये एह हवाल के, मानव तेहनें ॥ विरहनी वारता वीती,हशे ते जाणशे ॥ पण निसनेही मूरख, शुं ते पिछाणशे ॥१३॥ मननी लालच रात,दिवस रहे तेहशुं ॥न गणे सुख दुःख जीव, बंधाणो जेहशुं ॥ प्रीतिनो लीणो जीव, पडे ते कूप मां ॥ तन धन सोंपे नेही ने, सरवे ते चूंपमां ॥१४॥ रमणी तणां जे नेत्र ते, कज्जल पंकथी ॥ प्रगटे कंदर्प मत्त, वराह निःशंकथी ॥ कामी जन मनवनें, वराह ते संचरी ॥ मानलता खिण एकमें,जाये ते चरी ॥१५॥ कामी जनने काम, सुअर केडें पडे ॥ विरही जनने अह निशि, विण खूनें नडे ॥ काम वराह ते कामिनी, संग थी उसरे ॥ वीरहीजननां मन ते, तव शीतल करे ॥ १६ ॥ सबल पुरुष गढ कोट ते, जीते पराक्रमें ॥ कामिनी जीते त्रीजग, एक कटाक्षमें ॥ कामणगा री नारी ते, सहुने वश करे ॥ रागना लीणा सुरनर,स्त्री केडें फरे ॥ १७ ॥ सबला ते नबला थई, स्त्री वश रहे बहु ॥ तो माहरो कोण आशरो,मंत्री तुज कहुं ॥ रे मंत्री तुज आगल, मांमी में कही ॥ वसंतसिरीनुं कार ण,ए नीपनुं सही ॥१८॥ जोजन करवा गया तव, ए

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

फल लाविया ॥ कारण करीने कारण, लोकने लाविया॥ करण विंधावतां नाक, विंधावी आवियो ॥ ए ऊखाणो लोकमें, साचो करावियो ॥ १९ ॥ ते माटे हवे कोइक, उद्यम कीजियें ॥ वसंतसिरीमुख देखि, सुधारस पीजियें ॥ जो कोइ विद्या होय तो, पलकमें जइ मलुं ॥ राचुं माचुं मन, तिहांथी न नीकलुं ॥२०॥ बुद्धि अकल परपंच, करी कोय केलवे ॥ ले कोय प्रभु नो वाहालो, मुझने मेलवे ॥ तन मन करुं खुरबान, के जो मुझमे मले ॥ आपुं कोडि पसाय, करी जले जले ॥२१॥ ए अधिकार ते सघलो, मंत्रीयें सांभल्यो ॥ कामातुर थयो राय, ते मंत्रीयें अटकव्यो ॥ घणुं बलीयो पण सिंह, अजाडीमें पड्यो ॥ तिम रमणी मोह जालमां, नृप पूरो जड्यो ॥ २२ ॥ तो हवे कोइक बोल, सु बोल कही भला ॥ नृपना मनमें स्त्रीनी, फिकर काढुं बला ॥ सवलुं कमल हशे तो, कह्युं नृप मा नशे॥ तो शीखामण सघली, लेखें आणशे॥ २३ ॥ सांभलजो भवि आगल, मीठी वारता ॥ सांभलतां खुशियाल, श्रोता दिल गारतां ॥ बीजा उल्लासनी ढाल, ए बीजी पूरी करी ॥ नेहीने मन गमती ए, लब्धियें उच्चरी ॥ २४ ॥ इति ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ दोहा ॥

॥ हवे मंत्री नृपने कहे, सांजलो प्रनु महाराज ॥ अंतरगतनी जे कही, ते में निसुणी आज ॥ ॥१॥ पण ए वात हलकी नहीं, बे जारे महिनाथ ॥ गणवा दशन यमदंष्ट्रना, नजशुं जरवी बाथ ॥ २ ॥ तिम ए स्त्रीशुं नेहलो, करवो अति दुर्लंन ॥ बंभो संगति एहनी, ज्युं लहो सुख सुलंन ॥ ३ ॥ जे कीधे तुमने प्रनु,खामी लागे अपार ॥ वाड जो गलशे चीजडां, क्यां होय तास पुकार ॥ ४ ॥ परदुःखनंजन राजवी, परजन पाले लाड ॥ वाहार जोश्यें जिहां थकी,तिहां किम ऊठे धाड ॥५॥ अणघटती ए वातडी, किम कीजें प्रनु नाथ ॥ देखी पेखी वाघना, मुखमें घालवो हाथ ॥ ६ ॥ वसंतसिरी नारी तणो, जो कीजें प्रतिबंध ॥ बानी वातो नवि रहे, हिंग तणी जेम गंध ॥ ७ ॥ पोतानी परणी प्रिया, उपजावे रंगरेल ॥ जगमें बे परणी नली,पर परणी विषवेल ॥८॥ काणी कोची करबली, काली कुबडी जाण ॥ परणी तेह पनोतडी, पदमिणी तेह पिबाण ॥ ए ॥ आपणी गावडी चंद्रमा, जे दोही पीवाय॥ शुं कीजें परनी नली, जे दोही नवि जाय ॥ १० ॥ परस्त्री संग

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

ति जे करे, तेहनां पूरण पाप ॥ ऊंप करी बेसे नही, न मिटे तास संताप ॥ ११ ॥ घृतकुंन सरिखा नर क ह्या, अगनि सरीखी नार ॥ मधु खरडी असिधार ज्युं, तिम स्त्रीसंग विचार ॥ १२ ॥ परनारीना लाल ची, जे थया विषयाअंध ॥ नरकनिगोदें रडवड्या, सुणजो तास संबंध ॥ १३ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

॥ नणदलनी देशी ॥ राजन हे राजन, रावण स रिखो राजवी, जे बलीयो कहेवाय ॥ हे राजन ॥ ला ख बेहेंताजीश गज तुरी, सेवे सोल सहस राय ॥ हे रा जन ॥ १ ॥ धिक धिक काम विडंबना, कामें लुब्धा जेह ॥ हे रा० ॥ जस अपजस कांइ नवि गणे, न गणे सुख डुःख तेह ॥ हे रा० ॥ २ ॥ धि० ॥ ब त्रीश सहस अंतेउरी, रूपें अपछर प्राय ॥ हे रा० ॥ ते सरखीने अवगुणी, रावण सीता हराय ॥ हे रा० ॥ ३ ॥ धि० ॥ राम ने लखमण बेहु मली, मेली कटक अपार ॥ हे रा० ॥ बार वरस लगें आकरा, जू झ्या नर फुंफार ॥ हे रा०॥ ४ ॥ धि०॥ सीताकारणें रावणें, केइ सुनट हणाय ॥ हे रा० ॥ अंतें पण रा वण तणां, दश मस्तक छेदाय ॥ हे रा० ॥५॥धि०॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

त्रिजगमें कंटकेश्वरी,नाम धरावतो जेह ॥ हे रा० ॥ चो थी नरकें ते गयो, परस्त्रीनां फल एह ॥ हे रा० ॥ ॥ ६ ॥ धि० ॥ लंका परलंका करी, निजनारीने लेय ॥ हे रा० ॥ निज नगरीयें रघुपति वल्यो, जितना मं का देय ॥ हे रा० ॥ ७ ॥ धि० ॥ बाणुं लख मालव धणी, जे थयो राजा मुंज ॥ हे रा० ॥ ते पण दासी मृणालथी, लुब्ध्यो कामीनि पुंज ॥ हे रा० ॥ ८ ॥ धि० ॥ ते दासीना संगथी, घर घर मागी नीख ॥ हे रा० ॥ अंते शूलि रोपण थयो, कामथी लह्यो ए शीख ॥ हे रा० ॥ ए ॥ धि० ॥ लुब्ध्यो द्रौपदी ऊपरें, कीचकें कीयो चूक ॥ हे रा० ॥ घालियो देवल कुंज मां, नीमें कीधो जूक ॥ हे रा०॥ १० ॥ धि० ॥ सर सति नामें साधवी, कालिकसूरिनी बेन ॥ हे रा० ॥ गर्धनिल नृपें तस अपहरी, कीधुं ए कामी चेन ॥ हे रा० ॥ ११ ॥ धि० ॥ कालिकसूरियें ततखिणें, मे ली प्रबल खंधार ॥ हे रा०॥ गर्धनिल नृप शिर छेदी युं, वाली निज बहेन सार ॥ हे रा० ॥ १२ ॥ धि० ॥ इत्यादिक कामीजना, पाम्या दुःख अपार ॥हे रा० ॥ परस्त्री गमन कथाथकी, पडिया नरक मझार ॥ हे रा० ॥ १३ ॥ धि० ॥ कामिनी जे संसारमां, नां

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

खी पापनी राश ॥ हे रा० ॥ कामी जनने पाडवा, मोहकूपें धख्यो पाश ॥ हे रा० ॥ १४ ॥ धि० ॥ नय णें देखाडी प्रीतडी, बोली मीठा बोल ॥ हे रा० ॥ प्राण हरी लीयें कामीनां, देखाडी रंग चोल ॥ हे रा० ॥ १५ ॥ धि० ॥ आंसूं पाडी नयणथी, दुःख देखाडे आप ॥ हे रा० ॥ आ नवमें मुऊ तुम विना, बीजा नाइने बाप ॥ हे रा० ॥ १६ ॥ धि० ॥ कडकडता करि आकरा, खाये खोटा सूंस ॥ हे रा० ॥ थें पर मेसर साचलो, बेतरे नलनला पुंस ॥ हे रा० ॥ १७॥ धि० ॥ नोलवे नोला नामिनी, राखी ते कूडी बुद्धि ॥ हे रा० ॥ नऽक प्राणी बापडा, माने ते धोलुं दूध ॥ हे रा० ॥ १८ ॥ धि० ॥ कूड कथन चाले घणुं, स्त्रीनो एह सनाव ॥ हे रा० ॥ चरित्र रमे केऽ जातिनां, पा मी ते निज दाव ॥ हे रा० ॥ १ए ॥ धि० ॥ कूड क पटनी उंरडी, गोरडी निगुण निटोल ॥ हे रा० ॥ अ नया राणी तणि परें, कोइ न राखे तोल ॥ हे रा० ॥ २०॥धि०॥रमणी तणां मन एहवां,जेहवां पाकां बोर ॥ हे रा० ॥ बाहिर सुंदर देखणां, मांहे कठिण कठो र ॥ हे रा० ॥ २१ ॥ धि० ॥ महिला केरो नेहलो, जेहवो संध्या राग ॥ हे रा० ॥ आसो मासनो मेहलो,

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

तेहवो स्त्रीनो राग ॥ हे रा० ॥ २२ ॥ धि० ॥ स्वारथ पहोंचे जिहां लगें, तिहां लगें करे रंग रेल ॥ हे रा० ॥ लूटी तन धन हरि लिये,रूठी विषनी वेल ॥ हे रा० ॥ २३ ॥ धि० ॥ सुरीकंतायें कंतने, हणियो देई फेर ॥ हे रा० ॥ नारी इष्ट होवे सदा, न जुवे करतां केर ॥ हे रा० ॥ २४ ॥ धि० ॥ ब्रह्मदत्तने मारवा, लाख नां मंदिर कीध ॥ हे रा० ॥ चुल्लणीयें निज पुत्रने, स्वहस्तें वन्हि दीध ॥ हे रा० ॥ २५ ॥ धि० ॥ पायुं रक्त सुजातणुं, खवरावयुं उरमांस ॥ हे रा० ॥ ते जितशत्रुने राणीयें, नाख्यो जलधिमें तास ॥ हे रा० ॥ २६ ॥ धि० ॥ नारी न होवे आपणी, वानां जो करियें लक्ष ॥ हे रा० ॥ दूधने मांग दो जामिनी, देखाडे परतक्ष ॥ हे रा० ॥ २७ ॥ धि० ॥ मोह देखा डी दगो करे, स्त्रीनो ए ढंग ॥ हे रा० ॥ ते माटे तु में राजवी, म करो परस्त्री संग ॥ हे रा० ॥ २८ ॥ धि० ॥ इणि परें नृपने मंत्रीयें, दाख्या केइ दृष्टांत ॥ हे रा० ॥ पण नृपनुं मन नवि मजे, वसंतसिरी चित्त आंत ॥हे रा०॥ २९॥धि०॥मन लागुं जेह उपरें,विसाखुं नवि जाय ॥ हे रा० ॥ मोहनी मदिरा ढाकमां, उप देश नावे दाय ॥ हे रा० ॥ ३० ॥ धि० ॥ लब्धि बी

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

जा उल्लासनी, ए कही त्रीजी ढाल ॥ हे रा० ॥ आ गल नवि तुमें सांनलो, सरस कथा उजमाल ॥ हे रा० ॥ दोहा ॥

॥ वलि मेहर मंत्रीसरु, नृपने दे उपदेश ॥ जाणे किम करि नृप वले, होवे लाल विशेष ॥ १ ॥ इम जा णी मंत्री कहे, सांनलो तुमें माहाराज ॥ चिहुं जगमें ले अति घणी, तुमची महोटी लाज ॥ २ ॥ साचवी यें जल आपणुं, अणसाचवियुं जाय ॥ नालीकेर परें साचव्युं, अधिक अधिक जल थाय ॥ ३ ॥ परदुः ख नंजन राजवी, जगमें इम कहेवाय ॥ परनारी ते सहोदरु, बिरुद एम देवाय ॥ ४ ॥ ते मारग किम मू कीयें, आपणि जे कुलवट्ट ॥ शील सुरंगुं सेवतां, ल हियें सुख परगट्ट ॥ ५ ॥ शीलें सुर सांनिध करे, शी लें शीतल आग ॥ शीलें अरि करि केशरी, नय जाये सवि नाग ॥ ६ ॥ शीलें मनवंछित फले, शीलें लहे सौनाग्य ॥ शील धर्म जे चित धरे, जाए दुःख दौर्नाग्य ॥ ७ ॥ शील प्रनावें नविजना, चढे चउद गुण ठाण ॥ केवल कमला ते वरे, पामे पद नि र्वाण ॥ ८ ॥ शीलथकी कुण कुण तर्या, ते सुण ज्यो दृष्टांत ॥ मदन वेगने बूझवे, मेहर मंत्रि विख्यात ॥ ए ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ ढाल चोथी ॥

॥ बिंदलीनी देशी ॥ एतो शीलनो महिमा म होटो, सहि नांखे त्रिशलानो ढोटो रे ॥ नरपतिजी निसुणो ॥ ए तो शीलथी लील विलास, शीलें पहों चे सघली आश रे ॥ न० ॥ १ ॥ ए तो जे नर शी लने पाले, ते आतम नव अजुवाले रे ॥ न० ॥ जे धरे शीलशुं राग, ते पामे नवोदधि ताग रे ॥ न० ॥ २ ॥ ए तो शील छे कुलनुं आभरण, शील टाले कर्म आवरण रे ॥ न०॥ ए तो शील छे कुलनुं रूप, शीलें माने सुर नर नूप रे ॥न०॥ ३ ॥ ए तो शीलथी शुक्ल ध्यान, शीलें पामे केवल ज्ञान रे ॥ न० ॥ ए तो शीलशुं रहे एक तान, शिव रमणी दे तस मान रे ॥ न० ॥ ४ ॥ ए तो शील छे गुणनुं निधान, शी लें पामे स्वर्ग विमान रे ॥ न० ॥ ए तो शीलें संकट नांजे, शीलें ते हरि ज्युं गाजे रे ॥ न०॥ ५ ॥ ए तो शीलें कुंअर श्रीपाल, तस कोढ गयो ततकाल रे ॥ न० ॥ ए तो शीलें सुदर्शन शेठ, शूलि फीटी सिंहा सन बेठ रे ॥ न० ॥ ६ ॥ ए तो शीलें जंबू स्वामी, लघुवयमें थयो शिवगामी रे ॥ न० ॥ ए तो शीलें नेम कुमार, थयो शिवरमणी उरहार रे ॥ न० ॥ ७ ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

ए तो शीलें मेघकुमार, जेणें ढंमी आठे नार रे ॥ न० ॥ ए तो शीलें गयसुकुमाल, शिवपदवी लही सुरसाल रे ॥ न० ॥ ८ ॥ ए तो शीलें थूलिनद्र नाम, राख्युं चिहुं जगमें अभिराम रे ॥ न० ॥ ए तो शीलें श्रीमल्लिनाथ, ए तो मुगतिवधू करि हाथ रे ॥ न० ॥ ए ॥ ए तो शीलें सीता नारी, करी धीजतां शीलें समारी रे ॥ न० ॥ ए तो शीलें सुनद्रा सुहाडी, जेणे चंपा पोल उघाडी रे ॥न०॥१०॥ ए तो द्रुपदी पांमव केरी, जेणें कौरवें लज्जा उवेरी रे ॥ न० ॥ ए तो तेहने शील प्रजावें, सुर सत अष्ट चीर पहेरावे रे ॥ न० ॥ ११ ॥ ए तो शीलवती सुकुमाल, अहि फीटी थइ फुलमाल रे ॥ न० ॥ ए तो शीलें चंदनबाला, वीरें करी झाक झमाला रे ॥ न० ॥ १२ ॥ ए तो इत्यादिक अवदात, कहुं शीलनी केती आख्यात रे ॥ ॥न०॥ जे पाले शील नर नारी, हुं जाउं तस बलिहारी रे ॥न०॥१३॥ कुशीलियो किहां न खटाय, कुक्कर ज्युं धक्का खाय रे ॥न०॥ कुशीलने काढे कूटी, जिम घर मांथी हांमी फूटी रे ॥ न० ॥ १४ ॥ कुशीलनो नावे विसास, कुशीलियो फरे थइ दास रे ॥ न० ॥ कुशीलियो गति नवि पामे, जाये नरक निगोदने गामें रे

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ न० ॥ १५ ॥ कुशीलियो सघले नमाय, चोविश दंमकें दंमाय रे ॥ न० ॥ कुशीलनां कर्म अघोर, न वो नवें फिरे थई चोर रे ॥ न० ॥ १६ ॥ मंत्र यंत्र नें विद्या जेह, कुशीलने न फले तेह रे ॥ न० ॥ सिद्ध साधक नाम धरावे, कुशीलने जस कदि नावे रे ॥ न० ॥ १७ ॥ माहादेव जे देव कहाय, सरगथी मरि नरकुं जाय रे ॥ न० ॥ अहिल्याकुं इंद्र जे लुब्धो, तो सहस्रभगो नाम दीधो रे ॥ न० ॥ १८ ॥ कुल वालुउ साधु कहातो, गुरु शोहित किम जातो रे ॥ न० ॥ ते गयो गणिका संगें, बठी नरकें कुशीलने ढं गें रे ॥ न० ॥ १ए ॥ वर्ष सहस ते चारित्र पाली, कुं मरीकें तप परजाली रे ॥ न० ॥ ते मरीनें एकण रा तें, जइ बेठो नारकी पांतें रे ॥ न० ॥ २० ॥ कुशील नी करणी खोटी, करतो फरे नानी महोटी रे ॥ न० ॥ कुशीलनुं तप जप फोक, वध बंधन लहे फल रोक रे ॥ न० ॥२१॥ स्वदारा दिल नवि आवे, कुशीलियो उखर खावे रे ॥ न० ॥ ए तो जेहने जे पडी हेवा,तेह नी जाए टेव मरेवा रे ॥न०॥२२ ॥ ते माटे तुमें मही नाथ, ढंमो परस्त्रीनो साथ रे ॥ न० ॥ कुशीलनुं नाम धराशो, लोकोमें हांसुं कराशो रे ॥ न०॥ २३ ॥ दिल

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

साबुत राखो राजा, खत्रीवटनी राखो माजा रे ॥ न० ॥ ए तो तुमें बो प्रभुने वाला, इण वातें मत थाउ काला रे ॥ न० ॥ २४ ॥ ए तो वसंतसिरी जे बाला, तुमें न करो एहशुं चाला रे ॥ न० ॥ जाये जनम ते जशने कमातां, पण वार न लागे जश जातां रे ॥ न० ॥ २५ ॥ ए तो परदेशी थई बूटें, पण मही मां तुम जग खूटे रे ॥ न० ॥ इम मंत्री तें परचावे, पण नृपने दिल कांइ नावे रे ॥ न० ॥ २६ ॥ मंत्रीयें जे कही वातो, ते सांजली नृप हुउ तातो रे ॥ न० ॥ तव मंत्री थयो खिसियाणो, साहामुं नृप रोषें जराणो रे ॥ ॥ न० ॥ २७ ॥ हवे सुणजो जे नृप बोले, मंत्री आगल पोथुं खोले रे ॥ न० ॥ ए तो बीजा उल्लासनी ढाल, कही चोथी लब्धें रसाल रे ॥ न० ॥ २८ ॥ इति ॥

॥ दोहा ॥

॥ वयण सुणी मंत्री तणां, नृपने लागी हिंग ॥ जूतजराड ते नृप थयो, जाणे लागु विंग ॥ १ ॥ हित शीखामण देवतां, नृपने ऊठी फाल ॥ आगें अहि छंछेडियो, तिम हुवो नृप विकराल ॥ २ ॥ आगें वानरने वली, विछीयें चटको कीध ॥ आगें केशरीने वली, श्वाननुं बिरुद ते दीध ॥ ३ ॥ तिम नृप मंत्री उपरें,

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

कोपाकुल थइ राय ॥ मदनवेग तिहां सचिवशुं, बो ल्यो चकुटी चढाय ॥ ४ ॥ रे मंत्री हुं जाणतो, तुझ नें चातुर कोक ॥ बे दाणा तुझमें नही, जे बोले ते फोक ॥ ५ ॥ तें किम जाण्या कुशीलिया, करणी हीणा जेह ॥ परस्त्री गमन किया पछें, स्वर्गें पहोता केह ॥ ६ ॥ ते सांभल तुझने कहुं,शास्त्र तणे अनुसार ॥ व्रत नांगी ते मुनिवरा, पाम्या नवनो पार ॥ ७ ॥

॥ ढाल पांचमी ॥

॥ जीणा मारुजीरी करहलडी ॥ ए देशी ॥ नूनेता कहे सचिवने, सांभल तुं एकंगो थइने कान उघाडी हो राज ॥ चोविश वर्ष घरे रही, मुनिवर आर्द्रकुमारें व्रत ने लाज लगाडी हो राज ॥१॥ ते गयो ज्योति आगा रमें, सिद्ध वधूना संगमें जइ सुख भोगवे पूरां हो राज ॥ साख भली तस ए कही, श्रीवसुदेवनी हिंम में अक्रूर जो तुं सनूरा हो राज ॥ २ ॥ श्रेणिक रायनो कुंवरुं, नामें नंदिखेण जे बलियो थइ व्रत ली नो हो राज ॥ तेणें पण व्रत भांजाने,गणिकाशुं घर मांहि रह्यो रंग भीनो हो राज ॥ ३ ॥ बार वरस सुख भोगवी, अजरामर पद लहियो करणी सहु ज ग जाणें हो राज ॥ माहानिशीथ जे सूत्रमां, साख

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

नली जाणजे मंत्री लिखित प्रमाणें हो राज ॥ ४ ॥ पापी चिलाती पुत्र जे, स्त्री हत्या जिणें कीधी महोटी कामें व्याप्पो हो राज ॥ ते गयो सुर लोक आतमे, साख नली तुं जाणजे श्री योगशास्त्रें उपायो हो राज ॥ ५ ॥ आषाढनूति अणगार जे, नाटकणीने साथें बार वरस घर मांड्यो हो राज ॥ साख नली तस चरित्रमां,ते गयो शिवगति मांहे जाणी जे व्रत खंड्यो हो राज ॥ ६ ॥ चंड्शेखर विद्याधरु, ते निज नगि नि साथें निशिदिन रंगें रमतो हो राज ॥ ते लह्यो मुगतिवधू प्रिया, श्रीसेत्रुंजो माहातम साखी ढे मन गमतो हो राज ॥ ७ ॥ चक्री नरत नरेसरु, गंगा दे वीने घेर रहियो थइ सुखवासी हो राज ॥ सहस व रस सुख नोगवी, नुवन आरीसामांहे पाम्या ज्ञान उल्लासी हो राज ॥ ८ ॥ अष्टापद गिरि उपरें, रुषन जिणेसर साथें मुगति पुरीयें पुहता हो राज ॥ तेनी साख तुं जाणजे, जंबुदीवपन्नत्तिमांहे अक्षर सुहता हो राज ॥ ए ॥ नामें एलाची जाणीयें, नाटकणीनी लारें नटक्यो प्रेम विलुड्यो हो राज ॥ केवल रयण ते पामिने,मुगति पुरीमें जइने बेगो नि र्नय सूधो हो राज ॥१ ०॥ गज सुकुमालिका साधवी,

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

शशक मसक दो जाइ तेहनी बहेन कहाणी हो राज ॥ चिरकाल सुधी ते साधवी, सारथवाहनी घरणी थइ रही उपगार जाणी हो राज ॥ ११ ॥ ते थइ आर्या कुशीलणी, अणसण खंमी पहोती तेहिज नव सुरलोकें हो राज ॥ तेहना परगट अक्षरा, श्री उपदेशनी मालामांहे वांची जोकें हो राज ॥ १२ ॥ ब्रह्मा ध्यानें चूकव्या, नाटारंभ देखाडी रंजायें नो लव्यो ब्रह्मा हो राज ॥ चिहुंदिशि चउमुख नी पनां, गर्दननुं मुख प्रगटयुं पांचमुं उपजे शर्मा हो राज ॥ १३ ॥ मारग जातां ब्रह्मायें, वनमें दीठी रींछडी मीठी मनमें लागी हो राज ॥ तेहशुं अभिलाष सेवतां,रींछऋषि तें रींछडी पेटें उपनो सागी हो राज ॥ १४ ॥ ब्रह्मपुराणें ते ब्रह्माने, परमेसर करि माने दुनियां एकण ध्यानें हो राज ॥ तारक जग परमेसरु, निज पुत्रीशुं विलसे रंगें थइ एक तानें हो राज॥ १५॥ उमया नारी उवेखीनें, जटामध्यें ठानी राखी ईश्वरें गंगा हो राज ॥ तारक जाणी शंभुने, वरण अढार जे मानवि रुइने पूजे एकंगा हो राज ॥ १६ ॥ पुत्री उंखा देखीने, त्रिनेत्री थयो शंकर तिण दिनथी गव राणो हो राज ॥ लिंगपूजा थइ तिण दिनथी, लिंग

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

पुराणें चावो अक्रूर जे सपराणो हो राज ॥१७॥ विष्णु पुराणें विष्णु जे, कान गोवाल थइने लोकमांहे पूजा णो हो राज ॥ बत्रीस सहस अंतेउरी, ते बंभी मही यारी राधा साथें गवाणो हो राज ॥१८॥ कुंता पांडु नृप तणी, लघुवयमें कुमारी सुरज देवे विलसी हो रा ज ॥ करण थयो ते उदरनो, जग चकु ते देवनी सद्दु जग माने उजसी हो राज ॥१९॥ ए अवदात जे में कह्या, करमां दीपक लेइ देखी कूप केइ पडिया हो राज ॥ बल वंतमांहे शिरामणि, ते सरिखा पण बलिया गलिया कर्में नडिया हो राज ॥ २० ॥ तो माहारो कोण आशरो, तिन जुवनमें सर्वने कर्में मुक्या चूणी हो राज ॥ जे पवनें गज उडिया, तेणे पवनें करी धाई मोकरी लेवा पूणी हो राज ॥ २१ ॥ कुगति सुग ति जे पामवी, ते करणी जे सघली जवितव्यताने हाथें हो राज ॥ जे जे समयें प्राणीयें, शुनाशुनना बंध जे बांध्या ते आवे साथें हो राज ॥ २२ ॥ उग्र त पस्यानो धणी, जितारि नृप जिननो रागी पूरण हु तो हो राज ॥ ते मरीने थयो सूअडो, किहां गइ कर णी तेहनी तिरियंच गतिमां पहोतो हो राज ॥ २३ ॥ ॥ ए अधिकार तुं जाणजे, श्री शेत्रुंजा माहातम मांहें

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

वे ए साखी हो राज ॥ करणीनुं कारण को नही, नवितव्यतानुं कारण सघले जिन वाणी नांखी हो राज ॥२४॥ नवस्थिति पूरी थया विना, उद्यम जीव करे पण लेखे कदिय न आवे हो राज ॥ माली सीं चे सो गणां,पण तेहनी उतावलें ऋतु विना फल नवि पावे हो राज ॥२५॥ तिम आपणी उतावलें, समकित रयण विना किम नवस्थिति पाकी जाय हो राज ॥ घणुंअ नूख्यो पण शुं करे, लाख उतावल करी यें बे करथी न जमाय हो राज ॥ २६ ॥ तिम द्रव्य क्रियाथी न उघडे, नावक्रिया जब न्यंतर प्रगटे तब शिव पावे हो राज ॥ जिहां सुधी समकित नवि ल ह्युं, तिहां सूधी ते जीवने चिहुं गति कर्म नमावे हो राज ॥ २७ ॥ द्रव्यथी उघा चरवला,एकठा कीधा जीवें मेरु जेवडा ढगला हो राज ॥ तो पण गरज सरी नही, नाव विना जे किरिया कीधी दंनी ज्युं बगला हो राज ॥ २८ ॥ ते माटें मंत्री तुमें, शील कुशील नुं कारण कोइ इहां मत गणजो हो राज ॥ पांचे कारण जब मिले, नवितव्यताने जोगें शुनाशुन तव नणजो हो राज ॥ २९ ॥ एहवो उत्तर मंत्रीने, मद नवेगें दीधो चोखो हाथमें लाडु हो राज ॥ वली

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

कहे सांभल मंत्रवी, तुझ करणी विगतावी ताहरा का न उघाडुं हो राज ॥ ३० ॥ लव्धें बीजा उल्लास मां, मंत्रीने समझाव्यो भलि परें पांचमी ढालें हो राज ॥ हवे सुणजो भवियण तुमें, आगल शी शी वा त निपजे ते उजमालें हो राज ॥ ३१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ रे मंत्री हुं ताहरां, जाणुं सयल चरित्र ॥ पा पड खाई पदमशी, तुं थयो महोटो पवित्र ॥ १ ॥ पट्टा खाउं अम तणा, व्यो वलि लोकां लांच ॥ लें वा देवा मापलां, राखो कूडां साच ॥ २ ॥ कूड कप ट हृदयें धरी, बोलो मीठा बोल ॥ धोले दिन धूतो घणुं, राखी कूडां तोल ॥ ३ ॥ परनिंदा करता फरो, पारकुं ताको छिद्र ॥ साची जूठी करो घणी, काढो जूना कुछ ॥ ४ ॥ अम उपरालें लोकने, द्यो लेखणनो मार ॥ घेरें वींटो परजने, देवो दुःख अपार ॥ ५ ॥ अमें उंसरीयें पापथी, तुमें न उंसरो कोय ॥ मरण बीक राखो नही, जाती दृषद ज्युं होय ॥ ६ ॥ पर उपदेश देवा घणुं, माहापण राखो ठीक ॥ आप न जा ये सासरे, दिये परायां शीख ॥ ७ ॥ निज अवगुण जोवो नही, पर अवगुण तुम लेय ॥ पापनी बांधी

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

गांठडी, हींमो शीश धरेय ॥ ८ ॥ चंदन नार गर्दन शिरें, जाणे लोकें दीध ॥ नारोद्वाह गर्दन थयो, प ण चंदन स्वाद न लीध ॥ ए ॥ तिम मंत्री तुं जाण जे, तुझमां एह सनाव ॥ मुझ उपगार जाण्यो नहीं, गर्दन सम थयो गाव ॥ १० ॥ एह वचन महिपति तणां, सांजलि चमक्यो चित्त ॥ मनमां बीनो मंत्र बी, राजा केहना मित्त ॥ ११ ॥ हित शीखामण दें यतां, साहामुं देवे दोष ॥ गोलो गर्दनने हणी, गाम शुं राखे रोष ॥ १२ ॥ महिपतिनुं मन उलखी, बो ल्यो मंत्रि तिवार ॥ हा स्वामी तुमें जे कही, मानुं ते निरधार ॥ १३ ॥ राजा के परमेसरु, जे बोले ते स त्त ॥ एहमें जूठ न संपजे, दोमें ले दैवत्त ॥ १४ ॥ मुखथी साकर घालीने, नृपने कह्यो प्रसन्न ॥ महिपति यें पण मंत्रीने, सनमान्यो सुवचन्न ॥ १५ ॥ सिरपा व देइ वोलावियो, मंत्रीने निज गाय ॥ राज काज शुन चालवे, मदनवेग तिहां राय ॥ १६ ॥ इति ॥

॥ ढाल छठी ॥

॥ काबिलरो पाणी लागणो, काबिल मत चाले ॥ अथवा, धन मेतारज मुनिवरु ॥ ए देशी ॥ एक दिन बेठो मालीये, नृप मदन वेग ॥ वसंतसिरी चित्त

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

सांजरी, तस थयो उदवेग ॥१॥ धिग धिग काम विटं बना, मोहें जोबन जागे ॥ ए आंकणी ॥ मोहनी दुर्जय जीततां, घणुं दोहेलुं लागे ॥२॥धि०॥ तिण अवसरें एक मेहेतलो, कालसेन ते नामें ॥ नृपने नमि अति ढूकडो, बेठो अनिराम ॥ ३ ॥ धि० ॥ मननो मेलो मायावियो, मद नख्यो कंठ सूधी ॥ पण ते सर्प तणी परें, माहा दुष्ट कुबुद्धि ॥ ४ ॥ धि० ॥ नगद आसा मी ले घणुं, जाणे जठरनो मेल ॥ चाडी चुगली क री घणी, काढे लोकनां तेल ॥ ५ ॥ धि० ॥ एहवो कु बुद्धि मंत्रीसरु, पेठो नृपने कानें ॥ हरिबल केरी वा रता, मांमी एक तानें ॥ ६ ॥ धि० ॥ हरिबल कीर्ति विस्तरी, नगरी जन मांहे ॥ ते सांजली मन मेंतलो, रीझें बले तांहे ॥ ७ ॥ धि० ॥ अवसर लेइ कालसेन ते, नृपकान नंजेख्यो ॥ दुर्जन मुख बाणें करी, नृपनुं दिल फेख्यो ॥ ८ ॥ धि०॥ लटपट नृप आगें करे,पा पी परपंच ॥ हरिबलने उठापवा, मांमयो सूधो सं च ॥ ए ॥ धि० ॥ स्वामी शुं जाणो अठो, हरिबलनी वातो ॥ नगरजन सहु वश करी, करशे तुम घातो ॥ ॥ १० ॥ धि० ॥ बत्रीश राजकुली करे, हरिबलनी सेवा ॥ कूडो रचे ले एक मली, तुमचो राज लेवा ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ ११ ॥ धि० ॥ चेतवुं होय तो चेतजो, घाट घडी
यो ठे ऊणे ॥ पठें कहेशो जे कह्युं नही, मुफने तें
कूणें ॥ १२ ॥ धि० ॥ परदेशी अणजाणने, तुमो
दोत बंधावी ॥ ते किम होवे आपणा, सुणो नृपति
गावी ॥ १३ ॥ धि० ॥ वसंतसिरी अप्सर समी, हरि
बलनी ठे लाडी ॥ निज हाथें प्रभुयें घडी, कामिज
ननी ए वाडी ॥ १४ ॥ धि० ॥ ए स्त्री जेणें दीठी न
हीं, तस जनम अलेखे ॥ बे हाथे प्रभु पूजीया, तें
स्त्रीने ए देखे ॥ १५ ॥ धि० ॥ धन्य दिवस धन्य ते
घडी, धन्य वेला तेह ॥ एहवी स्त्री जेने घरे, तस
पुण्य विशेह ॥ १६ ॥ धि० ॥ इणि परें हरिबलनी
करी, चुगली ठल ताकी ॥ मेहेतले डुष्ट कुबुद्धियें,
कांइ बाकी न राखी ॥ १७ ॥ धि० ॥ महिपतियें तें
सांजली, चमक्यो चितमांहे ॥ पगथी मांफी माथा
लगें, नृप परजल्यो दाहें ॥ १८ ॥ धि० ॥ आगें वेरी
कर चढयो, वली करथकी ठूटो ॥ आगें जुहारीनें
बली, मल्यो साथी जूठो ॥ १९ ॥ धि० ॥ आगें सर्प
ठंछेडिने, कर्यो पुंठथी बांफो ॥ आगें अग्नि फालमां,
सिंच्यो घृत मांफो ॥ २० ॥ धि० ॥ तिम नृप हरिबल
ऊपरें, घणुं रोषें नराणो ॥ रे मंत्री हरिबल हणी,

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

तस स्त्री घर आणो ॥ २१ ॥ धि० ॥ तव मंत्री का लसेन ते, कहे नृपने वाणी ॥ स्वामी हरिबलने ह णे, जनमां जाय पाणी ॥ २२ ॥ धि० ॥ पण एक स्वामी उपाय छे, तुम बुद्धि बतावुं ॥ हरिबलने तुमें मोकलो, लंका गढ गावुं ॥ २३ ॥ धि० ॥ जलनिधिमें जातां थकां, वहेशे एह बोलें ॥ तव नारी तुम मं दिरें, आवशे रंगरोलें ॥ २४ ॥ धि० ॥ गकर चाक रनी इहां, साची खबर ते पडशे ॥ तुम आणा ते शिर धरी, लंका गढ चडशे ॥ २५ ॥ धि० ॥ ते माटे तेडी तुमें, हरिबलने पूछो ॥ एम कही घरे मेंहेंतलो, गयो घाली बूंछो ॥ २६ ॥ धि० ॥ लब्धें बीजा उल्ला सनी, कही छठी ढाल ॥ आगल नवि तुमें सांजलो, मीठी वात रसाल ॥ २७ ॥ धि० ॥

॥ दोहा ॥

॥ इणि परें नृप मंत्रीसरु, एक मतो करि दोय ॥ महिपति पहोतो महेलमां,मंत्री गयो घर सोय ॥१॥ बीजे दिन रवि ऊगियो, प्रगट्यो राग विन्नास ॥ शकु नियें बांह पसारीयां, कैरव कीध विकास॥ २ ॥ वा छरुआं वलगां जई, धावाने हर्षेण ॥ दोवा बेसे ना मिनी, जेहने छे घर धेण ॥ ३ ॥ देउल सघले वा

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

जियां, झालरना झणकार ॥ तास शबद सुणतां थकां, रजनी नाठि तिवार ॥४॥ सुद्धन्न बोधी जीवडा, मांफे निज खटकर्म्म ॥ साधूजन मुख मोमती, बांधी हे जिनधर्म ॥५॥ मंगल वाजां वाजियां, वाज्यां गुहिर निशाण ॥ ए करणी परन्नातनी,जब ऊगे शुन्न नाण ॥६॥ मदनवेग नृप तिण समे, परखद मेली एकत्र ॥ बेठो सिंहासन हसी, माथे धरावी छत्र ॥ ७ ॥ खटत्रीस राजकुली मली, वडवडा सोहे सामंत ॥ शेठ सेनापति मंत्रवी, परखद मेलि अत्यंत ॥ ८ ॥ हरिबल पण मंत्रीसरु, बेठो नृपनी पास ॥ बिरुदावलि नृपजन तणी, कविजन बोले उल्लास ॥ ए ॥ रंग विनोदनी वारता,परखदमें करे सार ॥ तिण अवसर नृप बोलियो, मदनवेग तिणि वार ॥ १० ॥

॥ ढाल सातमी ॥

॥ फुंमखडानी देशी ॥ सन्ना समक्षें नृप कहे रें, सांन्नलजो सामंत ॥ सनेहा सांन्नलो ॥ माहरे काम अछे घणुं रे, अध्यवसाय अत्यंत ॥स०॥१॥ वैशाख शुदि पांचम दिनें रे, लीधुं छे लग्न विशेष ॥स०॥ अंगजने परणावता रे, मांफ्यो विवाह विशेष ॥स०॥२॥ उम्मर मध्यें तुम तणुं रे,काम पड्युं छे आज ॥स०॥

॥ स्वामी जक्ता जे हुवो रे, ते सारो मुज काज ॥ स० ॥ ३ ॥ लंका गढ जावुं अछे रे, कहो ते जाशे कोण ॥स०॥ बीडुं छबो ए माहरुं रे,जे खाता होय लूण ॥स० ॥ ४ ॥ लंकापतिने नोतरी रे, तेडी आवे जेह ॥स०॥ माहरी रीझें पामशे रे, लाख वधामणी तेह ॥ स० ॥५॥ राय बिजीषण तेहशुं रे, माहरे छे बहु नेह ॥ स० ॥ शीघ्र जई लगन दिनें रे, तेडी आवो गेह ॥ स०॥ ६ ॥ जो ममता माहरी करो रे, तो मत करजो ढील ॥ स० ॥ शीघ्र थइ बीडुं ग्रही रे, पंथें वहो मेली ढील ॥स०॥७॥ इणि परें महिपति यें कह्युं रे, सजा समक्ष वचन्न ॥ स० ॥ पण बीडुं ग्रहवा जणी रे, कोइ न दीये तन्न ॥ स०॥ ८ ॥ स गी मटा मटिनी परें रे, मौन करी रह्या सर्व ॥ स० मरण तणी बीकें करी रे, मूक्यो सघले गर्व ॥ स० ॥ ए ॥ अधोदृष्टि करी रही रे, सघली परखदा सो य ॥ स० ॥ ऊंची दृष्टें नवि जुवे रे, लज्जाणा सहु कोय ॥ स० ॥ १० ॥ तव कर जोडी मंत्री कहे रे, कालसेन ते डुष्ट ॥ स० ॥ स्वामीयें जे कही वारता रे, सांजली हुआ संतुष्ट ॥स०॥ ११ ॥ पण विषम पंथ आकरो रे, जलधिमें केम जवाय ॥ स० ॥ पग

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

वटें सिद्ध न संपजे रे, भुजाथी न तराय ॥ स० ॥ १२ ॥ गज पाखर जंबुकशिरें रे, नाखी तुमें राजान ॥स०॥ ते किम तिणथी कंधरा रे,उंची थावा निदान ॥ स० ॥ १३ ॥ मतकोटनी कटि उपरें रे, मूकी गोलनी गुण ॥ स० ॥ गात्र विना केम उपडे रे, जे करे गजा विदूण ॥ स०॥ १४ ॥ तिम स्वामी लंका गढें रे, शक्ति विना कुण जाय ॥ स० ॥ पूरो पराक्रमी जे होवे रे, ते जावा अंगमाय ॥ स० ॥ १५ ॥ के वहे लंका देवता रे, के विद्याधर होय ॥ स० ॥ के तपसी साधु जना रे, तो तरे जलनिधि तोय ॥ स० ॥१६॥ बीजानो शो आशरो रे, जलनिधिनो लहे ताग ॥ स० ॥ दशरथसुत एक सांनव्यो रे, जलधियें बांधी पाग ॥ स० ॥ १७ ॥ केवली हरिबलने सुण्यो रे, जे बेठो तुम पास ॥ स० ॥ जावे ए लंका गढें रे, बीडुं उबीने उल्लास ॥ स० ॥ १८ ॥ सबल पुरुष ए जाणियें रे, एहमां छे जगदीश ॥ स० ॥ काज तुमा रुं सारशे रे, पूरशे मननी जगीश ॥ स० ॥ १९ ॥ इणि परें कुमति मंत्रियें रे, नृपने विनति कीध ॥ ॥ स० ॥ सुनट शिरोमणि इण समे रे, दीसे हरिबल सिद्ध ॥ स० ॥ २० ॥ ते निसुणी नृप तिण वेला रे,

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

हरिबलने कहे राय ॥ स० ॥ शीघ्र थई बीडुं ग्रहो रे, जिम मुझ वंछित थाय ॥ स० ॥ २१ ॥ राय बि नीषणने जई रे, तेडि आवजो आंहि ॥ स० ॥ मान शुं मुजरो तुम तणो रे, जीवित सूधी उछाहि ॥ स० ॥ ॥ २२ ॥ तव हरिबल श्रवणें सुणी रे, मनशुं विमा सें आज ॥ स० ॥ जो नाकारो इहां करुं रे, तो न र हे मुझ लाज ॥ स० ॥ २३ ॥ लाजें कप्पड पहेरीयें रे, लाजें दीजें दान ॥ स० ॥ लाजें पंचमें बेसीयें रे, लाजें वाधे मान ॥ स० ॥ २४ ॥ लाजें गढ कोट लीजियें रे, लाजें राखीयें सत्त ॥ स० ॥ लाज वधी मुझ चिहुं जगें रे, किम कहुं ना हवे फत्त ॥ स० ॥ ॥ २५ ॥ इणिपरें मनमां सोचीने रे, बोल्यो हरिबल ताम ॥ स० ॥ लावुं जइ लंकाधणी रे, तो हुं खरो मुझ स्वाम ॥ स० ॥ २६ ॥ मेलवुं तुम लंकापति रे, तो मुझ देजो शाबास ॥ स० ॥ एम कही बीडुं ग्रही रे, हरिबल आव्यो आवास ॥ स० ॥ २७ ॥ थइ नि जपति मुख देखिने रे, वसंतसिरी उजमाल ॥ स० ॥ बीजा उल्लासनी ए कही रे, लब्धियें सातमी ढाल २७

॥ दोहा ॥

॥ हरिबल कहे निज नारीने, सांभल प्यारी मुझ ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

जावुं छे लंका भणी, मानुं आणा तुज ॥ १ ॥ थिर चित्त करी रहेजो तुमें, देजो दान सुपात्र ॥ शील सुरं गुं पालीने,करजो निर्मल गात्र ॥२॥ धरजो ध्यान नव पद तणुं, चउद पूरवनुं सार ॥ समस्या जिम सांनिध करे, आपे शिवसुखकार ॥ ३ ॥ सेवजो गुरु देव एक मनें, जेणे वधारी शर्म ॥ कीडीथी कुंजर कस्या, उल खावी जिनधर्म ॥ ४ ॥ प्रीतम वचन ते सांभली,व संतसिरी कहे एम ॥ शे कारण जावुं पडे, ते कहो जाणुं जेम ॥५॥ तव मांफी हकिगत कही, प्यारी आ गल तेह ॥ तिण कारण जावुं पडे, सांभल तुं ससनेह ॥६॥पियुनुं गमन तेसांभली,कुमरी थइ दिलगीर॥जाणे भाद्रव मेह ज्युं, वरसे आंसु नीर ॥७॥ कालजेको घाली वहो; प्रीतम तुम निसनेह ॥ निशि दिन विरहें तुम विना, बले सुरंगी देह ॥८॥ सघलुं दुःख खमीयें प्रभु, पण विरहो न खमाय ॥ विरहानलनी बाफ जें, पियु विण केम उलाय ॥ ए ॥ तेमाटे प्रीतम तुमें, मत जाउ परदेश ॥ मन किम वहशे मूकतां, मुजने बाले वेश ॥ १० ॥ नृपनुं कारज पियु तुमें, महोटुं लाव्या विंग ॥ लंकापतिनो जाणज्यो, जिहां गयां उंटनां शिंग

॥ ११ ॥ जो प्रितम चालो तुमें, तो मुऊ तेडो संग ॥ टेह ल करेशुं तुम तणी, जोशुं लंका रंग ॥ १२ ॥

॥ ढाल आठमी ॥

॥ आसणरा योगी ॥ ए देशी ॥ तव प्रीतम कहे सांजल प्यारी, मुऊ तुं छे मोहनगारी रे ॥ सुंदरी स सनेही ॥ तुऊ मुख देखि हुं सुख पाउं, तुऊ निशि दि न चितमें ध्याउं रे ॥ १ ॥ सुं० ॥ प्राणथकी छे तुं मुऊ वाहाली, जिम चंद्रने रोहणी वाहाली रे ॥ सुं० ॥ तुं मुऊ चित्रावेल समानी, तुं मुऊ बुद्धि निधानी रे ॥ २ ॥ सुं० ॥ जव थइ ते प्रजुनी महेरबानी, प्री तडी तुऊशुं वानी रे ॥ सुं० ॥ लेख लिखित थयो तुऊशुं मेलो, थयो संबंध पुण्यें मेलो रे ॥ ३ ॥ सुं० ॥ अहोनिश लालच रहे तुऊ केरी, घणुं घणुं करि कहुं शुं फेरी रे ॥ सुं० ॥ तुऊने मुकतां मन नथी कहेतो, पंथें चालतां पग नथी वहेतो रे ॥ ४ ॥ सुं० ॥ पण शुं करीयें नृपनी सेवा, करवी पडे पेटनी हेवा रे ॥ सुं० ॥ जो नृपनुं कहुं नवि करियें, तो नृपनो जश किम वरियें रे ॥ ५ ॥ सुं० ॥ जेहना घरनो को लियो खावो, तस घरनो धोलो बंधावो रे ॥ सुं० ॥ ए संसारमें रीति छे सघले, काम कीधे जस वधे स

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

बले रे ॥ ६ ॥ सुं० ॥ ते माटे तुं सुंदरी मोरी, मुने आणा दे हवे तोरी रे ॥ सुं० ॥ शीघ्रगतें जई आविश वहेलो, नृपनुं लगन ते पहेलो रे ॥ ७ ॥ सुं० ॥ तव रमणी कहे सांजल प्यारा, तुम हेज लताना क्यारा रे ॥ प्रीतम ससनेही ॥ मुज वखतें तुमे सुरपति सरिखा, मल्या ठो पुण्यें आकर्ष्या रे ॥ ८ ॥प्री०॥ जगती जोतां प्रजु तुमें जडिया, सुरमणि सम मुज कर चडिया रे ॥ प्री० ॥ सुकृतवल्लि फली सुखदायी, थइ तुमथी साची सगाई रे ॥ ९ ॥ प्री० ॥ में तुमशुं जे पालव बांध्यों, जीवित सुधी नेहलो सांध्यो रे ॥ प्री० ॥ हवे मुज प्रेम पयोधिमें नाखी, केम जाउं ठेहलो दाखी रे ॥ १० ॥ प्री० ॥ वसी मुज हृदयें थया परदेशी, तन मनना सोदागर वेशी रे ॥ प्री०॥ नाखी मुजने प्रेमनी फांसी, बेग चालवा मूकी निराशी रे ॥ ११ ॥ प्री० ॥ मुज सरिखी नारी कां मूको, नृप मंत्रीने वयणें कां चूको रे ॥ प्री० ॥ एहवो कुण मूरख ठे जांजी, जे पय मूकी पीये कांजी रे ॥ १२ ॥ प्री० ॥ ते जखाणो प्रजु तुमें मेल्यो, पठे बीजानो अविहेलो रे ॥ प्री० ॥ में तुमने कहि आगें चितारो, नृप जमतां वात संजारो रे ॥ १३ ॥ प्री० ॥ ते फल

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

लग्यां तुमारां वाव्यां, निज करनां घड्यां हइए लाव्यां रें ॥ प्री० ॥ ते कारण लंकायें जावुं, नृपें कीधुं चूक ते चावुं रे ॥ १४ ॥ प्री० ॥ डुर्जन नृप मंत्री पड्यो केडें, पण कोइक दिन ते वेडे रे ॥ प्री० ॥ सांजलो प्रीतम हुं तुम जांखुं, नीतिशास्त्रमें जे कह्युं दाखुं रे ॥ १५ ॥ प्री० ॥ एतां सूनां कदीय न मूके, जे माह्या ते नवि चूके रे ॥ प्री०॥ स्त्री धन पुत्र जे राज सुहर्मे, सूनां मूक्यां ए न रहे शर्म रे ॥ १६ ॥ प्री० ॥ ते मा टे तुमें सांजलो स्वामी, तुम वीनवुं अंतरजामी रे ॥ प्री० ॥ बहुश्रुतने करी वचनें वहीजें, डुर्जनथी दूर रहाजें रे ॥ १७ ॥ प्री० ॥ निज नारीनें साथें लीजें, पीयु प्रेम सुधारस पीजें रे ॥ प्री० ॥ कामिनी जाणे कंथ विहूणी, जेम दीसे लांगी दूणी रे ॥१८॥ प्री० ॥ कंत विना नारी नवि शोजे, पग पग लहे दो ष ते लोजे रे ॥ प्री० ॥ कंथ विना स्त्री दीन समान, जिहां जाय त्यां न लहे मान रे ॥ १९ ॥ प्री० ॥ पियु विण स्त्रीने मंदिर मांहे, घडी जंप वले नहिं क्यांहे रे ॥ प्री० ॥ पियु विण पहेरवा जे शणगारा, ते तो लागे जाणे अंगारा रे ॥ २० ॥ प्री० ॥ पियु डा विण ते सुखनी सेज, जाणे लागे कौअच रेज

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

रे ॥ प्री० ॥ केइ लख लाख मंदिर जन नरिया, केइ कोडि सखि परवरीया रे ॥ २१ ॥ प्री० ॥ पण ते प्रिय विण न लागे नीका, जिम घृत विण जोजन फीकां रे ॥ प्री० ॥ धन्य ते नारीनो अवतार, जस मंदिर रहे नरतार रे ॥ २२ ॥ प्री० ॥ शा अवगुण तुमें मुऊमें दीठा, विण खुनें वहो थइ धीठा रे ॥ प्री० ॥ तुमथी तिरियंच पंखी रूडां,दूरें न रहे स्त्रीथकी सूडा रे ॥ २३ ॥ प्री० ॥ चार पहोरनो रह्यो जो अंतर, तो फूरे खग निरंतर रे ॥ प्री० ॥ तो केम तुमें निसनेही थावो, निज स्त्री विण लंका जावो रे ॥ २४ ॥प्री०॥ के शुं माहरो मोह उतारी, नौतन कोइ नारी संनारी रे ॥ प्री० ॥ के शुं लंका मसलुं काढी, जाउं परणवा दूजी लाडी रे ॥ २५ ॥ प्री० ॥ तुम चित्तनी पियु कल नवि सूझे, ए तो केवली विण कुण बूझे रे॥प्री०॥ तो दूवे तुमने वेगला न मूकुं, निज स्वामीनी सेवा न चूकुं रे ॥ २६ ॥ प्री० ॥ जो मुऊने साथें नवि तेडो, पण हुं किम मेलिश केडो रे ॥प्री०॥ कायानी छाया पेरें वलगी, केम रही शकुं तुमथी अलगी रे ॥ २७ ॥ प्री० ॥ एणी पेरें नारी प्रेम विलुधी, करी विनति

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

पियुने सूधी रे ॥ प्री० ॥ बीजा उल्लासनी आठमी ढालें, कही लब्धि रंग रसालें रे ॥ प्री० ॥ २८ ॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे हरिबल कहे नारीने,सांभल तुं गुण गेह॥ प्राणजीवन मुऊ तुं अछे,हुं केम देइश छेह ॥१॥ पालव बांधी ताहरो, डुर्मन केम थवाय ॥ राखुं जो वहेरो तुऊथकी, तो मुऊ प्रजु डुहवाय ॥ २ ॥ ते किम हुं करुं सुंदरी, तुऊथी दिल बदलाय ॥ देखी पेखी मक्षिका, जीवति केम गलाय ॥ ३ ॥ पण कोय दैवना योगथी, पूरव नव मेलाप ॥ अणचिंतित जो स्त्री मले, तो तस करवुं माफ ॥४॥ तुऊथी उपर वट थइ, नवि जांगुं तुऊ आण ॥ छेह न दाखुं तुऊ जणी, ऊगे पच्छिम जाण ॥५॥ साथें तुऊने तेडतां, नथी पूरव तुं गुज्ज॥ स्त्री ते पग बंधण अछे,पंथें हुं कहुं तुज्ज ॥६॥ मत जाणे तुं मन्नमें, प्रीतम देशे छेह ॥ एकज मास ने अंतरे, आविश हुं ससनेह ॥७॥ ते माटे थिर चित्त करी, रहेजो थइ सावधान ॥ दान सुपात्रें पोखजो,धरजो अरिहंत ध्यान ॥ ८ ॥ शीख जलामण इणि पेरें, वसंतसिरीने दीध ॥ लंका गढ जावा जणी, हरिबल मुहूरत लीध ॥ ए ॥ चैत्र शुदि एकम दिनें, शुज

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

कारी नृगुवार ॥ रमणीने राजी करी, हरिबल चा
ले तिवार ॥ १० ॥ तव कुमरी कहे कंथने, वरसति
आंसु धार ॥ पियुजी पूरण प्रीतडी, मत मूको
विसार ॥ ११ ॥ मंदिर एकलां नवि गमे, सूतां सूनी
सेज ॥ अवधी उपर आवशो, तो जाणशुं तुम हेज ॥
॥ १२ ॥ प्राणवल्लभ नहि वीसरो, अध घडी आत
मराम ॥ शीघ्रगतें तुम आवजो, करीने रूडां काम
॥ १३ ॥ प्रीतमजी तुमें सिद्ध करो, वड ज्युं विस्तर
जोह ॥ उंबर केरां वृक्ष ज्युं, थडथी तुमें फलजोह ॥
१४ ॥ इम आशिष ते देइने, वोलाव्यो नरतार ॥ हरि
बल पण शिख मागवा, पहोतो नृप दरबार ॥१५॥

॥ ढाल नवमी ॥

॥ राम सीताने धीज करावे रे ॥ ए देशी ॥ नृपने
जइ प्रणिपत कीधी रे, सहु साथनी आगना लीधी रे
॥हवे हरिबल लंकायें चाले रे,नृप जन बहु वोलावा
हाले रे ॥१॥ शकुने पण बांहिज दीधी रे,लीधी वाट लं
कानी सीधी रे ॥ घणी नूयें वोलावी वलिया रे, नृप
मंत्री दो हर्षे नलिया रे ॥ ३॥ पय मंजारी देखी ज्युं
हरखे रे, तिम महीपति मनमें वरशे रे ॥ जाणे नृ
प चिंतव्युं थाशे रे, मुझ वसंतसिरी घेर आशे रे ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

३ ॥ जे कहेशें ते विध करशुं रे, मनवंछित सुख ते वरशुं रे ॥ एम चिंतवी नृप घरे आवे रे, निज मन शुं बुद्धि उपावे रे ॥ ४ ॥ मन गमता मीठा मेवा रे, जेह खाता लागे हेवा रे ॥ द्राख रायण आंबा केलां रे, दीठां दाढ गले तिण वेला रे ॥५॥ बेअ बदाम नि मजां पिस्तां रे, मुख देतां न लागे सस्तां रे ॥ इत्यादि क मेवा वारु रे,मेले वसंतसिरीनी सारु रे ॥६॥ करे मिशरीना पकवान्नरे, बेठा जोग लिये जगवान रे ॥ दूध पेंडाने घृत पूर रे, चढे खातां दांते शूर रे ॥ ७ ॥ सिंह केसरीया ने जलेबी रे,खातां नूर वधे ते सतेबी रे॥ एम सुखडी मेली ताजी रे, जिम वसंतसिरी होवे रा जी रे ॥ ८ ॥ चुवा चंदन अरगजा ताजां रे, मुखमू लां अंतर जाजां रे ॥ केइ सुगंध द्रव्य अणायां रे, श तपाक ते तेल बणायां रे ॥ ए ॥ तिल मात्र जो व स्त्र लगावे रे, चिहुं दिशि परिमल पसरावे रे ॥ जाणे सुगंधपुरी वसाई रे, जोगी जनने सुख दाई रें ॥ १० ॥ एणी पेरें सुगंधी चूवा रे, सींसा जरिया नव नवा जूवा रे ॥ नृप जाणे कुमरी रीझे रे, मुझ काज शीघ्र ते सीझे रे ॥ ११ ॥ बहु जारे चीर अ णावे रे, झरतारी शालु मगावे रे ॥ कसबी मशरु एक

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

तारी रे, पंचरंगी मसजर नारी रे ॥ १२॥ हेम रयण में घाट सुघाट रे, मेले आनूषणना थाट रे ॥ रम णीना जे शृंगारा रे, नृप मेले ते श्रीकारा रे ॥ १३ ॥ एणी पेरें सामग्री मेली रे, नरी ढाबमें सघली नेली रे ॥ ते उपर ढगाड ढांकी रे, करी मुश को न जाय फांखी रे ॥ १४ ॥ हवे दासी जे चतुरा माही रे, कामी जनने मूके जे वाही रे ॥ तेहने तेडी नृप नां खे रे, निज चित्तनी वारता दाखे रे ॥ १५ ॥ तुमें जावो हरिबल गेहें रे, जिहां वसंतसिरी ढे नेहें रे ॥ जइने तुमें ढाब ए सूंपो रे, कहेजो नृपें मूकी ए चूपो रे ॥ १६ ॥ सुललित वचनें करी कहेजो रे, तेहनुं म न वश करी लेजो रे ॥ घणी शी रे नलामण दीजें रे, तस अमृतफलरस लीजें रे॥ १७ ॥ ते वात वधाम णी वहेली रे, लेइ आवजो दी ढतां पहेली रे ॥ एम शीख नलामण दीधी रे, दोय दासीने विदाय कीधी रें ॥ १८ ॥ दासी पण ढाब ने लेई रे, पहोती हरिब ल घेरें बेई रे ॥ जिहां बेठी हरिबल नारी रे, मूकी ढा ब ते आगल सारी रे ॥ १९ ॥ कहे दासी मधुरी वाणी रे, नृप मूकी ए तुमने जाणी रे ॥ तुम उपर ढे घणो नेह रे, घणुं शुं कहियें गुणगेह रे ॥ २० ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

जिण दिनथी तुम घेर आव्या रे, तिण दिनथी तुमें दिल नाव्यां रे ॥ नलां नोजन जव तुमें प्रीस्यां रे, तिण वेलाथी नृप दिल ढींस्यां रे ॥ २१ ॥ देखी तु मची सुघडाइ रे, नृप चाहे तुमने सदाइ रे ॥ ए कला लच रहे तुम केरी रे, जिम लोनीने नाणा केरी रे ॥ २२ ॥ तुम विरहें करी नृप फूरे रे, राज काज ते मू क्यां दूरें रे ॥ जेम योगी प्रनुने ध्यावे रे, तेम नृप तुम नाम जपावे रे ॥ २३ ॥ इम राखे एकंगी तुम शुं रे, मन मेल करो तुमें नृपशुं रे ॥ सरिखा सरि खो मल्यो जोडो रे, नृपशुं तुमें तान म तोडो रे ॥ ॥ २४ ॥ बाइ तुम मोहोटी पुण्याइ रे, नृपशुं थइ प्री त सगाइ रे ॥ ए वात विधातायें मेली रे, जाणे पय मां साकर नेली रे ॥ २५ ॥ तुमें जो कहो सारंगनय णी रे, नृप आवे तुम घरे रयणी रे ॥ इण वातें ला ज ले तुमने रे, राजी करी बोलावो अमनें रे ॥ २६ ॥ एम दासीनी सांजली वाणी रे, तव कुमरी रोषें नरा णी रे ॥ जिम लागे विंढीनो चटको रे, तिम कुमरी ने लागे नटको रे ॥ २७ ॥ हवे सुणजो कुमरी व्या पे रे, शेर सुखडी दासीने आपे रे ॥ एतो बीजा उ ल्लासनी ढाल रे, लब्धें कही नवमी रसाल रे ॥ २८॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ दोहा ॥

॥ हवे कुमरी कोपें करी, दे दासीने मार ॥ निं दे तिम जीवित लगें, गडदा पाटु प्रहार ॥ १ ॥ ना ठी जीवित लेइने, चतुरा माही जेह ॥ नृप आगल आवी कहे, सघली मांमी तेह ॥ २ ॥ नासंत नू नारे थइ, केती कहुं माहाराज ॥ लहेणेथी देणे प डी, ए फल लह्युं तुम काज ॥ ३ ॥ स्वामी तुम प रसादथी, जडियो कुंदीपाक ॥ साजी हलदर सेवशुं, तव होशे तन चाक ॥ ४ ॥ स्वामी हरिबलनी प्रिया, दीठी बडी कुपात्र ॥ जाणे कौआचवेलडी, घर सर खी नही यात्र ॥ ५ ॥ ते माटे प्रभुजी सुणो, ए नावे तुम हाथ ॥ एहथी मनडुं वाल जो, कर जोडी कहुं नाथ ॥ ६ ॥ एह वचन दासी तणां, सांभलि नृप उलझाय ॥ हा हा में ए शुं कर्युं, इम नृप धोखो क राय ॥ ७ ॥ शी मनमें धारी हती, दैवें शी करी वा त ॥ नृप कन्या परसादथी, व्याघ्रें द्विज नव्हात ॥ ८ ॥ जाण्युं हतुं वश आवशे, हरिबल केरी नारि ॥ पण साहामुं इणि नारियें, उताखुं नृपवारि ॥ ए ॥ हाणि अने हांसी बहु, थइ नृप चिंते एम ॥ एह डख के हने दाखवुं, होतें दाधो जेम ॥ १० ॥ इम नरपति

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

फूरण करे, सांजलि दासी वेण ॥ ते दिन क्यारें आ वशे, देखशुं ते स्त्री नेण ॥ ११ ॥ वलि बीजी फरि मोकलुं, जेह विचक्षण होय ॥ दृष्ट सरीखा मान वी, निजवी आणे सोय ॥ १२ ॥ तव पटराणी नि जप्रिया, प्रीतिमती गुण गेह ॥ तेहने तेडी नृप क हे, सांजल तुं ससनेह ॥ १३ ॥ कारज एक तुमशुं अछे,सुगुण लही कहुं तुझ ॥ हरिबल केरी जे प्रिया, मेलव आणी गुझ ॥ १४ ॥ तव राणी कहे कंतने, सांजलजो महिनाथ ॥ प्रीति वधारी पलकमें, लेइ सोंपुं तुम हाथ ॥ १५ ॥ एम कही ऊठी तुरत, बीडुं ढबि तिण वार ॥ चाली हरिबल मंदिरें,राणी लेइ प रिवार ॥ १६ ॥

॥ ढाल दशमी ॥

॥ सूरती महिनानी देशी ॥ हवे कुमरी अमरी प रें, बेठी महोल मझार ॥ निज सखीयांशुं परवरी, करती केलि अपार ॥ तिण अवसर नृपराणी रे, जे गुणखाणी रे सार ॥ आवती दीठी रे मीठीयें,वसंत सीरीयें तिवार ॥ १ ॥ कुमरीयें जाण्युं जे में हणी,दा सीने काढी रे सोथ ॥ क्रोध वशें जे में हणी, तेहनी आवी ए जोथ ॥ खीज्यो नृप तव जाणी रे, मूकी ए

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

राणीने धाय ॥ इम कुमरी मन चिंतवी, लटपट मांग्यो उपाय ॥ २ ॥ तव कुमरी सनमुख जइ, राणीने नीडी रे बाथ ॥ अंगोअंग मलीन रे, चरणे नमे सहु साथ ॥ आगत स्वागत राणीनी, कुमरीयें कीधी रे जोर ॥ राणीनुं मन रीझवे, वसंतसिरी तिण ठोर ॥ ३ ॥ चंद्रवदनी दो बेठी रे, वातें एकण थान ॥ जाणे स्वर्गथी ऊतरी, रंभा उरवशी मान ॥ रूप अनूपम बेहुनां, हुं करुं केतां वखाण ॥ जाणे कंदर्प वाडीयें, प्रगटी पुण्य प्रमाण ॥ ४ ॥ एहवी ए राजकुमारी रे, प्यारी दो गुणवंत ॥ सरखा सरखी रे जोडी, मलि करी वातडी संत ॥ वसंतसिरी शुन सुंदरी, कहे पटराणीने आज ॥ चलें रे पधार्यां राणीजी, कोडी सुधार्यां रे काज ॥५॥ तुम आवे अम मंदिर, पावन हुवो जी चंग ॥ अम सरिखुं जे काम हुवे, ते कहो जी सुरंग ॥ तव राणी कहे कुमरीने, ले एक तुमशुं जी काम ॥ बहिन करीने थापवा, आवी हुं गुणधाम ॥ ६ ॥ एम कहीने रे आपे रे, नवलखो नवसरो हार ॥ वली बीजां बहु मूलां, भूषण आपें श्रीकार ॥ तव कुमरीयें जाण्युं जे, राणीयें मांग्यो जी पास ॥ जो नवि राखुं तो आगल, होवे महो

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

टो विनाश ॥ ७ ॥ नृपनी राणीने डुहवतां, पूरवे नहि इण गाम ॥ ते जाणीने कुमरीयें, चूषण रा ख्यां जी ताम ॥ मुखनी मिठाशें करी कहे, कुमरी राणीने नेह ॥ बहेन करीने थापो,ते अमें जाण्युं जी तेह ॥ ८ ॥ ते मत जाणजो राणीजी, वसंतसिरी जे नोलाय ॥ ते नही कोट जे आकरा, पवनें करी मो लाय ॥ उगमणी दिशि मूकी जो, ऊगे पश्चिम नाण ॥ ससिहर जो अग्नि झरे, तो सती न चूके गाण ॥९॥ पण शुं करीयें राणी जी, अंतें तुमशुंजी काम ॥ नृपने जो अमें डुहवीयें, तो वली फेडेजी गाम ॥ ते जाणी अमें राखीयें, राणीजी तुमशुं प्यार ॥ आजथी रा खीयें तुमशुं, बहेनपणुं निरधार ॥ १० ॥ पण एक सांनलो विनती, राणीजी कहुं तुम वात ॥ में व्रत लीधुं छे सुव्रत, नामें तप विख्यात ॥ ते तप छे एक मासनुं, तें जव पूरूं रे थाय ॥ तव नरपतिनी राणी जी, मननी हाम पूराय ॥ ११ ॥ इम सत्य राखवा कुमरीयें, मुखथी साकर घोल ॥ दीधो दिलासो रा खीने, उपजावी रंगरोल ॥ तव हरखित थइ राणी ए, सांनली कुमरी बोल ॥ राणी जाणे मुझ आव्या नो, कुमरीयें राख्यो जी तोल ॥१२ ॥ अवसर लही

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

कुमरीयें, राणीने हर्ष उपाय ॥ अशन वसन करी रीझवी, राणीने कीध विदाय ॥ राणीयें पण जइ नृपने, शीघ्र वधाई दीध ॥ आजथी एक मासांतरें, नृप तुम मनोरथ सिद्ध ॥ १३ ॥ मासनुं तप कुमरीयें, मांमयुं महोटे मंमाण ॥ ते तप पूरण थइ रहे, कुमरी मलशे सुजाण ॥ तिहां लगें नाथजी बेठा, प्रभुनुं नजन करेय ॥ निश्चें मलशे कुमरी, जीवने धैर्य धरेय ॥ १४ ॥ इणिपरें राणीनी सांनली, वाणी नृप हरखंत ॥ नाग्य दिशा मुज जागी, मांगी नावठ त्रांत ॥ नृपना मनमें गंग, तरंग ज्युं उलट्यो रंग ॥ जाणे माणशुं मासनें, अंतरे कुमरीशुं चंग ॥ १५ ॥ सागर पल्योपमनां जे, कह्यां महोटां रे आय ॥ ते सरखा पण जीवने, नोगवतां वही जाय ॥ तो शुं इणमें मासनुं, जावुं केतिक वार ॥ आजने काल करंतां, वहेशे मास विचार ॥ १६ ॥ इणिपरें आशा वासमें, मदनवेग उल्लास ॥ निशिदिन रहे मगन थइ, ज्युं मद पीध विलास ॥ आशायें जीव जीवाडवा, जीव रुले संसार ॥ पण चउलख जोजन लगें, नर वहे आशा मझार ॥ १७ ॥ आशा अंबर जेवडी, कहे दुनियां सहु कोय ॥ आशायें इंमां अनल तणां,

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

ते पण वृध्ध्ज होय ॥ तिम ए नरपति आशामें, फू
ले दिन ने रात ॥ वसंतसिरीनुं ध्यान, धरे ते उठी
प्रनात ॥ १ ७ ॥ आंगुलीना वेढा गणे, निशिदिन
मासना दीह ॥ आशा पासमें विचरे, नरपति जेह
अबीह ॥ प्रीतिमती पट्टराणीयें, प्रीति वधारी रे जे
ह ॥ नृपनी रे मननी डुविधा, दूर विदारी तेह ॥ १ ए॥
नृप राणी दो रंग,विनोदमें काढे रे दीह ॥ राजनां का
ज सधारे, मदनवेग ते सिंह ॥ वसंतसिरी पण पोता
ने, मंदिरे करे गहगाट ॥ निज सखीयोशुं परवरी, नि
जपतिनी जोइ वाट ॥ २०॥ हवे सुण जो नवियण तु
में, जे थई आगल वात ॥ हरिबल चाल्यो लंकायें,
ते सुणजो अवदात ॥ बीजा उल्लासनी पनणी, पूरण
दशमी ढाल ॥ शास्त्रतणे अनुसारें, लब्धि कही
उजमाल ॥ २१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे नृप आणा लेइने,हरिबल चाल्यो लंक ॥ वि
षम पंथ जे आकरो, ते कापे निःशंक ॥ १ ॥ गिरिग
व्हर महोटां घणां, विकटां घाटां जेह ॥ मानवनो जि
हां पग नही, ते पण उतरे तेह ॥ २ ॥ झंगी झाडी
वनतणी, चिहुं दिशि वंशनि जाल ॥ जटाजूट जे

वनलता, तिणमें वहे उजमाल ॥ ३ ॥ वाघ सिंहने चीतरा, अजगर महोटा व्याल ॥ अष्टापद वलि गज घटा, देता मृग अरि फाल ॥४ ॥ भूत प्रेतने व्यंतरा, झोटिंग मोहोटा खवीस ॥ हरिबलने छलवा भणी, पाडे महोटी चीस ॥ ५ ॥ पण ते मन बीये नही, ग ती वज्रसमान ॥ लोह पंजर सम चालतो, धरतो अरिहंत ध्यान ॥ ६ ॥ सूपडकन्ना हयमुहा, वलि इकटंगा जेह ॥ काला हबसी काबरा, हरिबल निर खे तेह ॥ ७ ॥ अजबगुल मेहरी घणी, निरखे ग मो गाम ॥ रूडपी ले नर पंखमें, सेवे तेहशुं काम ॥८॥ एहवि अटवि उजाडमां, हरिबल चाल्यो जाय॥ ध्यान धरे नवपद तणुं, जेहथी विघन पुलाय ॥ ए ॥ देश नगर जोतो थको, पुर पाटण केइ गाम ॥ धरती केइ उल्लंघतो, आव्यो दरिया गाम ॥ १० ॥ जाणे आषाढो गाजतो, गाजतो भाद्रव मास ॥ तिम गर्जा रव जलनिधि, करतां दीठो तास ॥ ११ ॥ कालाम्बर उछली, जलना लोढ चलंत ॥ जाणे हिमाला टूक ज्युं, जल कल्लोल करंत ॥ १२ ॥ जोजन एंसी सहस्सनो, कोरण विशेषें जेण ॥ लवणनिधीनी वेल ते, सगरें आणी तेण॥१३॥जल जेहवा मछा घणा, दीसे नव न

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

वरूप ॥ वाघ सिंह जलमाणसां, जलमें देखे सरूप ॥ १४ ॥ एहवो लवणसमुइ ते, देखी कंपे काय ॥ हरिबल पगलुं जल जणी, देतां सग पच थाय॥१५॥

॥ ढाल अग्यारमी ॥

॥ कपूर हुवे अति ऊजलो रे ॥ ए देशी ॥ हरिबल मनमें चिंतवे रे,शो हवे करुं उपाय॥ सहस एंसी जोय ए जलनिधि रे,पृथुल उंमो देखाय ॥१॥ प्रभुजी ते केम मुऊथी तराय ॥ पगवट पण न जवाय॥प्र०॥ भुज बलें पण न तराय॥प्र०॥तो लंका केम हलाय रे॥प्र०॥ते०॥ एआंकणी ॥ जलना लोढ वहे घणा रे,श्यामला जल ऊ जास ॥ज्वाला वडवानल तणी रे, निकसे प्रबल आ काश ॥२॥प्र०॥ न वहे पंखी मानवी रे,न वहे तारु ऊहाज ॥ मारग को दीसे नहिं रे, नवि दीसे किहां पाज रे ॥३ ॥ प्र० ॥ शीतल पवन वहे घणो रे, जा ऐ शीतल हेम॥ थरहर कंपे देहडी रे,खडहडे अस्थि सेम रे॥४॥प्र० ॥ एहवो खारो सागरु रे, उछले जलें असमान ॥ ते देखी धीवर घणुं रे, मरप्यो गइ तस शान रे॥५॥प्र०॥ जो फरी पाछो घर जणी रे,जाउं तो न रहे मान ॥ बीडुं हवी हुं आवियो रे, कीधुं अजाण्युं काम रे ॥ ६ ॥प्र० ॥ नागें ग्रही ज्युं बबुंदरी रे, मूके

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

तो अंध थाय॥ लक्षणथी जीव संहरे रे, ए दृष्टांत बनाय रे ॥७ ॥ प्र० ॥ वली चरकलीयें ग्रह्युं रे,मुखमां चणियुं बोर ॥ आघुं पाछुं न ऊतरे रे, करे पस्तावो जोर ॥ ८ ॥प्र०॥ इम धीवर क्रूरें घणुं रे, सागर कांठे जाय ॥ धीवरें जाण्युं आवी बन्यो रे, वाघ न दीनो न्याय रे ॥ ९ ॥ प्र० ॥ किहां गयो माहरो इण समे रे, प्राणवल्लभ मुज इष्ट ॥ समर्थां सार करे घणुं रे, टाले सघलां रिष्ट रे ॥१०॥ प्र० ॥ इम चिंतवतां तत खिणें रे, आव्यो सागर देव ॥ कहे सुर शी तुं चिंता करे रे, मूकुं लंका तुज हेव रे॥ ११ ॥ प्र० ॥ शुं वछ तुजने इहां कणे रे, आववुं थयुं हो केम ॥ सुर कहे कहो मुज मांझिने रे, जाण्युं जाये जेम रे॥१२॥प्र०॥ तव हरिबल कहे देवने रे, सांभलो तातजी मुज्ज ॥ नृप हेतें बीडुं ठवी रे, आव्यो कहुं हुं तुज्ज रे ॥१३॥ प्र० ॥ ते सांभली जलपति थयो रे, देव स्वरूपी अश्व ॥ हरिबल ते अश्वें चढी रे,जलधि तरी लह्यो विश्व रे ॥१४॥ प्रभुजी भलें आव्या तुमें नाथ ॥ सुर तरुनी ग्रही बाथ ॥प्र०॥ मुज शरण थयो तुम हाथ ॥प्र०॥तव हुं थयो महोटो सनाथ रे ॥प्र०॥१५॥॥ए आंकणी॥लं का बागमें मूकीने रे,देव थयो परगट्ट ॥ काम पडे तुं सं

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

नारजे रे, मुऊने करी गहगट्ट रे॥ १६ ॥ ॥प्र०॥ एम कहीने सुर गयो रे, पहोतो ते निज गाम ॥ हरिबल लंका देखीने रे, मनमें लह्यो आराम रे ॥१७॥ प्र० ॥ तेजें झलामल झलकती रे, हेममय लंका पीठ॥ जेहवी जनमुखें सांजली रे, तेहवी नजरें दीठ रे ॥ १८ ॥ प्र० ॥ नंदन वन सम वाटिका रे, देखी थयो सुप्रसन्न ॥ परिमल पसर्यो चिहुं दिशें रे, कुसुम तणां जिहां वन्न रे ॥ १ए ॥ प्र०॥ चंपा गुलाब ने केतकी रे, मोगरा मालती जेह ॥ जाणे सुरवाडी फुली रे, हरिबल निरखे तेह रे ॥ २०॥प्र० ॥ अंब कदंब ने सुरतरु रे, सुरलता मोहन वेल ॥ हेम रजतनी उंषधी रे, पसरी चिहुं दिशें रेल रे ॥ २१ ॥ प्र० ॥ नागरवल्ली डाखना रे, मांमवा अति सोहंत ॥ केलि जंबेरी फालसां रे, दाडिम पक्व मोहंत रे ॥ २२ ॥ प्र० ॥ जातीफल जावंतरी रे, तज ने तमाल ते पत्र ॥ एके तरुअरें नीपजे रें, चातुरजातक तत्र रे ॥ २३ ॥ प्र० ॥ देव कुसुम ने एलची रे, सुंदर केसर ठोड ॥ निमजां पिस्तां चारोली रे, बेय बदाम अखोड रे ॥ २४ ॥ प्र० ॥ पूगी श्रीफल सेलडी रे, सीताफल सह तूत ॥ खारक रायण करमदां रे, लिंबू जांबू जूत रे ॥ २५ ॥ प्र०

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

इम अनेक ते जातिनी रे, वणसई नार अढार ॥
जोगी जनने कारणे रे, प्रगट थई संसार रे॥ २६ ॥
प्र०॥ वापी कूप सरोवरु रें, नरियां अमृततोय ॥ हंस
चकोर ने सारसा रे, जलक्रीडा करे सोय रे ॥ २७॥
प्र०॥ इम हरिबल जोतो वहे रे, लंकावन सुरसाल ॥ ल
विध बीजा उल्लासनी रे,पत्रणी इग्यारमी ढाल रे॥२८॥

॥ दोहा ॥

॥ लंकापरिसर वाटिका, सोहे अति रमणीक ॥
जाणे नंदनवन तणी, नगिनी प्रगटि नजीक ॥ १ ॥
कनक रयणमें फलकता, महोटा मेहेल अत्यंत ॥
खंभोखली जलशुं नरी, कारिंफ तिम ऊलंत ॥२॥
नर नारी विद्याधरी, किन्नर अप्सर बाल ॥ सरखे स्वरें
टोलें मली,गावे गीत रसाल ॥ ३॥ मधुरी ध्वनि आ
राममें,थइ रहि गमो गाम ॥ हरिबल ते श्रवणें सुणी,
मगन थयो अजिराम ॥४॥ मानव नव नलें में लह्यो,
नलें लह्यो गुरु उपदेश ॥ सागरदेव पसायथी, लंका
दीठि विशेष ॥५॥ वन उपवन जोतो थको, हरिबल
हर्ष कल्लोल ॥ आव्यो अतिही चूंपशुं, लंकागढनी
पोल ॥ ६ ॥ साव सोवनमय डुर्ग ते, उंपे मणिमय
शीर्ष॥ जाणे नूरमणी करे, उंपे कंकण नीर्ष ॥ ७ ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

एहवो वप्र विराजतो, नगरी राखण चंग ॥ जाणे जंबु द्वीपनो, जगती कोट उत्तंग ॥ ८ ॥ इणिपरें डिंगनो डुर्ग ते, निरखी हरखित होय ॥ पेसारो पुरमें करे, शुभ लगनें करि जोय ॥ ए ॥

॥ ढाल बारमी ॥

॥ उढणीनी देशी ॥ सासु काता हे गहुं पीसाय, आपें न जाशो हेमाल ते सोय नारी जणे ॥ए देशी ॥ पेठो डिंगतणी वर पोले, निरखे रे हाट मंदिर बहु ॥ सहु कोय सुणो ॥ जाणे दक्षिण उत्तर उंच, भुवनपति मंदिर सहु ॥१॥ स० ॥ ए तो साव सोवनमय थंभ, कनक रयणमें मालीयां ॥ स० ॥ तेजें झाकझमाल, अचंभ दीसे मोतिनां जालियां ॥ २ ॥ स० ॥ जाणे नभथी दिनकर सार, आवी घर घर प्रगटीया ॥स० ॥ नवि दीसे तिमिर लगार, उद्योत सघले उलटीया ॥३॥ स० ॥ एतो कोरणी धोरणी जोर, जाणे देवपुरी वसी ॥स०॥ सोहे राय बिभीषण ठोर, राज करे मन उल्लसी ॥४॥स०॥ वसे वसती वरण अढार, राक्षस रूपें मानवी ॥स०॥ एतो न गणे नरु अनरु, एवी लंका जाणवी ॥ ५ ॥ स० ॥ घोडा गज रथ ने सुख पाल, राज्य मारगमें वहे घणा ॥स०॥ देखे महोटा

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

नव नवा ख्याल, हास्य कुतूहल नही मणा ॥ ६ ॥
स०॥ जोतो इणि परें नगरी मकार, हरिबल आगल
संचरे ॥ स० ॥ दीठुं तव एक तेज नंमार, सुंदर मं
दिर नलि परें ॥ ७ ॥ स० ॥ सोहे सुंदर पोल प्रकार,
रमणिक हष्टें देखे सही ॥ स० ॥ पण देखे ते शून्य
आगार,माणस को दीसे नही ॥८॥स०॥ ए तो तव
तिहां अचरिज देखि, पेगेहे मंदिर पोलमें ॥स०॥ त्यां
निरखे रयण विशेष,उरा उरी उलमें ॥९॥स०॥ इम जो
तो सातमी नूमि,हरिबल चढीयो चूपशुं ॥स०॥ जाणे
स्वर्गविमाननी नूमि, रचना ते दीठी रूपशुं ॥ १०॥
॥ स० ॥ तिहां निरखे अचरिज एक, हिंमोला खाट
सोहामणी ॥ स० ॥ तेह उपर सूती विवेक, सुंदर
स्त्री रलियामणी ॥ ११ ॥ स० ॥ जाणे देही कुंकुम
वर्ण, अप्सर सम करी उपती ॥ स० ॥ पण दीसे ते
मृतक समान,चेतन रहित ते कोलती ॥१२॥ स० ॥
चिंते हरिबल निरखि रे तास,विस्मय पाम्यो मन्नमें ॥
स० ॥ एसो दीसे देव अन्यास, सास नही ए तन्नमें
॥ १३ ॥ स० ॥ इम चिंतवी धीवर धिंग, अरहुं पर
हुं विलोकतां ॥ स० ॥ दीठी तुंबडी जल नरी चंग,
खाट तले लही ढोकतां ॥ १४ ॥ स० ॥ तिणें तुंबीनुं

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

जल लेय, गांटथुं स्त्रीतन ऊपरें ॥ स०॥ ऊठी ततखिण लज्जा धरेय, हिंमोला खाटथी सूपरें ॥१५॥स०॥ मन्त्री चिंतवे चित्त मझार, ए शुं कौतुक नीपनुं ॥स०॥ ए तो थइ नवजोबन नारि, मनोहर ज्युं तेज दीपनुं ॥ १६ ॥ स० ॥ दीसे रंजा उर्वशी रूप, कामिनी काम जगावती ॥ स० ॥ मोहे सुर नर किन्नर जूप, कामी जन मन जावती ॥ १७ ॥ स० ॥ इम अचिरज लहिने तास, पूठे हरिबल उल्लसी ॥ स०॥ किम रहे तुं शून्य आवास, एकली शबपणें वसी ॥ ॥ १८ ॥ स० ॥ किहां गया तुझ सयण संबंध, मात पितादिक ताहरां ॥ स० ॥ तव कहे अबला प्रबंध, सांजलो पंथी माहरा ॥ १९ ॥ स० ॥ जलें आव्या तुम इहां स्वामि, उपगारी दीसो जला ॥ सोय नारी जणे ॥ बेसो आसन्न शुज गाम,कहुं तुमने सघली कला ॥२०॥तो०॥ इहां राय बिजीषण सार, राज करे लंका धणी ॥सो०॥ वाडी ठे तस वृद्ध श्रीकार,वल्लज ते नृप ने घणी ॥२१॥सो०॥ तेह वाडीनो ए रखवाल, जीम नामें आरामी अठे ॥ सो० ॥ हुं हुं तेहनी पुत्री जी बाल, कुसुमसिरी मुझ नाम ठे ॥ २२ ॥ सो०॥ जब हुं थई जोबनवेश, तब मुझ जनक चिंता करे ॥ सो०॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

कुण वरशे ए पुण्य विशेष, अहोनिशि इम चिंता धरे ॥ २३ ॥ सो० ॥ तव तिहां एक जोषी जाण, फिरतो ते आव्यो मंदिरें ॥ सो० ॥ पूछे तेहने पिता गुण खाण, तेडी जई घर अंदरें ॥ २४ ॥ सो० ॥ जुउं जोषी ज्योतिष जोय, कहो मुझने तुमें दुःख खसे ॥ सो० ॥ जिम मुझ मन वंछित होय, मुझ पुत्री वर कुण हशे ॥ २५ ॥ सो० ॥ तव जोषी कहे वनपाल, सांभलो जोषथी हुं कहुं ॥सो०॥ तुम पुत्रीनो तो महीपाल, पति होशे गुणवंत लहुं ॥ २६ ॥ सो० ॥ तव हरख्यो पिता मनमांहे, सांभली जोषी वयणडां ॥ सो० ॥ दीधुं जोषीने दान उछाह, मूठ नरी शुन रयणडां ॥ २७ ॥ सो० ॥ इम कही गयो जोषी थान, वंछित दान ते लेईने ॥ सो० ॥ चिंते जनक ए पुत्री निधान, शुं करुं परने देईने ॥ २८ ॥ सो० ॥ राखुं मुझ घर पुत्री रतन्न, परणी हुं थाउं नरपती ॥सो०॥ लोभी लंपट थइ एक मन्न, वात करी इण डरमती ॥ २९ ॥ सो० ॥ मुझ जनकीयें जाणी वात, फिट फिट कह्यो मुझ तातने ॥ सो० ॥ लागी वज्र समान नो घात, जाल चढी कमजातने ॥ ३० ॥ सो० ॥ पंथी सांभलो मोहनी जाल, महोटी ए निपनी कार

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

मी ॥ सो० ॥ ए तो बीजा उल्लासनी ढाल, लब्धियें नांखी बारमी ॥ ३१ ॥ सो० ॥

॥ दोहा ॥

॥ वलि कहुं पंथी सांभलो, महारा तातनां चिन्ह॥ न्याय करे जइ नृपकने, माली नीम अदीन ॥ १ ॥ कहो स्वामी जे करषणी, मसकत करी निपाय ॥ ते कण फलने करषणी, जोगवे के न जोगाय ॥ २ ॥ तव नरपति कहे मालिने, जे करे मसकत अंग ॥ ते कण फल सुखें वावरे, न्यायी थइ ते अनंग ॥३॥ ए हवो न्याय उरावियो, मालियें परषद मांह ॥ पंचनी साखें ए न्यायनुं, लिखित कर्युं ते उगाह ॥ ४ ॥ तेह लिखत लेई करी,आव्यो जनक ते गेह॥ वात लही मुऊ जनकियें, मौन धरी रहि तेह ॥ ५ ॥ तव मु ऊ जनक संबंधियें, जाएयो महोटो अन्याय ॥ गृह मू की तव निकसियां, वसियां बीजे जाय ॥ ६ ॥ तिण दिनथी गृह शून्यमें, मुऊने राखे तात ॥ मृतकसमा न करी वहे, मंत्रबलें ते प्रजात ॥ ७ ॥ सारो दिन वाडियें रहे, करे तें वननुं काज ॥ नृपने फल फुल दे इने, आवे मुऊकनें सांऊ ॥ ८ ॥ तुंबी जल लेई करी,

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

बांटे मुझ तनु जाम॥ चेतन लहि जाणुं तदा, करे मुझ जनक ए काम॥ ए॥

॥ ढाल तेरमी॥

॥ मुजरो ल्योने हे जालिम जाटणी॥ ए देशी॥

॥ सांजलो पंथी माहरा तातनी, कहुं करणी वली एक॥ पूर्वें पण एक उंतुं देइनें, कीधो न्याय विवेक॥ १॥ श्रेयांसनाथ इग्यारमा, तेहने जे वारे कहाय॥ परजापति नामें राजवी, मिणवा राणी सुहाय॥ २॥ सां० ॥ तेहनी कूखें पुत्री उपनी, पदमिनी रूप अत्यंत॥ अनुक्रमें थइ नव यौवना, कामिनी काम लहंत॥ ३॥ सां०॥ ते परजापति पुत्रीनुं, दीठुं रूप सरूप॥ जाण्युं ए फल बीजे जायशे, नोगवशे अन्य नूप॥ ४॥ सां०॥ तो ए पुत्री माहरे राखवी, नहि देउं बीजे ए क्यांह॥ पंचमें न्याय करावीने, परण्यो पुत्री उछाह॥ ५॥ सां०॥ पंचनी साखें ए सही करुं, मेली परखदा सार॥ जिम मुझ लोकमें नवि हुवे, निंदा विकथा लगार॥ ६॥ सां०॥ इम जाणी नृप तिणि वेलमां, मेलवी पंच समक्ष॥ पूछे परजापति परजने, करो न्याय विचक्ष॥ ७॥ सां०॥ जे बीज वावे वाडी खेतमें, ते ऋतुसमे फल देय॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

ते फलने मसकतीनो धणी, नोग लीये के नवि लेय ॥ ७ ॥ सां० ॥ तव ते बोली परजा एकमतें, सांजलो नाथजी एम ॥ जे फल वावे ते फल बीजने, नोग ते नवि लीए केम ? ॥ ए ॥ सां० ॥ पंच मलीने जे करी थापना, ते उथापी न जाय ॥ स्थिति छे अ नादि ए कालनी, एहवो ते न्याय उराय ॥ १० ॥ सां० ॥ तव परजापति हरखिने, लीधुं पुत्री लगन्न ॥ परण्यो ते निज पुत्रीने, थइ रह्यो तेणुं मगन्न ॥ ११ ॥ सां० ॥ तेहनी कूखें जी ऊपनो, हरि ते नामें त्रिपृष्ठ ॥ श्रीजिन वीरनो जीव ते, जाणे सयल ते शिष्ट ॥ १२ ॥ सां० ॥ त्रेशठ शिलाका चरित्रमें, छे तेहनो अधिकार ॥ ते न्या यधारी लंकापति, कने जइ चढयो दरबार ॥ १३ ॥ सां० ॥ ए करणी माहारा तातनी, में कही पंथिजी तुम्म ॥ लालची लोनी जे लंपटी, न वले ते कदि जुम्म ॥ १४ ॥ सां० ॥ माहरो तात ते लालची, अहनि श राखे निराश ॥ दुःखदायी दुःख देयतां, तेहने थया खट मास ॥ १५ ॥ सां० ॥ कहुं ए पंथी हुं हवे केहने, नाखुं मो होटो निशास ॥ आजथी बीजे मासडे, वरशे मुऊने उ छास ॥ १६ ॥ सां० ॥ माहरा मननी पंथी में कही, सघली मांमीने गुऊ ॥ नले तुमें आव्याजी मंदिरें, सु

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

ख शाता थइ मुऊ ॥ १७॥ सांजलो पंथी जीवन मा हरा ॥ ए आंकणी ॥ कुसुमसिरी कहे सांजलो,पंथी क रुणा कृपाल ॥ नाग्य बली में तुम्ह उलख्या,साहसिक महोटा मयाल ॥१८॥सां० ॥ सघली वातें पूरा जा णीने, में तुम्ह झाल्यो जी हाथ ॥ डुःखनिधि पार उ तारवा, नलें आव्या तुम्हें नाथ ॥ १ए ॥ सां० ॥ मन जलचाणुं तुम देखतां, जिम मन केतकी चंग ॥ बे कर जोडीने वीनवुं, मुऊने परणो सुरंग ॥२०॥सां० ॥ सूरज चंड साखें करी,परणी पूरो जी लाड ॥ नि ज नारीने सुख देयतां, शो ते चढावुं जी पाड ॥२१॥ सां० ॥ माहरे वखतें तुम्हें आणीया, ताणी पुण्य विशेष ॥ ते डुं टाली ते किम टलुं, लखीया पानें जे लेख ॥ २२ ॥ सां० ॥ इणि परें वयण वेधालुयें, कु मरीयें नाख्यां जे बाण ॥ वेधक बाणें ते वेधियो, हरि बल चतुर सुजाण ॥ २३ ॥ सां० ॥ परण्यो तेह कु सुमसिरी,हरिबल पाम्यो ते चेन ॥ जाणे परण्यो बीजी अप्सरा, वसंतसिरीनी ते बेन ॥ २४ ॥ सां० ॥ लंका धणीने तेडवा, मन्त्री बीडुं उबेय ॥ गडदो ते गुण आ वियो, लोक उखाणो कहेय ॥ २५ ॥ सां० ॥ माली नीमो जोतो रह्यो, परण्यो पुत्रीने कोय ॥ नुतख्यां जो

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

षी कोली जम्या,ए उखाणो ते होय ॥ २६ ॥ सां० ॥ सिंहनो नख ते जंबुकें,कहो ते केम कराय॥कलिंगमहो टुं कीडी मुखें, कहो ते केम समाय ॥ २७ ॥सां० ॥ हरिबल केरा जे नाग्यमें, कुसुमसिरी लखी जेह ॥ मा लीने किम मोलवे, लख्या विधातायें लेह ॥ २८ ॥ सा० ॥ हरिबल पुण्यना जोगथी, पाम्यो मंगलमाल ॥ लब्धि बीजा उल्लासनी, पनणी तेरमी ढाल ॥ २९ ॥

॥ दोहा ॥

॥हवे कुमरी कहे कंतने,निसुणो प्राणाधार ॥ आ पण वहियें बे जणां, जिहां ले निज आगार ॥ १ ॥ सांझें माली आवशे, आखें पडशे लूण ॥ आपण बे हुने दूवशे, तो ते राखशे कूण ॥ २ ॥ तव हरिबल क हे नारिनें, सांजल प्यारी मुझ ॥ लंकापतिने तेडवा, आव्यो हुं कहुं तुझ ॥ ३ ॥ विशाला पुरनो धणी,मद नवेग ते नाम ॥ अंगजने परणाववा,मेले नृप अभि राम ॥४॥ वैशाखे सितपंचमी, लीधां लगनज जेह ॥ सघला देशना राजवी, तिण दिन मिलशे तेह ॥ ५ ॥ तव वीशालानो धणी,बोल्यो सना समक्ष ॥ को ले लं का रायने, तेडी आवे विचक्ष ॥ ६ ॥ तव तिहां को ए न बोलियो, बीडुं न ग्रहे कोय ॥ तव तुझ नाग्यब

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

लें करी, बीडुं में ग्रव्युं सोय ॥ ७ ॥ ते नृप आणा लेइने, डुं आव्यो डुं आंहि ॥ लंकापति तेडया विना, किम जवराए त्यांहि ॥ ८ ॥ कुसुमसिरी वलतुं कहे, सांनलो महारी वात ॥ लंकापति मदिरा वशें, उंघमें केइ युग जात ॥ ए ॥ ते सांधो किम बाऊशे, आप णे जावुं गेह ॥ लंकापति कने जायवुं, कठिण कह्युं तुम्हें एह ॥ १० ॥ जो प्रीतम मुऊने कहो, जावुं बी नीषण पास ॥ देवनमी एक खड्ग ले, लावुं ते जइ तास॥

॥ ढाल चउदमी ॥

॥ धणरा ढोला ॥ ए देशी ॥ तव हरिबल कहे ना रीने रे, जाउं उतावलां त्यांहि ॥ मोमन प्यारी ॥ ला वजो तुमें संनारीने रे, खड्ग जे चंड्हास आंहि ॥ ॥मो०॥१॥ लावो लावो रे सुगुण जई लावो,तुमें ढील म करशो क्यांहि ॥मो०॥ए आंकणी॥ वैशाख शुदि दि न पंचमी रे,लगन उपर जवराय ॥मो०॥ तो गणे मु ऊने साचमें रे, मदनवेग ते राय ॥ २ ॥ मो० ॥ ते सहिनाणी खड्गनी रे, लंकाधणीनी जेह ॥ मो० ॥ लाज वधे निज वर्गनी रे, ते विधें लावजो तेह ॥ ॥ ३ ॥ मो० ॥ पण शिर बदलामी चढे रे, जगमें हां सुं होय ॥ मो० ॥ लेहणेनी देणे पडे रे, ते मत कर

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

जो कोय ॥ ४ ॥ मो० ॥ करतां होय ते कीजियें रे, अवर न कीजें कग्ग ॥ मो० ॥ मुंमी रहे सेवालमां रें, ऊंचा रह्या दो पग्ग ॥ ५ ॥ मो०॥ ते मत करजो कामिनी रे, सांभलि ते दृष्टांत ॥ मो० ॥ इम शीखाम ण स्वामीनी रे, धारी ते चितमें खांत ॥ ६ ॥ मो०॥ हवे कुमरी गई तिहां कणे रे, राय बिभीषण ज्यांहि ॥ मो० ॥ नर निशामें सूतो लह्यो रे, मदिरा छाकनी मांहि ॥ ७ ॥ मो० ॥ कल विकल करीने ग्रह्युं रे, खड्ग जे ले चंद्रहास ॥ मो० ॥ जात वलत कोणे नवि लह्युं रे, आवी प्रीतम पास ॥ ८ ॥ मो० ॥ ल्यो स्वामी आ खड्गनी रे, जे कहि सहिनाणी एह ॥ मो० ॥ देवनमी खड्ग स्वर्गनी रे, उलखे मछी विशे ह ॥ ए ॥ मो० ॥ हवे सामग्री दंपती रे, मेलवे जावा गेह ॥ मो० ॥ सार रयण ते सोंपती रें, पियुने जे कोश नरेय ॥ १० ॥ मो० ॥ तुंबी जलसाथें ग्रही रे, दंपती चाल्यां दोय ॥ मो० ॥ आव्यां जे लंका वही रे, लहे मनोवंछित सोय ॥ ११ ॥ मो० ॥ समख्यो सागर देवता रे, मछीयें थई उजमाल ॥ मो० ॥ आ व्यो सुर पण देवता रे, करुणावंत कृपाल ॥ १२ ॥ मो० ॥ किहां मूकुं हवे तुझने रे, सुर बोल्यो ततका

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

ल ॥ मो० ॥ मूको स्वामी मुझने रे, निज नगरी वि शाल ॥ १३ ॥ मो० ॥ अश्व चढावी दो जणा रे, मू क्या नगर नजीक ॥ मो० ॥ चिंतव्युं होशे तुम तणुं रे, सुर कहे जाणजो ठीक ॥ १४ ॥ मो० ॥ एम क हीने ते गयो रे, नाखी जे निज थान ॥ मो० ॥ मन वंछित सफलुं थयुं रे, दंपतिपुण्य निधान ॥ १५ ॥ मो० ॥ नगरीनी जे वाटिका रे, तेहमें उतारो की ध ॥ मो० ॥ दंपति करे गहगट्टिका रे, जाणे मनो रथ सिद्ध ॥ १६ ॥ मो० ॥ हवे माली संध्या समे रें, आव्यो निज घर हेत ॥ मो० ॥ शय्या खाली दृष्टि में रे, आवी ते नजरें रेत ॥ १७ ॥ किहां गई प्यारी, मो मन प्यारी॥ए आंकणी॥हल फलतो जोतो फरे रे, सघले मंदिर मश्न ॥ कि० ॥ पुत्री न दीठी शुं करे रे, वलि थयो जोवा सङ्ग ॥ १८ ॥ कि० ॥ वलि नवि दीठी तुंबडी रे, जे नरी अमृत तोय ॥ कि० ॥ ले ग ई साथें तुंबडी रे, कोइक पुरुषने जोय ॥ १९॥कि०॥ पगलुं जोवा नीकल्यो रे, पग पग जोतो वाट ॥कि०॥ परद्वीपनो पग अटकव्यो रे, तव थयो तेहने उच्चा ट ॥ २० ॥ कि० ॥ पग जोयो जलधि नणी रे, पुत्री गइ करि नाथ ॥ कि० ॥ आरामिक ते नीमना रे,

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

चूमि पडया दोय हाथ ॥ २१ ॥ कि० ॥ जोतो रोतो ते वल्यो रे, आव्यो ते निज घेर ॥ कि० ॥ पुत्री विर हें ते चल्यो रे, शुं हवे करुं ते पेर ॥ २२ ॥ कि० ॥ पुत्री तुंबी गत थइ रे, जाणे गइ रण खेत ॥ रंमानी रंमा गई रे, टपसुं पण गइ लेत ॥ २३ ॥ कि० ॥ रां क तणे घरे सुरमणी रे, रहे कहो केती वार ॥कि०॥ पूरव नवनी वेरणी रे, दे गइ महोटो खार ॥ २४ ॥ कि० ॥ पुत्री परणें जाणतो रे, पामशुं महोटुं राज ॥ कि० ॥ हौंश घणी मन आणतो रे, माणशुं पुत्री रा ज ॥ २५ ॥ कि० ॥ तेहमें एके न संपजी रे, फोक फजेती कीध ॥ कि० ॥ दैवना मनमां शी नजी रे, एको वात न सीध ॥ २६ ॥ कि० ॥ पण पुत्री पर घरें जई रे, वसति जाणे संसार ॥ कि० ॥ एक एकने देइ वरे रे, पुत्री पर घर बार ॥ कि० ॥ २७ ॥ ते में खोटी आदरी रे, लोकें खोयो कार ॥ कि० ॥ तो किम आवे पाधरी रे, लोप्यो म्हें व्यवहार ॥ २८ ॥ मो० ॥ नीतिनी चाल में नवि गणी रे, कीधो अनीति विचार ॥ मो० ॥ तो किम रहे ए पदमणी रे, रांक घरे मुझ सार ॥ २९ ॥ मो० ॥ जेहनो संबंध ते ले गयो रे, ज्ञाना करीने लोच ॥मो०॥ जे थावुं हतुं ते थयुं रे,

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

शो हवे करवो शोच ॥ ३० ॥ मो० ॥ मालीयें एम मन वालीयुं रे, नावीनो ग्रह्यो पक्ष ॥ मो० ॥ आ तम कुल संजालीयुं रे, काढी नाख्युं शक्ष ॥ ३१ ॥ मो० ॥ सगां संबंधि नारीने रे, रीश उतारी तास ॥ मो० ॥ मालियें वात विसारीने रे, तेडी आव्यो आवास ॥ ३२ ॥ मो० ॥ सघला वियोग ते नांगियां रे, उपन्यो रंग रसाल ॥ मो० ॥ पूरव सुकृत जागीयां रे, नांगीया दुःख जंजाल ॥ ३३ ॥ मो० ॥ हवे हरिब लनी जे थइ रे, सांजलो पुण्यविशाल ॥ मो० ॥ बीजां उल्लासनी ए कही रे, लब्धें चौदमी ढाल ॥ ३४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे हरिबल रजनीसमे, वाडियें कीधुं गाम ॥ कुसुमसिरी मूकी तिहां, पहोतो ते निजधाम ॥ १ ॥ वसंतसिरी पेहेली प्रिया, जोउं तेहनुं चरित्र ॥ मुझ ऊपर पण केहवुं, राखे मनह पवित्र ॥ २ ॥ इम जा णी निज मंदिरें, आव्यो रजनी मध्य ॥ तस्करनी परें सांजले, देई कान ते शुद्ध ॥ ३ ॥ तिण अवसर जे विरहिणी, वसंतसिरी ते बाल ॥ पीयु नाव्यो मा संतरें, तेहनी थइ चकचाल ॥ ४ ॥ तव एक पंखी सूवटो, पाल्यो छे घरमांहि ॥ तस आगल कहे विरह

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

णी, वसंतसिरी जे उगांहि ॥ ५ ॥ रे पंखी मुऊ पीयु डो, गयो लंका शुन काज ॥ अवधि कही एक मास नी,ते थइ पूरी आज ॥ ६ ॥ केशरनख पिया कह चले, ढांम गयंदनखमांहि ॥ जलनख रयण पोका रियो, मो नख नावत नांहि ॥ हजीअ लगण आव्यो नही, नाव्यो को संदेश ॥ नाह नितुर नहली गयो, मुऊने बाले वेश ॥ ७ ॥ तो दीहा किम निर्गमुं, किम करि राखुं शील ॥ मदनवेग ते नूधणी, केडें पडियो कुशील ॥ ८ ॥ आज लगण तो माहरुं,में पण राख्युं एह ॥ पण ते अवधि पूरी थइ, कुमति चूकशे ते ॥ शुकवाक्यं ॥ दधिसूता सुत तासरिपु, ता त्रिय वा हनाहार ॥ सो सुंदर तुऊमें नहिं, कीधो कौन वि चार ॥ ए ॥ ते माटे तुं सूडला, जा मुऊ प्रीतम पा स ॥ संदेशो मुऊ घरतणो,जइने कहेजे तास ॥ १० ॥

॥ ढाल पन्नरमी ॥

॥ विंऊाजीनी ए देशी ॥ सुडाजी हो अमीरस पा उ तुऊनें रे ॥ सु० ॥ चखवुं दाडिम शाख ॥ सूडा सयण वारु ॥ ए आंकणी ॥ सुडा० ॥ चांच नरावुं चूरमे रे ॥ सु० ॥ देउं वली आंबा साख ॥ सु० ॥ ॥ १ ॥ सु० ॥ संदेशो मुऊ दाखवी रे ॥ सु० ॥ मेल

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

व तुं मुऊ जीव ॥ सु० ॥ सु० ॥ गाइश हुं गुण ताह
रा रे ॥ सु० ॥ जीवित सुधी सदीव ॥ सु० ॥ २ ॥
॥ सु० ॥ दूधें नरीश तुऊ पेटने रे ॥ सु० ॥ देइश क
हीश ते लांच ॥ सु० ॥ सु० ॥ जे हुं बोलुं ते सही
रे ॥ सु० ॥ मानजे करीने साच ॥ सु० ॥ ३ ॥ सु० ॥
हुं कर जोडी वीनवुं रे ॥ सु० ॥ सांनल माहरी
वात ॥ सु० ॥ सु० ॥ सघला पंखीमें कही रे ॥ सु० ॥
उत्तम ताहरी जात ॥ सु० ॥ ४ ॥ सु० ॥ सहु पंखी
शिरसेहरो रे ॥ सु० ॥ तुं छे चतुर सुजाण ॥ सु० ॥
॥ सु० ॥ रूपें तुं रलियामणो रे ॥ सु० ॥ मीठी ता
हरी वाण ॥ सु० ॥ ५ ॥ सु० ॥ लीली ताहरी पांख
डी रे ॥ सु० ॥ चांच राती तुऊ चंग ॥ सु० ॥ सु० ॥
रूडी ताहरी आंखडी रे ॥ सु० ॥ राती केशू रंग ॥
॥ सु० ॥ ६ ॥ सु० ॥ सोने मढावुं चांचडी रे ॥ सु० ॥
दूधें पखालुं पंख ॥ सु० ॥ सु० ॥ हार ववुं गले मो
तीनो रे ॥ सु० ॥ लाख टकानो अटंक ॥ सु० ॥ ७ ॥
॥ सु० ॥ विरहिणी नारी तुं देखीने रे ॥ सु० ॥ दया
धरे मनमांहे ॥ सु० ॥ सु० ॥ संदेशो मुऊ नाहने
रे ॥ सु० ॥ तुं जइ कहेजे उगांहे ॥ सु० ॥ ८ ॥ सु० ॥
मानिश तुऊ उपगारडो रे ॥ सु० ॥ थाइश नही गुण

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

चोर ॥ सु० ॥ सु० ॥ कीधो गुण जाणे नही रे ॥ ॥ सु० ॥ माणस नही ते ढोर ॥ सु० ॥ ए ॥ सु० ॥ ऊठीने तुं पंखीया रे ॥ सु० ॥ तुं मत करजे ढील ॥ ॥ सु० ॥ सु० ॥ कहेजे मुझ संदेशडो रे ॥ सु० ॥ जिहां होये नाह रंगील ॥ सु० ॥ १० ॥ सु० ॥ अब ला तुझ घर एकली रे ॥ सु० ॥ हुं विरहिणीने वेश ॥ सु० ॥ सु० ॥ झुरि झूरि झंखर थइ रे ॥ सु० ॥ थइ नारी नरवेश ॥ सु० ॥ ११ ॥ सु० ॥ प्रीतमना विर हाथकी रें ॥ सु० ॥ मुउं न दीसे कोय ॥ सु० ॥ सु० ॥ पण तंबोली पान ज्युं रे ॥ सु० ॥ दिन दिन पीलां होय ॥ सु० ॥ १२ ॥सु० ॥ पियु विरहें करि नारियें रे ॥ सु० ॥ तजियां तेल तंबोल ॥ सु० ॥ सु० ॥ खाणां पीणां पहेरणां रे ॥ सु० ॥ तजीयां सखीशुं टकोल ॥ सु० ॥ १३ ॥ सु० ॥ पियु विण शणगार पहेरतां रे ॥ सु० ॥ लागे अंगारा समान ॥ सु० ॥ सु० ॥ चं दन चूवा अंगीतियो रे ॥ सु० ॥ नागिणी नागर पान ॥ सु० ॥ १४ ॥ सु० ॥ पियु विरहें घडी मासडो रे ॥ ॥ सु०॥ मास ते वरसज होय ॥ सु० ॥ सु० ॥ खिण घरमें खिण आंगणें रे ॥ सु० ॥ पियु विण ए गति जोय ॥ सु० ॥ १५ ॥ सु० ॥ नयणें नावे निड्डी रे

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ सु० ॥ जावे न अन्न ने पान ॥ सु० ॥ सु० ॥ नाह विना घेली जगुं रे ॥ सु० ॥ कहीयें केतु सयाण ॥ ॥ सु० ॥ १६ ॥ सु० ॥ पूरव पापना योगथी रे ॥ ॥ सु० ॥ पामी स्त्री जमवार ॥ सु० ॥ सु० ॥ जरजो बन पियु घर नही रे ॥ सु० ॥ तस एलें गयो अव तार ॥ सु० ॥ १७ ॥ सु० ॥ ए मंदिर ए मालियां रे ॥ सु० ॥ पियु विना शून्य आगार ॥ सु० ॥ सु० ॥ रस कस खारां फेरशां रे ॥ सु० ॥ लागे ते चित्त मझार ॥ सु० ॥ १८ ॥सु०॥ यौवन करवत धार ज्युं रे ॥ सु० ॥ विरहिणी नारीने रोष ॥ सु० ॥ सु० ॥ नाहविहूणी कामिनी रे ॥ सु० ॥ पग पग पामे ते दोष ॥ सु० ॥ १ए ॥ सु० ॥ कालजे कउं मेली गयो रे ॥ सु० ॥ निशिदिन रही ते धुखाय ॥ सु० ॥ सु० ॥ नेह सुधारस सिंचिने रे ॥ सु० ॥ उलवे पियु घर आ य ॥ सु० ॥ २० ॥ सु० ॥ ते दिन क्यारें देखशुं रे ॥ ॥ सु० ॥ करस्यां मननी रे वात ॥ सु० ॥ सु० ॥ प्राण जीवन मुऊ देखीने रे ॥ सु० ॥ कीजें शीतल गात्र ॥ ॥ सु० ॥ २१ ॥ सु० ॥ दिनकर पहेलां ऊगते रे ॥ सु० ॥ जो प्रीतम घरे आय ॥ सु० ॥ सु० ॥ तो माणसनी उलमें रे ॥ सु० ॥ जीववुं ते जुगताय ॥सु० ॥ २२ ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥सु०॥ जो कदि नाव्यो जगते रे॥ सु० ॥ तो जइ गि
रि जंपाय ॥ सु० ॥ सु० ॥ पेट कटारी खाइ मरुं रे ॥
॥ सु० ॥ के मरुं सही विष खाय ॥ सु० ॥ २३ ॥
॥ सु० ॥ कंत विना शुं जीववुं रे ॥ सु० ॥ कंत विना
किशुं हेज ॥ सु० ॥ सु० ॥ कंत विना शुं मालवुं रे॥
॥ सु० ॥ कंत विना शी सेज ॥ सु० ॥ २४ ॥ सु० ॥
डुःख नर छाती फाटती रे ॥सु० ॥ रही नथी शकती
गेह ॥ सु० ॥ सु० ॥ विरहानलनी बाफमां रे ॥ सु०॥
दाझी रही डुं तेह ॥ सु० ॥ २५ ॥ सु० ॥ विरहिणी
एम विलपे घणुं रे ॥ सु० ॥ वसंतसिरी ससनेह ॥
॥ सु० ॥ सु० ॥ नयणें आंसू रेडती रे ॥ सु० ॥ जा
णे ज्युं नाइव मेह ॥ सु० ॥ २६ ॥ सु० ॥ वसंतसि
री एम पाववे रे ॥ सु० ॥ शुकने संदेशा जिवार ॥
॥ सु० ॥ सु० ॥ नारीनुं डुःख सांभली रे ॥ सु० ॥
बोल्यो मन्नी तिवार ॥ सु० ॥ २७ ॥ सु० ॥ खोलो
कमाड सहेलीयां रे ॥ सु० ॥ मूकी मननी राड ॥
॥ सु० ॥ सु० ॥ उलखियो पति आवियो रे ॥ सु० ॥
हर्षे उघाड्यां कमाड ॥ सु० ॥ २८ ॥ सु० ॥ निजप
तिनुं मुख देखतां रे ॥ सु० ॥ कामिनि हर्ष नराय ॥
॥ सु० ॥ सु० ॥ हर्ष विनोद जे उपनो रे ॥ सु० ॥ पु

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

स्तकें लखियो न जाय ॥ सु० ॥ २ए ॥ सु० ॥ वेधकने मन वल्लही रे ॥ सु० ॥ ए पंचदशमी ढाल ॥ सु० ॥ ॥ सु० ॥ लब्धें बीजा उल्लासनी रे ॥ सु० ॥ कही शुन रंग रसाल ॥ सु० ॥ ३० ॥ सु० ॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे प्रीतम घरे आवतां,वाध्यो नवलो नेह ॥ मुह माग्या पासा ढल्या, अमियें वूठा मेह ॥ १ ॥ नव पल्लव थइ अंगना, वसंतसिरी गुणगेह ॥ प्रेम सरोवर झीलतां, वानो वधियो देह ॥ २ ॥ दंपति दो रंगें मल्यां, सुख नर कीधी वात ॥ दुःख दोहग दूरें गयां, प्रगटी ते सुख शात ॥ ३ ॥ कहे नारी पियु सांनलो, धुरथी कहुं ससनेह ॥ तुमें चाल्या लंकानणी, पाछ ल वीती जेह ॥ ४ ॥ में तुमने पहेलां कही, ते सं नारो नाथ ॥ नृपने मंदिर दाखव्युं, दीपक लेइ निज हाथ ॥ ५ ॥ ते वात आवी आगलें, जव तुमें चा व्या लंक ॥ तव नृप मुझ केडें पडयो, जाणीने निःशं क ॥ ६ ॥ मेहेमंतो ऊवट थइ, गज शिर नाखे धूल ॥ तिम नृप दासी मोकली, करवा मुझ अनुकूल ॥ ७ ॥

॥ ढाल शोलमी ॥

॥ एतो नथडीरो मोती अजब बन्यो ॥ ए देशी ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

एतो दासी मुऊ कने मोकली, एतो लेइ नूखण साच ॥ साहेब मोरा हे॥एतो चूवा रे चंदन अरगजा,ए तो सीं सा नरिया काच ॥ सा० ॥ १ ॥ सांनलो प्रीतम मा हरा ॥ एतो देवा मुऊने लांच ॥सा०॥ ए आंकणी ॥ ॥ एतो मीठी साकर सूखडी, एतो मीठा मेवा डाख ॥ सा० ॥ एतो ठाब नरी वली मोकली, एतो मीठी आंबा साख ॥सा०॥२॥सां०॥ एतो जरतारी सालू नला, एतो आप्यां नव नवां चीर ॥ सा० ॥ जाणे वाघा सुरनारी तणा, एतो सोहे तेजमें हीर ॥ सा०॥ ॥ ३ ॥ सां० ॥ इत्यादिक लेइ नेटणां, एतो मूक्यां चेटी साथ ॥ सा० ॥ कहे चेटी मुऊ आवीने, तुम नेट करे नूनाथ ॥सा०॥४॥सां०॥ एतो दासी कहे वली मुऊने, तुमें सांनलो हरिबल नार ॥ सा० ॥ एतो नृप राखे तुम ऊपरें, एकंगो थइ घणो प्यार ॥ सा०॥५॥सां०॥ एतो जे दिन तुम घरे आविया, ए तो नोजन करवा सार ॥ सा० ॥ एतो ते दिनथी तुमें चित्त वस्यां, मनथी न विसारे लगार ॥ सा० ॥ ॥ ६ ॥ सां० ॥ एतो ते दिनथी तुमने घणुं, मिलवा नी राखे हूंश ॥ सा० ॥ एतो एहमें जूठ न जाणजो, तुम सत्य करि कहुं सूंस ॥सा०॥ ७ ॥सां०॥ एतो

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

तव समजी हुं चित्तमां, नृप जाएयो लंठ कुजात ॥ सा०॥ एतो पियु मुज रीश चढी घणी, उठीने में दीधी लात ॥सा०॥ ८॥ सां०॥ एतो कुंदीपाक कस्यो घणो, करें जीवित सुधी याद ॥ सा० ॥ एतो नाठी दासी नृप कने, जइ कीधी ते फरियाद ॥ सा०॥ ए ॥ सां०॥ एतो सांजली नृप विलखो थयो, एतो समजी रह्यो मनमांहि ॥ सा० ॥ एतो वलि राणीनें मोकली, लेइ नूखण सार उबाह ॥ सा०॥ १०॥सां०॥ एतो तव में अवसर उलख्यो, एतो राणीने राजी कीध ॥ सा० ॥ एतो कपटें मासनो वायदो, करी राणीनें शीख में दीध ॥ सा० ॥ ११ ॥ सां० ॥ एतो आज ते मास पूरो थयो, एटले तुमें आव्या घेर ॥ सा० ॥ एतो फलीया मनोरथ माहरा, मुज वाधी पुण्यनी शेर ॥ सा० ॥ १२ ॥ सां० ॥ एतो पियु तुम मंदिर आवते, मुज शीयल रह्युं अखंम ॥सा०॥ एतो नृपति रह्यो हवे फूलतो, पडि तेहना मुखमें खंम ॥सा०॥१३॥ सां० ॥ एतो इत्यादिक पियु आगलें, कही रमणीयें मांमी वात ॥ सा० ॥ एतो हरिबलें सघलुं सांजली, गुण लीधो स्त्रीनो विख्यात ॥सा०॥ १४ ॥सां०॥ हवे हरिबल कहे निज प्यारीने, तुज बेहेन ठे वाडी मञ्च

॥ सा० ॥ एतो लंकागढथी लावियो, एतो परणी म होटी सजऊ ॥ सा० ॥ १५ ॥ सां० ॥ तव वसंतसि री हरखित थइ, नलें आवी माहारी बेहेन ॥ सा०॥ एतो वारे वासे पामशुं, गुण महोटो थयो सुख चेन ॥सा०॥१६॥सां०॥ हवे वसंतसिरी सहेलीशुं, गइ वा डीयें तेडवा तेह ॥सा०॥ कुसुमसिरी निज बेहेनने,घणे हेतें लावी गेह ॥सा०॥ १७ ॥ सां०॥ एतो वसंतसिरी ने पाय पडी, दीधो कुसुमसिरीयें लाग ॥ सा० ॥ नखने मांस ज्युं प्रीतडी, तिम बिहुने थयो एक राग ॥सा०॥ १८ ॥ सां० ॥ एतो दोगुंदक सुरनी परें, दो नारीशुं जोगवे जोग ॥सा०॥ एतो हरिबल जीव दया थकी, सुख पाम्यो पुण्य संयोग ॥ सा०॥१ए ॥सां०॥ एतो इणिपरें जे दया पालशे,एतो सांजली गुरु उपदेश ॥सा०॥ एतो हरिबलनी परें पामशे,एतो नवोनव सुख विशेष ॥ सा० ॥ २० ॥ सां० ॥ एतो सोहम शुद्ध परंपरा, तस गादीयें हीर सूरिंद ॥ सा० ॥ एतो सा ह अकब्बर बूझवी, एतो मेलव्यो सुकृत वृंद ॥सा०॥ ॥ २१॥सां०॥ एतो तस शिष्य पंमित सोहता, धर्म विजय कविराय ॥ सा० ॥ एतो तस शिष्य धनहर्ष जग जयो, एतो पंमित मांहे सराय ॥ सा० ॥ २२॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ सां० ॥ एतो तस शिष्य कुशल विजय गणि, गणि कमल विजय तस भ्रात ॥सा०॥ एतो तस शिष्य ल क्ष्मीविजय कवि, एतो ज्ञान क्रियामें सरात ॥ सा० ॥ २३॥सां० ॥ एतो तस शिष्य केशर अमर दो, एतो जगमां कर्म क्षिपंत ॥ सा० ॥ एतो सूरज चंद्र तणी परें, दोय बंधव तेज दीपंत ॥ सा० ॥ २४॥ सां०॥ एतो तस पद पंकज किंकरु, एतो लब्धिविजय उ जमाल ॥सा०॥ शोले ढालें पूरो कह्यो, एतो बीजो उ ल्लास रसाल ॥सा०॥२५॥सां०॥ इति श्रीजीवदयापरे हरिबलमछीरासे लंकागमनागमनसंबंधः संपूर्णः॥२॥

॥ दोहा ॥

॥ शांति सुधामयमें प्रभु, मगन रहे निशिदीस ॥ केवलज्ञान प्रकाशथी, देखे विश्व जगीश ॥ १ ॥ ज्यो तिवधूना संगमें, निशिदिन रह्यो लपटाय ॥ तस पद पंकज हुं नमुं, वामानंदनराय ॥ २ ॥ वचनामृत रस वरसती, कविमन महितल जेह ॥ नवपल्लव क विने सदा, करती माता तेह ॥३॥ चरण कमल नमुं तेहनां, बाला त्रिपुरा सोय ॥ गुण गातां ध्यातां सदा, शुभ मन वंछित होय ॥ ४ ॥ कोविद केशर अमरना, चरण कमल नमि तास ॥ तस सान्निध हरिबल तणो,

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

पजणुं त्रीजो उल्लास ॥ ५ ॥ उत्तमना गुण गावतां, होवे उत्तम आप ॥ खाइनी खेलें नावतां, जाये मल संताप ॥ ६ ॥ धर्मना रसिया जे हशे, ते सुणशे एक मन्न ॥ धर्म कथा गुण लेयने, मानशे ते दिन धन्न ॥७॥ नारे करमी बापडा, शुं जाणे ते धर्म ॥ अवगुण ले निंदा करे, साहमुं बांधे कर्म ॥८॥ ते माटे नावुक तुमें, अवगुण मत ल्यो कोय ॥ कीजें व्यवसाय धर्म नो, तेहमें खोट न होय ॥ ए ॥ इम जाणी तुमें सांन लो, हरिबल केरुं चरित्र ॥ धर्मकथा सुणतां थकां, आतम होवे पवित्र ॥१०॥ हवे सुणजो नविका तमें, हरिबल केरी ख्यात ॥ लंका जइ आव्या पछी, शी शी निपजी वात ॥ ११ ॥

॥ ढाल पहेली ॥

॥ थारा मोहोला ऊपर मेह,झबूके वीजली ॥ हो लाल झबूके वी०॥ ए देशी ॥ हवे हरिबल पहेरे वेश ते, जाणी प्रेक्षनो हो लाल के ॥ जाणी प्रेक्षनो ॥ दूरथी आवतो जाणे, नरेश ते लेक्षनो हो० ॥ नरे० ॥ एहवो वेश बणाय, प्रजातें निकल्यो हो०॥ प्रजा० ॥ लोकनी दृष्टें जणाय, ते हरिबल अटकल्यो हो०॥ ते० ॥१॥ चहुटे वहेतां जुहार, जुहार ते सहु करे हो० ॥ जु० ॥ ह

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

रिबलने मनोहार, करे सहु जली परें हो० ॥ क० ॥
इम करतां दरबार, ते मांहे आवियो हो०॥ते०॥जिहां
बेठी परखद त्यांहे, उब्बांहे जावियो हो० ॥ उ० ॥२॥
नृपजन आदि परज, ते जठी सहुं मली हो० ॥ते०॥
एक नृप विना बीजी परज, ते मनमें थइ रली हो० ॥
॥ ते० ॥ पूछे मांहोमांहे, ते कुशलनी वारता हो० ॥
ते०॥ पाछो उत्तर हरिबल, दे दिल धारता हो०॥दे०॥३॥
प्रगटी होलीनी जाल ते, नृपना मन्नमें हो० ॥ नृ० ॥
लागी अंगो अंग, अंगीठी तन्नमें हो० ॥ अं० ॥ वलि
मंत्री कालसेननुं, कालजुं नीकल्युं हो०॥ का०॥ श्याम
वदन थयुं तास, ज्युं श्याम जाजन तलुं हो०॥ज्युं०॥४॥
जाणे जहाज निमज्ज, थयुं दरिया वच्चें हो० ॥ थ०॥
तिम हरिबलने देखि, दो नृप मंत्री लचे हो० ॥दो०॥
कारीमो रंग देखाडी, कहे मुखथी घणुं हो० ॥कहे०॥
हरिबल देइ आदर, दे नृप बेसणुं हो०॥दे०॥५॥ आ
गत स्वागत कीध, घणी हरिबल तणी हो० ॥ घ० ॥
पूछे सोज समाचार, नृप हरिबल जणी हो०॥ नृ० ॥
कहो हरिबल तुमें लंका, गढ जणि किम गया ॥हो०॥
ग०॥ राय बिजीषण केरा, समाचार किम थया हो०॥
स०॥६॥ तव हरिबल ते खडग, करे लेइ जेटणुं॥हो०॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

क० ॥ राय बिभीषणे मोकल्युं, ए तुम चेटणुं हो० ॥ ए० ॥ हवे हरिबल कहे सांजलो, स्वामी तुम नणुं हो०॥स्वा० ॥ लंका गढना समाचार, श्या कहुं तुम घणुं हो०॥श्या०॥७॥ विकटा मारग आटां, कांटा ते घणा हो०॥कां० ॥ पंथें वहेतां आकरो, लाग्यो नही मणा हो०॥ला०॥ इम करतां दुःख सहेतां, पूगो जल निधी हो०॥पू०॥कालामंबर जल नखां,खारो जलोदधी हो० ॥ खा०॥८॥ लांबो पहोलो सहस, इसी योजन कह्यो हो० ॥ इसी० ॥ ते परमाणें महोटो, सागर जल जह्यो हो० ॥ सा० ॥ नाना महोटा मगर, मछ ते दीसता हो०॥म०॥ वाघने सिंहने रूपें, दीसे हिंसता हो० ॥दी०॥ ए॥ चिहुं दिशिमें जल पूरी, दीसे वसुमती हो० ॥ दी० ॥ माणस पंखीमात्र न, दीसे ए क रती हो० ॥ दी० ॥ जलना लोढ चले ते, हिमा ला टूक ज्युं हो० ॥ हि० ॥ उछलें जल असमान, शिखा चढे हूं कह्युं हो० ॥ शि० ॥ १० ॥ जाणे अषाढो मेह, ज्युं दरियो गाजतो हो०॥ ज्युं० ॥ शूर सुनटनां मान, ते दूरें नांजतो हो० ॥ ते० ॥ एहवो जलधि नयंकर, देखी बिहामणो हो० ॥ दे० ॥ जल में पगलुं देतां, मन धूज्यो घणो हो० ॥ म० ॥११॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

पण शुं करीयें स्वामी, तुमारा कामने हो० ॥ तु० ॥ कठिण कखुं तिहां मन, संजारी रामने हो० ॥ सं० ॥ पाछुं केम वलाय जे, कामें नीकल्यो हो० ॥ के ॥ ॥ जे० ॥ मरण कबूल कखुं पण, पाछो नवि टल्यो हो० ॥ पा० ॥ १२ ॥ उत्तमना जे बोल, ते गजदंत नीसस्या हो० ॥ ते० ॥ ते पाछा किम उसरे, पंचमें उच्चस्या हो० ॥ पं० ॥ पंचनी साखें बोल, जे बोली यो ते टले हो० ॥ जे० ॥ ते नरनारी जीवतां, मूआ मां जले हो० ॥ मु० ॥ १३ ॥ वयण चूकां ते मान वी, लेखे नवि गणे हो० ॥ ले० ॥ इहनव परजव कार, गयो तस जिन जणे हो० ॥ ग० ॥ इम जाणीनें स्वामी, तुमारा काजने हो० ॥ तु० ॥ वाल्यो जलमें जीव, कठिण करी लाजने हो० ॥ क० ॥ १४ ॥ वलि एक हरिबल कौतुक, नी नृप आगलें हो० ॥ नी० ॥ कल्पित वात करी कहे, ते सहु सांजले हो०॥ ते० ॥ जलमें गयोज न आघो, ते हुं मन संवरी हो० ॥ ते० ॥ तब एक राखस आव्यो ते, साहामो जल तरी हो० ॥ सा० ॥ १५ ॥ ऊंचो तो जाणीयें सप्त ए, ता ड प्रमाण ज्युं हो० ॥ ता० ॥ लांबो होठ ते जाणी यें, वंशसमान ज्युं हो० ॥ वं० ॥ दंता लोढा ताल,

करे करी कलमली हो० ॥ क० ॥ अवली सवली दो
ट, दीये धसी फलफली हो० ॥ दी० ॥ १६ ॥ जाणे
आंखो दो ऊंमी, जूंमी डुंगर दरी हो०॥ जूं० ॥ माथुं
महोटुं ते जाणीयें, हलपले धूंसरी हो० ॥ ह० ॥ मा
थे कावरा केश, ते जाणीयें फांखरां हो० ॥ ते० ॥
दंताली समा दांत, ते विरला आकरा हो० ॥ वि०
॥ १७ ॥ ताडसमा दो हाथ ते, राखस झोहना हो०
॥ रा० ॥ अंगुलीना नख जाणीयें, पावडा लोहना
हो० ॥ पा० ॥ पेट तो जाणियें ऊंमो, कूवो फूडनो
हो० ॥ कू० ॥ थंन समान दो चरण ते, राखस जूं
मनो हो० ॥ ते० ॥ १८ ॥ काल कंकाल समान, न
यंकर नैरवो हो० ॥ न० ॥ जाणे यमनो बंधव, प्रग
ट्यो अनिनवो हो० ॥प्र० ॥ क्रोधानलनी फाल ते,
मुखथी काढतो हो० ॥ मु० ॥ करतो अट्टट्ट हास,
ते कर दो पछाडतो हो० ॥ ते० ॥ १९ ॥ मुआ
साप ज्युं गंध, गंधाय डुर्वातनो हो० ॥ गं० ॥ उ
दरथी निकले आहार जे, ते दिन सातनो हो०॥ते०॥
एहवो बिहामणो राक्षस, ते साहामो मल्यो हो०
॥ते०॥ एक तो जलधि बीजो, राक्षस देखी ठल्यो हो०
॥रा०॥२०॥ म्हें तव जाणियो जूनो, पूर्वज आवियो

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ हो० ॥ पू० ॥ विवानीवच्चो, घर्घरणो जगाडियो हो० ॥घ०॥ राज्यनुं काम सधावा में, तव बुद्धिकरी हो० ॥ में० ॥ मामो कहिने बोलाव्यो, राखसने म्हें फरी हो०॥ रा०॥२१॥ आवो मामा जुहार,नाणेज तुमने करे हो० ॥ ना० ॥ द्यो अनेदान ते मामा, नाणेजने नलि परें हो०॥ना०॥स्वामी तुम्ह प्रसादथी,बुद्धि ए ऊकली हो० ॥बु०॥ राजी थयो तव राखस,वाणी सुणी नली हो० ॥ वा० ॥२२॥ पूछे राखस नाणेज, तुं इहां किहां थ की हो० ॥ तुं० ॥ किम तुं आव्यो जलधिमें, ते मुऊ कहे बकी हो० ॥ ते० ॥ तव हरिबल कहे मामा, मुऊ लंका तणो हो०॥ मु० ॥ दाखवो मारग माह रे, काम छे तिहां घणो हो० ॥ का० ॥ २३ ॥ जावुं छे नृप कारज, शीघ्र उतावलो हो० ॥ शी० ॥ तव रा खस कहे नाणेज, दीसे तुं बावलो हो० ॥ दी० ॥ मीयां वादे चावे, चणा तुंए नवुं हो० ॥ चा०॥ श्यो तुऊ आशरो नाणेज, लंकामें जवुं हो० ॥ लं० ॥ २४ ॥ चूसी ले तुऊ राखस, धोले दी छतां हो० ॥ धो० ॥ किम तुऊ पूरवें नाणेज,लंका गढ जतां हो० ॥ लं० ॥ जेहथी निपजे काम,ते तेह करी शके हो० ॥ ते० ॥ बांध्यो गऽो खाइ, बुधां त्यां बहु बके हो०

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥बु०॥२५॥ चमक्यो चित्तमें स्वामि उखाणो सांनली हो० ॥ उ० ॥ घर सरखि नहि यात्र, ए वात में अ टकली हो० ॥ ए० ॥ तव में पूछ्युं स्वामी, राखसने ते वलि हो० ॥ रा० ॥ मुऊने बतावो मामा, लंका कूंची गली हो० ॥ लं० ॥ २६ ॥ किणिविधें मामा जवाये, लंका गढ हुं लहुं हो० ॥ लं० ॥ तव राखस कहे नाणेज, सांनलो हुं कहुं हो० ॥ सां० ॥ त्रीजा उल्लासनी ढाल, ए पहेली उच्चरी हो० ॥ ए० ॥ लब्धि कहे नवि सांनलो, आगें उजम धरी हो० ॥आ०॥२७॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे राखस कहे मन्त्रिनें, सांनल तुं नाणेज ॥ जो जावुं तुऊ लंकमें, तो करि कहुं ते हेज ॥ १ ॥ अगनी तुऊ काया दही, कर तुं रक्षा हन्न ॥ ते रक्षा पडी लेइने, सोपुं लंका तन्न ॥ २ ॥ इणि विधि तुं लंका लहे, बीजी विधि नवि कांय ॥ जो तुऊ बलें लंका गयो, तो तुऊ राक्षस खाय ॥ ३ ॥ राक्षस वय ण ते सांनली, में धार्युं मनमांहि ॥ जीवित जो वाहालुं करुं, तो पण न रहे कांहि ॥ ४ ॥ रमणी राज्य ने रू ढि ते, तन धन जे वलि प्राण ॥ एतां करे अलखाम णां, वाक्यवछलना जाण ॥ ५ ॥ ते जाणी तुम कार

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

जें, कीधुं मरण कबूल ॥ इंधण काष्ठ मेली करी, करवा मांमयुं सूल ॥ ६ ॥ चिता रची दोयजण मिली, कीधो अग्नि प्रगट्ट ॥ सलगाडी चय चिहुं दिशें, प्रगटी जाल त्यां फट्ट ॥ ७ ॥ तिण विचमें तुम किंकरें, झं पापात ते कीध ॥ देह दही तुम कारणें, करवा काज प्रसिद्ध ॥ ८ ॥ सामधर्मि थइने प्रभु, कीधी काया होम ॥ घृत मधशुं ते परजली, जालज ऊठी धोम ॥ ॥ ए ॥ तेहनी जे रक्षा थइ, बांधी पोटकी ठार ॥ राखस ले गयो लंकमें, करवा मुझ उपगार ॥ १० ॥ राखस ते लेइ पोटकी, नृप नजरें करि नेट ॥ राय बिनीषणें पूछियुं, शी करि तें ए भेट ॥ ११ ॥

॥ ढाल बीजी ॥

॥ नटियाणीनी देशी ॥ हवे राखस कर जोडी हो कहे आलस छोडी रायने, ए तो लंकापति अवधार ॥ हुं जव सायर कंठें हो उपकंठें छेक ते जायने, मुझ वलियो आगार ॥ हवे० ॥ १ ॥ तव एक पंथी बेठो हो में दीठो निग्रंथी पणे, ए तो सायर पेले पार ॥ हुं गयो जव ते साहामो हो ते पण कहि मामो नणे, तुमें आवो मामा जुहार ॥ हवे० ॥ २ ॥ में पण पूछियुं तेहने हो तुं केहने नरोंसे इहां रह्यो, तव

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

बोल्यो पंथी सार ॥ राय बिन्नीषण केरुं हो छे शरणुं नलेरुं मुज कह्युं, ए तो जाणेज बोल्यो विचार ॥ ॥ ह्वे० ॥ ३ ॥ तुम दरिसणनो अर्थी हो करि कर थी छारनी पोटकी, मुज बांधी दीधी एह ॥ कहे रा खस तुम सयणे हो तुम नयणे मूकि ए पोटकी, ए तो नेट करी में तेह ॥ ह्वे० ॥ ४ ॥ इम राखस गयो कहिने हो ए तो वहीने फरी निज थानकें, तव चिंतवे बिन्नीषण चित्त ॥ विस्मय पाम्यो मनमें हो राय जनमें छोडी जाणके, ए तो राखसनी पोटकी दीत ॥ ५ ॥ .एम हरिबल कहे नृपने हो घणे यतें नस्म करें यही, मुज छांटे अमृत तोय ॥ ए आंकणी ॥ विद्याबलें करी शुद्धो हो मुज कीधो जी वतो देखतां, तिणे दीधो फरि अवतार ॥ सनमान्यो मुने स्वामी हो घणुं अंतरजामी पेखतां, मुज कीधो बहु उपगार ॥ ए० ॥ ६ ॥ लंकापति मुज पूछे हो ए शुं छे तें काया दही, मुज मांझी कहो विरतांत ॥ तव में लंकापतिने हो कहि यतनें मांझीने सही,एतो आपणा घरनी वात ॥ ए० ॥ ७ ॥ वीशालापुर नग री हो छे सघरी सघला देशमें, ए तो महोटी पुण्य पवित्र ॥ मदनवेग त्यां राया हो सुखदाया सघला

नरेशमें, ए तो सोहे प्रजामें उत्र ॥ ए० ॥ ७ ॥ अंग जने परणावा हो जस पावा चिहुं दिशिमें प्रभु, एतो मांमध्यो उछव रंग ॥ तिण कारण नृप मेले हो मन मेले सघलाशुं विभु, एतो तेडी ते आमंग ॥ ए० ॥ ॥ ए ॥ तेणें तुम आमंत्रवा हो ए तो मंत्रवा हर्ष हि ये धरी, तिणे तेडवा मूक्यो मुझ ॥ ते माटे तुमें वे ला हो ए तो लगननी पहेला परवरी, तुमें आवोज्युं पडे सूझ ॥ए०॥१०॥ तव लंकापति बोल्यो हो मन खोली कहे मुझ आगलें, तुं सांजल पंथी सुजाण ॥ में किम तिहां अवराय हो न जवराये निज नागलें, तो किम थाय प्रयाण ॥ ए० ॥ ११ ॥ ते माटे तुमें कहेजो हो मुझ मुजरो लेजो दिन प्रतें, तिहां बेठा विशाला मझ ॥ खड्गनी आ सहनाणी हो गुण खाणी मूकी तुम प्रतें, ए तो सघले कामें सकझ ॥ ॥ ए० ॥ १२ ॥ एम कहिने बिभीषणें हो मुने नूष ण देइ जडावनां, वली पूत्री पण मुझ दीध ॥ तुम परसादें सांइ हो प्रभु मुझ अंतर मांइ भावना, मुझ कीधी बिभीषणें वृद्ध ॥ ए० ॥ १३ ॥ घणे आमं बरें करीने हो जस वरीने मुझ बोलावियो, निज पुत्री सहित महाराज ॥ वलि निज सेवक साथें हो ए

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

तो मूकी हाथें नलावियो, मुझ लंकापति शुन आ
ज ॥ ए० ॥ १४ ॥ विद्याबलें पंथ काप्यो हो सुख
व्याप्यो पलकमें ढूकडे, एतो जब थइ प्रज्जुनी लहेर ॥
रजनी मध्य प्रदीपें हो निज नगरी समीपें रूंखडे, ए
तो मूकी वलिया घेर ॥ ए० ॥१५॥ हुं पण मंदिर आ
यो हो सुख पायो प्रज्जुनी महेरथी, हुंतो जे गयो बीडुं ब
बेय ॥ फलि मुझ चाकरी लंका हो देइ झंका आयो तुम
लहेरथी, हुं तो लंकालाडी लेय ॥ ए०॥ १६ ॥ ए सहना
णी खङ्गनी हो जे निपनी सगेंनी तुम नणी, एतो मूकी
बिन्नीषणें साच ॥ वलि तुमने कर जोडी हो मान
मोडी प्रणिपत करी घणी, तुम सपगो कह्यो ए मुख
वाच ॥ ए० ॥ १७ ॥ ए सहनाणी देखी हो मुनें
पेखी आव्या जाणजो, एतो अमने विवाहमांहि ॥
वलि तुम सेवक नांखे हो मुख वचनें दाखे ते मा
नजो, तुम मदनवेग उबांहि ॥ ए० ॥ १८ ॥ इणि प
रें व्यतिकर सघलो हो नृप आगल मांझि परगलो, ए
तो सपगो मब्रि कहेय॥ते नृप सांजली वाणी हो मन
जाणी हरिबल अटकल्यो, ए तो साहस धैर्य धरेय ॥
ए० ॥ १९ ॥ सघली परषदा निसुणि हो मन हर
णि सांजली वातडी, ए तो हरखित परषद होय ॥ ध

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

न्य करणी हरिबलनी हो गयगमणि लंका जातडी, ए तो परणी आणी सोय ॥ ए० ॥ २० ॥ नृप पण थ यो मन राजी हो शुन देइजाजी वधामणी, ए तो ह रिबल कीध प्रसन्न ॥ घणे आमंबरें करीने हो हरिब लने कीध पहेरामणी, ए तो मूक्यो निज आसन्न ॥ ए० ॥ २१ ॥ गोखें बेठी देखे हो पियु आवतो पेखे रंगशुं, थइ नारी दो उल्लास ॥ दंपतीनी दो दृष्टि हो थइ सुधावृष्टि चंगशुं, ए तो पहोती सघली आश ॥ ए० ॥ ॥ २२ ॥ हवे हरिबल मतवालो हो ए तो दो गोरीनो नाहलो, ए तो सुख विलसे संसार ॥ प्रेम सुधारस प्यालो हो एतो पियुने वालो वाहलो, ए तो सफल करे अवतार ॥ए० ॥ २३॥ जुवो नविया प्राणी हो मन जाणी जीव ऊगारीयो, एक जलचर जीव जो मन्न ॥ तो तस पुण्य प्रनावें हो शुन नावें जनम सुधारि यो,लह्यो मन्नी लब्धि सुलन्न ॥ए० ॥२४ ॥ ढुं बलिहा री तेहने हो ले जेहने लेश्या धर्मनी, तस होवे सुर नर दास ॥ त्रिजा उल्लासनी पूरी हो बीजी ढाल स नूरी मर्मनी, ए तो पन्नणी लब्धि सुवास ॥ए०॥२५॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे नृपें हरिबल नारीनी, डुविधा मूकी दूर

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ जाग्यो जव मंदिर धणी, लाज्यो चोर मजूर ॥१॥ तिम नृप समजी मन्नमें, हरिबलशुं करे प्यार ॥ हरि बल पण सेवा करे, नृपनी ते दरबार ॥ २ ॥ हरिब लनी थइ वातडी, नगरि विशाला मझ ॥ लंका लाडी लावियो, परणी लछ सुलछ ॥ ३ ॥ ते वातो श्रव णें सुणी, कालसेन परधान ॥ परजले मनमें पापी यो, हरिबल सुणि जस वाण ॥४॥ दिनकर देखी घूक ज्युं, रजनीपति ज्युं चोर ॥ जलधर देखि जवास ज्युं, त्युं बले सचिव ते जोर ॥ ५ ॥ पण शुं करे पड्यो एकलो, जोर न चाले कोय ॥ जेहना दीहा पाधरा, तस अरि अंधज होय ॥ ६ ॥ कर क्रम धोइ वांसे थ यो, हरिबलने ते दुष्ट ॥ छल ताके छलवा जणी, कालसेन उच्चिष्ट ॥ ७ ॥ एक दिन बेठो मालीये, मद नवेग ते राय ॥ कालसेन तिहां आवियो, बेठो प्रण मी पाय ॥ ८ ॥ कानें लाग्यो चाडियो, कालसेन की राड ॥ हरिबलने दुःख दाखवा, नृपने घाले राड ॥ए॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

॥ इण सरोवरीयांरी पाल,आंबा दोय राउला ॥ ल लना ॥ ए देशी ॥ हवे हरिबलनां वयण, वखाण तें नृप करे ॥ ल० ॥ खागी त्यागी निकलंक के, शूर सु

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

नट सरे ॥ ल० ॥ जो परधान ते एकलो, लंका गढ गयो ॥ ल० ॥ माहरुं काज सुधारवा, बली नस्म थ यो ॥ ल० ॥ १ ॥ काढयो आपणे दो जणें, मलीने स्त्रीवती ॥ ल० ॥ टाढे पाणीयें वेगली, खस काढी ह ती ॥ ल०॥ पण ते साहामुं लाडी, लंका लेइने ॥ल०॥ आव्यो आपणे मंदिर, मंका देइने ॥ ल०॥२॥ तो में जाण्यो ए पूरण, नाग्य बली घणो ॥ ल० ॥ जामा ता थइ आव्यो ए, लंका गढतणो ॥ ल० ॥ लाव्यो सहनाणी खड्गनी, नृपशुं मत करी ॥ ल० ॥ लंका पतिनी माहरी, दो राखी सरजरी ॥ ल० ॥ ३ ॥ बुद्धि अकल परपंच ए, में दीतो सही ॥ ल० ॥ मद नवेगें मंत्रि आगल, वात ए सवि कही ॥ ल० ॥ काल सेनने पगथी, मांमी माथा लगें ॥ ल० ॥ प्रगटी झा ल ते सांजली, जागी अंगो अंगें ॥ ल०॥ ४ ॥ बोल्यो मंत्री ताम, कहे रीशें बली ॥ ल० ॥ चलि तुम अ कल जे नरपति, हरिबलनी कली ॥ ल० ॥ शुं तुमें जाणो स्वामी, ए धूरतनी कला ॥ ल० ॥ मानो स घलुं धोलुं ते, दूध करी जला ॥ ल० ॥ ५ ॥ मारें मिंग असंबंधने, अणघडीयां वली ॥ ल० ॥ गजनुं कलिंग तेमांहे, गज तेरनी कली ॥ ल० ॥ अंधे दी

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

गो चंड, अमासनी रातडी ॥ ल० ॥ तिम हरिबल नी ए मानजो, नृप तुम वातडी ॥ ल० ॥ ६ ॥ शुं जाणी प्रभु वयण, वखाण करो तुमें ॥ ल० ॥ ए दं नीनां सयल, चरित्र लहुं अमें ॥ ल० ॥ जे परदेशी लोक ते, दीसे एहवा ॥ ल० ॥ नाटक चेटक जाणे, वादीगर जेहवा ॥ ल० ॥ ७ ॥ कूड कपट परपंच, करी कला केलवे ॥ ल० ॥ कल्पित वात करी, कडीयें कडी मेलवे ॥ ल० ॥ परगामें परदेशी, फरे थइ ठेल सा ॥ ल० ॥ मोडा मोडी करे घणा, धोबी बेलसा ॥ ॥ ल० ॥८॥ बेसी परजमें वातो, करे महोटी करी ॥ ॥ ल० ॥ मिंगे मिंग चलावे ते, लोक जाणे खरी ॥ ॥ ल० ॥ साची जूठी करे ते, मुखें न लगाडीयें ॥ ॥ ल० ॥ श्वान बोलाव्युं चाटे ते, वदन बिगाडीयें ॥ ॥ ल० ॥ ए ॥ ते माटे तुमें स्वामि, सही करी मान जो ॥ ल० ॥ कपटीमां शिरदार ए, हरिबल जाणजो ॥ ल० ॥ किहां लंका किहां लंक, पतिनी पुत्रिका ॥ ॥ल०॥ अणमलती ए वात, घडी एणें बुत्रिका ॥ल०॥ ॥१०॥ ए तो कोइक धूर्त, पणे करी वातडी ॥ल०॥ परण्यो नारी ए उत्तम, मध्यम जातडी ॥ ल० ॥ ना म लियें निज आप, वधारवा अणघडी ॥ ल० ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

किहां ए लंकापतिनी, पुत्री रली पडी ॥ ल० ॥ ११ ॥ शी डुनियामें खोट, पडी हती पुरुषनी ॥ ल० ॥ लं कापतियें कीध, सगाइ ए पुरुषनी ॥ ल० ॥ नवकुल नाग विछेद, गया जब महितलें ॥ ल० ॥ आव्युं का कीडाने, राजसरे ते अणमिले ॥ ल० ॥ १२ ॥ ए उ खाणो सांनली, नृप तुमें धारजो ॥ ल० ॥ तिम ह रिबलनी वातो ए, साची ठारजो ॥ ल० ॥ जो लंका पति केरो, जमाइ साचो हशे ॥ ल० ॥ तो तुम नोतरी मंदिरें, जमवा तेडशे ॥ ल० ॥ १३ ॥ तेहनें मिशें जइ आपणें, नारी दो जोइयें ॥ ल० ॥ उत्तम मध्यमनी गति, दो कुल सोहियें ॥ ल० ॥ इणि परें मंत्रियें नृपना, कान नंजेरीया ॥ ल० ॥ नृपना मन ना कषाय, नुजंग ढंढेरीया ॥ ल० ॥ १४ ॥ जूउं कु बुद्धी मंत्रीयें, चकमक पाडीयो ॥ ल० ॥ हरिबल उ पर द्वेषनो, सिंह जगाडीयो ॥ ल० ॥ इणि परें मंत्रि यें हरिबल, नी कुबुद्धियें ॥ल०॥ नृप मन फेरव्युं जा णे, हरिबल रुद्धियें ॥ ल० ॥ १५ ॥ इम नृप मंत्री दो जण, मलि गोमो रचे ॥ ल० ॥ जमण मिशें दो नारीने, जोवा नृप लचे ॥ ल० ॥ एहवो संकेत करे जिहां, नृप मंत्री मली ॥ ल०॥ तिण अवसर तिहां

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

आव्यो, अजाणे हरिबल्ली ॥ ल० ॥ १६ ॥ आगत स्वागत हरिबल,नी ते नृप करे ॥ ल० ॥ बांह पसारी आवो, आधा आसण धरे ॥ ल० ॥ बेठा एकण गा दीयें, हरिबल नृप जिहां ॥ ल० ॥ मुखथी साकर घोलतो, बोल्यो मंत्री तिहां ॥ ल० ॥ १७ ॥ हवे करें मंत्री हरिबलनी, खुश मशकरी ॥ ल० ॥ हरिबल हर्षे एहवी, बोली उच्चरी ॥ ल० ॥ कहो हरिबल तुमें लंका, लाडी लाविया ॥ ल० ॥ राय बिभीषण केरा, जमाई नाविया ॥ ल० ॥ १८ ॥ पण एक नो तरुं तेहनुं, तुम कने मागीयें ॥ ल० ॥ लेखावटनी लागति, ते नवि नांगीयें ॥ ल० ॥ लाखनी बगसिस कोडि, हिसाब न चूकीयें ॥ ल० ॥ ढे संसारमां री ति ए, ते किम मूकियें ॥ ल० ॥ १९ ॥ गडदानो पण नाग, नथी कोइ मूकता ॥ल०॥ तो किम मूकशुं जम ण, अमारुं बतावतां ॥ ल० ॥ बाइना कात्यामां ना ग ते, कोइनो पाड ढे ॥ ल० ॥ इम हरिबलने मंत्री, कहे हस्त चाड ढे ॥ ल० ॥ २० ॥ इणि परें हास्य कु तूहल, नी करी मंत्रीयें ॥ ल० ॥ समज्यो मनमां हरिबल, सांजली गंत्रीयें ॥ ल० ॥ पापी कुमति मं त्रीयें, चकमक फेरियो ॥ ल० ॥ जमण तणो मिश

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

काढी, नृपने नंजेरियो ॥ ल० ॥ २१ ॥ एहेवा दुष्ट कुबुद्धि ते, कां जगें अवतर्या ॥ ल० ॥ यमने मंदिरें कां न, गया जे गलि नर्या ॥ ल० ॥ परनिंदा करता फरे, दुष्ट सुसाधनी ॥ ल० ॥ खावे उंखर निंदकी, काक ज्युं वाधनी ॥ ल० ॥ २२ ॥ तप जप क्रिया क ष्ट, करे जे निंदकी ॥ ल० ॥ ते मरि जाये नरग, नि गोदें ए वकी ॥ ल० ॥ नारे कर्मी जीव, कह्या ए जि नवरें ॥ ल० ॥ इह नव परनव सुखने न, देखे नली षरें ॥ ल० ॥ २३ ॥ पारकां छिद्र जूवे ते, निंदकी बोकडा ॥ ल० ॥ देवकीवंशें ते ऊपजे, ए फल रोक डां ॥ ल० ॥ समजू थइने जीव, करे निंदा पारकी ॥ ॥ ल० ॥ ते जीवने किम लेती नथी, चंमा बारकी ॥ ॥ ल० ॥ २४ ॥ इम हरिबल मन समजी, खुणस रा खी रह्यो ॥ ल० ॥ खेलशुं दाव ते अवसर, आवे जे लह्यो ॥ ल० ॥ गुडथी मरे जे जीव ते, विषथी न मारीयें ॥ ल० ॥ ए उखाणो लोक, कहे ते संनारियें ॥ ल० ॥ २५ ॥ इम धारी मनमांहि ते, हरिबल बो लीयो ॥ ल० ॥ ब्यो प्रनु लंकानोजन, वचन ए खो लीयो ॥ ल० ॥ नगरि समेत जे परखद, लेइ पधा रजो ॥ ल० ॥ करशुं टहेल ते सगति, सारु अवधा

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

रजो ॥ ल० ॥ २६ ॥ इम कही नृपने प्रणमी, हरि बल चलीयो ॥ल०॥ पण हवे नृपने मंत्रीने, जगदीश छलीयो ॥ ल० ॥ त्रीजा उल्लासनी ढाल ए, त्रीजी पूरी थई ॥ ल० ॥ लब्धि कहे नवि सांनलो, जे आगें नई ॥ ल० ॥ २७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे हरिबल घरें आवियो, बेठी नारी दोय ॥ आवतो दीठो नाहने, उठी प्रणमे सोय ॥ १ ॥ निश नर बेठां रंगमें, दंपति करे कल्लोल ॥ प्रेम सरोवर ऊीलतां, निगमे राति टकोल ॥ २ ॥ हरिबल कहे पटनारीने, सांनल प्रिया मुज वात ॥ लंका लाडी जे हणुं, ते नृप मागे लांच ॥ ३ ॥ पंच समक्षें मंत्रीयें, माग्युं नोजन सार ॥ तव हुं नृपने नोतरी, आव्यो बुं आगार ॥ ४ ॥ तव पटनारी कंतने, कहे पियु सांनल मुज ॥ एक वार नृप तेडतां, लाज बली नही तुज ॥ ५ ॥ नकटी देवी देवलें, सरड पूजारो जेम ॥ लोक उखाणो जे कहे, प्रीतम ठो तुमें तेम ॥ ६ ॥ वलि शी शक तुम धाइयो,प्रीतम बीजी वार ॥ ते हुं इम जाणुं अबुं, शान गइ तुम सार ॥ ७ ॥ देखी पेखी कूपमें, दीपक लेइ पडो हब ॥ नृप मंत्री मीठुं

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

चवे, ते तमें मानो सच्च ॥ ८ ॥ मीतां बोलां मान वी, केम पतीजां जाय ॥ नीलकंठ मधुरुं लवे, साप सपुछो खाय ॥ ए ॥ तेहनी छे ए जातडी, नृप मंत्री दो लंत ॥ चूक करी तुमने प्रभु, करशे स्त्री दो जंम ॥ १० ॥ ते माटे स्वामी तुमें, म करो कोइ विसास ॥ एतां कबहि न धीरियें, जो वंछो तन आश ॥ ११ ॥ नेंष भुजंगम नामिनी, महेत ने नूपाल ॥ ए पांचने जे धीरशे, ते नर पामशे काल ॥ १२ ॥ यम वेश्या दा सी नदी, अग्नि जूआरी काल ॥ ए साते नही आप णां, प्रीतम निज संभाल ॥ १३ ॥ तव प्रीतम वलतुं कहे, हरिलंकी निसुणेह ॥ जो मुझ दीहा पाधरा, शुं नृप करशे तेह ॥ १४ ॥

॥ ढाल चोथी ॥

॥ प्रीतमसेंती वीनवे ॥ अथवा हो मत बोले सा जनां ॥ ए देशी ॥ हांरे लाल एहवो जबाप ते धीवरें, वसंत सिरीने दीध ॥ मोरालाल ॥ जोजननी जे जो श्यें, मेली सामग्री सुसिद्ध ॥ मोरा लाल ॥ १ ॥ सार निपाई रसवती, जेहवी कही सूर्यपाक ॥ मो० ॥ एक जो कवल तेपेटमां, उतरे तो चढी रहे ढाक ॥ ॥ मो० ॥ २ ॥ हांरे लाल सागर देव पसायथी,

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

नोतर्यां नगरी लोक ॥ मो० ॥ नृपने पण दिये नोतरुं, श्रीफल लेइ करे ढोक ॥ मो० ॥ सा० ॥ ॥ ३ ॥ हां० ॥ शाला करि चउ चिहुं दिशें, पंचरंगी बनात ॥ मो० ॥ जरतारी मेरा किया, केडें बांधि क नात ॥ मो० ॥ सा० ॥४॥ हां० ॥ नर नारीनी पांत मां, मांमया सोवन थाल ॥ मो० ॥ रतन कचोलां शाकनां, मांमया झाक झमाल ॥ मो० ॥ सा० ॥५॥ ॥ हां० ॥ कुमर कुमारी पांतमां, तिहां पण मांमया थाल ॥ मो० ॥ बारें दरवाजे जइ, तंडुल उवे उज माल ॥ मो० ॥ सा० ॥ ६ ॥ हां० ॥ जोजन वेलाने समे, हरिबलें तेडां कीध ॥ मो० ॥ राउ राणा नग री जना, बेठी पांत प्रसिद्ध ॥ मो० ॥ सा० ॥ ७ ॥ ॥ हां० ॥ उयल उबीला भोगालुआ, रसिया वालम जेह ॥ मो० ॥ जांग अमल चढाइने, खाइम फेरा तेह ॥ मो० ॥ सा० ॥ ८ ॥ हां० ॥ प्रीसे पांतें प्रीस णां, सुखडी एकविश जाति ॥ मो० ॥ मेवा मीठी जातना, प्रीसे पांतिमां खांति ॥ मो० ॥ सा० ॥ ए ॥ ॥ हां० ॥ घेवर पेंडा मोतीया, कसमसीया कर्णसाई ॥ मो० ॥ झरमरीया सिंह केसरी, लाखणसाइ स वाई ॥ मो० ॥ सा० ॥ १० ॥ हां० ॥ सिरा सुंदाली

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

लापशी, गुंदवडां गुंदपाक ॥ मो० ॥ मर्कि जलेबी हे समी, मेहेसु पतासां चाक ॥ मो० ॥ सा० ॥ ११ ॥ ॥ हां० ॥ व्यंजन केही जातिनां, खारां खाटां तिरक ॥ मो० ॥ खडका ने ब्रडका घणा, हिंग वघारया हविख ॥ मो० ॥ सा० ॥ १२ ॥ हां० ॥ मांहोमांहि ते एकमना, मांमे रसिया वाद ॥ मो० ॥ अवला सवला जूऊता, करे ते जोजन स्वाद ॥ मो०॥ सा०॥ ॥ १३ ॥ हां० ॥ शूर सुनट रण खेतमें, ज्युं लडे कर ता चोट ॥ मो० ॥ तिम रसिया लडें जोजनें, कर मुखशुं करें दोट ॥ मो० ॥ सा० ॥ १४ ॥ हां० ॥ शाल दाल ने घृतसरा, चाली ज्युं नदीनीक ॥ मो० ॥ रसिया राजन जन जम्या, स्वादें करीने ठीक ॥ मो०॥ ॥ सा० ॥ १५ ॥ हां० ॥ सारनी नीपाइ रसवती, जे हमां कांइ नवि डुःख ॥ मो० ॥ नगरी जन सहुको जमी, काढी सघली चूख ॥ मो० ॥ सा० ॥ १६ ॥ ॥ हां० ॥ कपूर कस्तूरी वासिया, जलशुं करे मुख शुद्ध ॥ मो० ॥ पान सोपारी एलची, तंबोल दे मन शुद्ध ॥ मो० ॥ सा० ॥ १७ ॥हां०॥ पहेरामणी सहु ने करी, नर नारी विस्तार ॥ मो० ॥ मुज्ञानी करी दक्षिणा, वरताव्यो जयकार ॥ मो० ॥ सा० ॥ १८ ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ हां० ॥ जशपडहो वजडावियो, नगरीमांहे विख्या त ॥ मो० ॥ वातडी चाली चिहुं दिशें, हरिबल केरी ख्यात ॥ मो० ॥ सा० ॥ १९ ॥ हां० ॥ हवे सुणजो रसीया तुमें, जमता जे थइ वात ॥ मो० ॥ नृपने प्रिसवा नारी दो, आवी शोनित गात ॥ मो० ॥ सा० ॥ २० ॥ हां० ॥ नृप जमतां नूली गयो, निरखी दो स्त्री रूप ॥ मो० ॥ विकलेंद्रिय थयो राजवी, पडियो मोहने कूप ॥ मो० ॥ सा० ॥ २१ ॥ हां० ॥ काम ज्वर व्याप्यो घणो, नृपने तेह अथाह ॥ मो० ॥ नृप जाणे दो कर ग्रही, ले जाउं मंदिरमांह ॥ मो० ॥ ॥ सा० ॥ २२ ॥ हां० ॥ मूर्छागत थयो राजवी, मोह बाण लागां असेच ॥ मो० ॥ विषयारसने कारणें, पडियो गडदापेच ॥ मो० ॥ सा० ॥ २३ ॥ हां० ॥ नृपने घाली पालखी, ले गया निज दरबार ॥ मो० ॥ जाणें जमने मंदिरें, नृप गयो जाणे संसार ॥ मो० ॥ ॥ सा० ॥ २४ ॥ हां० ॥ पूरव जवनी वेरणी, वसंत सिरी दो नारि ॥ मो० ॥ चित्त हखुं हरिणाक्षीयें, नृपनुं उताखुं वारि ॥ मो० ॥ सा० ॥ २५ ॥ हां० ॥ वैद्य बोलाव्या तिहां कणें, पकडी जुए बांह ॥ मो० ॥ वैद्य बिचारा शुं करे, करक ते कालजामांह ॥ मो० ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ सा० ॥ २६ ॥ हां० ॥ आय उपाय करे घणा, टैं की न लागे कोय ॥ मो० ॥ जेणें दीधी वेदना, दूर करेज्यो सोय ॥ मो० ॥ सा० ॥ २७ ॥ हां० ॥ जो जो करणी करमनी, नृप थयो ते असराल ॥ मो० ॥ त्रीजा उल्लासनी ए कही, लब्धें चोथी ढाल ॥ मो० ॥ ॥ सा० ॥ २८ ॥

॥ दोहा ॥

॥ जाणा जोषी जाण जे, परबंधी कहे आय ॥ मुख पोथां दूरें रह्यां, जोर न चाल्युं कांय ॥ १ ॥ तिण समे मेहर मंत्रवी, फरि कीधो उपचार ॥ कोकशास्त्र तणै बलें, नृपने कह्यो करार ॥ २ ॥ मेहरमंत्री जस लह्यो, नगरी विशाला मझ ॥ वाह वाह सहु को कहे, मंत्री महोटो सकझ ॥ ३ ॥ मेहर चिंते चित्तमें, नृपने न वली शान ॥ न वले ज्युं खटमासनी, पाधरी पूंढडी श्वान ॥ ४ ॥ वली केताइक दिन गया, नृपने करतां केलि ॥ वली नृप कामें व्यापियो, वसंत श्रीनी चढि वेलि ॥ ५ ॥ तिण अवसर नृप मंत्रीनें, तेडाव्यो ते डुष्ट ॥ ते पण आव्यो नृप कने, काल सेन ते कुष्ट ॥ ६ ॥ प्रणमी नृपने मंत्रवी, बेठो पासें नजीक ॥ नृप कहे मंत्री आगलें, सांजल मंत्री ठीक ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ ७ ॥ प्यारी प्राण ते ले गइ, पिरसण आवि जिवा
र ॥ तन मन सुध भुली गयो, मंत्री देखत वार ॥
॥ ८ ॥ मन लाग्युं ते ऊपरें, जिम मन केतकी भृंग ॥
तिम मंत्री तुं जाणजे, रह्यो मुऊ जिउ तस संग ॥९॥
लागी लगन ललना तणी, शुं कहुं मंत्री तुऊ ॥
लालच रहे मुऊ तेहनी, सुण तुं मंत्री गुऊ ॥ १० ॥
ते माटें मंत्री तुमें, कोइक करो विचार ॥ छल बल
कल ते केलवी, मेलवो ते दो नार ॥ ११ ॥ मानिश
तुऊ उपगारडो, थाइश नही गुण चोर ॥ जीवित
सूधी ताहरी, अहनिश राखिश होर ॥ १२ ॥

॥ ढाल पांचमी ॥

॥ थारे माथे पचरंगी पाग, सोनारो छोगलो ॥ मा
रुजी ॥ ए देशी ॥ हवे बोल्यो मंत्री ताम, कुटिल का
लसेन ते ॥ साहेबजी ॥ तुमें सांभलो स्वामी नाथ,
प्रजाना पाल ते ॥ साहेबजी ॥ प्रभु शुं तुमें एहने ते
डी, आपो गुण करो ॥ सा० ॥ निज घरनुं सघलुं
सोंपी, आपोपुं शुं वरो ॥ सा० ॥ १ ॥ एतो गर्दभने
जिम, गुरव रंगी देयवो ॥ सा० ॥ तिम हरिबलने प्र
भु मान, देइ जश लेयवो ॥ सा० ॥ वलि गर्दभ पासें
शालि, नेलाव्यानी करो ॥ सा० ॥ ए तो पाइ दूध

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

ने व्याल, उछेरो जनहरो ॥ सा० ॥ २ ॥ तुमें इणि परें राजन साचो, उखाणो मेलव्यो ॥ सा० ॥ परदेशी अजाण ते दुर्जन, श्वानने हेलव्यो ॥ सा० ॥ ए तो वेरी तुमचो प्रगट्यो, रुधिरने शोषवा ॥ सा०॥ तुम हृदये नारीनी झाल ते, घाली दोषवा ॥ सा०॥ ॥ ३ ॥ ए तो ते माटे प्रभु, जगतो वैरी लेदीयें ॥ ॥ सा० ॥ ए तो काल कंटकने लेदतां, धर्म न वेदीयें ॥ सा०॥ ए तो शुं तुमें स्वामी, मोढे लगाडो एहने ॥ ॥ सा० ॥ ए तो कपटीमां शिरदार, में दीठो तेहने ॥ ॥ सा० ॥ ४ ॥ ए तो कपटें करीने काढी, लाव्यो नारी दो ॥ सा० ॥ वली लाव्यो अखूट खजानो, धू ती सारी दो ॥ सा० ॥ ए तो जाणजो स्वामी महो टो लेे, जगनो चोर ते ॥ सा० ॥ तुम आगें मारे मिं ग, असंबंध जोर ते ॥सा०॥ ५ ॥ ए तो प्रभु तुमें मा नी साची, जाणि सवी कही ॥ सा०॥ पण हुं जाणुं इणे कल्पित, वात करी सही ॥ सा०॥ ए तो एहनो शो विशवास, करो तुमें राजवी ॥ सा०॥ ए तो एह ना खाधामां पाणी, न मागे ते मानवी ॥सा०॥६ ॥ ए तो शी लंका शी लंका, गढना नाथनी ॥ सा० ॥ ए तो समुद्र उल्लंघी जावुं, ते मुश्कल साथनी ॥सा०॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

ए तो जो जलमें गयो होत तो, पाछो नावतो ॥सा०॥ ए तो महोटा मगरमछ, मुखें गली जावतो ॥ सा०॥ ॥ ७ ॥ तव आपणुं नाथजी महोटुं, जोर ते फावतुं ॥ सा० ॥ ए तो आपणुं चिंतव्युं थावत, सघलुं जावतुं ॥ सा० ॥ पण ए तो नाटक चेटक, करीने आवियो ॥ सा०॥ ए तो नारीने चंद्रहास्य, खड्ग दो लावियो ॥ सा० ॥ ८ ॥ जिम श्वान अजाण्यो धाइने, रोटी ले गयो ॥ सा० ॥ वली काकतालीनो न्याय, उखाणो तिम थयो ॥ सा० ॥ तिम आव्यो जाणजो हरिबल, लंका गढ जइ ॥ सा० ॥ तुम आगल फूल्यो ए वृक्ष, चोलो मोफर थइ ॥ सा० ॥ ॥ए॥ ए तो एहवा नरने मूकीयें, स्वामी यमघरे ॥ ॥सा०॥ ए तो काढीयें आलड छेट ते, दूरें जली परें ॥ सा० ॥ ए तो हवे तुमें स्वामी माहरी, बुद्धें चालशो ॥ सा० ॥ ए तो प्रभु तुमें शीघ्र दो नारी, सार्थे मालशो ॥ सा० ॥ १० ॥ तव नरपति जंपे सांभल, मंत्री माहरी ॥ सा० ॥ हवे आज पछें कदि आण न, लोपुं ताहरी ॥ सा० ॥ ए तो जेटली वात करी तें, मंत्री ते खरी ॥सा०॥ ए तो चोकस बेठी माहरें, मनडे सहचरी ॥ सा० ॥ ११ ॥ पण ते हवे मंत्री

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

वात, घडो कोइ अभिनवी ॥ सा० ॥ ए तो आपणुं
जेहथी कार्य, सीझे सुगुणवी ॥ सा० ॥ ए तो हरिब
लनो जे शल्य छे, ते काढो परो ॥सा०॥ ए तो आप
णे मंदिर रामा, दो आवे ते करो ॥ सा० ॥ १२ ॥
तव मंत्री बोल्यो नृपने, प्रणमी दुष्ट ते ॥ सा० ॥
एह वातनुं बीडुं छबूं छुं, हुं थइ पुष्ट ते ॥ सा० ॥
तुम बुद्धि बतावुं स्वामी, एहवी दिल ठरे ॥
॥ सा० ॥ ए तो जे बलथी नवि सीझे, काम ते कल
करे ॥ सा० ॥ १३ ॥ हवे ते माटे तुमें सना, मध्यें
बेसीने ॥सा०॥ तुमें यम नोतरवा हरिबल, मूको विह
सिने॥सा०॥जव बीडुं छबशे हरिबल,ते चित्त राखशुं ॥
सा० ॥ तव बाली जाली खाख, करीने नाखशुं ॥
सा० ॥ १४ ॥ विण पइशे आपणि दूर, विराध ते जा
यशे ॥ सा० ॥ तव शशिवयणी मृगनयणी, आप
णी थायशे ॥ सा० ॥ नवि शोने वायस कंठें, रयण
नो हार ते ॥ सा० ॥ ए तो छे तुम लायक नाथजी,
नारि श्रीकार ते ॥ सा० ॥ १५ ॥ मन हरख्यो मही
पति मंत्रिनी, वाणी सांजली ॥ सा० ॥ ए तो नली
बुद्धि बताइ ते, सुखदायीमां नली ॥सा०॥ इम दो ज
णे मलीने परठ, कस्यो नृप मंत्रीयें ॥ सा० ॥ यम नो

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

तरवानो मिश करि, हरिबल यंत्रीयें ॥ सा० ॥ १६ ॥ इ
म दुर्मति दीधि नृपने, काल सेन ते ॥ सा० ॥ हरिब
लने चुकवा दो जन, रहे लय लीन ते ॥ सा० ॥ पण
एतुं न जाणे मूरख, दो जण खूट ते ॥ सा० ॥ किण ठा
णे किणे कडणे, बेसशे कंट ते ॥ सा० ॥ १७ ॥ जीवलालचि
यो थइ आकरि, बांधी मोहनी ॥ सा० ॥ कोडा कोडी साग
र सत्त्वर, लहे दुःख दोहनी ॥ सा० ॥ लाख चोराशी
जीवा जोनिमें, जीव ते बहु रले ॥ सा० ॥ पण तो
हि पाप नोगवतां, साटुं नवि वले ॥ सा० ॥ १८ ॥
ए तो काटें काट वले जिम, लोहने नाजनें ॥ सा० ॥
तेम जीवने कर्मे कर्म, वधे सूसाऊने ॥ सा० ॥ ए तो पर
निंदा परद्रोह, करे जे आकरा ॥ सा० ॥ तेणें दीधां
शिवपद बारणें, आडां फांखरां ॥ सा० ॥ १ए ॥ ए तो
कंचन कामिनी ए दो, सारु बापडा ॥ सा० ॥ जीव
बांधें निकाचित कर्म, गलीनां कापडां ॥ सा० ॥ जी
व नटके वार अनंती, नरक निगोदमां ॥ सा० ॥ ए
तो सूक्ष्म बादर थइ फरे, राज ते चौदमां ॥ सा० ॥
२०॥ ए तो कंचन कामिनी सारु, जीव नमाय ले ॥
सा० ॥ ए तो इहनव परनव चोर, थई दंमाय ले ॥
सा० ॥ जिम मीनी देखे दूध, न देखे मांगडी ॥ सा०

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ तिम जीव न देखे करणी, आगें अघलाकडी ॥ सा०॥ २१ ॥ इम जाणतो जीव चेते नहिं, कर्मना जोर थी ॥सा०॥ ए तो ज्ञान क्रिया दो नवि गमे, कर्म कठो रथी ॥ सा०॥ इम मंत्री बांधे निकाचित, कर्मने काल ते ॥सा०॥ ए तो हरिबल उपर द्वेष, धरे चंमाल तें ॥ सा० ॥ २२ ॥ विण खुने मंत्रि वांसे थयो, दीशाशूल ते ॥ सा०॥ पण नृप मंत्रीना मुखमें, पडशे धूल ते ॥ सा०॥ कोइ वातें पापी बीहे नही, मंत्री व्याल ते ॥ सा० ॥ पण अंतें जातां वहेशे, पाणी ढाल ते ॥ सा०॥ २३ ॥ ए तो साहिबने घरे जोतां, लेखुं एक छे ॥सा०॥ रूडी नूंमीनो जोनारो, प्रभू नेक छे ॥सा० ए तो काल प्रस्तावने योगें, करणी संजालशे ॥सा०॥ तव दूधने जलनो वेहरो, करि देखाडशे ॥सा०॥ २४॥ एक समकित विना जे जीवने, घोर अंधार छे ॥ सा० निशि दिन घन घाती कर्मनो, नर्म वधार छे ॥ सा० पुद्गल परावर्तन काल, अनंतो ते करे ॥ सा० ॥ जप तप क्रिया कष्ट करे ते, सवि निःफल वरे ॥ सा० ॥ २५ ॥ जेहने घट व्यंतर समकित, केरी ज्योत छे ॥ सा०॥ तस अनुभव सुरमणि वंछित, सुख उद्योत छे ॥सा०॥ तस जोगें ज्योति सरूपीनुं, रूप ते उलखे ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

सा० ॥ चिदानंद ते आनंदमें लहे, शिव सुख जिन लखे ॥ सा० ॥२६॥ जेहनी करणी शुन्न महोटी, ते संसारमें ॥सा०॥ तस वास कह्यो जगवानें, सुख आगारमें ॥ सा० ॥ ए तो ढाल कही शुन्न पांचमी, त्रीजा उल्लासनी ॥ सा० ॥ ए तो लब्धि कहे नवि सुण जो, आगें सुवासनी ॥ सा० ॥ २७ ॥

॥ दोहा ॥

॥इणि परें परव करी नलो,नृप मंत्री जण दोय ॥ पहोता निज निज मंदिरें, चूप धरी मन सोय ॥ ॥ १ ॥ बीजे दिन नृप मंत्रियें, किधी कचेरी सार ॥ चामर छत्र बिराजते, बेठो तखत उदार ॥ २ ॥ छ त्रिश राजकुली मली, वड वडा ते सामंत ॥ खान उमराव ते आविया, परखदमें माहंत ॥ ३ ॥ ह रिबल पण तिहां आवियो, बेठो नृपनी संग ॥ एक ण गादी बिराजता, जाणे शशि रवि चंग ॥ ४ ॥ हवे नृप तेडुं मोकले, वणिकनें घर घर सार ॥ महा जन समसत मेलियां, मूकी निज तलार ॥५॥ वड व खती व्यवहारिया, माही माना जेह ॥ माही मति छे जेहनी, मलिया ते गुणगेह ॥६॥ दानें मानें आगला,

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

दीसंता जडधार ॥ धनद नंमारी सारिखा, राखे वड व्यवहार ॥ ७ ॥

॥ ढाल छठी ॥

॥ जूहारण जायो दीकरो ॥ सोनागी हे ॥ आयो मास वसंत के ॥ लाल सोनागी हे ॥ ए देशी ॥ माहाजन साथें सहू मली ॥ सो० ॥ पहेरी नला शणगार के ॥ ला० ॥ निज निज घरनां नेटणां ॥ सो० ॥ ले आ या दरबार के ॥ ला० ॥ १ ॥ श्रीवंत श्रीमंत सातशें ॥ सो० ॥ शंकर शंनु सगाल के ॥ ला० ॥ सूरचंद सूरो सूरजी ॥ सो० ॥ सोनागी सुंदर साल के ॥ ॥ ला० ॥ २ ॥ मानो मीतो मालजी ॥ सो० ॥ मा णक मोतीलाल के ॥ ला० ॥ जेतो जगसी जीवणो ॥ सो० ॥ जगजीवन जगमाल के ॥ ला० ॥ ३ ॥ थानो थोनण थावरु ॥ सो० ॥ नाणो नीमो नवा न के ॥ ला० ॥ कीको केशव करमसी ॥ सो० ॥ क ल्याण करमी कान के ॥ ला० ॥ ४ ॥ दूदो देवो देव सी ॥ सो० ॥ दीपो दानो दयाल के ॥ ला० ॥ प्रेमो प्रेमजी पोमसी ॥ सो० ॥ पूरो ने पुण्य पाल के ॥ ॥ ला० ॥ ५ ॥ नेणो नेणसी नागजी ॥ सो० ॥ ना थो नथमल नील के ॥ ला० ॥ रेवो रवजी रंगजी ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ सो० ॥ रांको रंगो रंगीला के ॥ ला० ॥ ६ ॥ वाघो वेलो वालजी ॥ सो० ॥ वीरो ने वीरचंद के ॥ ला० ॥ हेमो हीरो हर्षसी ॥ सो० ॥ हंसो ने हरचंद के ॥ ॥ ला० ॥ ७ ॥ गोडीदास गलालजी ॥ सो० ॥ गांगो नें गोपाल के ॥ ला० ॥ गणजी गणेश ने गांगजी ॥ ॥ सो० ॥ गोविंद गोरो गलाल के ॥ ला० ॥ ८ ॥ ख बो खीमो खेमजी ॥ सो० ॥ खागोने खुशाल के ॥ ॥ ला० ॥ तारो तुलशी त्रीकमो ॥ सो० ॥ त्र्यंबकने त्रिभुवन्न के ॥ ला० ॥ ए ॥ शिवो सेवक श्यामजी ॥ ॥ सो० ॥ शामो ने शिवचंद के ॥ ला० ॥ सारो शिव शी शामजी ॥ सो० ॥ साचो साकर वृंद के ॥ ला० ॥ ॥ १० ॥ इत्यादिक व्यवहारिया ॥ सो० ॥ मलिया माहाजन साथ के ॥ ला० ॥ भेट भली नृपने करी ॥ ॥ सो० ॥ बेठा प्रणमी नाथ के ॥ ला० ॥ ११ ॥ इणि परें सहु नगरी जमा ॥ सो० ॥ मेल्या वर्ण अढार के ॥ ला० ॥ बेठी परखद सहु मली ॥ सो० ॥ नृपने करीने जुहार के ॥ ला० ॥ १२ ॥ हवे नृप अवसर जोइने ॥ सो० ॥ बोल्यो वयण विचक्ष के ॥ ला० ॥ बीडुं यम आमंत्रवा ॥ सो० ॥ मूके पंच समक्ष कें ॥ ला० ॥ १३ ॥ रे सामंतो सांभलो ॥ सो० ॥ बीडुं

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

ग्रहो तुम एह के ॥ ला० ॥ यमने नोतरुं देइने ॥ ॥ सो० ॥ तेडी आवो तेह के ॥ ला० ॥ १४ ॥ वैशा ख शुदि पांचम लगें ॥ सो० ॥ तेडी लावे जेह के ॥ ॥ ला० ॥ माहरी रीझ ते पामशे ॥ सो० ॥ मनोवं छित ससनेह के ॥ ला० ॥ १५ ॥ ते माटे बीडुं ग्रहो ॥ सो० ॥ जेहमां होवे साच के ॥ ला० ॥ जीवित लगें हुं तेहनी ॥ सो० ॥ पालीश सुपरें वाच के ॥ ॥ ला० ॥ १६ ॥ इम नृप वाणी सांभली ॥ सो० ॥ सभा थई विलक्ष के ॥ ला० ॥ पर्षद मौन करी रही ॥ सो० ॥ जाणे तेलमें बूडी मक्ष के ॥ ला० ॥ ॥ १७ ॥ निज निज मुख सामुं जुवे ॥ सो० ॥ परषद थइ मन नूर के ॥ ला० ॥ उपडे को नहिं जीभडी ॥ ॥ सो० ॥ जाणे गले देवाणो सिंदूर के ॥ ला० ॥ ॥ १८ ॥ परषद जाणे मन्नमें ॥ सो० ॥ ए शुं बोल्यो राय के ॥ ला० ॥ देखी पेखी यम घरें ॥ सो० ॥ क हो किम तिहां जवराय के ॥ ला० ॥ १९ ॥ सहि तो ए परजले सहि ॥ सो० ॥ नृपनी दृष्टि फरेय के ॥ ला० ॥ लूंटी धनने लेयशे ॥ सो० ॥ यमनुं मसलूं करेय के ॥ ला० ॥ २० ॥ आगें तो नृप जाणतो ॥ ॥ सो० ॥ मिनि कंकण पहेखां केदार के ॥ ला० ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

पण काम पडे मीनी मुषकने ॥ सो० ॥ मुढने मिश करे संहार के ॥ ला० ॥ २१ ॥ ए दृष्टांत ते नृपें कह्यो ॥ सो० ॥ मांझ्यो बिडानो ए पास के ॥ ला० ॥ कोइकनी ते फरी दिशा ॥ सो० ॥ लुसी मुसी लेशे तास के ॥ ला० ॥ २२ ॥ इम समजी मनमें रही ॥ ॥ सो० ॥ सहु परजा मौन धरेय के ॥ ला० ॥ स्वर्गे मटा मट जोइ रही ॥ सो० ॥ पण उत्तर कोइ न देय के ॥ ला० ॥ २३ ॥ तव नृप बोल्यो घरकीने ॥ ॥ सो० ॥ ए तो लमणे नृकुटी चढाय के ॥ ला० ॥ ग्रास खाउ तुमें अम तणा ॥ सो० ॥ हवे बेगा कान ढलाय के ॥ ला० ॥ २४ ॥ जो अम ग्रासनो खप करो ॥ सो० ॥ तो तुमें ग्रहो बीडुं एह के ॥ ला० ॥ नहितर को मारग ग्रहो ॥ सो० ॥ अन्य मूलकनो होय जेह के ॥ ला० ॥ २५॥ इणि परें नरपति बोलियो ॥ सो० ॥ घरकी परखद त्यांहि के ॥ला० ॥ चमक्यां सहुनां शीश ते ॥ सो० ॥ नृप मूकशे ठे यम ज्यांहि के ॥ ला० ॥२६ ॥ मावित्र द्ये डुःख गेरुने ॥ ॥ सो० ॥ कहो तस कुण राखणहार के ॥ ला० ॥ वाड जो गलशे चीनडां ॥ सो० ॥ किहां होवे तास पुकार के ॥ ला० ॥ २७ ॥ हवे सुणजो नवियण

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

तुमें ॥ सो० ॥ जे बोलशे मंत्री काल के ॥ ला० ॥ ए कहि लब्धि बही सही ॥सो०॥ ए तो त्रीजा उल्ला सनी ढाल के ॥ ला० ॥ २८ ॥

॥ दोहा ॥

॥ अवसर लहि कालसेन ते,बोल्यो तव कर जोडि ॥ अरज सुणो प्रभु माहरी, कहुं तुम आलस छोडि ॥ ॥ १ ॥ यम नोतरवा नाथजी, बीडुं ग्रहावो जेह ॥ देखत मरवा कुण ग्रहे, मरणनुं बीडुं एह ॥ २ ॥ बोरनुं बीट जे नवि लहे, शुं जाणे ते यम्म ॥ गज पाखर जंबुकशिरें, नाखी स्वामि तुम्म ॥ ३ ॥ देव रूप जे मानवी, छे तेहनां ए काम ॥ शुं जाणे शश कीडलां, यम राजानुं गाम ॥ ४ ॥ आगें काम सुधा रियां, लंका केरां जेह ॥ ते जाशे यम तेडवा, हरि बल छे गुणगेह ॥ ५ ॥ साहासिक शिरोमणी, सघ ले कामें सज्ज ॥ वीरबल केरो पुत्रडो, ते करशे तुम कज्ज ॥६॥ इणि परें परखद देखतां,महा दुष्ट ते काल ॥ शीशथी चरण उतारीने, दूर रह्यो ते व्याल ॥ ७ ॥

॥ ढाल सातमी ॥

॥काली ने पीली वादली राजिंद ॥ए देशी ॥ हवे हरि बलने नृप कहे, लाला सांभल जीवन गुज्ज ॥ यमरा

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

जाने तेडवा, लाला सोंपुं ए बीडुं तुझ ॥ १ ॥ पंथी डा रे यमपंथ पंथें वहे तुं वेगें हो प्यारा लाल ॥ ए आंकणी ॥ माहरुं काज सुधारवा, लाला तुझ विण बीजुं न कोय ॥ स्वारथीया सहु को मल्या, लाला रोटीतोडा तुं जोय ॥ २ ॥पं०॥ जगदीश जेहमें साच छे, लाला पाले ते निजवेण ॥ परदुःख जांगे जे पल कमें,लाला साचा कहियें ते सेण ॥ ३ ॥ पं० ॥ वयण विलुद्धां मानवी, लाला अगनी झंपे समशान ॥ दो पखें उझल दाखवा, लाला तन मन करे खुरबान ॥ ४ ॥ पं०॥ शिर उंढे एक वयणथी, लाला रूडी नूमी गाल ॥ सुख दुःख न गणे मन्नमें, लाला वयण तणा प्रति पाल ॥ ५ ॥ पं०॥ श्रेणिक ज्युं वयणें करी, लाला पर णावी निज धीय ॥ मेतारज मातंगने, लाला कीधो जमाइ जीय ॥ ६ ॥ पं०॥ तेमाटे हरिबल तुमें, लाला बीडुं ग्रहो ए पान ॥ वैशाख शुदि पांचम लगें, लाला तेडी यम घरे आण ॥ ७ ॥ पं० ॥ इम नृपवाणी सां नली, लाला हरिबल चिंते ताम ॥ जो नाकारो हुं करुं, लाला तो न रहे मुझ मान ॥ ८ ॥ पं० ॥ जा मगरी सलगाडीने, लाला कुष्ठ रह्यो ते दूर ॥ नरी गोलिमें कोश ते, लाला नाखी नृपनी हजूर ॥ ए ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥पं०॥ कोइक नवनो नीमज्यो, लाला मंत्री वैरी व्या
ल ॥ मरणनुं बीडुं ग्रहावतां, लाला कीधो महोटो जंजा
ल ॥ १० ॥ पं०॥ तो शुं थयुं प्रभु माहरो, लाला जो
ले पाधरो तेह ॥ तास पसायें कालने, लाला जीव
थी टालुं छेह ॥ ११ ॥ पं० ॥ तो मुजरो खरो माह
रो, लाला जग सर चाले वात ॥ महिषी नीत ते म
हिषीने, लाला पाईने करुं ख्यात ॥ १२ ॥ पं० ॥
एम विचारी चित्तमें, लाला हरिबल उठ्यो त्यांहि ॥
नृपने प्रणमी हाथशुं, लाला बीडुं ग्रह्युं ते उछांहि ॥
॥ १३ ॥पं०॥ तव परजा कर जोडीने, लाला विनवे
त्यां महिनाथ ॥ हरिबलने उगारीयें, राज छांह करी
दो हाथ ॥ १४ ॥ राजनजी रे अम वयण वि
शेषें मानो हो राज प्राणाधार ॥ ए आंकणी ॥ कटकी
कीडी उपरें, राज तृण पर ज्युं कूतार ॥ ते उखा
णो नाथजी, राज मेलो ते निरधार ॥ १५॥रा०॥ ए
परदेशी प्राहुणो, राज आव्यो वायु झकोल ॥ आप
णी नगरी जमाडीने, राज देखाड्यो रंग चोल
॥ १६ ॥ रा० ॥ ते नरने किम दूवियें, राज गुण ग
ण रयण करंम ॥ देव करीने पूजीयें, राज होवे लाज अ
खंम ॥ १७ ॥ रा०॥ ते माटे तुमें नाथजी, राज दी

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

जें वंछित दान ॥ प्रजा मली सहु वीनवे, राज मा गे एतुं मान ॥ १८ ॥ रा० ॥ ए बीडुं यमदूतनुं, राज द्यो बीजानें जोय ॥ तुम सुखने जे वांछशे, राज करशे काज ते सोय ॥ १९ ॥ रा० ॥ परियागतना माल जे, राज खाता हशे तुम जेह ॥ ते किम पा छा देयशे, राज काम पडे पग तेह ॥ २० ॥ रा० ॥ तव नृप रीष चढाइने, राज बोल्यो नृकुटी चढाय ॥ रहो अणबोली परज ते, राज समझो नही तुमें कांय ॥ २१ ॥ रा० ॥ तव परजा ढानी रहि, राज समझी ते मनमांहि ॥ विण खूटे नृप कोपियो, रा ज सुगुणने करशे आंहि ॥ २२ ॥ रा० ॥ ये नृप पर्जने शीखडी, राज करतो क्रोध अपार ॥ आव्यो चांपलदे शिरें, राज मालव केरो नार ॥ २३ ॥ रा० ॥ ए उखाणो दाखवी, राज पर्जने कीध विदाय ॥ वि लखी थइने परज ते, राज उठी मन उलझाय ॥ ॥ २४ ॥ रा० ॥ चहुटे चहुटे चाचरें, राज मलीयां लोक अनेक ॥ टोलें टोलें सहु मली, राज करतां वात विवेक ॥ २५ ॥ रा० ॥ कहे केतांइक मानवी, राज नृप बिगड्यो स्त्री देख ॥ राखे हरिबल उपरें, राज ते लालचथी द्वेष ॥ २६ ॥ रा० ॥ कहे केता

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

इक मेंतलो, राज कालसेन विनिष्ट ॥ साची जूवी ते करे, राज काग परें ते उच्छिष्ट ॥ २७ ॥ रा० ॥ नृप मंत्री दो पापीया, राज महोटा दीवा कुजात ॥ हरि बलने दुःख देयशे, राज युग लगें रहेशे वात ॥ २८ ॥ रा० ॥ इणि परें साजन सहु मलि, राज वार्ता थोकें थोक ॥ करता हाहारव करे, राज सघली नगरीनां लोक ॥ २९ ॥ रा० ॥ पण जो प्रभु छे पाधरो, राज मटशे दुःख जंजाल ॥ लब्धि कहे इम सातमी, राज त्रीजा उल्लासनी ढाल ॥ ३० ॥ रा० ॥ इति ॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे हरिबलने नृप कहे, सांभल तुं मुझ जीव ॥ पंथ ग्रहो यम राजनो, पहोंचो जेम सदीव ॥ १ ॥ तव हरिबल बोल्यो हसि, सांभलो स्वामी सूल ॥ कामें शे ते आवशे, शिवने न चढे फूल ॥ २ ॥ तिम तुम कारजमें प्रभु, पाछो देशे कूण ॥ दशरा अश्व न दोडियो, कुण देशे वश तूण ॥ ३ ॥ सेवक जे साचो हशे, ते तुम करशे काम ॥ ढील रखे तुम जाणता, धीरज धरजो स्वाम ॥४॥ एम कही उठ्यो तुरत, हरि बल करी प्रणाम ॥ बीडुं ग्रही यमदूतनुं, आव्यो ते निज धाम ॥५॥ निज नारी दो आगलें, हरिबलें मागी

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

शीख ॥ यमने नोतरवा जणी,जावुं छे सहि इख ॥६॥ नृपनुं कारज साधवा, बीडुं ग्रह्युं छे एह ॥ यम तेडी नृप मंदिरें, आवी सोंपूं तेह ॥ ७ ॥ ते माटे तुमें शीख द्यो, तुमें छो चक्षु दोय ॥ होशे मेलो पुण्यथी, लिखित जो पानें होय ॥ ८ ॥ ए मंदिर सोंपूं अहं, तुम दो नारी हस्त ॥ दान सुपात्रें पोषजो, करजो पुण्य कयस्त ॥ ए ॥ देव गुरु समरी सदा, धरजो नव पद ध्यान ॥ पूजा भक्ति प्रजावना, करजो रहि साव धान ॥ १० ॥ कुल मर्यादें चालजो, धरजो श्री जि नधर्म ॥ करजो उज्ज्वल पक्ष दो, राखजो निज गृ ह नर्म ॥ ११ ॥ शीख जलामण इणि परें, निज ना रीने कीध ॥ पंथ जणी संबाहिने, गमन जणी पग दीध ॥१२॥ पियुनां वयण ते सांजली,नारी दो अकु लाय ॥ जाणे रंना ढलि पडी, तिम नारी मूर्छाय ॥१३॥

॥ ढाल आठमी ॥

॥ राम जणे हरि उठीयें ॥ ए देशी ॥ चेतन लहि नारी तदा, पल्लव पियुनो ते साही रे ॥ गदगद कंठ स्वरें करी, कहे नारी ग्रहि बांही रे ॥ गृहमें रहो तुमें नाह रे, म करो मरणनो राह रे, छो प्रीतम सुख छा हू रे, लीजें जोबन लाह रे, होवे ज्युं नारी उछाह

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

रे, होवे गजबनो घाह रे, नारीनो कुण नाह रे ॥१॥ ॥ प्रीतम प्यारा रे सांजलो ॥ ए आंकणी ॥ नाह वि हूणी ते नारीने,न गमे वात सोन्नाह रे॥ जीवित सुधी धखती रहे, जाणे इंटनो दाह रे ॥ लागे रोमें रोमें दाह रे, विरहनी झाल असाह रे ॥ पीडे मदन अ थाह रे, न रही शके ते क्यांह रे ॥ २ ॥ प्री० ॥ ए सुख मंदिर मालियां, नरियां ने धन धान्य रे ॥ कंत विना ते कामिनी, जाणे अलूणुं ते धान रे ॥ न दिये को तस मान रे, सूकां जिम तरुपान रे, कोह्या काननुं श्वान रे, जाय तिहां लहे अपमान रे,इम स्त्री विरही ते जाण रे ॥ ३ ॥प्री० ॥ दे दोष कुमरी दो दे वने, श्यो तुज कीधो अपराध रे, विण खूने मुज कंत नें, यमगृह मूके असाध रे, शी तें कीधी ए व्याध रे, काढि ते को नवनी दाध रे, पाडे वियोग अगाध रे, पीडे संतने साध रे ॥ ४ ॥ प्री० ॥ तेहने मुख म हिपुत्री पडो,जेह पाडे ने वियोग रे ॥ गण्या दिनमां ते नाथजी, कां नथी लेतो बलिनोग रे, जाये सघ लाना रोग रे, नांगे मनना ते सोग रे,जाणे ज्युं सघ ला ते लोग रे ॥ ५ ॥ प्री० ॥ कंत विना ते विजोग णी, पामे दुःख अपार रे ॥ विरहानलनी ते बाफ

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

मां, सीझी रहे तनसार रे, होवे बबूलाकार रे, खावे थावे ते डार रे, जावे कोने आगार रे, नव दे शकुन श्रीकार रे, धिग ते स्त्री अवतार रे, जीवती निधन ते मार रे ॥ ६ ॥ प्री० ॥ विरहिणी नारीने कंतनुं, ध्यान रहे तस जीव रे ॥ तंडुलमत्स्य परें कर्मने, बांधे निकाचि सदीव रे, शमतारस नवि पीव रे, मोहनी कर्म अतीव रे, जीवतो दुर्जन आजीव रे, छिन्ह ए विरही लहीव रे ॥ ७ ॥ प्री० ॥ एणि परें प्यारी कंतने, कहे वाणी ससनेह रे ॥ नयणें जलधर वरसती, जाणे नाड्व मेह रे, रहो प्रीतम तुमें गेह रे, म दहो सुरंगी देह रे, जोगवो तन धन एह रे, पामी पुण्यनी रेह रे ॥ ८ ॥ प्री० ॥ हरिबल कहे दोय प्यारीने, नांखी अमृत वाण रे ॥ म करो मन कोइ सोच ना, तुमें छो जीवन प्राण रे, आंखनी कीकी समान रे, पण छे नृपनी ते आण रे, बीडुं ग्रहुं में ते जाण रे, होवे ज्युं कोडि कल्याण रे, तुमें छो घरना मंमाण रे, म करो खांचा ए ताण रे, अमें छुं पंथी केकाण रे, करवुं शीघ्र प्रयाण रे ॥ ए ॥ सांजल गोरी रे मा हरी ॥ ए आंकणी ॥ एम कही मछी चालीयो, रो ती मूकी ते नार रे, नृपनुं वयण ते पालवा, आव्यो

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

वहि दरबार रे, नृपने कीध जुहार रे, कहे मन्त्री ति णि वार रे, करो तुमें चिता तैय्यार रे, म करो ढील लगार रे, सुणी नृप चित्त मझार रे, पाम्यो हर्ष अपा र रे, तेडाव्यो ते तलार रे, चिता विरचावी सार रे ॥ ॥ १० ॥ सां० ॥ हरिबल बले नृप कारणें ॥ ए आंक णी ॥ अगर चंदन काष्ठना, रचना चयनी ते कीध रे ॥ सुगंध द्रव्य ते होमतां, नृप करे मनोरथ लीध रे, जाणे रमणी ने रिझ रे, प्रभुयें मुझने ते दीध रे, थइ मुझ पुंण्यनी वृद्ध रे, आजथी वंछित सिद्ध रे ॥ ॥ ११ ॥ ह० ॥ हरिबल चय सुधी आवीयो, पहेरी वस्त्र विशाल रे ॥ अंगें भूषण शोभतां, पहेर्यां जाक जमाल रे, कीधां तिलक ते भाल रे, करमां श्रीफल जाल रे, जोवे मनुष्यनी माल रे, प्रगटी चयनी ते जा ल रे, दीसंती महा विकराल रे ॥ १२ ॥ ह० ॥ ति ण समे सागर देवता, हरिबल समरे ले चित्त रे ॥ तत क्षण जलनिधि नाथजी, आव्यो सुपरें करि हीत रे, जाण्यां सयल चरित्त रे, बोल्यो सुर थइ मित्त रे, हरि बल मननो पवित्त रे, राखजे अविचल चित्त रे ॥ ॥ १३ ॥ ह० ॥ एम कही सुर ते समे, हरिबल सम कर्युं रूप रे ॥ नृपजन आदि ते देखतां, बेठो चयमें ते

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

चूप रे, जन सहु देखे सरूप रे, जलतो मह्वी अनूप रे, हरख्यो मंत्री ते नूप रे, पण ते पडियो नवकूप रे ॥ १४ ॥ ह० ॥ हरिबल बलतो जन देखिने, सघ ला थया दिलगीर रे ॥ हा हा करता ते मानवी, रोवे आक्रंद वीर रे, नयणें वहे नदी नीर रे, वहियां जल निधितीर रे, सज्जन मन लहे पीर रे, न रह्यां मन कोइनां धीर रे ॥१५॥ह०॥ होमी काया ते जालमें, चरणथी शीश सराड रे ॥ त्रट त्रट त्रटके तन चा मडी, कट कट कटंते हाड रे, नट नट नटके ते ना ड रे, हरखे नृपने किराड रे, रोवे मृग वनजाड रे, रोवे पंखी पहाड रे ॥ १६ ॥ ह० ॥ हरिबल बलता नी जाल ते, लागी नन्न लगें चोट रे ॥ श्याम थयुं नन्न ते थकी, दीसे कालो ते धोट रे, रविरथने पण दोट रे, दीधी जालें ते झोट रे, थयो रवि आकरो जोट रे, वरुणें अरुणनो उंट रे, वरसे अगनीनो गोट रे, थयो ते दिनथी तपकोट रे ॥ १७ ॥ ह० ॥ इणि परें वैक्रिय रूप ते, हरिबलनुं करी त्यांहि रे ॥ कारिमो हरिबल जालियो, जोतां खिण एकमांहि रे, नस्म करी सहु साही रे, जन कहे मांहो मांहि रे, थयो अक राकर ज्यांहि रे, रहेवुं न घटे ते आंहि रे, देखत अ

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

न्याय थाहि रे ॥ १८ ॥ ह० ॥ नस्म थइ जे चिता तणी, ढांटी जलशुं ते लाय रे ॥ जलशरणें करी नस्म ते, हरख्या मंत्रीने राय रे, काढ्युं शल्य ते प्राय रे, रमणी रिद्ध दो आय रे, हवे मुझ वंछित थाय रे, वाहवा मंत्रीनुं नाय रे, नली तें बुद्धि उपाय रे, इम जपतां घर आय रे, आनंद अंग न माय रे ॥ १९ ॥ ह० ॥ फिट फिट करे नृप मंत्रीने, सघला नगरीनां लोय रे ॥ अमरपटो कोण लावियो, आखर मरवुं सहु कोय रे, शुं लेइ जाशो ते दोय रे, थिर धन रामा नवि होय रे, जावुं मूकीने सोय रे, शुं कीधुं ते जोय रे, एम कहे लोक सकोय रे ॥ २० ॥ ह० ॥ पुरजन सहु वळ्यां मंदिरें, मुखमें अंगुलि देय रे ॥ धर्मीजन धर्म रागथी, हरिबलनुं दुःख लेय रे, कीधा उप वास ते केय रे, व्रत पच्चरकाण धरेय रे, केहि जप माला जपेय रे, कर्मना बंध कटेय रे, वंछित सुख लहेय रे ॥ २१ ॥ ह० ॥ सागरदेवें मया करी, हरि बल कीधो अलोप रे ॥ जइ मूक्यो निजमंदिरें, जिहां छे नारी दो जोप रे, हरखी नारी दो चूप रे, विरहा नलनी गइ हूंफ रे, थयुं मन शीतल कूप रे, दंपति

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

इंड ज्युं रूप रे, त्रीजा उल्लासनी चूंप रे, आगमी ढाल अनूप रे,लब्धि कहि निर्वाणरूप रे ॥२१॥ह०॥

॥ दोहा ॥

॥ तटिनीनाथनो नाथजी, मनशुं थइ सुप्रसन्न ॥ हरिबल मूकी मंदिरें, पहोतो निज आसन्न ॥ १ ॥ जो जो नवियां पुण्यथी, हरिबल केरी ख्यात ॥ देशें परदेशें चली, प्रबल ए पुण्यनी वात ॥ २ ॥ दया सहित पुण्य जे करे, पामी मनु अवतार ॥ इह नव परनव सुख घणां, पामे ते निरधार ॥ ३ ॥ नेद कह्या नव पुण्यना, गणंगसूत्र मकार ॥ इव्य नावथी सां धतां, लहियें सुख संसार ॥ ४ ॥ अन्न उदक वस्त्र सयण जे, शाला धर्म विशाल ॥ नमवुं मण वय कायथी, ए नव पुण्य रसाल ॥ ५ ॥ जस घर पुण्य सखायी बे, तस घर लीलविलास ॥ शक्रपरें थइ नोगवे, रमणि रूध्धि सुवास ॥६॥ इम जाणी नाविक तुमें,नि सुणी पुण्य प्रनाव ॥ हरिबलनी परें साधजो, प्रगटें पुख्खरो नाव ॥ ७ ॥ ते नावें बेसी करि, तरीयें नव दधितीर ॥ ज्योतिरूप जगदीश जे, तेहमें करीयें शीर ॥ ८ ॥ परतख देखो पारिखुं, लोक कहे आख्यात ॥ पोसानुं परतखपणुं, दल पामे परनात ॥ ए ॥

॥ ढाल नवमी ॥

॥ माहारी सहि रे समाणी ॥ ए देशी ॥ पांचे जेदें दान प्रकाश्युं, केवलीयें जे आख्युं रे ॥ नवि ते पुण्य कहियें ॥ साते खेत्रें जे द्रव्य वावे, सुकृत करणी उपावे रे ॥ १ ॥ न० ॥ श्रीजिन मंदिर बिंब नरावे, पुस्तकें ज्ञान लखावे रे ॥ न० ॥ साहामीवत्सल नाव धरीने, जे करे चाह करीने रे ॥ २ ॥ न० ॥ श्रीजिनकेरी नक्ति करेवा, दुःकृत पाप हरेवा रे ॥न०॥ वध बंधनादिक जीव छोडावे, करुणा आणी नावे रे ॥ ३ ॥ न० ॥ शेत्रुंजादिक तीरथ जात्रा, जे करे निर्मल गात्रा रे ॥ न० ॥ परियागतनां नाम रखावे, संघवी तिलक धरावे रे ॥ ४ ॥ न० ॥ तप जप संयम ज्ञान क्रिया दो, पाले करि मरियादो रे ॥ न०॥ नय विवहारथी व्रत पचरकाण, जे करे चतुर सुजाण रे ॥ ५ ॥ न० ॥ इत्यादिक शुन करणी जांखी, स घली ए पुण्यनी साखी रे ॥न०॥ द्रव्यथी नावथी जे करे करणी, ते नरे पुण्यनी नरणी रे ॥ ६ ॥ न० ॥ द्रव्य स्तवथी बारमे स्वर्गे, उपजे सुर उपवर्गे रे ॥ न०॥ नाव स्तवथी केवल नाणी, अइ वरे मुक्ति ते प्राणी रे ॥ ७ ॥ न० ॥ द्रव्यथी आज्ञी पणे जे करणी,

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

करे ते लहे रिद्ध रमणी रे ॥ ज० ॥ जे करे नावथी करणी निराशी, होवे ते ज्योतिविलासी रे ॥ ७ ॥ ज०॥ पुण्यथी हरि हर सुर नर इंदा, हलधर चक्री जिणंदा रे ॥ज०॥ त्रिशठ शलाका पुरुष कहावे, उत्तम पदवी पावे रे ॥ ए ॥ ज० ॥ ते नव सिद्धि जिनवर जांखे, शिव पदनां सुख चाखे रे ॥ ज० ॥ देव दानव पण सहु वश आवे, अरियण सवि गलि जावे रे ॥ १० ॥ज०॥ अष्ट माहा नय कदिय न देखे, निर्मल सघले चेखे रे ॥ ज० ॥ ईति उपद्रव रोग न होवे, पातक सघलां खोवे रे ॥ ११ ॥ ज० ॥ पंचमे सघले बोल सुबोला, वाधे जसतरु मोला रे ॥ ज० ॥ सूत्र सिद्धांतमें ढे नर चावा, हुआ ते पुण्यरा नावा रे ॥१२॥ ज०॥ ते नावाथी नवोदधि तरीया, उपशम रसथी नरीया रे ॥ ज०॥ अभ्यंतरनी गांठ विछोडी, शिवरमणी वरी दोडी रे ॥ १३ ॥ ज० ॥ सवा कोडी साधर्मी जमाडी, समकित शुद्ध जगाडी रे ॥ ॥ ज० ॥ श्री जरतेसरदर्पण गेहें, केवल लह्युं ते नेहें रे ॥ १४ ॥ ज० ॥ कयवन्नो वली धन्नो वखाण्यो, शालिनद्र जोगी जाण्यो रे ॥ ज० ॥ ते पण दान प्रनावथी तरिया, संजम नारी वरिया रे ॥ १५ ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ ज० ॥ इत्यादिक अवदात सुणीने, जवि व्यो ते गु
ण चूणीने रे ॥ ज० ॥ तुमें पण इणिपरें सूत्र सिद्धां
तें, जवियां चढशो विख्यातें रे ॥ १६ ॥ ज० ॥ गुरु
उपदेश सुणीने जवियां, जुउ हरिबल चित्तमें ठवि
यां रे ॥ ज० ॥ तो ते जीवदयाने प्रजावें, मन वं
छित फल पावे रे ॥ १७ ॥ ज० ॥ जीवदयाथी दधि
पति मलियो, दुःख दोजागथी टलीयो रे ॥ ज० ॥
रमणि रूडिनो थयो जुगतारी, चिहुं दिशें लाज वधा
री रे ॥ १८ ॥ ज० ॥ धीवर जातमां थयो अवतारी,
थयो शुद्ध समकितधारी रे ॥ ज० ॥ गुरु उपदेशें
जीवदयाथी, थयो जिनधर्ममां हाथी रे ॥ १९॥ज०॥
देव प्रजावें नृपजन दृष्टी, बांधी ज्युं करी मुष्टी रे ॥
॥ ज० ॥ कारिमो हरिबल जलतो देखाडी, निजगृह
मूक्यो उपाडी रे ॥ २० ॥ ज० ॥ गुप्त रहे निज ना
री दो संगें, सुख विलसे ते अजंगें रे ॥ ज० ॥ निज
मंदिरमें साते खेत्रें, वावरे द्रव्य सुपात्रें रे ॥ २१ ॥
॥ ज० ॥ नृपजन जाणे मन्त्री न जीवे, यममंदिर
जइ रीवे रे ॥ ज० ॥ पण हरिबलने पुण्य प्रमाणें,
जन सहु नयरी वखाणे रे ॥ २२ ॥ ज० ॥ हवे तुमें
सुणजो आगल प्राणी, वारता अमिय समाणी रे ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ ज० ॥ पुण्य प्रजावथी अतिहे विशाला, होशे मंग लमाला रे ॥ २३ ॥ ज० ॥ गुरु परंपर सोहम स्वा मी, हुआ गुरु अंतरजामी रे ॥ ज० ॥ तस पाटें गु रु हीर सूरिंदा, उपजे तेज दिणंदा रे ॥ २४ ॥ ज०॥ तस शिष्य धर्मविजय धर्मधोरी, निशिदिन जरे पुण्य उरी रे ॥ ज० ॥ तस शिष्य धनहर्ष ज्ञानना दरि या, कवि जनमें अनुसरिया रे ॥ २५ ॥ ज०॥ तस शिष्य कुशलविजय कविराया, जैनमारग दीपाया रे ॥ ज० ॥ तस लघु बंधव आज्ञाकारी, कमलविज य जयकारी रे ॥ २६ ॥ ज० ॥ तस शिष्य लक्ष्मी विजय गुणगेही, श्रुत चारित्रना नेही रे ॥ ज०॥ तस शिष्य केशर अमर दो जाता, पंमित जनने विख्याता रे ॥ २७ ॥ ज० ॥ तस पद किंकर लब्धि कहावे, ह रिबलना गुण गावे रे ॥ ज० ॥ उत्तम नरना ते गुण गातां, बांधियें पुण्यना खातां रे ॥ २८ ॥ ज०॥ त्रीजो उल्लास कह्यो ए पूरो, नव ढालें ते सनूरो रे ॥ ज०॥ लब्धें कही ए वारता मीठी, जेहवी शास्त्रमां दीठी रे ॥ २९ ॥ ज० ॥ इति श्री जीवदयापरे हरिबलच रित्रे पुण्याधिकारे तृतीय उल्लासः संपूर्णः ॥ ३ ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ अथ चतुर्थ उल्लासः प्रारभ्यते ॥

॥ दोहा ॥

॥ शांति सुधामय चंद ज्युं, सोहे शांति जिणंद ॥ दुःख तिमिर दूरें हरे, देवे मन सुख वृंद ॥ १ ॥ तस पदपंकज हुं नमुं, नित्य उठी परभात ॥ केवल कमला पामियें, देखियें विश्व विख्यात ॥ २ ॥ सुखदायी वर सरसती, वरसति वचन विलास ॥ कविजन घटमें चंद ज्युं, करती बुद्धि प्रकाश ॥ ३ ॥ ते बाला त्रिपुरा नमुं, विनवुं बे कर जोडि ॥ मुझ मन मंदिरमें वसी, पूरो वंछित कोडि ॥ ४ ॥ कोविद केशर अमरना, चरण कमल नमि तास ॥ हरिबल मछी रायनो, प भणुं चोथो उल्लास ॥ ५ ॥ वेधक रसिया जे हुवो, ते सुणजो इक मन्न ॥ हरिबल गुण सुणतां थकां, होवे पावन कन्न ॥ ६ ॥ हवे नृप जाणे मन्नमें, हरिबल कीधो गार ॥ काढयुं शल्य जीवित लगें, अपनो हर्ष अपार ॥ ७ ॥ दो नारी मुझ अपहरा, प्रभुयें दीधी हड्ड ॥ तो हुं जइ सफलुं करुं, मुझ जीवित सुकयड्ड ॥ ८ ॥ इम जाणी ते सज थयो, मदनवेग ते राय ॥ वज्री सम ते नृप थयो, चूवा चंदन लगाय ॥ ए ॥ को नवि जाणे राजमें, तिम चाल्यो धरी आश ॥ रज

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

नी थइ घडि दो समे, पहोतो मन्नी आवास ॥१०॥ दू रथी नूधणी आवतो, वसंतसिरीयें दीठ ॥ शान करी निजकंतने, हरिबलगृहमें पइठ ॥११॥ एटले महिपति आवियो, दो नारीनी पास ॥ कुमरी तव उठी तुरत, आसन आप्युं तास ॥ १२ ॥ आगत स्वागत घणि करी, मुखथी साकर घोल ॥ कर जोडी दो उनी रही, कारिमो करी रंगचोल ॥ १३ ॥ कामिनी कहे महि नाथने, केम पधास्या स्वाम ॥ ते कारण मुऊने कहो, खोली मन अभिराम ॥ १४ ॥ हमणां पियु गयो य म घरे, राखवो लोकाचार ॥ अध्यवसाय जे मन त णा, कही पहोंचो दरबार ॥१५॥ मुऊ मंदिर स्वामी तुमें, आव्या हो महाराय ॥ पण मोशीने घर वाघ लो, कहो ते केम समाय ॥ १६ ॥

॥ ढाल पहेली ॥

॥ मेंदी रंग लागो ॥ ए देशी ॥ तव हरखित थइ रा जवी रे, बोल्यो ते मदनवेग ॥ विषयी वसुधाता ॥ कोइक पुण्यना योगथी रे, थयो तुमशुं शुन नेग ॥ १ ॥ वि० ॥ जव आव्यो हुं मंदिरें रे, तुमचे नोजन काज ॥ वि० ॥ मोहनी लागी ते थकी रे, ते जाणे जिनराज ॥ २ ॥ वि०॥ जगमां हे नारी घणी रे, पण

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

तुमची नावे जोड ॥ वि० ॥ तुम सुघडाइ देखीने रे, वाध्यो मोहनो गोड ॥ ३ ॥ वि० ॥ ते दिनथी नवि वीसरो रे,दो नारी तुमें चित्त ॥वि०॥ जीव रहे चरणां बुजें रे, तुमचे अविहड हीत ॥ ४ ॥ वि० ॥ ज्युं धरे ध्यान जोगीसरा रे, तिम धरुं तुमचो ध्यान ॥ वि० ॥ सास उसासमें सांनरो रे, शत वार तुम गुण थान ॥ ॥ ५ ॥ वि० ॥ ते गुणनो लीनो थको रे, आव्यो हुं धरी हूंश ॥ वि० ॥ एहमां जूठ न जाणजो रे, सत्य कहुं तुम सूंस ॥ ६ ॥ वि० ॥ कांइ न करशो शोचना रे, चतुर तुमें गुणधाम ॥ वि० ॥ वाणी सुधारस सां भली रे, दो मन सुख अभिराम ॥ ७ ॥ वि० ॥ तन धन जोबन पामीने रे, लीजें मनुजव लाह ॥ वि० ॥ पामी अवसर चूजशे रे, तस रहेशे दिल दाह ॥ ८ ॥ वि०॥ यौवनवय सुख पामीने रे, जे नही माणे पूर ॥ वि०॥ वनमां कुसुम तणी परें रे,ते रहेशे मन जूर ॥ ॥ए॥वि०॥ जीवित सूधी तुम तणुं रे,पालशुं निशिदिन वेण ॥ वि० ॥ हरिबलनी परें राखशुं रे, तन मन क रीने सेण ॥ १० ॥ वि० ॥ तुम अम वचें कोइ वातनो रे, वहेरो न राखियें कोय ॥ वि०॥ मुझ मन प्राणनि कुंजमें रे, राखुं तुमने दोय ॥ ११ ॥ वि० ॥ माहारी

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

हती जे राजनी रे, आजथी सोंपी तुम्म ॥ वि० ॥ जो तुमें आपशो हेतशुं रे,ते सही जमशुं अम्ह॥१२॥ वि० ॥ कोइ वातें डुहवुं नही रे, माहरी करीने जीह ॥ वि० ॥ सवलुं कमल हृदें धरी रे, नाव रह्यो मुज गीह ॥ १३ ॥ वि० ॥ इम नारी दो आगलें रे, नृप कहे मूकी मान ॥ वि० ॥ कामातुर थइ आकलो रे, खोई सघली शान ॥ १४ ॥ वि० ॥ धिग धिग काम विटंबना रे, धिग धिग मदनविकार ॥ वि० ॥ सुर नर नारी आगलें रे, नवि रहे लज्जा लगार ॥ १५ ॥ ॥ वि० ॥ कामें केइ नर छेतख्या रे, कहेतां नावे पार ॥ ॥ वि० ॥ काम वशें मल कूपकें रे, पड्यो ललितांग कुमार ॥ १६ ॥ वि० ॥ कामवशें थयो नारकी रे, सोनी सुवनकुमार ॥ वि० ॥ हास्य प्रहासाकारणें रे, पहोतो दरीया पार ॥ १७ ॥ वि० ॥ कामिनी आगें ईश्वरु रे, नाच्या ते निःशंक ॥ वि० ॥ काममां बूड्या बापडा रे, कुण ते रांक ने ढीक ॥१८॥ वि० ॥ उत्तम मध्यम गीतमां रे, गावे ते पण काम ॥ वि० ॥ नर नारीनां जोडलां रे, गावे उच्छव गाम ॥ १९ ॥ वि० ॥ कामिनी कामना कूपमें रें, बूड्यो सहु संसार ॥ ॥ वि० ॥ केवलरयणने खोलवा रे, दीठो कामकुमार

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ २० ॥ वि० ॥ श्रेणिक रायनी रागिणी रे, चीलणा रूप अपार ॥ वि० ॥ ते देखी शिष्य वीरना रे, खलीं चउद हजार ॥ २१ ॥ वि० ॥ वलि जुउ श्रेणिक रायनुं रे, रूप अनोपम सार ॥ वि० ॥ निरखी ते वीरनी चेलकी रे, वली छत्रीश हजार ॥ २२ ॥ वि० ॥ समवसरणें अशुचिता रे, थइ ते जाणी ताम ॥ वि० ॥ वीरें दीधी देशना रे, मन आण्यां तस ठाम ॥ २३ ॥ ॥ वि० ॥ मत को कोइ नेतुं गयो रे, म करो निंदा कोय ॥ वि० ॥ त्रस थावर सवि जीवने रे, विषयनी संज्ञा होय ॥ २४ ॥ वि० ॥ निशिदिन रहे जस धाखना रे, कामिनी काम विकार ॥ वि० ॥ मरण लही ते प्राणीया रे, जीवे एकेंद्रि मझार ॥ २५ ॥ वि० ॥ कामिनी रस आगलें रे, त्रिजग रहे थइ दास ॥ वि० ॥ तो शो मदनवेगनो रे, आशरो कहीयें तास ॥ २६ ॥ ॥ वि० ॥ धन धन ते नव्य जीवने रे, जे रह्या कामथी दूर ॥ वि० ॥ हुं बलिहारी तेहनी रे, प्रणमुं चढते सूर ॥ २७ ॥ वि० ॥ चोथा उल्लासनी ए कही रे, पूरण पहेली ढाल ॥ वि० ॥ लब्धि कहे नवि सांभलो रे, बोले दो कुमरी बाल ॥ २८ ॥ वि० ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ दोहा ॥

॥ नृपनी वाणी सांभली,बोली कुमरी ताम ॥ए शुं बोल्या नाथजी, असमंजस विण काम ॥ १ ॥ महोटी मतिना छो धणी, ए शी कीधि अकज्ज ॥ विण तेडे स्वामी तुमें, आव्या थइ वेकज्ज ॥ २ ॥ एम न कीजें नाथजी, छोकरवाली मत्त ॥ विण कहे कोइ गेहमें, नवि पेसीजें भत्त ॥ ३ ॥ ए तो काम छे लंछनुं, जेहमें भांगे भार ॥ ते करणी एहवी करे, करवा नरगमे सार ॥४॥ परणी घरणी जे हुवे, तेहने चढावो पाड ॥ खाशे ते खमशे प्रभु, रहेवा द्यो ए लाड ॥ ५ ॥ परदुःख भंजन राजवी, ए छे तुम्म बिरुद्द ॥ परनारी सहोदरु, ते किम छंमो हद्द ॥६॥ हुं परजा अमें तुम तणी, बेटा बेटी समान ॥ अण घटती ए वातडी, केम करो राजान ॥ ७ ॥ वाहार जोइयें जिहांथकी, तिहांथी आवे धाड ॥ कहो ते कुण आगल कहे, जे निज दुःखनी राड ॥८॥ आबला जाणी ए कली, जाण्युं ते माखी मढ ॥ शुं जाणीने आवीया, लेवा रमणी रूढ ॥ ए ॥ कंत विहूणी कामिनी, जाण्युं ते महिराण॥ पण मुफ मनडुं हाथ छे, तेणें हुं सपराण ॥१०॥ लोक भखाणो पण कहे, जो होय

हैय्युं हाथ ॥ काम हुवे तो चिहुं दिशें, जइयें धिंगा साथ ॥ ११ ॥ एक तो माहरा कंतने, मूक्यो जम घर अङ्ग ॥ वली शुं करवा आवीया, थइ नकटा निर्लङ्ग ॥१२॥ तुमें तो महारा तात छो, एवा म कहो बोल ॥ सो वातें एक वातडी, सती न चूके तोल ॥ १३ ॥ एहवां वयण ते सांभली, प्रगटी नृपने जाल ॥ क्रोधा नलनी बाफमां, सीझि गयो ततकाल ॥ १४ ॥

॥ ढाल बीजी ॥

॥ तुं तो पाधरुं बोल शीपाइडा ॥ ए देशी ॥ तव खी ज्यो नूप नराडो,जिम आगें हाथी हराडो, बोल्यो थइ लाडो रे,दो कुमरीशुं रोष धरी खरो ॥ तुमें सांभलो दोय सहेली, तुम लेखवुं मोहनवेली, चालो थइ वे हेली रे, मुझ मंदिर महेल मूकी परो ॥ १ ॥ तुमें पा धरुं बोलो राजनजी, तुमें वांकुं म बोलो राजनजी, नारी पीयारी रे, राजनजी थाहरी को नही ॥ सेना विहूणी जाणी, पण मनथी हुं सपराणी, नांखे इम वाणी रे, दो कुमरी नृपने मुखें रही ॥ २ ॥ तु० ॥ तुम मन तो रहेशे दूरें, अम जाएयुं थाशे सनूरें, नांखे मद पूरें रे,नृप कामातुर थइ घणो ॥ नृप आकुल व्या कुल थाय, जिम जल विना मछ तडफाय, देखी तव

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

थाय रे, दो कुमरीनुं रूप सोहामणुं ॥ ३॥ तु०॥ वली जंपे ते महिनाथ, तुमें सांनलो कुमरी साथ, कुंची तुम हाथें रे, मृगनयणी दीधी में आजथी ॥ तुमें कहे शो ते विध करशुं,तुम आतमकमलमें धरशुं, मन सुख वरशे रे, मारी मृगानयणी लाजथी ॥ ४ ॥तु०॥ तव जंपे कुमरी वयणां, तुमें सांनलो नरपति सयणा,दृष दशुं रयणां रे,राजनजी नहीं मांगे सही ॥ ए तो जो फरे पृथिवी सारी, ए तो जो फरे धुनी तारी, तो पण नारी रे,नरपतिजी न फरे सती कही ॥५॥तु०॥ तव जंपे महिपति एम, बल बांधो मुऊशुं केम, कहोजी ते जेम रे,बल बांधो हो ते शे गजे॥ तव कुमरी बोले ह सती, नृप सांनलो कहुं तुम रसती,राखो मन वसती रे, महिपतिजी प्रभु सहु नजे ॥६ ॥ तु० ॥ फरी जंपे वली नृप ताम, नथी प्यारी हठनुं काम, जोरें करी धामें रे, मुऊ मृगानयणी ले चलुं ॥ तव शुं करो तुमें इहां जोरो, तुम नाखुं तोडी तोरो,शुं ते बल फोरो रे, मुऊ आगल गोरी केटलुं ॥ ७ ॥ तु० ॥ तुम प्रीतमने करी कपटें, में बाल्यो अगनी झपटें, तो शुं मन लपटे रे, करी हारने जल शरणें करी ॥ मुऊ दासीने दीधो मार, मुऊ नूषण राख्यां सार, नाख्यां मुऊ लारें रे,

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

तव में ए दाऊ काढी परी ॥ ७ ॥ तु० ॥ मुऊ आगल
हवे किहां जाशो, तुम करणी तुमेंहिज पाशो, मा
ऊ घणुं थाशो रे, जिम तस्कर संधि मुखें ग्रहे ॥
जो मुऊने करशो राजी, तुम राखिश अहोनिश ता
जी, रहेशो तुमें गाजी रे, अगंजी मुऊ चित्तशुं वहे ॥
॥ए॥ तु०॥ अहि आगें मेडकुं जेते,हरि आगें मृग जाय
केते,जाय कहो केतें रे,बाऊ आगें चडकली दोडीने॥ति
म तुमेंहीज नामिनी नोली, तुमें रहेशो आंख्यो चोली,
जाशो किहां रोली रे, मुऊ आगलें ढिंग ते गोडीने ॥
१०॥तु०॥ तव कुमरी नांखे बोल,नृप दीसो गो फूटा
ढोल,निगुण निटोल रे,वडा दीसो गो कोइ तुमें ॥ क
हे कुमरी रीषें नंनेरी, जिम कूदे कच्छी वछेरी, नाखुं
नस वेरी रे, नरपतिजी हुं अबला अमें ॥ ११ ॥
तु०॥ के शुं नृप हियडो फूटो,के शुं तुम जगदीश रू
गो, के शुं कांइ खूटो रे, तुम सासोसास हतो जिके
॥ तुमें शुं नृप आप वखाणो, तुमें अबलाशुं मत
ताणो, अबलाथी जाणो रे, केइ हाख्या नर बलीया
तिके ॥ १२ ॥ तु० ॥ तुमें सुणो परदेशी राजा, जे
हनी हती महोटी माजा,तेहनी ते नार्या रे, सूरीकं
तोयें नख देइ हण्यो ॥ वली जितशत्रु महिनाथ, हतो

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

परजनी महोटी आय, राणीयें नरी बाथ रे, पियु ना
ख्यो जलनिधिमें सुण्यो ॥ १३ ॥ तु० ॥ ए तो इत्या
दिक नर बलीया, पण नारी आगलें गलीया, तो शुं
तमें बलीया रे, अम आगल नरपति शुं बको ॥ अम च
रित्रथी को नवि जीत्यो, त्रीजगने नाख्यो चीतो, सु
र नर खूतो रे, स्त्री आगल को नवि जक्यो ॥ १४॥
॥ तु० ॥ सि६ साधक जे होय जाण, तेहनां
अमें चुकवुं ठाण, एकादश गुणठाणें रे, अमें पाडुं
तिहांथी नरजणी ॥ अमें जातें बुं स्त्री नूंमी, अमें
चालती नरकनी कूंमी, बुं अमें डूंमी रे, ए तो चाल
ती नव दंमक तणी ॥ १५ ॥ तु० ॥ तेमाटें नृप तु
म आखुं, अमें कूडुं कदिय न जांखुं, चपटीमें नाखुं
रे, उमाडी खोखुं नहि जडे ॥ अमें सतोय न चुकुं ठाढुं,
अमें दीठो ते आ राढुं, बीजो न चाढुं रे, नरपतिजी
सुरगिरि जो पडे ॥ १६ ॥ तु० ॥ तुम करवुं होय
ते करजो, धन लेई पोतुं नरजो, पण में तुम वर
ज्यो रे, ए तो पहेलां दासी आवी हती ॥ तव में तस
काढी कूटी, जिम घरथी हांमी फूटी, दासीने में
लूंटी रे, में मूकी तुम घर दी ठते ॥ १७ ॥ तु० ॥
तुम असिबल म्यानमां राखो, तुम बल तुम स्त्रीने

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

दाखो,बांधी मूठी राखो रे, नरपतिजी मत छेडो कोइ ने ॥ तुम कुल मरजादायें चालो,जिम सुखें मंदिरमां मालो, मूको तुमें ख्यालो रे, नरपतिजी परस्त्री जोइने ॥ १८ ॥ तुं० ॥ तव सांजली नरपति कोप्यो, क्रोधारुण अग्निमें रोप्यो, कामें करी लोप्यो रे,नृप विरहानल दाफी गयो ॥ तव नृपनी दुर्मति हाली, सुख कुमरीने कर फाल, कीधी नृपें काली रे, दो कुमरीशुं द्वेषी थयो ॥ १ए ॥ तु० ॥ तव कुमरी रोषें दाधी, नृपने तिहां काढयो बांधी, फकडबंध बांधी रे, नृप नाख्यो उंधे मस्तकें ॥ द्ये गडदा पाटु प्रहार, करे मुद्गरना प्रहार॥ दासी मली मारे रे, ए तो नृपने जबडजस्त के ॥ २० ॥ तु०॥ नृप पाडे बहुली चीस, कहे तोबां मुख जगदीश, कुमरी ते रीषें रे, ए तो नृपना पाड्या दांतडा ॥ वली त्रोडे नृपनी मूठ, फल लेतो जा तुं ञुठ, कुमरी दो पूठे रे, नृप किहां गयुं बल तुम जातडा ॥ २१ ॥ तु० ॥ ए तो कुमरीयें नृपने रांक, कस्यो पूरो कुंदीपाक, काने पडी धाक रे, सुनकारें नृप चढयो हेडकी ॥ कुमरी हणे नृपने तमाचे, तेतो हरिबल केरी साचें, गारुडीथी नाचे रे, ए तो फणिधर माथे देडको ॥ २२ ॥ तु० ॥ नृपने कस्यो

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

घणो उपसर्ग,नृप जाणे पडीयो नर्ग, स्त्रीजन ते वर्गे रे,नृपपाणी उताखुं खरुं ॥ कहे कुमरी कर जोडी, नृप बोल्यो मान संकोडी, मूको मुझ छोडी रे, हुं आज थी अनीति नहिं करुं ॥ तु० ॥ इम करतां थयो प रभात, जाणी धीवरें सघली वात, मछीनी जाती रें, हुं पाम्यो स्त्री मरयादनी ॥ ए तो चोथा उल्लासनी मीठी, कही शास्त्रमें जेहवी दीठी, लब्धि लखी चीठी रे, कही बीजी ढाल संवादनी ॥ २३ ॥ तु० ॥ इति

॥ दोहा ॥

॥ इम करतां ते प्रह थयो, वाज्यां मंगल तूर ॥ झलरिना झणकार तिम, प्रगट्या उगते सूर ॥ १ ॥ दीन वचन नरपति कहे, कुमरीने कर जोड ॥ हुं अ पराधी तुम तणो, तुं मुझ बंधन छोड ॥२॥ हुं मूरख तुमथुं थयो, सतीथुं घाली बाथ ॥ जेहवी करि ते हवी लही,वृद्ध पणानी आथ ॥३॥ जाणथुं तो घणी ए थइ, कीजें करुणा सार ॥ गुप्त पणे जाउं गृहे, जि म रहे लोकाचार ॥ ४ ॥ वांको चुंको हुं हतो, पड्यो कुबुद्धि क्षेत्र ॥ कुंदीपाक देइ खरो, कीधो पाधरो नेत्र ॥ ५ ॥ सतीयोने दुःख दाखवी, जे कीधो अपराध ॥ ते तुमें खमजो मातजी,हुं छुं तुम सुत साध ॥६॥ इत्या

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

दिक वचनें करी, रीझवी कुमरी दोय ॥ बंधनथी छो ड्यो परो, मदनवेग नृप सोय ॥ ७ ॥ गुप्त पणे नृ प तिहां थकी, आव्यो निज गृह मद्य ॥ मुख पो थावी आवियो, निगुण थइ निर्लज्ज ॥ ८ ॥ जिम कोठीमें मुख घालीने, रोवे तस्कर मात ॥ तिम नृप रोवे मन्नमें, जे लह्यो प्रछन्न घात ॥ ए ॥ जाण्युं हतुं सुख मालशुं, दो प्यारीनी साथ ॥ लेणेथी देणे पडी, खाली पडी नरी बाथ ॥ १० ॥ जे नर मूरख बापडो, देखी परायो माल ॥ लेवा जाये दोडीने, ते थाये पें माल ॥ ११ ॥ ते करणी नृपने थइ, मनमें रहियो फूर ॥ मुख दीवाली दाखवे, वहे मन होलीपूर ॥ १२ ॥ रमणीथी मन वालीयुं, मूकी ममता दूर ॥ राज काज नृप चालवे, दिन दिन चढते नूर ॥ १३ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

॥ धण समरथ पियु नानडो ॥ ए देशी ॥ हवे कुम री दो कंतने, कहे कर जोडी सुणो सुलतान ॥ सजनी नृपने काढ्यो कूटीने, जिम हांकोटी काढे श्वान ॥१॥ सांजलो प्रीतम माहरा, तुम परसादें वाध्युं जोर ॥ ढिंक पाटूना प्रहारथी, मजबुत काढ्यो ज्युं करी ढोर ॥ २ ॥ सां० ॥ जीवित लगें नृप जाणशे, खटकशे निशि

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

दिन कालजे साल ॥ निराशी थइ दीन ते मारनी, पूंजी ले गयो माल ॥ ३ ॥ सां० ॥ साजी हलदर फट कडी, सेववी पडशे मास बे चार ॥ मम्मइ अशेलीयो, खाशे त्यारें थाशे करार ॥ ४ ॥ सां० ॥ इत्यादिक श्रवणें सुणी, हरिबल नारीनां करय वखाण ॥ सुकुलीणी साची तुमें,पणधारी में दीठी सुजाण ॥५॥ सांभलो प्यारी माहरी ॥ ए आंकणी ॥ तुमें छो आत म जीवन प्राण ॥ आंखनो कीकी छो तुमें, तुमें छो मह्होटां घरनां मंमाण ॥ ६ ॥ सां० ॥ कुलवधूनां ए चिन्ह छे, पियुशुं राखे मनह पवित्त ॥ कष्ट पडे कें इ जातिनां, तो पण सतीय न मूके सत्त ॥ ७ ॥ सां० ॥ सत्य वडुं संसारमां, सत्यथी वरशे जग ज लधार ॥ सत्यथी पृथिवी थिर रहे, धूतारी रहे सत्य आधार ॥ ८ ॥ सां० ॥ सुरगिरि पण रहे सत्यथी, सत्यथी शशि रवि चाले आकाश ॥ पृथिवी पण फ ले सत्यथी, वणसइ जार अढार उल्लास ॥ ए ॥ सां० ॥ वणज व्यापार चाले बहु, दुंमी चाले देश प्रदेश ॥ ते पण सत्यथी जाणजो, त्रिजग कह्युं सत्य विशेष ॥ १० ॥सां०॥ केवली केवल सत्यने,त्रिगडे बे सी करेय प्रकाश ॥ धर्मनुं मर्म ते सत्य छे,सत्यथी पामे

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

ज्योति निवास ॥११॥सां०॥ नर नारी सोहे सत्यथी, सत्यथी माने सहु संसार ॥ सत्यथी चूके जे मानवी, नव दंमक लहे ते निरधार ॥ १२ ॥ सां० ॥ शिरनामें लखे कागलें,साडी चम्मोतेर आंक जे दोय ॥तेहमें पण जन पंमितें, सत्य तराव्युं लोकमे जोय ॥ १३॥सां०॥ सत्य मत छोडे मित्र तुं, चोगडे लछी चोगणी होय ॥ सुख डुःख रेखा दो कर्मनी, टाले पण न टले होय ॥ १४॥सां०॥ इणि परें पण लौकिक मतें,सत्यथी पामे सुखनी रेख ॥ मानवी चूके जो सत्यथी,तो लहे डुःख नी रेखा देख ॥१५॥सां०॥ सतीया सत्त न छोडीयें, सत्त छोडे पत जाय ॥ सत्तनी बांधि लछी ते, आवे सन्मुख धाय ॥ १६ ॥ सां० ॥ नूदेव नामें द्विज थयो, तेणें न मूक्युं सत्य लगार ॥ दश दोकडा नृप दानथी, सत्यथी लह्यो ते अखुट नंमार ॥ १७ ॥ ॥ सां० ॥ धण कण कंचण पामीयें, ते पण सत्य तणो परनाव ॥ मनवंछित महिला मिले, सतिय शिरोमणि शुन सुनाव ॥ १८ ॥ सां० ॥ शोल सती थइ मोटकी, ते पण अद्यापी गवराय ॥ सत्य जो राखे आपथी, जिनवर ते पण सूत्रें चढाय ॥१ए॥ सां०॥ त्रेशठ शिलाका पुरुष ते, सत्यवादी थया थाशे अने

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

क ॥ इम जाणी प्राणी तुमें, राखजो पूरो सत्य वि
वेक ॥ २० ॥ सां० ॥ इणि परें हरिबलें नारीने, सत्य
उपर देई दृष्टांत ॥ कामिनी दो हरखित करी, दंपती
मांहोमां हरखात ॥ २१ ॥ सां० ॥ सुखें समाधें दंप
ती रहे, निज मंदिर मांहे उछाह ॥ दो गुंडक सुरनी
परें, पंच विषय सुख जोगवे त्यांह ॥ २२ ॥ सां० ॥
निज मंदिर रहेतां थकां, जव थयो पूरण एक मास ॥
तव हरिबल चित्त चिंतवे, निकलुं डिंगमें मनने उ
ल्लास ॥ २३ ॥ सां० ॥ नृपने ते जडी शीखडी, फरी
पाढी सर सांधे न सोय ॥ पण मंत्री कालसेन ते,
एणें कीधी ते न करे कोय ॥ २४ ॥ सां० ॥ जो जग
दीशनुं चाह्युं ले,तो करुं कालकंटकने दूर ॥ बाली जा
ली ते उारने, लेइ जइ नाखुं ते वहेते पूर ॥ २५॥सां०॥
विण अपराधें मो परें,अहनिशि करतो खेद अथाह ॥
नृपना कान जंजेरीने, मुऊनें मूक्यो यमने गाह ॥
॥ २६ ॥ सां० ॥ तो हुं खरो ए मंत्रीने, नृपने हाथे
करावुं उार ॥ शल्य काढुं आखा जगतनुं, मो मननो
पण काढुं खार ॥ २७ ॥ सां० ॥ हणताछुं हणीयें
सही, तेहनुं पाप न गणीयें कांय ॥ जेहवी देवी ते
हवी पातरी, एम उखाणो जगमां कहाय ॥ २८ ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ सां० ॥ ए मुड्रायें कामिनी, कालने बाल्यानुं ले का म ॥ काल जूंमो ले संसारमां, कालथी बिगडे केह्निनां गाम ॥ २ए ॥ सां० ॥ इम जाणी हरिबल तिहां, स मस्यो सागरसुर उजमाल ॥ लब्धि कहे शुज सत्यनी, चोथा उल्लासनी त्रीजी ढाल ॥ ३० ॥ सां० ॥ इति॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे हरिबल हरखें करी, समस्यो सागर देव ॥ तें पण ततखिण आवियो, कहो वछ किम समरेव ॥ ॥ १ ॥ तव हरिबल कर जोडिने, सुरने कहे सोबाह ॥ कालसेन कम जातिने, द्यो तुमें अग्निमांह ॥ २ ॥ शल्य काढो प्रजु माहरुं, जिम लहुं सुख जरपूर ॥ वि ण खूनें मुजने नडे, तेहने टालो दूर ॥ ३ ॥ हरिब लनी वाणी सुणी, थयो तव सुर परसन्न ॥ हरिबल केरी कांतिमें, संक्रम्यो सुर तस तन्न ॥ ४ ॥ दिव्यां बर पहेरी करी, पहेरी जूषण चंग ॥ दिव्य रूप हरि बल तणुं, कीधुं सुरसम अंग ॥ ५ ॥ हरिबल पासें सुर करे, वैक्रिय बीजुं रूप ॥ नज मारगथकी उतरी, आवि दो जेटे जूप ॥ ६ ॥ चमत्कार चित्तमें लही, हरखित परखद सार ॥ हरिबलने देखी तिहां, मलिया बांह पसार ॥ ७ ॥ नृप मंत्रीने प्रगटीयुं, महोटुं डुःख

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

अपार ॥ जिम रोगीने दीजीयें, चांदा उपर खार ॥ ॥ ७ ॥ हरिबलने बाली परो, जलमें नाखी बार ॥ ते किम पाबो आवीयो, कुशलें करि शणगार ॥ ए ॥ हरिबलने सही उलख्यो, मदनवेग ते राय ॥ आगत स्वागत नृप करे, बेग प्रणमी पाय ॥ १० ॥ पूबे नृप हरिबल प्रतें, कहो यमराजनी वात ॥ शी शी हकी गत लाविया, कुण ए तुम संघात ॥ ११ ॥

॥ ढाल चोथी ॥

॥ रंगरो रसीयो रे, फूल गुलाबरो हे सुंदर ॥ ए देशी ॥ हवे हरिबल नृपने कहे, सांजलो प्राणाधार हे ॥ जेहवी नीपनी तेहवी कहुं, तुम आगल सार हे ॥ १ ॥ रंगनी रे तमने रे, नांखुं ते सांजलो ॥ ए आं कणी ॥ जव थइ करुणा तुम तणी, कीधो में अगनी शुं प्यार हे ॥ तव तुम कारणें नाथजी, देही दही करी बार हे ॥ २ ॥ रं० ॥ ततखिण तुम परसादथी, पहोतो ए स्वर्ग मझार हे ॥ इंद्रपुरि श्रवणें सुणी, दी ठी नजरें श्रीकार हे ॥ ३ ॥ रं० ॥ ते इंद्रपुरीना ना थजी, केतां कीजें वखाण हे ॥ तेजें झलामल झल कती, जाणे कोडी गमे झग्या नाण हे ॥ ४ ॥ रं० ॥ पंचरंगी रतने करी, बत्रीश लाख विमान हे ॥ लघु ते

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

जोजन लक्षनां, नवि नवि जातिनां जाण हे ॥५॥रं०॥
तेहमां एक विमान छे, पण चउलख प्रमाण हे ॥ को
रणी धोरणी शी कहुं, सोहमवासीनुं गाण हे ॥६॥रं०॥
तेह विमानें शोजतां, छे महोटां चउ द्वार हे ॥ तेहमें
द्वार दक्षिण दिशें, छे तिहां यम दरबार हे ॥ ७ ॥
॥ रं० ॥ स्वर्गपुरी हुं इणि परें, जोतां महोटां मंमाण
हे ॥ तेह सजामां हुं गयो, जिहां बेठो यमराण हे ॥
॥ ८ ॥ रं० ॥ सुर असुर नर खेचरा, मेली परखद
तत्र हे ॥ न्याय अन्याय खीर नीर ज्युं, बेठो करे यम
यत्र हे ॥ ए ॥ रं० ॥ जे ते यम जडवाथकी, बीहे
इंदने चंद हे ॥ ब्रह्मा विष्णु महेश्वरा, देव दाणव दि
णंद हे ॥ १० ॥ रं० ॥ कुण राणा कुण रांकने, स
हुने गणे एक पाड हे ॥ जे जेहवी करणी करे, तेहनां
ते पूरे लाड हे ॥ ११॥ रं० ॥ लौकिक मतें यम रा
णनो, कहे सहु सूरय तात हे ॥ शनि यमुना जाइ
बहेन छे, श्रीसंग न्यात समात हे ॥ १२ ॥ रं० ॥
धर्माणी तस जार्या,छे पट्टराणी तास हे ॥ असवारी
तस महिषनी, चंम प्रचंम छे दास हे ॥ १३ ॥ रं० ॥
बल ने माहाबल जाइ दो, ए छे यमना पूत हे ॥ ज
नक सवाइ दो बेटडा, चलवे घरनां सूत हे ॥ १४ ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ रं० ॥ दो मंत्री यमरायना, काल अने माहाकाल हे ॥ चित्र विचित्र दो दफतरी, पुण्य पाप लिखत विशाल हे ॥ १५ ॥ रं० ॥ डुनीयां जे करणी करे, सुकृत डुःकृत देख हे ॥ चित्र विचित्र ते मांफिने, दाखवे यमने लेख हे ॥ १६ ॥ रं० ॥ ते करणी यम देखीने, घे डुनियाने शीख हे ॥ सुकृतने सुख दाखवे, डुःकृतने दे जीख हे ॥१७॥रं०॥ ईति उपद्रव जगतने, मर्कीना जे रोग हे ॥ काल डुकाल तें जे पडे, ज्वरना मेलवे जोग हे ॥ १८ ॥ रं० ॥ पूर्वज व्यंतरी व्यंतरा, वलगे ते सनमुख हे ॥ ए सवि करणी यम तणी, डुनियां जे लहे डुःख हे ॥ १ए ॥ रं० ॥ रूसे जो यम जगतने, दाखवी नारकी घात हे ॥ तूसे तो यम ने हर्खुं, आपे ते सुख शात हे ॥ २० ॥ रं० ॥ जोरो घणो यमराजनो, कहेतां नावे पार हे ॥ यमनो विचार विशेष छे, जगवतीमांहे विस्तार हे ॥ २१ ॥ ॥ रं० ॥ लौकिकने मतें जे सुणो, तेह में दीगे सत्य हे ॥ तेह सजामें हुं गयो, यमने करी प्रणिपत्य हे ॥ ॥ २२ ॥ रं० ॥ ततखिण यमें मुऊ उलख्यो, अवधि ज्ञानें सार हे ॥ देव शक्ति करी मुऊनें, फरी दीधो अवतार हे ॥ २३ ॥ रं० ॥ नौतन काया माहरी,

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

मुऊने जीवित दीध हे ॥ २४ ॥ रं० ॥ आगत स्वागत घणि करी, मुऊने ते धर्मराज हे ॥ सोऊ समाचार तुम तणा, पूछे ते यमराज हे ॥ २५ ॥ रं० ॥ तव में तिहां कर जोडीने, यमने करि अरदास हे ॥ आव्यो छुं एक राजथी, तेडवा तुम उल्लास हे ॥ २६ ॥रं०॥ विशाला पुरनो धणी, मदनवेग ते राय हे ॥ अंग जने परणाववा, उछव महोटो कराय हे ॥ २७ ॥ ॥ रं० ॥ देश देशाउरि राजवी, मेलशे महोटा राज न्न हे ॥ वैशाख शुदि पांचम दिनें, परणशे पुत्र रत न्न हे ॥ २८ ॥ रं० ॥ ते माटे तुम तेडवा, मूक्यो छे मुऊ आज हे ॥ तुम आवे प्रन्नु जगधणी, वधशे म होटी लाज हे ॥ २९ ॥ रं० ॥ इणि परें अरज ते सां नली, बोल्यो यम ततकाल हे ॥ चोथी चोथा उल्ला सनी, लब्धि कही ए ढाल हे ॥ ३० ॥ रं० ॥ इति ॥

॥ दोहा ॥

॥ हरखित थइ यमराजजी, बोल्यो मुखथी मि ष्ट ॥ यम कहे हरिबल तुम धणी, छे मुऊ मननो इष्ट ॥ १ ॥ पण तुम नृप मुऊ मंदिरें, जो आवे इक वार ॥ त्यार पछें मुऊ आववुं, थाशे तव निरधार ॥२॥ अवली गंगा जो वहे, तो मुऊथी अवराय ॥ डुनियां

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

माने मुऊने,करि परमेसर गाय ॥३॥ तेमाटे हरिबल तुमें, कहेजो नृपने एम ॥ एक वार मुऊ मंदिरें,आवो ज्युं करि तेम ॥ ४ ॥ जो सेवक साचो हुवे, तो ले नगरी साथ ॥ शीघ्रगतें तुम आवजो, मदनवेग महि नाथ ॥ ५ ॥ मुऊ मंदिरनी रसवती, कबुल करेशो आय ॥ तव तुम मंदिर चाहिने, आवीशुं अमें धाय ॥ ॥ ६ ॥ एह संदेशो अम तणो, हरिबल कहेजो तु म्म ॥ तुम नृपने अम तेडवा, मूकुं ए नृत्य अम्म ॥ ७ ॥ वलि तुमें शाता पूछजो, कहेजो अम्म जु हार ॥ जो आशा करो अम तणी,आवजो सर्ग मझार ॥८॥ एम कही सनमानिने, पहेरावी शणगार ॥ वो लावी अमने वव्या, यमराजा हितकार ॥९॥ देव प्र नावें ततखिणें, जोतां एक पलक्क ॥ तुम पासें अमें आविया, जोई सर्ग हलक्क ॥१०॥ यमनृपनो ए नृत्य ले, आसोमड नामें सनूर ॥ आमंत्रण करवा नणी, आव्यो तुम्म हजूर ॥ ११ ॥ इणिपरें हरिबलें मांमीने, कह्या संदेशा जाम ॥ मदनवेग राजी थयो, ते निसुणी अनिराम ॥ १२ ॥ तिणे अवसर तक जोइने, सुरनें कीधी शान ॥ सुर बोल्यो जमनो थइ, सांजलो तुमें राजान ॥ १३ ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ ढाल पांचमी ॥

॥ फतमलनी देशी ॥ नरपति सांजलो माहरी वा
ण, आसोमब्र वेधक कहे ॥न०॥ ठे जगमें यमराण,
त्रिजग आणा शिर वहे ॥ १ ॥ न० ॥ तेणें मुज तु
म संग, मूक्यो तुम आमंत्रवा ॥न०॥ राखी मने बहु
रंग, चालो तुमें स्वर्ग यंत्रवा ॥२॥न०॥ ठे मनमें घणी
होंश,मिलवा तुम यम नाथने ॥न०॥ दीधा ठे घणा
सूंस, वेगें पधारो लेइ साथने ॥ ३॥ न० ॥ मंत्रि प्र
मुख परिवार, तुम नगरीमें जे होवे ॥ न० ॥ ल्यो
तुम साथ विस्तार, सुरलोक नर नारी जोवे ॥ ४ ॥
न० ॥ तुम मन वंछित होय, रमणी ऋद्धि दो पावशो
॥ न० ॥ अजरामर पद जोय, सो पण लहेशो जो
आवशो ॥ ५ ॥ न० ॥ म करो ढील लगार, शीघ्र
थाउ तुमें नूधणी ॥ न० ॥ यम नृप तुमशुंजी प्यार,
राखे ठे एकंगो तुम नणी ॥ ६ ॥ न० ॥ इणिपरें
सुर ते वदंत, हरिबल शाखा नेदथी ॥ न०॥ सांजली
मन हरखंत, यमना संदेशा उमेदथी ॥ ७ ॥ न० ॥
धन घडी धन मुज दीस, यमशुं थयो मुज नेहलो ॥
॥ न० ॥ सज थइ विशवावीश, यम कने जाउं जो
वेहलो ॥ ८ ॥ न०॥ पूठी यमने संदेश, मननी भ्रांति

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

टालुं परी ॥ न० ॥ यमशुं वधारी नेह,अमरपणुं ते लहुं खरी ॥ ए ॥ न० ॥ नगरमां पडहो वजाय, घरोघर लोकने नोतखां ॥न०॥ नर नारी हर्ष न राय, यमघर जावाने परवख्या ॥ १० ॥ न० ॥ निर्धन वि रहिणी नार,बालरंभादि दो जागिया ॥न०॥ जाणे जम दरबार, जाइने थश्यें सोजागियां ॥ ११ ॥न०॥ वां झीया वांढा बेकार, डुःखीया स्त्री सुत कारणें ॥ ॥ न० ॥ ते पण उमह्या अपार, जावाने यम बा रणें ॥ १२ ॥ न० ॥ रोगीने डुःखीया जेह, लुला टूं टा ने पांगला ॥न०॥ कोढीया काला तेह, काणा कों चा ने आंधला ॥ १३ ॥ न०॥ बाल तरुण जे वृद्ध, सङ्ग थयां मोकर मोकरी ॥ न० ॥ अमर पदवी पर सिद्ध, ले आवो यमने नोरो करी ॥ १४ ॥ न० ॥ इक इकनी माहोमांहे, उपरा उपर पडी वहे ॥ न० ॥ जावाने स्वर्ग उछाह, जमण लाडु खावा गह गहे ॥ ॥ १५ ॥ न० ॥ इणिपरें नगरीनां लोक, यमजणी जावाने हलफले ॥ न० ॥ नृप पण यम सारु ढोक, लेइने नृप पण नीकले ॥ १६ ॥ न० ॥ अंतेउरी पण साथ, नृप संगें करी परवरी ॥ न० ॥ जेटवा ते य मनाथ, छत्रीश नृपकुली संचरी ॥ १७ ॥ न० ॥ धक

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

मक करतां रें एम, नागर जन सहु संचस्यां ॥ न० ॥ हरिबल ने सुर तेम, ते पण साथें नीसस्या ॥ १८ ॥ ॥ न० ॥ तिज जेटलो नहि माग, एटली मांधाता म ली ॥ न० ॥ चय सुधी पामी ते लाग, तव हरिबल मन अटकली ॥ १९ ॥ न०॥ मछीयें जाणी ते वात, सही तो ए नृप कांठे चढे ॥ न० ॥ अंतेउरी पण साथ, ते पण जइ वासें चढे ॥ २० ॥ न० ॥ बीजा नगरजन सर्व, ते पण नृपनी केडें चढे ॥ न०॥ तव होवे पापनुं पर्व, घोर करणी बहु नव नडे ॥ २१ ॥ ॥ न० ॥ हरिबल चिंते रे ताम, ले मुऊ वयरी जे माहरे ॥ न० ॥ बीजानुं शुं काम, काम ले एकनुं मा हरे ॥२२॥न०॥ देउं उपाडी तास,चिता अग्नीनी ज्वा लमां ॥ न० ॥ निकले जमनो पास, एउ जायें यम शालमां ॥ २३ ॥ न० ॥ चिंतवी इम अन्नेदान, देउं नृपादिक जंतुने ॥ न० ॥ गुरु उपदेशने मान, जी वित देउं बीजा संतने ॥ २४ ॥ न० ॥ इम जाणी ततकाल, सलगाडी चिंता तिण समे ॥ न० ॥ नव लगें प्रगटी त्यां जाल, देखत कायर मन नमे ॥ २५ ॥ ॥ न० ॥ नृप कहे करी शणगार, वाजित्र महोटें वाजते ॥ न० ॥ पेसे ते अगनी मझार, तव हरिबल

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

कहे गाजते ॥ २६ ॥ न० ॥ खमो एक स्वामी ल गार, वात विचारीने कीजियें ॥ न० ॥ पूढी जम प डिहार, विण पूछे पगलुं न दीजीयें ॥२७॥न०॥ तव पूछे महिपाल, यम पडिहारने तक लही ॥न०॥ चोथा उल्लासनी ढाल, पांचमी लब्धिविजय कही ॥ २८ ॥

॥ दोहा ॥

॥ कर जोडी परिहारने, पूछे तव महिपाल ॥ जो तुम हुकम हुवे खरो, तो वरुं अग्रीजाल ॥ १ ॥ तव कहे सुर परिहार ते, सांभलो कहुं नृप तुम्म ॥ दुष्ट कुबुद्धि अटारडो, छे यम राणो अम्म ॥२॥ तुम नगरीनां मानवी, जोवा थयां सहु सज्ज ॥ पण यम आगल नवि रहे, तुमची महोटी लज्ज ॥३॥ तेमाटे तुमें मोकलो, जे तुम वल्लभ होय ॥ यमने पूढी उ तावलो, आवे स्थानक जोय ॥ ४ ॥ त्यार पछें आपें सहु, जइ यम नृप प्रणमेय ॥ तेहना हुकमथी उतखा, जिहां ऊतारो देय ॥ ५ ॥ विण पूछे जो जाइयें, तो खीजे यमराय ॥ जीवथि यम जूदा करे, तुम सहु साथने धाय ॥ ६ ॥ इम नृपने ते सुर कहे, यमनुं ए छे शूल ॥ काज विचारी कीजियें, तो वधे आपणुं मूल ॥ ७ ॥ ते वाणी नृप सांभली, चमक्यो चित्त

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

मझार ॥ नली कही इण नाकियें, आणी मन उप गार ॥८॥ तव नरपति कहे मंत्रिनें, सांजल तुं कालसे न ॥ जमदरबारें जायवा, शीघ्र थाउ तुम तेण ॥ ९॥

॥ ढाल ७ठी ॥

॥ नयन हमारे लालनां ॥ ए देशी ॥ तव हरखित मंत्री थयो, सांजलि नृपनी वात ॥ सनेही ॥ यमने मं दिर जायवा, थयो उत्सुक हरखात ॥ स० ॥ त०॥१॥ जाणे मंत्री मन्नमें, तूठा मुऊ जगवान ॥ स० ॥ यम मंदिर हुं जाइने, मागुं वंछित दान ॥ स०॥ त०॥२॥ राजी करुं श्राद्धदेवने, लटपट करी गुण गेह ॥ स०॥ अमर पटो लेउं मागीनें, रमणी ऋद्धि सुदेह ॥ स० ॥ त० ॥ ३ ॥ इणिपरें मंत्री आलोचीने, सज्ज थयो ति णिवार ॥ स० ॥ कर जोडी कहे रायने, मंत्री वयण उदार ॥ स० ॥ त० ॥ ४ ॥ यमनो जे पडिहार छे, तें आवे मुऊ साथ ॥ स० ॥ तो जइ यमने नेटीयें, न रीयें वंछित बाथ ॥ स० ॥ त० ॥ ५ ॥ तव नृप कहे पडिहारने, मुऊ मंत्री ले संग ॥स०॥ सर्ग जुवन पद दाखवा, मेलवो यमनो रंग ॥ स० ॥ त० ॥६॥ करी प्रणिपत माहरी तिहां, करजो मुऊ अरदास ॥ स०॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

कह्यो तो वडी अस्वारीशुं, आवुं तुमचे विसास ॥ ॥ स० ॥ त० ॥ ७ ॥ कह्यो तो सहु नगरी तणो, सघ लो आवे साथ ॥ स० ॥ यम राजाने जेटवा, आवे विशालानाथ ॥ स० ॥ त० ॥ ८ ॥ इणिपरें विनती माह्री, यम नृपने करेय ॥ स० ॥ शीघ्रगतें तुम आ वजो, यमनी रजा लेय ॥ स० ॥ त० ॥ ए ॥ तव सु र कहे ते रायने, वली कही तुमें गुऊ ॥ स० ॥ मुऊ स्वामी यमनाथने, मेलवुं मंत्री तुऊ ॥ स० ॥ त० ॥ ॥ १० ॥ एम कही पडिहार ते, मागी नृपनी शीख ॥ स० ॥ वेगो अगनी जालमां, सहु जन देखत ईख ॥ स० ॥ त० ॥ ११ ॥ मंत्री पण कालसेन ते, नृपने कीध जुहार ॥ स० ॥ नगरी जन सहु साथनें, प्रणमी करे मनुहार ॥ स० ॥ त० ॥ १२ ॥ बेगे च यनी जालमां, मंत्री पण तेणि वार ॥ स० ॥ सुर संगें कालसेन ते, मंत्री बली थयो गार ॥ स० ॥ त० ॥ ॥ १३ ॥ नगरी जन सहु देखतां, मंत्री सुर थयो गार ॥ स० ॥ जोतां खिण एक पलकमें, पहोता यम दरबार ॥ स० ॥ त० ॥ १४ ॥ नगरीजन नृप आदि ते, मंत्रीनी जोवे वाट ॥ स० ॥ जाणे मंत्री आवशे, यम जणी करी गहगाट ॥ स० ॥ त० ॥ १५ ॥ इणिपरें

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

दो घडी चौ घडी, मंत्रीनी जोई वाट ॥ स० ॥ हजीय लगण आव्यो नही, नृप कहे शो थयो घाट ॥ स० ॥ ॥ त० ॥ १६ ॥ तव हरिबल कहे नूपने, शुं कहो स मळू थाय ॥ स० ॥ जे गयो यमने मंदिरें, ते किम आवे धाय ॥ स० ॥ त० ॥ १७ ॥ जे गयां मडदां मशाणमां, ते जो जीवतां थाय ॥ स० ॥ तो पाछो मंत्री इहां, आवे तुमचे पाय ॥ स० ॥ त० ॥ १८ ॥ शी हवे एहनी चिंता करो, म करो मंत्रिनी तांत ॥ ॥ स० ॥ करणी जेहवी इणें करी, तेहवो लह्यो ते घात ॥ स० ॥ त० ॥ १ए ॥ विण खूने तुम मंत्रवी, लीधी माहरी केड ॥ स० ॥ तव में दीधो ए अग्निमें, यम मिशें ए करि जेड ॥ स० ॥ त० ॥ २० ॥ वली तुमने इणे कुमतियें, तुमचां नंगव्यां हाड ॥ स० ॥ दांत पडाव्या जे तुम तणा, ते तुम मंत्रीनो पाड ॥ ॥ स० ॥ त० ॥ २१ ॥ ए गुण मंत्री तुम तणा, हुं करुं केतां वखाण ॥ स० ॥ डुष्ट कुबुद्धि जे हतो, ते हनां में काढयां प्राण ॥ स० ॥ त० ॥ २२ ॥ एहनो धोखो मत करो, राखो मन नृप ठोर ॥ स० ॥ मूक्यो में नारकी पांतिमां, सातमी जे कही घोर ॥ स० ॥ ॥ त० ॥ २३ ॥ जे जेहवी करणी करे, तेहवी लहे

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

फलपत्य ॥ स० ॥ उंकण चुंकणनी परें, मेल्यो उखा
णो सत्य ॥स०॥त०॥२४॥ कुण राणा कुण दूबला,
करणी सारु होय ॥ स० ॥ कुगति सुगति लहे कर
णीयें, उत्तम मध्यम जोय ॥ स० ॥ त० ॥ २५ ॥
इणिपरें नरपतिजी तुमें, जो करशो अन्याय ॥स०॥
तो तुमची गति इणि परें, होशे गाउकी राय ॥स०॥
॥ त० ॥ २६ ॥ इणिपरें वाणी सांजली, चमक्यो न
रपति चित्त ॥ स० ॥ सांजल रे जीत जाटिका, जाणी
मच्छीनी रीत ॥ स० ॥ त० ॥ २७ ॥ मंत्रीनी लइ जस्म
ते, जल शरणें करी राय ॥ स० ॥ हरिबल कहे नृप
पुर तणी, जाय अलाय बलाय ॥स०॥त०॥२८॥ इम
कहि नृप मंदिरें, वलियो ते महिपाल ॥स०॥ लब्धि कही
बठी ममनी, चोथा उल्लासनी ढाल ॥स०॥त०॥२९॥

॥ दोहा ॥

॥ जूपादिक नगरी जना, सहु समज्या मनमांहि ॥
ए करणी हरिबल तणी, जाणी सघले त्यांहि ॥ १ ॥
जली थई जावठ गई, विण उषधें विराध ॥ हरिबल
केरा धर्मथी, हवे थइ सुख समाध ॥ २ ॥ इम कहेतां
नगरी जनां, वलीयां निज घर लोक ॥ हरिबल साचो
हीरलो, पुण्य तणो ए थोक ॥ ३ ॥ कालसेन कुपा

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

त्रने, बाळ्यो हरिबलें दीप ॥ जन दिये रंग वधामणां, घर घर घृतना दीप ॥ ४ ॥ सर्ग नरग डुनियां मुखें, जाखे सघली वात ॥ जे जेहवी करणी करे, ते तेह वी वहे ख्यात ॥ ५ ॥ ज्ञानी तो कहे ज्ञानथी, देखी स्वर्ग ने नर्ग ॥ पण कहे लोक मतें करि,करणीयें नर्ग ने सर्ग ॥ ६ ॥ सागरदेव पसायथी, कीधुं जाण्युं का म ॥ हरिबल चरित्र ते देखिने, लाज्यो नरपति ताम ॥ ७ ॥ तव हरिबल कहे रायने, म करो मनमें सो च ॥ तुम मंत्री ते कुमतियें, तुमचो कराव्यो लोच ॥ ॥ ८ ॥ लंकायें मुज मोकल्यो, वलि मूक्यो यम घेर ॥ तुमें चूक्या मुज नारीशुं, तव में करि ए पेर ॥ ए ॥ तुम मंत्रीनी संगतें, करता तुमें पण साथ ॥ पण में राख्या जीवता, करुणा आणी नाथ ॥१०॥ ए गुण लेजो माहरो, जीवित सूधी नूप ॥ एम कही हरिब ल तिहां, आव्यो निज घर चूंप ॥ ११ ॥ वसंतसिरी कुसुमसिरी, दो प्यारी गुणवंत ॥ पियु मुखचंद विलो कतां, दो कुमरी हरखंत ॥ १२ ॥ सुख विलसे संसा रमां, टाली सघलां शल्य ॥ करणी करे जिन धर्मनी, हरिबल मछी अवील ॥ १३ ॥ परतख देखी पारखुं, हरिबल केरो धर्म ॥ पुरजन सहु धर्मी थया, टाली

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

मिथ्या नर्म ॥ १४ ॥ नरपति पण मन लाजियो, जे निज कीधां चरित्र ॥ ते देखी धोखो करे, नरपति म नशुं विचित्र ॥ १५ ॥

॥ ढाल सातमी ॥

॥ नानो नाहलो रे ॥ ए देशी ॥ महिपति नांखे प रजने रे, बेठो ते निज धाम ॥ साजन सांभलो रे ॥ हा हा में ए शुं कर्युं रे, अणघटतुं ए काम ॥१॥सा० ॥ गुणवंत ले गुण धाम, मूकी आमलो रे ॥ ए आं कणी ॥ किया नवनी मोहनी रे, जागी इण नव मां हि ॥ सा० ॥ ए नारीथी दुःख लह्युं रे, विण कामें निरुछाहि ॥ २ ॥ सा० ॥ तन धन खोयां नृप कहे रे, खोइ नारीथी लाज ॥ सा० ॥ वात चलावी चिहुं दिशें रे, वाजते ढोल आवाज ॥ ३ ॥ सा० ॥ पूरव नवनी वैरिणी रे, पोष्युं वयर विशेष ॥ सा० ॥ जेह वी करणी में करी रे, तेहवी लही तस रेख ॥ ४ ॥ सा० ॥ दोष नही को एहनो रे, ए सघलो मुझ दोष ॥ सा०॥ पी पाणी घर पूठीने रे, शो तस करवो शोष ॥५॥सा०॥ कुलमर्यादा मूकीने रे, खोटी में मागी नी ख ॥ सा० ॥ गुरु गोत्रज पण नवि गण्यां रे,कोनी न मानी शीख ॥ ६ ॥ सा० ॥ पारकी मति हुं चाली

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

यो रे, मेल्यां कुकर्मनां मूल ॥ सा० ॥ कोडीनी गरज सरी नही रे, नृप करे नावी धूल ॥ ७ ॥ सा० ॥ मुझ घरे छे छती पदमणी रे, राणी रूप निधान ॥ सा० ॥ ते मूकी हूंशी थयो रे, उंखर करवा निदान ॥ ८ ॥ सा० ॥ ए स्त्री अशुचिनी कोथली रे, मल मूत्र नरियां गात्र ॥ सा० ॥ बारे द्वार वही रह्यां रे, पहेरयां दिसे सुपात्र ॥ ए ॥ सा० ॥ अण बोलाव्यां सुंदरु रे, दीसे ढांक्यां रतन्न ॥ सा० ॥ काम पडे त्रटकी वहे रे, विचक विचाडी तन्न ॥ १० ॥ सा० ॥ जागे योवन यौवनें रे, वाधे कामनुं जोर ॥ सा० ॥ सिद्ध साधक कुण सुर नरा रे, जोवे अंगनां ठोर ॥ ११ ॥ सा० ॥ पंचास्ति कायमें पण कह्यां रे, जिनवरें कामनां बाण ॥ सा० ॥ तो मानवनुं शुं गजुं रे, कामें मनावी आण ॥ १२ ॥ सा० ॥ धिग धिग काम विटंबना रे, कामें लाज गमाय ॥ सा० ॥ कामें खोवे मालने रे, कामें गीत गवाय ॥ १३ ॥ सा० ॥ वध बंधन कामें लहे रे, कामें उंचा टंगाय ॥ सा० ॥ कामें दंम नरे सही रे, कामें हांसी कराय ॥ १४ ॥ सा० ॥ कामज्वरें बलतो रहे रे, तनथी क्षीण ते थाय ॥ सा० ॥ मात पितादिक नवि गणे रे, न गणे कामांध कांय ॥ १५ ॥ सा० ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

वीती हशे ते जाणशे रे, जे करे परस्त्रीनो संग ॥ सा०॥ ते होशे खेरु विकारशुं रे, खोई तन मन रंग ॥ १६ ॥ सा० ॥ शी मुझने ए उपनी रे, पडवा नारकी कुंम ॥ सा० ॥ धिग धिग माहरी बुद्धिने रे, जे थयो व्यसनी जुंम ॥१७॥सा०॥ धन हरिबलनी बुद्धिने रे, दीधुं जीवित दान ॥सा०॥ अजर प्यालो इण जीरव्यो रे, दीठो वडो सावधान ॥ १८ ॥ सा० ॥ जो कोपे मुझ उपरें रे, तो करे मंत्रीनी रीत ॥सा०॥ राज जी ये मुझ एकलो रे, तो शी रहे परतीत ॥ १९ ॥ सा० ॥ में महारे हाथे करी रे, करणी खोटी कीध ॥ सा० ॥ नीति मारग लोपी करी रे, हरिबलने दुःख दीध ॥ २० ॥ सा० ॥ ते किम सांइ सांसहे रे, जे हुं चाव्यो अनीत ॥ सा० ॥ तो शीखामण जली ज डी रे, कदि नहि विसरे चित्त ॥ २१ ॥ सा० ॥ अव गुण उपर गुण करे रे, ते तो हरिबल एक ॥ सा० ॥ मुझने राख्यो जीवतो रे, दयावंत विवेक ॥ २२ ॥ सा० ॥ सुगुण पुरुष में दीठडो रे, हरिबल साहस धीर ॥ सा० ॥ उपगारी शिर सेहरो रे, वीर शिरोम णि वीर ॥ २३ ॥ सा० ॥ धन हरिबलना तातने रे, धन हरिबलनी मात ॥ सा० ॥ क्षत्रिवंशमां दी

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

पतो रे, सुनट शिरोमणि जात ॥ २४ ॥ सा० ॥ धन धन ते गुरुदेवनें रे, जेणें बताव्यो धर्म ॥ सा० ॥ हुं बलिहारी तेहनी रे, जे राखी मुझ शर्म ॥ २५ ॥ सा० ॥ इम हरिबलना गुण स्तवे रे, परजामें मद नवेग ॥ सा० ॥ तोल वधाव्यो माहरो रे, हरिबलथुं करि नेग ॥ २६ ॥ सा० ॥ तो हुं पुत्री माहरी रे, परणावुं शुन काज ॥सा०॥ कर मूकामण वली दीयुं रे, महीयल महोटुं राज ॥ २७ ॥ सा० ॥ गुण उशीगण ए थइ रे, हुं हवे थाउं निःपाप ॥सा०॥ पलें हुं संयम आदरुं रे, ज्युं मटे नवनो संताप ॥ २८ ॥ सा० ॥ एता दिन नूलो नम्यो रे, विण दर्शन मुझ जीव ॥ सा० ॥ हवे करणी एहवी करुं रे, जिम ल हुं सूख सदीव ॥ २९ ॥ सा० ॥ इम आलोचना परजमें रे, कीधी ते महिपाल ॥ सा० ॥ चोथा उ ल्लासनी ए कही रे,लब्धि सातमी ढाल ॥३०॥सा०॥

॥ दोहा ॥

॥ इणिपरें नृप आलोचनी, आलोयां निज पाप ॥ हलुआकर्मी नृप थयो, करवा शिव मेलाप ॥ १ ॥ जिहां सूधी अज्ञानतम, व्यापी रह्युं घटमांहि ॥ ति हां सूधी ते जीवडो, पाम्यो ज्ञान न क्यांहि ॥२॥ स

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

हज गुणे जग जीवने, आवे शुद्ध स्वभाव ॥ तव घट में दर्शन रवि, प्रगटे तेज प्रभाव ॥ २ ॥ तव भ्रमे अ ज्ञान तम, प्रगटे ज्ञान उद्योत ॥ अष्ट करम दल भे दिने, जइ भले ज्योतिमें ज्योत ॥ ४ ॥ हवे करणी करुं धर्मनी, भेहडो समारुं शुद्ध ॥ वणकर पण ते वस्त्र नो, भेहडो समारे शुद्ध ॥ ५ ॥ इम जाणी हरिबल प्रत्यें, तेडाव्यो नृत्यपास ॥ हरिबल पण तिहां आवीयो, ततखिण नृप आवास ॥ ६ ॥ अरधुं आसन आपीने, कर जोडी कहे नाथ ॥ अरज सुणो एक माहरी, ह रिबल भो तुमें आथ ॥ ७ ॥

॥ ढाल आठमी ॥

॥ हांजी रामपुरा बाजारमां ॥ ए देशी ॥ हांजी हरि बलप्रत्यें हवे नृप कहे, तुमें सांभलजो गुणधि अगाध ॥ तोरी बलिहारी रे हरिबल माहरा ॥ ए आंकणी ॥ हांजी हुं खूनी थयो तुम तणो, मुझ खमजो ते अपराध ॥ १ ॥ तो० ॥ हांजी लांबां झाखां शा करुं, हुं तो हुं तुम नवोनव चोर ॥ तो० ॥ हांजी में तुमशुं एहवी करी, तिण नही मुझ सातमी गोर ॥ २ ॥ तो० ॥ हांजी विषयारसनो लोलुपी, थयो ते उती वस्तें उ जूक ॥ तो० ॥ हांजी लंकागढ यमने घरे, में मूक्या

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

तुम करी चूक ॥ ३ ॥ तो० ॥ हांजी ए पातक किहां छूटस्यां, में कीधो जेह अन्याय ॥ तो० ॥ हांजी ते रखे रोष चित्तें धरो, तुम कहुं छुं गोद बिछाय ॥४॥ तो० ॥ हांजी हुं तुम खामुखां थयो, मत राखजो अंतर वेर ॥ तो० ॥ हांजी इम नृप कहे हरिबल तु में, मुऊ उपर राखजो महेर ॥ ५ ॥ तो० ॥ हांजी

तव हरिबल नृपने कहे, तुमें ए शुं बोल्या नाथ ॥

तोरी बलिहारी रे नरपति माहरा ॥ ए आंकणी ॥ हांजी हुं सेवक छुं तुम तणो, मुऊ तुमें छो महोटी आथ ॥ ६ ॥ तो० ॥ हांजी माहरे तुमशुं को नही, कांही अंतरगतमें द्वेष ॥तो०॥ हांजी तुम मंत्री काल सेन जे, तेणे नंभेस्यो तुम छेक ॥ ७ ॥ तो० ॥ हांजी तुम अम वचें विगताविने, तुम कुमतियें घाली राड ॥ तो० ॥ पण जेहवी करी तेहवी लह्यो, बल्यो जीव तो तेह किराड ॥ ८ ॥ तो० ॥ हांजी तुम अम हवे कोइ वातनो, मत राखोजी अंतर कोय ॥ तो० ॥ हांजी तुम अम जीवडो एक छे, ए तो देखत छे तन दोय ॥ ए ॥ तो० ॥ हांजी मिथ्याडुःकृत मुऊथकी, तुमें मानजो नृप करि साच ॥ तो० ॥ हांजी राग द्वेषना योगथी, जेह बांध्यां निकाचित वाच ॥ १० ॥ तो० ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

हांजी इत्यादिक वचनें करि, हांजी हरिबलें स्वामणां की ध ॥तो०॥ हांजी अन्यो अन्य राजी थया, नृप हरिबल दोय प्रसिद्ध ॥११॥तो० ॥ हांजी हवे हरिबल प्रत्यें नृप कहे, तुमें सांभलो मुझ अरदास ॥ तो०॥ हांजी मुझ पुत्री जयसुंदरी, तुम पालव बांधुं उल्लास ॥१२॥ तोरी बलिहारी रे हरिबल माहरा रे ॥ ए आंकणी ॥ हांजी कर मूकामण में दीयुं, वली मुझ नगरीनुं राज ॥ तो० ॥ हांजी आण मनावो तुम तणी, मुझ म होटी वधारो लाज ॥१३॥तो०॥ हांजी एम कहीने ततखिणें, हांजी मेली परखद त्यांह ॥ तो० ॥ हांजी पंचनी साखें मन्नीने, करे तिलक ते नृप उन्नाह ॥ ॥ १४ ॥ तो० ॥ हांजी शुभ चोघडीयुं जोइने, करि थापना गवरीपुत्र ॥ तो० ॥ हांजी धवल मंगल वज डावीयां, करपीडन करवा सूत्र ॥ १५ ॥तो०॥ हांजी शुभ लगनें शुभ मुहूरतें, हरिबलने नृप पद दीध ॥ ॥ तो० ॥ हांजी पद महोत्सव अतिही करे, जिम जाणे लोक प्रसिद्ध ॥ १६ ॥ तो० ॥ हांजी नगरी विशाला साचली, शणगारी थइ उजमाल ॥ तो० ॥ जाणे स्वर्गपुरी आवी वसी, ए तो तेजें झाकझमाल ॥ १७ ॥ तो० ॥ हांजी स्वयंवर मंमप रोपीने, नृप

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

देशनां तेडां कीध ॥ तो० ॥ हांजी सोवनमय चोरी रची, वर कन्या वरवा सुसिद्ध ॥ १८ ॥ तो०॥ हांजी वाजिंत्र महोटे वाजते, हांजी वाजते यंत्र मृदंग ॥ ॥ तो० ॥ हांजी तत थेइ नटुआ नाचता, हांजी करता नवनवा रंग ॥१ए॥तो०॥ हांजी सोभागिणी साहेलीयो, मली सरखा सरखी बाल ॥ तो०॥ हांजी कोकिल स्वरें करी सोहली, मलां गावे गीत रसाल ॥ २० ॥ तो० ॥ हांजी ते गीत नादना स्वादथी, रहे थंभी अमर विमान ॥ तो० ॥ हांजी इणि परें नारी टोलें मली, ए तो गावे रूप निधान ॥ २१ ॥ तो०॥ हांजी मंगल वाजां वाजते, हांजी गाजते गुहिर निशाण ॥ तो० ॥ हांजी इण आमंबरें धीवरु, च ढयो परणवा चतुर सुजाण ॥ २२ ॥ तो० ॥ हांजी अलबेला जानी थया, हांजी जाणीयें देवकुमार ॥ तो० ॥ हांजी हरिबलने परणाववा, हांजी आव्या नृप दरबार ॥ २३ ॥ तो०॥ हांजी घणे आमंबरें सो हता, हांजी करता नृत्य हजार ॥ तो० ॥ हांजी जीव दयाना प्रजावथी, ढबे तोरण हरिबल सार ॥ २४ ॥ ॥ तो० ॥ हांजी प्रीतिमती पट्टरागिणी, तीर धूंसरें पोंखे जमाइ ॥ तो० ॥ हांजी चोरीमां पधरावीयां,

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

वर कन्या कर मेलाइ ॥ २५ ॥ तो० ॥ हांजी पालव बांधी दोयना, हांजी फेरा फेरव्या चार ॥ तो० ॥ हांजी वर कन्यायें आरोगीयो, हांजी सुंदर मिठो कंसार ॥ ॥ २६ ॥ तो० ॥ हांजी जयसुंदरी परणावीने, हरिबलने दीधुं राज ॥ तो० ॥ हांजी पायक सप्त लक्ष अश्वनी, ठकुराइ दीधि समाज ॥ २७ ॥ तो० ॥ हांजी जो जो नवियां पुण्यथी, लहि मन्नी सुकृत माल ॥ तो० ॥ हांजी चोथा उल्लासनी ए कहि, शुभ लब्धें आठमी ढाल ॥ २८ ॥ तो० ॥

॥ दोहा ॥

॥ मदनवेग हरखें करी, कीधो उछव सार ॥ सोनुं रूपुं सामटुं, वरसे ज्युं जलधार ॥१॥ जसपडहो वज डावियो, नगरी जमाडी सार ॥ हरिबलने राजें ठव्यो, वरत्यो जय जयकार ॥२॥ बंदीजन मूक्या परा, आणी मन उपगार ॥ आसीजन तृपता कर्या, दानें देदे कार ॥३॥ पद महोछव अतिहे कर्या, राखी जुग जगें ख्यात ॥ हरिबल जे राजा थयो, चाली चिहुं दिशि वात ॥ ४ ॥ नगरी जन सहु हरखीयां, जव थयो हरिबल राय ॥ देश देशाउरि भेटणां, ले आवे नृप धाय ॥ ५ ॥ इणिपरें पद महोत्सव करी, जे नृप मद

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

नवेग ॥ हरिबलने राज्यें ठवी, प्रबल वधाख्यो नेग ॥
॥ ६ ॥ हरिबल पण सुख नोगवे, पाले राज्य अखं
ड ॥ आण मनावी चिहुं दिशें, नुजबलि नीम प्रचं
ड ॥ ७ ॥ हवे नृप जामाता कने, ससरो मागे शी
ख ॥ जो स्वामी राजी हुवो, तो हुं लेहुं दीख ॥
॥ ८ ॥ निज आतमने तारवा, लेहुं संयमनार ॥ शिव
रमणीशुं नेहलो, करवा थयो हुशियार ॥ ए ॥ एम
कही नृप सज थयो, चढते ते परिणाम ॥ दीक्षा
महोत्सव शुन करे, हरिबल तव गुणधाम ॥ १० ॥

॥ ढाल नवमी ॥

॥ अमदावादना खेल्या रे, वालम आवजो रे ॥
ए देशी ॥ संयमनारी वरवा रे, नृप मन उल्लस्यो रे ॥
पापस्थान अढारथी रे, नृप दूरें खस्यो रे ॥ आणी
समता नाव रसाल, राणी पण थइ साथें विशाल ॥
पंचम गतिने हेतें रे, संयम आदरे रे ॥ १ ॥ सातें
क्षेत्रें नावें रे, धन बहु वावरे रे ॥ निर्मल चित्तें थइने रे,
सुकृत करणी आचरे रे ॥ समकित निर्मल शुद्ध करेय,
प्रवचन रचना चित्त धरेय ॥ घणे आमंबरें आवे रे,
सुविहित गुरु कने रे ॥ २ ॥ बाह्याभिंतर केरा रे, मल
सवि ठांमिया रे ॥ परमातमने गेहें रे, संकेत मांमिया

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

रे ॥ मूकी घरनो सघलो शोच, पंच मुष्टिशुं कह्यो तिहां लोच ॥ राजा राणी आदें रे, चारित्रने ग्रहे रे ॥ ३ ॥ तव हरिबल शुभ नावें रे, ससराने ऊजवे रे ॥ दीक्षा महोत्सव नावें रे, कह्यो जन संस्तवे रे ॥ वरसें ज्युं नादरवानो जलधार, वरसे त्युं हरिबल सोवन धार ॥ कविजन जेता तेता रे, श्लोक नणे घणा रे ॥ ४ ॥ सुरपतिनी परें कीधो रे, महोत्सव दीक्षनो रे ॥ क्षायिक समकित केरो रे, ग्रह्यो दंम ईक्षनो रे ॥ दीक्षा उछवनुं फल एह, हरिबल पाम्यो ते गुणगेह ॥ शिव रमणीनो साचो रे, पालव बांधियो रे ॥ ५ ॥ धन धन मदनरुषिजी रे, बलिहारी ता हरी रे ॥ संजम नारी प्यारी रे, वरी तुमें जाहरी रे ॥ धन धन स्वामी तुमचो लेख, धन धन जीत्या राग ने द्वेष ॥ ते गुण लीणो तुमचो रे, हुं किंकर थइ रह्यो रे ॥ ६ ॥ धन्य स्वामी करुणारसें रे, मन संतो षियो रे ॥ संवेग रसें करी आतम रे, निर्मल पोषि यो रे ॥ धन धन्य स्वामी तुम दृढ चित्त रे, लांमयां धण कण राजनी नीत ॥ धन धन्य स्वामी तुमचा रे,मनो बल नावनें रे ॥ ७ ॥ इम गुण महोटा रे, मदन वेग रुषिराजना रे ॥ धन्य धन्य मुखथी जपता रें,

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

हरिबल पुरजना रे ॥ इणि परें करता स्तवनां अपार, ऋषिजन प्रणमी निज आगार ॥ हरिबल राजा आदि रे, सहु वांदी वल्या रे ॥ ८ ॥ हवे ऋषि मदनवेगजी रे, गुरुसंगें जणे रे ॥ चौद पूर्वना अर्थ रे, विचार ते संशुणे रे ॥ पाले पूरा पंचाचार, चाले सूधा नय व्यवहार ॥ दंपति दोये साचां रे, जिन मतमें वहे रे ॥ए॥ अध्यातमपुर सुंदर रे, निरखी तिहां रहे रे ॥ विवेक तणां जे मंदिर रे, महोटां गढ गहे रे ॥ तेहमें कीधो दो जणें वास, करे तिहां बेगां ज्ञान अभ्यास ॥ ज्ञान ने दरिसण चरणशुं रे, रहे लीनां थकां रे ॥ १० ॥ ध्यान सुतखतें बेगां रे, दो वखतें इक मनां रे ॥ समकित छत्र धरावि रे, हरखें दो जणां रे ॥ सोहे चामर श्रुत चारित्र, पाले महोटां आठ मावित्र ॥ धर्म सत्ता दश मेले रे, सत्य दरबारमां रे ॥११॥ संयम हाथी शुभ मन रे, घोडा दीपता रे ॥ अष्टक रमना दलनें रे, वेगें जीपतां रे ॥ शीलांगरथ शुभ महा गुणवंत, संवर सुभट सुतेज अनंत ॥ मदन वेग जे ऋषिने रे, दरबारें गाजता रे ॥१२॥ नेद वि ज्ञाननी घंटा रे, बांधी न्यायनी रे ॥ खीर ने नीर ज्युं रे, न्याय करे संन्यायनी रे ॥ सातमे गुणठाणे

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

चित्त लाय, मारग श्री जिनकल्पी धराय ॥ जीवनो कारिमो झगडो रे, मिटाड्यो खिण एकमां रे ॥ १३ ॥ तेरमे गुणठाणे रे, सजोगीयें आविया रे ॥ शुक्ल ध्यानमे दंपति रे, दोइ ते नाविया रे ॥ तव तिहां पाम्यां केवल नाण, तीन भुवनमें थयां ते जाण ॥ केवल महोछव महोटुं रे, इंद्रादि सघला करे रे ॥ १४ ॥ बारे परषदा मेली रे, दे धर्म देशना रे ॥ कोइ भव्य जीवने दीधी रे, समकित वासना रे ॥ ताख्यां भवोदधि थी केइ जीव, ज्योति वधूशुं प्रीति अतीव ॥ दंपति दोयें बणाइ रे, केवल नाणथी रे ॥ १५ ॥ विशमा जिननें वारें रे, मदनऋषि रायजी रे ॥ वसुधा पावन करता रे, फरे सुखदायजी रे ॥ आयु वरष तेत्रीश हजार, पाली पूरुं दंपति सार ॥ शैलेशी गुणयोगें रे, दो मुगति गयां रे ॥ १६ ॥ जनम मरणना भय सवि रे, दूरें टलिया रे, शिवरमणिना संगमें रे, निशिदिन मलिया रे ॥ चौद भुवननां नाटक चंग, निरखे ज्युं करजल रेह सुरंग ॥ लोक अलोकने अंतें रे, जावे तिहां रही रे ॥ १७ ॥ जो जो भवियां आगें रे, शी करणी हती रे ॥ मोह नृप जोरें शिखडी रे, मानी न को रती रे ॥ तेहना धणी थइ बेठा सिद्ध, तिन भुव

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

नमें मानीता कीध ॥ ए सवि गुण तुम लेजो रे, भवि समकित तणा रे ॥ १८ ॥ समकित रयण छे जगमें रे, जनने तारवा रे ॥ भविक जीवने निमी रे, वंछित सारवा रे ॥ भाख्युं ए समकित परम निधान, मुगति वधूनुं दाता निदान ॥ जिनवरें भाख्युं सघले रे, सूत्र सिद्धांतमां रे ॥ १९ ॥ एहवा गुण तुमें जाणी रे, समकित धारजो रे ॥ निंदा विकथा परनी रे, दूर निवारजो रे ॥ ज्युं लहो भवियां समकित शुद्ध, जो जगदीश दे तुमने बुद्ध ॥ तो सडशठ बोलें करीने रे, समकित धारजो रे ॥ २० ॥ भविक जीवने समकित रे, जीवनुं मूल छे रे ॥ समकितधारी जीवने रे, शिव अनुकूल छे रे ॥ इम कहे लब्धिविजय उजमाल, चोथा उल्लासनी नवमी ढाल ॥ हलुवा कर्मी जीव ते रे, वयण ए मानशे रे ॥ २१ ॥ इति ॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे सुणजो भवियण तुमें, हरिबल केरी वात ॥ वीशाला पुर नयरनुं, विलसे राज विख्यात ॥ १ ॥ बारे दरवाजे प्रबल, मांमी दाननी शाल ॥ नग्न बुभूक्षित जीवने, देवे दान विशाल ॥ २ ॥ नव नेदें जे पुण्य छे, सूत्र तणे अनुसार ॥ जन्म सफल करवा

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

नणी, मांमयो सत्रुकार ॥ ३ ॥ साते खेत्रें वावरे, के इ लख धननी कोड ॥ चैत्य करावे जिन तणां, मांमि स्वर्गशुं होड ॥ ४ ॥ अमारि पलावे चिहुं दिशें, जिहां सुधी आणा राय ॥ मारी शब्द को उच्चरे, तो ते खूनी थाय ॥ ५ ॥ विण खूनें को जीवने, को न उपाडे श स्त्र ॥ कीडी कुंजर आपणां, सम करी लेखवे तत्र ॥ ६ ॥ इणि परें हरिबल राजवी, पाले राज्य अखंम ॥ परजाने इंडु समो, अरिमन नीम प्रचंम ॥ ७ ॥

॥ ढाल दशमी ॥

॥ मारुजी साथीडा साथें धण रे, हाथें मद पियो रे लो, मारो माणिगर मारुलो ॥ ए देशी ॥ नवियां नगरी विशाला फाक, फमाला सोहती रे लो, मानुं कैलासपुरी लो ॥ न० ॥ सोहम वासीनी परें खासी, मोहती रे लो ॥ ठकुराइ उपे सनूरी लो ॥ १ ॥ न० ॥ पुण्य प्रनावें नावें, नोगवे राजनें रे लो; हरिबल नाग्य विशाला लो ॥ न० ॥ सुजस वरवा प रजने, करवा साजनें रे लो ॥ प्रगटयो परम कृपाला लो ॥ २ ॥ न० ॥ शोलशें देशें पुण्य, विशेषें मली यें रे लो, साध्या देश हगीला लो ॥ न० ॥ अनमी राया तेह, नमाया हव्यिं रे लो, हुता जे मुछाला

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

लो ॥ ३ ॥ ज० ॥ करटी काला मद मत, वाला फूल ता रे लो, जाणियें टूक हिमाला लो ॥ ज० ॥ चैत रें केशु रंग, नवेशुं फूलता रे लो, सोहे सिंदूरें शुंढाला लो ॥ ४ ॥ ज० ॥ घुघर घंटा रण झण, घंटा वाजता रे लो, गाजता अंबर सूधी लो ॥ज०॥ एहवा संख्या ता गण्या नवि, जाता साबता रे लो, गज घंटा श्रेणि विलुद्धी लो ॥ ५ ॥ ज० ॥ रवि रथना ज्युं वाजी, ताजी वेगना रे लो, ग्राजे हरिबल द्वारा लो ॥ ज०॥ करे खुडताला पद पड, ताला मेघना रे लो, अगणित अश्व अपारा लो ॥ ६ ॥ ज० ॥ वहेल सुखासन मानुं, सुरासन ताकडा रे लो, एहवा रथ रढियाला लो ॥ ज० ॥ रण सुन्नटाला जे मठ, राला वांकडा रें लो, एहवा अगणित पाला लो ॥ ७ ॥ ज० ॥ सुरप ति सरिखी हरिबल, हरखी ग्रामनी रे लो, नोगवे रा ज्यनी लीला लो ॥ ज० ॥ अपछर वरणी पियु मन, हरणी कामिनी रे लो, विलसे शोलशें बाला लो ॥ ८ ॥ ज० ॥ बत्रीश बद्धा नाटक, सुधा स्वादना रे लो, होवे रंग रंगाला लो ॥ ज० ॥ गुणिजन गाता कवि जन, माता उलादना रे लो, बोले बिरुद वडाला लो ॥ ए ॥ ज० ॥ हरिबल केरी अतिही, जलेरी विस्त

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

री रे लो, चिहुं दिशि कीरति चावी लो ॥ न० ॥ साग र स्वामी अंतर, जामी सुस्तरी रे लो, आपी ठकुराइ गावी लो ॥ १० ॥ न० ॥ हरिबल आगें पुण्य, विनागें नूतलें रे लो, बीजा नृप ढंकाणा लो ॥ न० ॥ दानें मानें जन सवि, माने नुजाबलें रे लो, हरिबल जगमें पंकाणा लो ॥ ११ ॥ न० ॥ जो जो तोई पुण्यवंत, होइ नगीयो रे लो, एकण जीव दयाथी लो ॥ न० ॥ जन मन वसियो मधुकर, रसियो नोगी यो रे लो, थयो सुगुरुनी मयाथी लो ॥ १२ ॥ न० ॥ नाखी जालने ग्रही, मछलनने छेदतो रे लो, निशिदिन जलमें हस्तो लो ॥ न०॥ काचलां घस्तो पापनो, रस्तो वेदतो रे लो, ते थयो नृपमें वस्तो लो ॥ १३ ॥ न० ॥ एहवी वातो गुण, विख्यातो सांनली रें लो, वसंतसिरीने तातें लो ॥ न० ॥ बारे वरसें कविजन, आशें मन रली रे लो, लही सुधी पुत्रीनी मातें लो ॥ १४ ॥ न० ॥ नूपति निसुणी चिंते, सुगुणी शी थइ रे लो, जो जो धाता करणी लो ॥न०॥ पुत्री रूडी पण थइ, कूडी नुली गइ रे लो, जे थइ नोईनी घरणी लो ॥ १५ ॥न०॥ छठी रातना लेख, लख्या जे जातिना रे लो, कुण ते टाली शके रे लो ॥ न० ॥ जेह

नो संबंध मले पर,बंध ते नातिना रे लो ॥ नावि तेह ज करे रे लो ॥ १६ ॥ न० ॥ उत्तम मध्यमनुं इहां, कारण को नही रे लो, नावियी को नही माह्यो लो ॥ न०॥ जेहनी लागी लगन, तेहने ते सही रे लो,कोइ न रह्यो साह्यो लो ॥ १७ ॥ न० ॥ मुऊथी ठानी गइ, निशानी पुत्रीने रे लो, न पडी खबर को अंदरें लो ॥ न० ॥ हवे शा विशासा दइ, दिलासा पुत्रीने रे लो, तेडुं हवे निज मंदिरें लो ॥ १८ ॥ न० ॥ सुणि नृप हरख्यो जमाइ, परख्यो धीवरु रे लो, अतुली बल पुण्यवंतो लो ॥ न० ॥ धीवर जाति थयो नृप, पांति शूरवरु रे लो,माहरी पुत्रीने संतो लो ॥ १९ ॥ ॥ न० ॥ मुऊ नगरीनो लोक ए, धीवर जातिनो रे लो, जेहनी दुष्कृत करणी लो ॥ न० ॥ कुल ब त्रीशें क्षत्री, वंशें नातिनो रे लो, ते थयो सुकृत कर णी लो ॥ २० ॥ न० ॥ रायमें रायां कविजनें, गाया चिहुं जगें रे लो, प्रबल ए पद ले जेहनुं लो ॥ न० ॥ एहवो जमाइ पुण्यवंत पाइ, नली वगें रे लो, देखुं दरि सण तेहनुं लो ॥ २१ ॥ न० ॥ इम नृप धारी मन शुं, विचारी प्रेष्यने रे लो, मूकुं नगरी विशाला लो ॥ न० ॥ बेसी एकांतें लिखे हवे, खांतें लेखने रे

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

लो, वसंतसेन नूपाला लो ॥ २२ ॥ न० ॥ जो जो धर्मी हरिबल, कर्मी अब्धियें रे लो, कीधो ढाक ढ माला लो ॥ न० ॥ चोथा उल्लासनी पुण्य, प्रकाशनी लब्धियें रे लो, नांखी दशमी ढाला लो ॥ २३ ॥ न०

॥ दोहा ॥

॥ इणिपरें चित्तमां चिंतवी, वसंतसेन नूपाल ॥ कागल मश लेखण करी, मांमे लेख रसाल ॥ १ ॥ स्वस्ति श्री श्रीऋषजना, चरण कमल नमि तास ॥ लेख लख्यो रलियामणो, जामाताने उल्लास ॥ २ ॥ नृप तेडावे ततखिणें, मतिसागर मंत्रीश ॥ ते पण ततखिण आवियो, प्रणमी नाथ जगीश ॥ ३ ॥ नू प कहे सुण मंत्रवी, आ सोंपूं तुझ लेख ॥ जामाता मुझ पुत्रिने, देजे लेख विशेष ॥ ४ ॥ कहेजे प्रणि पत माहरी, घणी करी मनुहार ॥ कहेजे ससरे तेड वा, मूक्यो मुझ निरधार ॥ ५ ॥ शीख जलामण इ णिपरें, नूपें कीधी जोर ॥ सैनशुं मंत्री संचर्यो, देइ न गारे ठोर ॥ ६ ॥ कंचन पुरनां मानवी, सघले जाणी वात ॥ जामाता निज पुत्रिने, मूक्यो तेडवा साथ ॥ ७ ॥ मंत्री साथें परवरी, सेना पंच हजार ॥ योजन चउसय लंघिने, आव्यो विशाला पार ॥ ८ ॥ वीशालापुर नय

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

रनां,दिठां महोटां मंमाण ॥ जाणे स्वर्गपुरी वसी,आ वीने इण ठाण ॥ ए ॥ वाडी महोलें मलपति, फुलि चिहुं दिशि वनराय ॥ जाणे वन नंदननी बहेनडी, आय वसी इण ठाय ॥ १०॥ इणिपरें सेना मंत्रवी, देखत हर्षित होय ॥ पेसारो पुरमें कखो, वेला शुन घडि जोय ॥ ११ ॥ नगरी सखरी जोवतां, आव्या ते दरबार ॥ हरिबल नृपने नेटिया, उपनो हर्ष अपार ॥१२॥ हरिबल सुरपति सारिखो, बेठो धरावी छत्र ॥ मंत्रीपण प्रणिपत करी,दीधो नृप कर पत्र॥१३॥

॥ ढाल अग्यारमी ॥

॥ शेत्रुंजानो वासी साहेब, माहारे दिल वस्यो रे ॥ मोरा साहेबा ॥ आदिजिन करुं रे जूहार ॥ ए देशी ॥ कागल देइ हर्ष धरे चित्तशुं रे॥मोरा साहिबा॥ ए तो विनवे मंत्री विशेष ॥ तेडवा तुमने मुक्या अ मने हेतशुं रे ॥ मो० ॥ तुमचे ससरेजीयें लेख ॥ १ ॥ कागल० ॥ ए आंकणी ॥ निशिदिन तुमचो राखे म मचो मव्या तणो रे ॥मो०॥ तुम ससरोजी नूपाल ॥ दरिसण दीजें पावन कीजें आंगणो रे ॥मो०॥ तुम ची सासुनो कृपाल ॥२॥का०॥ ससरो जमाई आनंद पाई एकठा रे ॥मो०॥ बेसी करो रंग रोल ॥ नेह सुधा

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

रस वरसे पावस गहघटा रे ॥मो०॥ उपजे ज्युं रंगचो ल ॥ ३ ॥ का०॥ अमचो स्वामी तुम शिर नामी प्रेम शुं रे ॥ मो० ॥ कहुं मुख वचनें एम ॥ तेमाटे स्वामी अंतरजामी नेगशुं रे ॥ मो० ॥ पाउ धरो धरी प्रेम ॥ ॥ ४ ॥ का० ॥ ससरो ने सासु नही कांहि फासु था वती रे ॥ मो० ॥ आव्या विना प्राणाधार ॥ पं जर तिहां ले जीव इहां ले नावथी रे ॥ मो० ॥ इणि परें राखे ले प्यार ॥ ५ ॥ का० ॥ तेमाटे तुमने कहुं शुं प्रभुने घणुं करी रे ॥ मो० ॥ दंपति थइ एक रंग ॥ वेगा थाउ वार म लाउ सहचरी रे ॥ मो० ॥ व्यो सेना तुम संग ॥ ६ ॥ का० ॥ इणि परें सयणा मंत्री वयणां सांजली रे ॥ मो० ॥ हरख्यो हरिबल ताम ॥ कागल वांची मनमां माची मन रली रे ॥ मो० ॥ सेना सजि अभिराम ॥ ७ ॥ का० ॥ तिहांथी मंत्री उठ्यो गंत्री शीघ्रथी रे ॥ मो० ॥ आव्यो ते कुमरी पास ॥ तातनो मंत्री उलख्यो यंत्री अग्रथी रे ॥ ॥ मो० ॥ वसंतसिरीयें उल्लास ॥ ८ ॥ का० ॥ म लवा ऊठी कुमरी वूठी नयणथी रे ॥ मो० ॥ हर्षनां आंसू जोर ॥ जनकने ढी परें मलियां जलि परें स यणथी रे ॥ मो० ॥ मंत्री कुमरी समोर ॥ ए ॥ का०॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

बेसि एकांतें कुमरी खांतें पूछती रे ॥ मो० ॥ कुशल खेमनी रे वात ॥ मात पितानां सुख शाता जे छती रे ॥ मो० ॥ ते कहो मुझ अवदात ॥ १० ॥ का० ॥ तव मंत्री जंपे पत्र समर्प्यो तातनो रे ॥ मो० ॥ वलि मुखथी कहे एम ॥ छे बहु तुमशुं मलवा मनशुं मातनो रे ॥ मो० ॥ चातक जलधर जेम ॥ ११ ॥ ॥ का० ॥ सो वातें एकण वातें मानजो रे ॥ मो० ॥ जंतुउ छे तुम संग ॥ मत जाणो काचुं सहि करि साचुं जाणजो रे ॥ मो० ॥ तुम आवे होशे रंग ॥ ॥ १२ ॥ का० ॥ एहवो उत्तर मंत्री पडुत्तर दीधलो रे ॥ मो० ॥ हरखी कुमरी ताम ॥ सचिवने राजी कुमरीयें मांझी कीधलो रे ॥ मो० ॥ देइ वधामणी उद्दाम ॥ १३ ॥ का० ॥ दंपति दोइ मुहूरत जोइ हरखशुं रे ॥ मो० ॥ शोलशें राणी समेत ॥ सस रानें मलवा सगपण कलवा हर्षशुं रे ॥ मो० ॥ उमाह्या जनमनें खेत ॥ १४ ॥ का० ॥ श्री पति नामें वणिक सुधामें मन्नीने रे ॥ मो० ॥ राख्या जे पूर्वे ते जाण ॥ तेहने तेडी पूर निगेडी लन्नीने रे ॥ मो० ॥ सोंपी कह्यो कुछ दिवाण ॥ १५ ॥ का० ॥ जरतारी मेरा अतिही घणेरा सोहता रे ॥ मो० ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

ताण्या तंबू जडाव ॥ रवि शशी सरखा निरखी हरख्या मोहता रे ॥ मो० ॥ देखी तंबू बणाव ॥ १६ ॥ का०॥ गज रथ घोडा सुन्नट सजोडा साबता रे ॥मो०॥ शण गाख्या नाड्व रंग ॥ वहेल सुखासण जाणे सुरासण फावतां रे ॥मो०॥ इम सजी सेना चंग ॥१७॥का०॥ पंचरंगी नेजा नन्नना ठेजा जोवता रे ॥ मो० ॥ रो प्या नेजा उत्तंग ॥ पवनें फरके सुरपति घमके क्षो नता रे ॥ मो० ॥ देखी ऊंमा अमंग ॥ १८ ॥ का० ॥ गवरीजाया मेंदी रंगाया दीपता रे ॥ मो० ॥ कन कमें जडीया शिंगाल ॥ घूघरमाला घमके रढाला ऊीपता रे ॥ मो० ॥ सुरधोरी सुकमाल ॥ १९ ॥ ॥ का० ॥ इणिपरें सेन्या मानवसेना राखता रे ॥ ॥ मो०॥ मल्लीयें सजि सेना उद्दाम ॥ हरिबल राजा चढतरि वाजां वाजते रे ॥ मो० ॥ चाल्या जनमनी नूम ॥ २० ॥ का० ॥ ससरानो मंत्री पुण्यपवित्री नेयता रे ॥ मो०॥ ले चाल्यो दंपति सार ॥ शीघ्र प्र याणें थाउ निशाणें देयता रे ॥ मो० ॥ आव्या ज्यां परणी नार ॥ २१ ॥ का० ॥ ते वन देखी दंपति ह रखी दीधला रे ॥ मो० ॥ फेरा ते वनमांहि ॥ किधा उतारा जीमण सारां कीधलां रे ॥ मो० ॥ चउरंगी

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

सेना उल्लाहि ॥ २२ ॥ का० ॥ प्यारि पयंपे पियुने जंपे हेतनी रे ॥मो०॥ वाणीयें वीनवे नूप ॥ इंद्रपुरी सम नाम रहे तिम वेतनी रे ॥ मो० ॥ नगरी व सावो चूंप ॥ २३ ॥ का० ॥ श्रीजिनमंदिर अतिही सुंदर चोंपशुं रे ॥ मो० ॥ करो इहां तीरथ गाम ॥ जे मुझ परणी ते करो करणी रूपशुं रे ॥ मो० ॥ जिम रहे जगमें नाम ॥ २४ ॥ का० ॥ तव ते मल्ली प्यारी सुलली वयणथी रे ॥ मो०॥ समस्यो त्यां सा गर देव ॥ गुणनो रागी पुण्यविज्ञागी सयणथी रे ॥ ॥ मो० ॥ आव्यो सुर ततखेव ॥ २५ ॥ का० ॥ सुर कहे शाने तेडो माने ते कहो रे ॥ मो० ॥ जे होय मननी हूब ॥ तव कहे हरिबल दाखो सुरबल मनें वहो रे ॥ मो० ॥ नगरी वसावो खूब ॥ २६ ॥ का०॥ तव तिहां नाकी बाकि न राखी पलकमें रे ॥ मो०॥ वासी त्यां नगरी विस्तार ॥ गढ मढ मंदिर पोलशुं सुंदर हलकमें रे ॥ मो० ॥ रचना कीध अपार ॥ ॥ २७ ॥ का० ॥ श्रीमुनि सुव्रत त्रीजग उद्धृत सो हती रे ॥ मो० ॥ बिंब ठव्युं करि चैत्त ॥ दंपति दोनी मूरति कीनी मोहती रे ॥ मो० ॥ पूर्वें जे लह्युं देवत्त ॥ २८ ॥ का०॥ रान वेलाउल डिंग ने देउल देखिने

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

रे ॥ मो० ॥ दंपति थयां उजमाल ॥ चोथा उल्लासनी प्रेम प्रकाशनी पेखिने रे ॥ मो० ॥ कहि लब्धियें अग्यारमी ढाल ॥ २९ ॥ का० ॥ इति ॥

॥ दोहा ॥

॥ नव जोयण लांबी वसी, पहोली योजन बा र ॥ जाणुं लंकानी बहेनडी, वसी इहां वनह मझा र ॥ १ ॥ सजल सरोवर जल नखां, वाडी तिम लह कंत ॥ जाणुं सुरवाडी इहां, प्रगट थइ महकंत ॥ ॥ २ ॥ पटराणीना नामनी, वासी नगरी सार ॥ व संतपुरी नामें जली, चावी थइ संसार ॥ ३ ॥ इणि परें नगरी वासिने, हरिबल राजी कीध ॥ पहोतो ते निज थानकें, जलधी नाथ प्रसिद्ध ॥ ४ ॥ वसंत सिरीना सचिवने, सोंपी नगरी तास ॥ केताई दिन तिहां रही, आगल चाल्या उल्लास ॥ ५ ॥ दल वाद ल हरिबल तणुं, चाले ज्युं जलपूर ॥ धरणी तलथी सलसल्यो, शेषनाग नयनूर ॥६॥ के शुं लेशें लंकने, के शुं लेशे स्वर्ग ॥ के शुं लेशे जगतने, इम जाणे ज नवर्ग ॥ ७ ॥ इणिपरें हरिबल राजवी, चाल्यो अति ही चूंप ॥ सीमाडाना जे धणी, आवी नमिया नूप ॥ ८ ॥ इणि परें आण मनावतो, आव्यो आरज दे

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

श ॥ वात वधामणी ससुरने, मूक्यो मंत्रि विशेष ॥ ॥ ए ॥ ते पण अतिही उतावलो, मतिसागर मंत्री श ॥ आव्यो निज कंचनपुरी, पहोती मनह जगीश ॥ १० ॥ शीघ्र जई प्रणिपत करी, दीध वधाई ना थ ॥ जामाता तुम पुत्रीने, तेडी आव्यो साथ ॥ ११ ॥ वात वधामणी सांभली, हरख्यो कुमरी तात ॥ स न्मान्यो मंत्रीशने, दइ वधाइ विख्यात ॥ १२ ॥ हरि बल पण उतावलो, आव्यो जलधि तीर ॥ जिहां ल ह्युं समकित गुरुकने, दें त्यां मेरा सधीर ॥ १३ ॥ देखी जनमनी नूमिका, दंपति दो हरखात ॥ आ सा चूं के सोहणुं, मिलश्यां जननी तात ॥ १४ ॥ खूनी आपण दो जणां, हूतां नृपनां चोर ॥ ते थयां साचां पुण्यथी, जव मिल्या गुरु इण ठोर ॥ १५ ॥

॥ ढाल बारमी ॥

॥ मोतीयारां हे लुंबक फुंबखां ॥ अथवा ॥ अजि त जिणंदशुं प्रीतडी ॥ ए देशी ॥ एम चिंतवी दंपति दो जणां, कालिकाने देउल आय ॥ सहि हुआं रंग वधामणां ॥ ए आंकणी ॥ एतो पूजा नक्ति करी घ णी, एतो प्रणम्या देवीना पाय ॥ १ ॥ स० ॥ धन धन मावडी जगतमां, प्रगटी तुं जन सुख हेत ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ स० ॥ दीन डुःखीया जीवने उद्धरी, करी पावन संपद हेत ॥ २ ॥ स० ॥ इम आसना वासना देवीनी, करि दंपती बोले आशीष ॥ स० ॥ माता जीव जे सुरगिरिनी परें, अम पुहचौ सघली जगीश ॥३॥ ॥ स० ॥ हवे हरख्यो कंचनपुर धणी, एतो वसंतसेन नूपाल ॥ स० ॥ तेम वसंतसेना राणी, पट्ट राणी थइ उजमाल ॥ ४ ॥ स० ॥ निज पुत्रीने वर कारणें, शणगारी नगरी ते सार ॥ स० ॥ एतो देव दाणव विद्याधरा, एतो जोवा मलिया अपार ॥ ५ ॥ ॥ स० ॥ एतो गजरथ घोडा पालखी, शणगाख्या ते बहु गाठ ॥ स० ॥ राज मारगमां विराजता, पथराव्या सोवन पाट ॥ ६ ॥ स० ॥ डुर्वानां हे तोरण बांधियां, वच्चें सुरतरु दल महकंत ॥ स० ॥ एतो घर घर चहुटे चाचरे, फुलमालापुंज सोहंत ॥७॥स०॥ टोडे टोडे मोतीना झूमणां, लहकी रह्यां तेजमें तेज ॥ स० ॥ मानुं कुमरी वरने निरखवा, आवी स्वर्गपुरी नेहेज ॥ ८ ॥ स० ॥ शणगारी नगरी इणि परें, हरखी नृप वसंतसेन ॥ स० ॥ चतुरंगी सेना सज करी, वर कुमरीने तेडवा तेण ॥ ए ॥ स० ॥ गयणांगण गूडी उछले, गुंफालां गुंजे निशाण ॥ स० ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

साबेलां सबल ते सज कर्यां, नगरीजन कुमर सुजा
ण ॥ १० ॥ स० ॥ इम आमंबरशुं नरपति, सामश्युं
सबल सजेय ॥ स० ॥ चाल्यो कुमरी वरने तेडवा,
पुरजनशुं हर्ष धरेय ॥ ११ ॥ स० ॥ नवयोवन नारी
सोहामणी, मली गावे मधुरां गीत ॥ स० ॥ रंना उ
र्वशीना मद गालती, गावे कोकिल स्वरनी रीत ॥
॥ १२ ॥ स० ॥ दलवादल देखी पुत्रीनुं, नृप पुरज
न हरख नरात ॥ स० ॥ जिम नविकनें समकित
मले, तिम मलिया ससरो जमात ॥ १३ ॥ स० ॥
वर कन्या आदि सहु मल्यां, नृप राणी हर्ष नराय
॥ स० ॥ तिण वेला हर्ष जे उपनो, ते तो पुस्तक ल
खियो न जाय ॥ १४ ॥ स० ॥ कुमरी ने जनकी
जनक तणो, वर्ष बारनो नांग्यो वियोग ॥ स० ॥
आ तें साचुं के सुहणुं थयुं, कुमरी वरनो संयोग ॥
॥ १५ ॥ स० ॥ धन दिवस धन वेला घडी, मुऊ पु
त्रीयें जे लह्युं मान ॥ स० ॥ एम मावित्र हरखे म
नमें, जिम डुमक लहे सुनिधान ॥ १६ ॥ स० ॥ ह
रिबल ए नोइनी जातिमां, प्रगट्यो वडो पुण्य निधान
॥ स० ॥ मुऊ पुत्रीनी संगतें, थयो उंच ए जग सुज
सान ॥ १७ ॥ स० ॥ हवे हरिबलने ससरो कहे, न

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

ली मीठी अमृत वाण ॥ स० ॥ स्वामी पधारो गज शिर चढी, पुर पावन करो प्रमाण ॥ १८ ॥ स० ॥ श्रेष्ठ सेनापति सारथ मलि, करे विनती हर्ष विख्यात ॥ स० ॥ तव हरिबल हर्ष विनोदथी, गजशिर चढ्या ससरो जमात ॥ १९ ॥ स० ॥ आमां साहामां वाजित्र वाजते, गावे गुणिजन शब्द अखंम ॥ स० ॥ होवे नाटक बत्रीश बद्ध जे, तेणें गाजी रह्युं ब्रह्मंम ॥ २० ॥ स० ॥ कह्यो उत्सव विवाह जेटलो, कुमरी नी वधारवा लाज ॥ स० ॥ नृपें करमूकामणें म ह्लीनें, दीधुं कंचनपुरनुं राज ॥ २१ ॥ स० ॥ मणि सोवन रूपुं सावटुं, गुणिजनने कीध पसाय ॥ स० ॥ करि पृथवी उरण दानमें, आश्रीजन बहु तृपति कराय ॥ २२ ॥ स० ॥ नलां नेटणां लावे पुरजना, वर क न्याने करे नेट ॥ स० ॥ मन वंछित सुखनिधि उल टीयो, तेणें नाख्यां डुःखने उलेट ॥ २३ ॥ स० ॥ निवास नी जायगा मोटकी, रहेवाने दीधीजी खास ॥ स० ॥ रंग महोलमें वास्यो कुमरीने, दीधो एकविश भूमि आवास ॥ २४ ॥ स० ॥ जसपडहो वजाड्यो नयर मां, वरतावी मन्त्रीनी आण ॥ स० ॥ वीरबल केरो हरिबल पुत्रडो, थव्यो राज्यें लिखित प्रमाण ॥ २५ ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

स० ॥ जो जो नवियां साधुनी संगतें, लह्यो जीवद यानो धर्म ॥ स० ॥ थयो परसन जलनिधि देवता, तिणें वधास्यो मल्लीनो नर्म ॥२६॥स०॥ थयो चावो ते चिहुं खूंटमें, नोगवे शुन्न ऋद्धि समृद्ध ॥ स० ॥ जाणे सुरपतिनो समोवडी, थइ बेगो मल्ली प्रसिद्ध ॥ २७ ॥ स०॥ नलें प्रगट्या सद्गुरु जगतमें, उपगारी परम कृपाल ॥ स० ॥ कहि चोथा उल्लासनी बारमी, लब्धें संयोगनी ढाल ॥ २८ ॥ स० ॥

॥ दोहा ॥

॥ एह्वा सद्गुरु वयणथी, पाम्यो जिनवर धर्म ॥ थयो परसन जल देवता, वधियो मल्ली नर्म ॥ १ ॥ हरिबल दो पदवी लह्यो, सागरदेव पसाय ॥ ठकुराइ बत्रीश लाखनी, पायकें अश्व सुहाय ॥ २ ॥ शुंढादंम विराजता, दिसता जाणे पहाड ॥ गजशालामें गज घटा, सोहे सहस अढार ॥ ३ ॥ सुख विलसे संसारनां, शोलशें राणी सब ॥ पटराणी थापी वडी, वसंतसिरी सुकयब ॥ ४ ॥ मूलगी जे परिणेतनी, काली कर्कशा नार ॥ ते पण हरिबलें संग्रही, करि अपछर अवतार ॥ ५ ॥ अमारि पलावे चिहुं दिशें, जिहां सूधी छे आण ॥ तिहां सूधी को जीवनां, का

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

ढी न शके प्राण ॥ ६ ॥ इणिपरें लीला नोगवे, पूरव पुण्य पसाय ॥ चावो थयो चिहुं खूंटमें, महोटो ह रिबल राय ॥ ७ ॥ हवे ससरो हरखें करी, वसंतसेन नूपाल ॥ जामाताने वीनवे, कर जोडी उजमाल ॥ ॥ ८ ॥ दो अनुमति दीक्षा तणी, आणी हर्ष अपा र ॥ शिव रमणी वरवा अमें, लेशुं संजम नार ॥९॥ एम कही आणा लही, सासू ससरो दोय ॥ पंच महाव्रत उच्चर्यां, सुविहित सद्गुरु जोय ॥ १० ॥ च ढते परिणामें करी, पाले पंचाचार ॥ उग्र तपस्यानां धणी, थयां सूधां अणगार ॥११॥ क्षपक श्रेणी चढ तां थकां, तेरमुं लह्युं गुणठाण ॥ शुक्ल ध्याननां जो गथी, पाम्यां केवल नाण ॥ १२ ॥ चोशठ इंद्रादिक मली, अंबुज नंद रचेण ॥ नाविकने प्रतिबोधतां, लहे बिजबोध विशेण ॥ १३ ॥ केवल कमला नोग वी, पाली पूरण आय ॥ कर्म कुटिल दूरें करी, पहो तां शिवपुर ठाय ॥ १४ ॥ धन धन वसंतसेनने, धन वसंतपट नार ॥ दंपति दो मुगतें गया, चढियां मुक्ति मझार ॥ १५ ॥

॥ ढाल तेरमी ॥

॥ नथरो नगीनो महारो,हाररो हीरो महारो, नण

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

दीरो वीरो महारो साहेबो,पना मारु घडी एक करहो फुकाय हो ॥ ए देशी ॥ हवे हरिबल सुख भोगवे ॥ पुण्य वंत ॥ पाले राज अखंम हो ॥ सागर देव पसायथी ॥ पुण्यवंत ॥ थयो गुण मणिनो करंम हो ॥१॥ सुगुण सनेही प्यारो, धर्मनो मोही शुन, अनुनव गेही सु ख सागरु ॥पु०॥ हरिबल परजा पाल हो ॥ ए आंक णी ॥ आण मनावी चिहुं दिशें ॥ पु० ॥ षोडश देश विशेष हो ॥ षोडश देशनी अंगजा ॥पु०॥ विलसे ज्युं सुख सुरेश हो ॥ २ ॥ सु० ॥ गुण लिये जीव दया तणो ॥ पु०॥ गुण ले गुरु उपदेश हो ॥ परतख देखी पारख्युं ॥ पु० ॥ हरख्यो मन्नी नरेश हो ॥३॥ सु०॥ तो हवे महिमा धर्मनो ॥ पु० ॥ प्रगट करुं उजमाल हो ॥ मानव नव सफलो करी ॥ पु० ॥ मेली सुकृत माल हो ॥४॥ सु०॥ इम जाणी जल कांठडे ॥ पु०॥ जिहां लह्यो गुरु उपदेश हो ॥ तिहां कणे चैत्य रची नलुं ॥पु०॥ राखुं तिहां नाम विशेष हो ॥५॥सु०॥ षोड श देश सुहामणा ॥पु०॥ कीधा जिन प्रासाद हो ॥ बिंब नराख्यां रयणमें ॥ पु० ॥ ढंमी सघलो प्रमाद हो ॥ ६ ॥ सु० ॥ अमारि पलावे आपथी ॥ पु० ॥ षोड श देश मझार हो ॥ मार शब्द को नवि उच्चरे ॥पु०॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

सघली परजा विचार हो ॥ ७ ॥ सुं० ॥ नव नेदें जे पुण्य ठे ॥ पु० ॥ ठाणांग सूत्र मकार हो ॥ तिण वि धें हरिबल केलवे ॥ पु० ॥ गुरुमुखी थइने विस्तार हो ॥ ७ ॥ सु० ॥ जीव दया फल देखीने ॥ पु० ॥ सङ्जन धर्म दीपाय हो ॥ लोक कहे जेहवा रा जवी ॥ पु० ॥ एहवी परजा कहाय हो ॥ ए ॥ सु० ॥ इणि परें रंग विनोदमें ॥पु०॥ काढे सुखमें दीह हो॥ तिण समे मबीरायने ॥ पु० ॥ प्रेष्य आव्यो अबीह हो ॥ १० ॥ सु० ॥ विशाला नगरी तणो ॥ पु० ॥ आप्यो प्रेष्यें लेख हो ॥ श्रीपति मंत्री तुम तणो ॥ ॥पु०॥ तेडवा मूक्यो विशेष हो ॥११॥सु०॥ ए अधि कार ते सांजली ॥ पु० ॥ वांच्यो विशालालेख हो ॥ सन्मानी ते प्रेष्यने ॥ पु०॥ दीधो उतारो अशेष हो ॥ ॥ १२ ॥ सु० ॥ मतिसागर मंत्रीसरु ॥ पु० ॥ मबी यें तेड्यो सुजाण हो ॥ कनक पुरी रखवालवा ॥ ॥ पु० ॥ कीधो कुल दीवाण हो ॥ १३ ॥ सु० ॥ बांध गोड दरबारनी ॥ पु० ॥ में सोंपी तुक आ ज हो ॥ परजा जिम सुखमें रहे ॥ पु० ॥ ते तुमें क रजो काज हो ॥ १४ ॥ सु० ॥ शीख नलामण इणि परें ॥पु०॥ मबीयें कीधी चंग हो ॥ हरिबल चाल्यो

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

पुर जणी ॥ पु० ॥ सचिवने सोंपी डिंग हो ॥ १५ ॥ सु० ॥ चतुरंगी सेना सज करी ॥ पु० ॥ जाणियें ना इव रंग हो ॥ दलवादल जलपूर ज्युं ॥ पु० ॥ ले च ल्यो घणे आमंग हो ॥ १६ ॥ सु० ॥ वसंतपुरी पट नारीनी ॥ पु० ॥ पूर्वें वसावी जेह हो ॥ ते नगरीयें आवीया ॥ पु० ॥ पामी परजानेह हो ॥ १७ ॥ सु० ॥ दिन केताइक तिहां रह्या ॥ पु० ॥ आगल चाल्या शीघ्र हो ॥ विशालापुर संनिधें ॥ पु० ॥ आ व्यो हरिबल तिग्र हो ॥ १८ ॥ सु० ॥ शुज लग्नें शु ज मुहूरतें ॥ पु० ॥ नगरीमें कीध प्रवेश हो ॥ जाणी यें हर्षपयोधिमां ॥ पु० ॥ किधो प्रवेश नरेश हो ॥ ॥ १९ ॥ सु० ॥ पुर जन सहु राजी थयां ॥ पु० ॥ नयणें निरखी नाथ हो ॥ सोहवें मली शुज मोती यें ॥ पु० ॥ नृपने वधाव्यो सनाथ हो ॥ २० ॥ सु० ॥ जलें आमंबरें उछवें ॥ पु० ॥ पहोतो नृप द रबार हो ॥ बत्रीश राजकुली मल्या ॥ पु० ॥ मलि या बांह पसार हो ॥ २१ ॥ सु० ॥ जल जलां लावे जेटणां ॥ पु० ॥ नृप पण ते करे अंग हो ॥ सनमा नी मही तेहने ॥ पु० ॥ देइ शिरपाउ ते रंग हो ॥ ॥ २२ ॥ सु० ॥ इणिपरें लीला राजनी ॥ पु० ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

भोगवे मल्लीराय हो ॥ रहे भीनो रसतानमें ॥ पुं०॥ वीशाला पुरराय हो ॥ २३ ॥ सु० ॥ शोल कलामें चंद्रमा ॥ पुं० ॥ सोहे ज्युं ऊजास हो ॥ तिम हरिबल शोल जनपदें ॥ पुं० ॥ सोहे तेजप्रकाश हो ॥ २४ ॥ सु० ॥ ए गुण जीवदया तणो ॥ पु० ॥ फलिया मनोरथ सिद्ध हो ॥ लब्धें चोथा उल्लासनी ॥ पु०॥ तेरमी कही परसिद्ध हो ॥ २५ ॥ सु० ॥ इति ॥

॥ दोहा ॥

॥ पंच विषय सुख विलसतां, वीता केता दिन्न ॥ वसंतसिरी पटनारीयें, जन्म्यो पुत्र रतन्न ॥ १ ॥ श्री बल नामें सिंह ज्युं, प्रगट्यो माहाबलवंत ॥ हरिबल केरो पुत्रडो, सकलकला ऊीपंत ॥ २ ॥ कुसुमसिरी जे लंकनी, तिणें पण जन्म्यो पुत्र ॥ मात पिताने सुख दियें, चलवें घरनां सूत्र ॥ ३ ॥ सुबलनामें पुत्र जे, प्रगट्यो ज्युं रवितेज ॥ मातपिता हरखे घणुं, देखी दो सुत हेज ॥४॥ रामनें लखमण जोड ज्युं,सोहे त्युं दो भ्रात ॥ दानें मानें आगला, पुहवीमां करें ख्यात ॥ ५ ॥ जोड मली दो भ्रातनी, श्रीबल सूबल नाम ॥ राज काजमें तत्परा, राखे मन अभिराम ॥ ॥ ६ ॥ बीजी राणी जे अछे, षोडशें जे शुभ मन्न॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

तिणें पण पुण्यना योगथी, जन्म्यो पुत्र रतन्न ॥ ७ ॥ इणिपरें लीला नोगवे, हरिबल पुण्य विख्यात ॥ सं सारिक जे सुख कह्यां, विलसे ते सुख सात ॥ ८ ॥ तन धन स्त्री सुत सस्यनी, अंबर रस ए सात ॥ जेहने घरें पुण्यवेल छे,तेहने ए सुख शात ॥ए॥ इणि परें काल ते नीगम्यो, वर्ष सहस पचवीश ॥ नृप राणी सरखे मनें, पाले धर्म जगीश ॥ १० ॥ जैन दरीसनमें थइ, नृपनी जगती कहाय ॥ तिहां सूधी रूषि विचरता, पुहवि पवित्र कराय ॥ ११ ॥ देव गु रुने वांदिने, सांजलि गुरु उपदेश ॥ त्यार पछें ते के लवे, घरनां काज विशेष ॥ १२ ॥ इणिपरें हर्ष विनो दमें, श्रीजिनधर्म दीपाय ॥ तिण समे विशमा जिन तणा, आव्या मुनिजन राय ॥ १३ ॥ पंचसयाशुं परवस्या, गणधर सुस्थित नाम ॥ वीशाला पुर परि सरें, उतस्या निरखी गाम ॥ १४ ॥ साधु वधामणी मालीयें, नृपने दीधी ताम ॥ नृप पण निसुणी मालीने, देवे महर्द्धिक गाम ॥ १५ ॥

॥ ढाल चउदमी ॥

॥ सुडला संदेशो कहेजे महारा पूज्यने रे ॥ अथवा॥ जीव जीवन प्रभु किहां गया रे ॥ ए देशी ॥ वात वधा

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

मणी गुरुनी सांनली रे, हरखित थया नृप लोक रे ॥ धव धव धाइ गुरुने वांदवा रे, आव्या ते जोगी चातुर कोक रे ॥ १ ॥ सांनले मीठी गुरुनी देशना रे ॥ ए आंकणी ॥ जेह थकी पाप पुलाय रे ॥ पावन होवे जीवित आपणुं रे, अक्षय पद ते लहाय रे ॥ ॥ सां० ॥ २ ॥ अनिगमन पांचे साचवी रे, बेठा ते गुरुना वंदि पाय रे ॥ एकण चित्तें एकण ध्यानथी रे, सांनले दो कर जोडी राय रे ॥ ३ ॥ सां०॥ तिण समे गुरु पण अवसर उलखी रे, देशना देवे ज्युं जल धार रे ॥ जिनवरें जांखी जेहवी देशना रे, तेहवी ते वाणीयें कीधो उच्चार रे ॥ ४ ॥ सां० ॥ सांनलो नवियां मीठी देशना रे ॥ पामी ते मानवनो अव तार रे॥एलें कां हारो मनुजव पामीने रे,सद्धन संधी सारो सार रे ॥५॥सां०॥ पंखी परें रे मेलो ए मल्यो रे, उमतां शी लागे तस वार रे ॥ तेम रे सगाइ स्वारथनी जणी रे, मटतां शी लागे तेहनी वार रे ॥ ६ ॥ सां०॥ को कहो तात ने को कहो मात नें रे,को कहो त्रात ने को कहो जात रे॥इणिपरें सयण संबंध ते वयणथी रे,स गपण वेंची लीधुं ख्यात रे ॥७॥सां०॥ को करो प्रीत को करो वेरने रे, को करो साच ने को करो कूड रे ॥ थावुं

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

ले अंतें सदुने कालथी रे, आखरे प्राणी धूड नेली धूड रे ॥ ए ॥ सां० ॥ कूडी माया ने कूडी कामिनी रे, कूडां ले अर्थी बंधव लोक रे ॥ कूडी ले डुनियां वा दल ग्रांह ज्युं रे,ते पण अंतें होवे फोक रे ॥ए॥सां०॥ प्राणथी वाहालो जेहने जाणियें रे,राखीयें तेहने ज्युं करि ग्रंथ रे ॥ ते पण न रहे उनो पूउवा रे, जातां ते लांबे महोटे पंथ रे ॥ १०॥ सां०॥ केहि गया ने केहि जायशे रे, केहि ले प्राणी जावणहार रे ॥ पुण्य विहूणा इण वाटडी रे, जाशे ते प्राणी हाथ पसार रे ॥ ११ ॥ सां० ॥ कुण ते राणा ने कुण ते रांकने रे, आखर एहिज एक ले वाट रे ॥ आवशे सार्थे सु कृत कीधलां रे, उतरतां ते नवनो घाट रे ॥ १२ ॥ ॥सां०॥ श्यो रे नरोंसो काचा कुंननो रे, श्यो वली क रवो धननो मद रे ॥ देखत संध्याराग तणी परें रे, उडी ते जावे खिणमें अउद रे ॥ १३ ॥ सां० ॥ दश रे दृष्टांतें मानव नव तणो रे, पाम्यो जो जनम क दाय रे ॥ तो वली फरि फरि पामवो दोहिलो रे, जिम करी घूणाक्षरने न्याय रे ॥१४॥ सां०॥ दान शीयल तप नावना रे, नांख्यो जे जिनवरें चउविह धर्म रे ॥ तेहनो जो कीजें खप शुनजावथी रे, तूटीयें खिणमें

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

निज निज कर्म रे ॥ १५ ॥ सां० ॥ होवे ते सहस्र गणुं पुण्य जाचतां रे,लाख गणुं तें अजाची होय रे ॥ कोडी गणुं फल गुप्त ए दानथी रे, ए फल पुण्यनुं इणि परें जोय रे ॥ १६॥ सां०॥ व्याजें दीये ते धन बमणुं लहे रे, चोगणुं पामे धन व्यवसाय रे ॥ शत गणुं पामे एकण क्षेत्रथी रे, दान सुपात्रनी सं ख्या न थाय रे ॥ १७ ॥ सां० ॥ परभव जातां ए म होटी सूखडी रे, बांधीयें नातुं आवे काम रे ॥ सुर नर अक्षय पदवी सुख पामियें रे, वाधे ज्युं नरभव केरी माम रें ॥ १८॥ सां०॥ एहवुं जाणीने पुण्य की जीयें रे, दीजीयें नावें दान सुपात्र रे ॥ नूगति मुगति दो पदवी लहे रे, कीजीयें आपणुं निर्मल गात्र रे ॥ ॥ १ए ॥ सां० ॥ आपज आपणे तरशो तुंबडे रें, नही कोइ आवे परभव साथ रे ॥ एहवुं जाणीने प्रा णी चेतजो रे, जइ समकित वृक्षनी भरजो बाथ रें ॥२०॥सां०॥ इणि परें उपदेश सुणिने नावियां रे, व्रत पचरकाणनी सुखडी लीध रे ॥ राजा ने राणी पण थइ इकमनां रे, वचन सुधारस कानें पीध रे ॥ २१ ॥ ॥ सां० ॥ विषय कषायना मल सवि गांमीने रे, आ दरे दंपति सुकृतमाल रे ॥ चोथा उल्लासनी लब्धि

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

विजयें कही रे, सुंदर महोटी चौदमी ढाल रे ॥ ॥ ३२ ॥ सां० ॥

॥ दोहा ॥

॥इम उपदेश ते सांनली,हरखी परषद सार॥ गुरुनें वांदी थानकें, पहोता सहु आगार ॥१॥ तव कहे नृप कर जोडीने, सांनलो गुरु गुणगेह ॥ नव स्थिति क्यारें पाकशें, माहरी कहो ससनेह ॥ २ ॥ तव ग णधर सुस्थित कहे, सांनलो तुमें माहाराय ॥ पांम व सहस्त्र ते वर्षनुं, ले महोटुं तुम आय ॥ ३ ॥ तिहां सूधी तुमने घणुं, ले नोगावलि कर्म ॥ जव ते स्थिति पूरी थशे, तव वधशे तुम नर्म ॥ ४ ॥ पूरव नव तु म सांनली, केवली मुनिचंद्र पास ॥ संयम नृपशर णुं ग्रही, लेहशो शिव पदवास ॥ ५ ॥ ए अधिका र ते सांनली, हरष्यां राणी राय ॥ पहोतां सहु निज मंदिरें, वंदी गुरुना पाय ॥ ६ ॥

॥ ढाल पन्नरमी ॥

॥ ढेडो नांजी ॥ ए देशी ॥ हवे हरिबल निज मं दिर आवी, करे निज सुकृत करणी ॥ वसंतसिरी पट्टराणी आदें, करे सघली पुण्यनरणी ॥ १ ॥ नवि यां सुणजो, हरिबलनी जे करणी ॥ न० ॥ चडवा

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

मोक्ष निसरणी ॥ ज० ॥ ए आंकणी ॥ पहेलाथी चोथे गुणठाणे, आवे हरिबल लेहतो ॥ प्रकृति सात नो क्षय ते करिने, क्षायक समकित ग्रहेतो ॥ २ ॥ ज०॥ श्रावकना गुण एकवीश महोटा, जे कह्या सूत्र सिद्धांतें ॥ ते गुण श्रावकना शुभ पाले, नृप राणी मन खांतें ॥ ३ ॥ ज० ॥ चैत्य करावे श्रीजिन केरां, षोडशें देश मझार ॥ देशें देशें सुंदर दीपे, देवल शोल हजार ॥ ४ ॥ ज० ॥ कोटि एक ते कनक रयणमें, उपर छप्पन लाख ॥ ए संख्या कहि जिनमंदिरनी, शोलशें देशनी साख ॥ ५ ॥ ज० ॥ चैत्यें चैत्यें पांचे रंगें, थाप्या जिन चोविश ॥ कोटि एकशत लाख चु म्मालीश, बिंब जराव्यां अधीश ॥ ६ ॥ ज०॥ साधु जनने रहेवा सारु,रजतमें झाक झमाला ॥ सवा को डि ते धर्मने हेतें, कीधी पोषध शाला ॥ ७ ॥ ज०॥ साव सोवनमें अक्षर रचना, लखीयां पुस्तक सार ॥ ज्ञानोपगरण करिने महोटां, मूके पुण्य जंमार ॥८॥ ज०॥ साहामीवछल दिनप्रतें मछी, पोषे नाव विशे ष ॥ जिनमतिनां साते ए खेत्रें,वावे द्रव्य अशेष ॥९॥ ज०॥ श्रीजिन जक्तिणी लय आणी, करे नित त्रिटंक सेवा ॥ बत्रिश बद्ध नृत्य करावे, प्रभु आगल जश लेवा

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥१०॥ज०॥ खट दरशनने नावें पोखे, जाणी लाज अनं ता ॥ दान तणां दश दूषण टाली, दे आदर बहु संता ॥ ॥ ११ ॥ ज० ॥ चोथा गुणठाणानी ए करणी, करे हरिबल दिल साच ॥ सिद्धवधू वरवा नणी सारु, जाणीयें देवे लांच ॥ १२ ॥ ज० ॥ देशविरति गुण ठाणे चढीने, करे पंचपर्वी पोषा ॥ चउद नियम सं नारी संखेपें, काढे मनना रोषा ॥ १३ ॥ ज०॥ श्रा वकनां जे कह्यां व्रत बारे, ते पण साचवे रूडां ॥ आवश्यक दो टंकनां साचां, साचवे मन नहीं कूडा ॥ १४ ॥ ज०॥ अठ अठम वली दशम डुवालस, करें तप चढतां शक्ति ॥ अष्ट करम दल डुर्बल कीधां, बेसवा सिद्धनी पंक्ति ॥ १५ ॥ ज० ॥ एकादश जे श्राद्धनी प्रतिमा, जांखी जे जगवानें ॥ विधि पूर्वकशुं जिन अरचीने, ते पण वहि एक तानें ॥ १६ ॥ ज० ॥ सा तमे अंगें पाउ ए चावो, जो जो जवियां रंगें ॥ दश श्रावकें जिम वहि शुन प्रतिमा, तिम वहि मन्नि अ नंगें ॥ १७ ॥ ज० ॥ षट आवश्यक नवकार आदें, तेहनां वहे उपधान ॥ शिवरमणी वरवाने हेतें, प हेरी माल प्रधान ॥ १८ ॥ ज० ॥ श्रावकने उपधान वह्या विण, नवकार क्रिया न सूझे ॥ साधूने पण

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

योग वह्या विण, वांचवुं सूत्र न सूझे ॥१९॥ न०॥
पंचांगी में जोजो सघले, ले अक्षर परगट्ट ॥ ते जा
णीने हरिबल पोतें, करे करणी गहगट्ट ॥२०॥ न०॥
इणिपरें नृप राणी गृह बेठां, नाव संयमने पाले ॥
त्रिकरण शुद्धें नावें करीने, आतम नव अजुवाले ॥
॥ २१ ॥ न० ॥ हरिबल जे करे चैत्यनी करणी, ते
कोइ कहेशे खोटी ॥ ते उपर तुमें सुणजो प्राणी,
साखी कहुं तुं महोटी ॥ २२ ॥ न० ॥ पांचमे आरें
वीरने वारे, जे हुउ संप्रतिराजा ॥ सहस बत्रीश तें
जीरण देहरां, सहस पचविश ते ताजां ॥२३॥ न०॥
ए संख्यायें चैत्य कराव्यां, बत्रीश थडां प्रासाद ॥ को
टि सवा उगणी संख्यातां, बिंब नराव्यां उन्नाद ॥
॥ २४ ॥ न० ॥ पाटणराजें सिद्ध, सिंघपाटें जे
हुउ कुमारपाल ॥ बावन जीनालां तिणे पण कीधां,
जीवित सूधी विशाल ॥ २५ ॥ न० ॥ आबू उपरें र
जत समोवड, देउल महोटां दीपे ॥ श्रीआदीसर
मूरति थापी, शा विमलो जग जीपे ॥ २६ ॥ न० ॥
साते धातें चउदें मणनी, चउ जिन पडिमा नरावी ॥
शा नीमे गढ आबूयें थापी, ते जुउ नजरें चावी ॥
॥ २७ ॥ न० ॥ लाख नवाणुं खरची देउल, राणक

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

पूरें जे कीधो ॥ शा धरणो पोरवाड वखाण्यो, चउ मु
ख जइ जुउं सीधो ॥ २८ ॥ ज० ॥ शोलमो उद्धार
शेत्रुंजा उपरें, त्रिजगमें परसिद्धो ॥ मानवजव लहि
श्रावक कुलमें, शा करमें जस लीधो ॥ २९ ॥ ज० ॥
आजने समयें एहवा प्राणी, जे हुआ रतन सरी
खा ॥ तो शुं तदा ते कालनुं कहेवुं, शी तस करवी प
रीखा ॥ ३० ॥ ज० ॥ ए दृष्टांत सुणीने जवियां,
मानजो सघलुं साचुं ॥ धर्मी जनना जे गुण जां
ख्या, ते मत जाणजो काचुं ॥ ३१ ॥ ज० ॥ ए अधि
कार सुणी जे सद्दहे, ते लहे मंगलमाल ॥ चोथा उ
ल्लासनी ढाल पन्नरमी, लब्धें ए जांखी रसाल ॥३२॥

॥ दोहा ॥

॥ इम करणी करतां थकां, वोल्यां सहसचउ वर्ष ॥
एटले मुनिचंद्र केवली, पाउ धाख्या उत्कर्ष ॥ १ ॥
वाजां नाकी वाजीयां, मलिया चोशठ इंद्र ॥ नंद क
मल रचना करी, थाप्या ज्ञानदीणंद ॥२॥ गुरुनी व
धामणी मालीयें, आवी नृपने दीध ॥ सन्मानें नृप मा
लीने, ग्राम पसायो कीध ॥ ३ ॥ जिम तृषातुर प्रा
णीया, धाइ सरोवर जाय ॥ तिम नृप निज परिवा
रशुं, प्रणम्या निज गुरु पाय ॥ ४ ॥ चातुक जन श्र

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

वणें सुणी, पीवे श्रुत जल हेत ॥ वचनामृत जलध र गुरु, वरसे नवि मन खेत ॥ ५ ॥

॥ ढाल शोलमी ॥

॥ देशी आख्याननी ॥ चेतो चेतो चेतो रे प्राणी, जाणी संसार असार ॥ अंजलि जल ज्युं आउखुं जाणी, म करो प्रमाद लगार ॥ १ ॥ परमाद पांचे परम वैरी, घेरी संसारी जीव ॥ नरग निगोदें नाखे दुःखमें, विण खूने ते अतीव ॥२॥ आठे मद माहा महोटा थइने, पहेलो प्रमाद वखाणो ॥ चोवीश दंडकें जीव दंडावे, परमाद एहवो जाणो ॥३॥ पांचे इंद्रियना थइ सघला, नांख्या विषय त्रेवीश ॥ ए बीजो प्रमाद जे सेवे, ते लहे थान चोविश ॥ ४ ॥ एकेक इंद्रिय मोकली मूके, जीव लहे ते घात ॥ ते उपर कहुं ज्ञानी नांखे, सांजलजो दृष्टांत ॥ ५ ॥ आंखने विषे दीपक देखी, चौरिंद्रि करे ऊंपापात ॥ चर चर तन दहे हेमने लोचें, पतंग लहे उपघात ॥ ६ ॥ घ्रा णेंद्रियनो जो थयो विषयी, रोलंब पंकजवासी ॥ शुंढा दंडें दंतियें ग्रही कज, आठव्यो भ्रमर तनुराशि ॥ ७ ॥ कानना रसिया नादना लीणा, नाग कुरंगम जेह ॥ बाजीगरने पारधि जालें, पासमें पडिया ते बेह ॥ ८ ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

रसनानो थयो लोलुपी मछलो, जल कल्लोल जे करतो ॥ धीवरें गहुं गुड लोज देखाडी, तालुएं ग्रह्यो सुचि धरतो ॥ ए ॥ हाथणी देखी मातंग महोटो, थयो कामातुर कूल ॥ कामवशें करि पडियो अजाडि, निज शिर नाखे धूल ॥ १० ॥ इणिपरें पांचे इंडिना रसथी, जे थया विषयाअंध ॥ तंडुलमञ्च परें कर्म निकाचित, बांधि जोगवे धंध ॥ ११ ॥ शोल कषाय ने नव नोकषाय, ए दो मलीने पचवीश ॥ त्रिजो प्रमाद ए जाणिने सेवें, पाडे ते नरकमें चीस ॥१२॥ अनर्थकारी पांचे निड्रा, सेवें जे चोथो प्रमाद ॥ बाविस सागर ठष्ठियें जाये, जोगवे नरकनो स्वाद ॥१३॥ राजकथादिक चारे विकथा, परमाद पांचमो करता ॥ जारे कर्मी थइने प्राणी, लहे दुःख चउ गइ फरता ॥ १४ ॥ पंच प्रमाद ए दुष्ट जयंकर, सुव्रत हरे ते सदीवो ॥ लक्ष चोराशि योनी फरतां, ए छे संसारनो दीवो ॥ १५ ॥ पंच प्रमादना ए गुण जीवडा, मनशुद्ध जावमें आणी ॥ प्रमाद पांचे दूरें छंमो, जिम थाउ केवल नाणी ॥ १६ ॥ प्रमादने वशें जाणे जीवडो, छे सघलुं ए मह्वारुं ॥ पण ते ज्यंतर निरखी जोतां, शुं देखे छे तहारुं ॥१७॥ दिवस निशा घट

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

मालनें जोगें, आयु सलील घटाडे ॥ चंद ने सूरय वृ
षन धोरीथी, काल रहट्ट नमाडे ॥ १८ ॥ इणिपरें
न्यंतरमें निशिदिन वहे,नवकूंपक घटमाल ॥ काल अनं
तो परमाद संगें, पडियो मोहनी जाल ॥ १ए ॥ मो
हनी जालमां जे नर पडिया,ते कदि नावे ऊंचा ॥ सागर
कोडाकोडी सित्तेर सुधी, धरमशुं मांमे खूचा ॥ २० ॥
कंचन कामिनी अरथें मेले, माया महोटुं माणुं ॥ पण
ते निशिदिन रहे जीव धखतो, जिम शघडीनुं ठाणुं ॥
॥ २१ ॥ स्वारथनूत संबंध ए मलीयो, पोषवा पिंमने
धाइ ॥ काम पडे कोइ ढुकडो नावे, जो जो
जगनी कमाइ ॥ २२ ॥ पोतानो करि गणियें जेहने,
ते होवे साहामो वैरी ॥ जो जो नवियां सगपण सा
चुं, ज्ञाननी दृष्टें हेरी ॥ २३ ॥ मात पिता बंधु जात
सुता पति, लेखवे साचि सगाई ॥ पण तस आवी
अदल पोहोंचे, नवि रहे पूठवा कांइ ॥ २४ ॥ ले
संसार विचारी जोतां, बाजीगरना गोटा ॥ क्षणनं
गुर ले जीवित तो पण, माने वंछित पोटा ॥२५॥ जल
परपोटा समान ए काया, शी तस कूडी माया ॥ य
मने मंदिर जावुं सहुने, कुण डुर्बल कुण राया ॥
॥ २६ ॥ वांछणीयें जिम सुहणुं दीठुं, जाणे में ज

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

न्म्यो बेटो ॥ नाम विश्वंजर देइ एहवुं, वंध्या मेहणुं मेल्यो ॥२७॥ जब जागी तब रोवा लागी, किहां गयो माहरो पुत्र ॥ वृद्ध कालें मुजने सुखदाता, राखे घरनां सूत्र ॥२८॥ वंध्यानुं जिम सुहणुं खोटुं, तिम संसार बे खोटो ॥ एहवुं जाणी प्राणी चेतो, टाली मोहनो गोटो ॥ २९ ॥ ए संसार असार वखाण्यो, जेहवो गारनो त्रेह ॥ माजनी अणीयें ज्युं जल कणिया, तिम बे जगमें नेह ॥३०॥ रुद्धि नें रमणी आपणी तिहां लगें, जिहां लगें आंख्यो साजी ॥ आंख मीचाणे को नही ताहरुं, इम कहे जिनवर गाजी ॥ ३१ ॥ एटलामांहे समजी लेजो, जो हुवो मोक्षना अर्थी॥ तो ए प्रमाद पांचे बंमीने,करो सुकृत निज करथी ॥३२॥ चोथा उल्लासनी शोलमी ढालें, दीधो एम उपदेश ॥ लब्धि कहे नवि परखद बूजी, बूज्यो मच्छी नरेश ॥ ३३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ इम उपदेश ते सांजली, विनवे बें कर जोडि ॥ कहो स्वामी मुज आगलें, पूरव जवनी होडि ॥ १ ॥ शी करणीयें हुं लह्यो, धीवर कुलनी जात ॥ शी करणी नृप पद लह्युं, शे जहि नृपधी ख्यात ॥२ ॥ शी करणी मुजने मल्यो, तटिनीनाथनो नाथ ॥ सुरम

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

णिनी परें मुजने, पूरी वंछित आय ॥ ३ ॥ शी करणि कालसेन जे, खेल्यो मुजशुं घात॥में पण पाछी तेहने, उपजावी घणी घात ॥४॥ शी करणी सद्गुरु मल्या, मुजने दीधो धर्म ॥ जीवदया मुंज दाखवी, प्रबल व धारी शर्म ॥ ५ ॥ तव कहे मुनिचंद केवली, सांजलो तुमें राजान ॥ पूरव जव करणी करी, ते कहुं तुमची निदान ॥ ६ ॥ जे जेहवी करणी करे, ते तेहवुं फल पाय ॥ शुनाशुजना बंध जे, ते तेहवा जोगवाय ॥ ७ ॥

॥ ढाल सत्तरमी ॥

॥जनम्यो जेसल मेर ॥ अथवा ॥ प्रणमी सद्गुरु पाय ॥ ए देशी ॥ चौलक्ष जोजन सार, धातकी खंम विदेह में जी ॥ विजय पुष्फावइ मनोहार, नद्दिलपुर वसे तेहमें जी ॥ १ ॥ तेहज डिंग मजार, विप्र वसे जयदेवता जी ॥ जयसिरी नामें ते नार, जारिया विप्रणी ठेवता जी ॥ २ ॥ प्रसव्या ते द्विजणीयें बाल, पुत्रजुगल दो सोहामणा जी ॥ नयण वयण सुरसाल, रूप रंग में कोइ नहिं मणा जी ॥ ३ ॥ सुनंद उपनंद दोय, नाम ठव्यां दो पुत्रनां जी॥ वाधे शशि परें सोय, मन हरखे मावीत्रनां जी ॥ ४ ॥ पाम्या ते जोबन बाल, परणावी दो अंगना जी ॥ रूपें ते जाक जमाल, जा

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

लीयें नाकि वामांगना जी ॥ ५ ॥ पंच विषय सुख भोग, विलसे ते केतकी भंग ज्युं जी ॥ पूरव पुण्य सं योग, रहे जीना सुखरंगशुं जी ॥ ६ ॥ एक दिन दो मलि प्रात, वसंत जोवाने नीकल्या जी ॥ तव तिहां दीठो सुज्ञात, उपशम रसमें जे नल्या जी ॥ ७ ॥ श्री जिनवरनो जे गात्र, ध्यान धरी रह्यो काउस्सगें जी ॥ देखी ते नवली हो यात्र, आव्या दो बंधव त स पगें जी ॥ ८ ॥ वंदि ते मुनिना हो पाय, सुनंद द्विज स्तवना करे जी ॥ उपनंद द्वेषें नराय, मुंम पणुं ते देखी सरे जी ॥ए॥ काली ते काय कृशांग, मलम लीन पणे दीठडो जी ॥ जाणीयें जोई भुजंग, दुर्गंध गंधा अधीठडो जी ॥ १० ॥ दुष्ट दरिद्रीनो वेश, दी सतो जाणीयें वाघरी जी ॥ न मर्द न स्त्रीनो वेश,एक मां नही ए पसागरी जी॥११॥मावित्रें मूक्या निसास, नूखने नाडे करी रला जी ॥ दाखवी पापनी राशि, सहुने करावें अर्गला जी ॥ १२ ॥ नीची ते दृष्टि धरे य, बगपरें हिंमे रसातला जी ॥ वदनें हो ते कर देई,बो ले मुखथी धूरतकला जी ॥ १३ ॥ मधुरां जांखें हो वेण, नर नारी विप्रतारवा जी ॥ मेले टोली ते सेण, जठरनुं काज सुधारवा जी ॥ १४ ॥ इणिपरें मन

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

धरी द्वेष, उपनंदें साधुनिंदा करी जी ॥ करि वली डु गंछा विशेष, नीच कुलीनुं पोतुं नरी जी ॥१५॥ बांधी ज्युं रेशम गांठ, उपर मीण लपेटियें जी ॥ तिम एणें बांधीजी गाठ, जोगव्या विण किम छूटियें जी॥१६॥ तव तिहां सूनंद भ्रात, रीश धरी कहे बंधुने जी ॥ मत करो साधुनी तांत, भाव धरी नमो साधुनें जी ॥ १७ ॥ साधु छे जगमां उद्योत, ज्ञान दीवो करि दाखवे जी ॥ बांधे तीर्थंकर गोत, साधु वचन चित्त राखवे जी ॥ १८ ॥ मेले ते सकल संयोग, जो ऋषि आवे हलकमें जी ॥ टाली ते कर्मना रोग, ज्यो तिवधू मेले पलकमें जी ॥ १९ ॥ चिलाती पुत्र जे डुष्ट, ते गयो सुरलोक आतमे जी ॥ अढी दिन मांहि ते पुष्ट, ऋषि वचनें थयो गातमें जी ॥ २० ॥ करे नव कल्पी विहार, नाविकने पडिबोहवा जी ॥ सूझ तो लेवे आहार, निज आतमने सोहवा जी ॥ २१ ॥ जीती ते रागने द्वेष, उपशम रसमें जे नल्या जी ॥ स्वारथीयो जग देख, अहिकंचुकि परें नीकल्या जी ॥ २२ ॥ एहवा जे मुनिराज, तेहने किम करी नंदी यें जी ॥ प्रबल वधारी हो लाज, साधुने कर जोडी वंदियें जी ॥ २३ ॥ साधुवंदणथी तुं जोय, नरग च

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

उ ठेदी विष्णुयें जी ॥ जिन पदवी तिहां सोय, नाव थी बांधी जिष्णुयें जी ॥ २४॥ नंदमणियारनो जीव, दर्दुर वाव्य जे सेवतां जी ॥ वीरनें नमत्तां अतीव, ते थयो दर्दुर देवता जी ॥ २५ ॥ एह्वा ते रुषि गुण जाण, ड्व्यथी नावथी सेवीयें जी ॥ म करो को निंदा सुजाण, साधुने करी देव टेवीयें जी ॥ २६ ॥ इम उपदेश ते देय, सूनंदें समजावीयो जी ॥ तव कर जोडीने बेय, उपनंदें साधु खमावीयो जी ॥ २७ ॥ ठो तुमें गिरुआ जी साध, पर उपगारी जंतुना जी ॥ खमजो मुज अपराध, जे में कीधी आशातना जी ॥ ॥२८॥ साधुनी स्तवना जो कीध, तो बांधि सुनंदें सुरगई जी ॥ उपनंदें नीच पद लीध, साधु निंद्या निजमई जी ॥ २९ ॥ इम ते आलोइ हो पाप, बांधव दो रुषिने नमी जी ॥ टाली ते सघलो संताप, आव्या दो निज गृह वन रमी जी ॥ ३० ॥ चोथा उल्लासनी ढाल, सतरमी लब्धिविजय कही जी ॥ सुणजो नवि उजमाल, आगल शी शी कथा लही जी ॥ ३१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे दो व्राता मंदिरें, आवी करे शुन्न काम ॥ खट दरिसन पोखे सदा, लेहवां स्वर्गनां धाम ॥ १ ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

हवे जयदेवना घरथकी, साहामी छे एक पोल ॥ तेहमें दो वसे वाडवा, सुदेव जूदेव उल ॥ २ ॥ साह्ह थइ पासें वसे, सुदेव जूदेव जह ॥ खंभा स्त्री छे सुदेवनी, विशाखा जूदेवनी गह ॥ ३ ॥ ते दो नारीने थयो, पूर्वकर्म संयोग ॥ दाघ ज्वर बलतर तणो, उपनो तेहने रोग ॥ ४ ॥ तव ते चिकित्सा जणी, तेड्या बहु वैद्यराज ॥ पण टेकी लागे नही, कोइ न सरीयुं काज ॥ ५ ॥ तव सुदेव जूदेव विप्र दो, मनछुं कीध विचार ॥ किम वहेशे घरणी विना, किम वहेशे घर जार ॥६॥ इम दो विप्र विचारीने, बीजी परण्या नार ॥ खंभा विशाखा दो प्रिया, मूकी पीयर सार ॥ ७ ॥ परहरी दो स्त्री रोगिणी, जुंभा थया दो विप्र ॥ जिम मांखी घृतमें पडी, काढी नाखे क्षिप्र ॥८॥ ते स्थिति करि इण वाडवें, नवि शोच्या ते लगार ॥ नवि बिही ना कहोनाथकी, नवि बिहिना किरतार ॥ ए ॥ मद वाया दो विप्र ते, न करी सार संजाल ॥ तव दो स्त्री ते रोगिणी, तेहने उपनी भाल ॥ १० ॥ क्रोध वशें दो रोगिणी, दें दो पतिने शाप ॥ तुमें दो अम पातें पडी, लेहजो तुमें संताप ॥ ११ ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ ढाल अढारमी ॥

॥ दिल लगा रे बादल वरणी ॥ ए देशी ॥ इम कहेती गइ तातने गेहें, जिहां छे हरिनट्ट नामा ॥ नवि जोजो रे कर्मनी करणी, नोगवे जे फल घरणी ॥ न० ॥ छे तेहनी हरिनट्टणी द्विजणी, तस कुखनी दो रामा ॥ १ ॥ न० ॥ पीयर पण छे एकण ठिगें, नद्दिलपुर जे नामें ॥ न० ॥ काढी पतियें पीयर आवी, रोगिणी मावित्र गामें ॥ २ ॥ न० ॥ मात पिता तव निरखी मलीयां, पूछे कुशलनी वातो ॥ न० ॥ कुशल तो नजरें जुवो छो पिता जी, शी कहुं द्विजनी ख्यातो ॥ ३ ॥ न० ॥ जब अम बेने रोगिष्ट जाणी, बीजी परणी आणी ॥ न० ॥ ते उपर अम बेहुने काढी, शोक्यनी करि तिहां टाढी ॥ ४ ॥ न० ॥ तव अमें आव्यां तातजी चरणे, जाणी पीयर शरणें ॥ न० ॥ स्त्रीने पक्ष कह्या दो वारु, वास पीयर नरतारु ॥ ५ ॥ ॥ न० ॥ ए अधिकार सुणीने पितायें, आंखें आंसू आण्यां ॥ न० ॥ फिट रे जमाई दो कुल हीणा, एहवा न होता जाण्या ॥ ६ ॥ न० ॥ धिग धिग छे तुम जीवित जाति, कीधो विश्वास घात ॥ न० ॥ एहवा प्राणीनुं मुख महीयें, नजरें नावशो कहीये ॥ ७ ॥ न० ॥ पण शुं क

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

रीयें श्री जगवानें, लेख लख्या जे पानें ॥ज०॥ अण चिं तवी जब माथे वणाणी, जोगवे पुत्री ते प्राणी ॥७॥ ॥ ज० ॥ इणिपरें वचन कहीने तातें, राखी दो कुमरी हेतें ॥ज०॥ उषध वेषध करवा लाग्या, जे जिम आवे वेतें ॥ ए ॥ ज० ॥ आय उपाय करी बहु थाका, वैद्यने मुख पड्या फांका ॥ ज० ॥ पण जो जो वैद्य प्रगटे जाग्यें, कंथा ज्युं गोरख जागे ॥ १० ॥ ज० ॥ एक दिन हरिजट जयदेव गेहें, मलवा गयो बहु नेहें ॥ ज० ॥ सुनंद उपनंद जयदेव आदें, हरिने मल्या कर बेहें ॥११॥ज०॥ बेगा सहु को एकण ठाणें, हरिने वि लखो जाणे ॥ ज० ॥ तव हरिजट्टने जयदेव पूछे, शे पड्या शोचने लूछे ॥ १२ ॥ ज० ॥ तव हरिजट्ट कहि सघली मांमी, पुत्री जे दुःखणी डांमी ॥ ज० ॥ ए दुःख महोटुं साले अमने, शी कहुं जयदेव तुमने ॥ १३ ॥ ज० ॥ ते वात सांजली जयदेव बोल्यो, सां जलो हरिजट्ट नाइ ॥ ज० ॥ आजथी रोग गयो तुम जाणो, जो बे पाधरो सांइं ॥ १४ ॥ ज० ॥ एम कहि उपनंदने मूके, बेटो हरिजट्ट साथें ॥ ज० ॥ जाउ शीघ्र थइ जस लेशो, जेषज करजो हाथें ॥ १५ ॥ ॥ ज० ॥ आव्या मंदिर ततखिण हर्षे, हरिजट्ट उप

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

नंद दोइ ॥ ज० ॥ नाडी जोइ शिलाजित देइ, तत खिण बलतर खोइ ॥ १६ ॥ ज० ॥ आव्यो जस उप नंदने वखतें, थइ कुमरी दो साजी ॥ज०॥ देखी गुण उपनंदनो महोटो, मातपिता थयां राजी ॥ १७ ॥ ॥ ज० ॥ हरखी हरिभद्र कहे कर जोडी, सांभलो उपनंद स्वामी ॥ ज० ॥ जीवित दान दीधुं तुमें अ मने, तिणें थया अंतरजामी ॥ १८ ॥ ज० ॥ माण स उलें आण्या अमने, कीधा जगमें महोटा ॥ ज० ॥ नावउ सघली जनमनी काढी, देई वंछित पोटा ॥ ॥ १९ ॥ ज० ॥ ए उपगार कदी न विसारुं, जो अम जाति भे सागी ॥ ज० ॥ थया अम पुत्रीना सुख दाता, कीधा अम वडभागी ॥ २० ॥ ज० ॥ ए तुम गुण उसिंगण थावा, संकल्पुं आ रुद्धि घरनी ॥ ॥ ज० ॥ तन धन मन भे सघलुं तुमारुं, मत गण जो तुमें परनी ॥ २१ ॥ ज०॥ सार्थे जइने अम चउ जीवडा, जो वेचो तो वेचाउं ॥ ज० ॥ जीवित सूधी इणिपरें वहियें, तो तुम शाबास पाउं ॥ २२ ॥ ज० ॥ तव कुमरी कहे खंभा विशाखा, सांभलो उपनंद वा णी ॥ ज० ॥ नवो नव भे अम जीव तुमारा, मूक्युं तस कर पाणी ॥ २३ ॥ ज० ॥ इणिपरें वयणें कहि

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

दो कुमरी, रागनी गांत त्यां पाडी ॥ ज० ॥ उपनंदें पण अनुमोदी पोतें, बांधी मोहनी वाडी ॥ २४ ॥ ॥ ज० ॥ इणिपरें वयणें राजी करीने, उपनंदने सन मानी ॥ ज० ॥ हरिजट्ट साथें उपनंद गेहें, आव्यो चढती पांती ॥ २५ ॥ ज० ॥ हरिजट्ट कहे जयदेवने प्रणमी, धन्य धन्य स्वामी तुमने ॥ ज० ॥ तुम पुत्रें मुझ पुत्री जीवाडी, लेखे आण्या अमनें ॥ २६ ॥ ॥ ज० ॥ इणिपरें कहीने लघुताइ पाइ, हरिजट्ट मं दिर आव्यो ॥ ज० ॥ उपनंदनो जस पुरमें वाध्यो, सज्जनजनमन जाव्यो ॥ २७ ॥ ज० ॥ चोथे उल्लासें अढारमी ढालें, धातायें जेह बनावी ॥ ज० ॥ लब्धि कहे जवि सुणजो आगें, ए थइ ते कहुं चावी ॥ २८ ॥

॥ दोहा ॥

॥ हरिजट्ट केरी धीयने, कीधो जे उपगार ॥ थयो महिमा उपनंदनो, जद्दिल पुरमें सार ॥ १ ॥ ते वा यक श्रवणें सुणी, सुदेव जूदेव विप्र ॥ उपनंद उपरें परजल्या, ज्युं जले अग्नि क्षिप्र ॥ २ ॥ जाण्युं हतुं दो नारीयो, मरशे रोगथी एह ॥ उपनंदें जो सज करी, आपणा वयरी तेह ॥ ३ ॥ एम विचारी दो जणें, अण्यो मनमें रोष ॥ उपनंदने हणवो सही, जो जो

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

गुणनो दोष ॥ ४ ॥ देंवी पडशे बाजरी, के तेडवी पडशे घेर ॥ ते जाणी उपनंदशुं, दो विप्र राखे वेर ॥ ५ ॥ एहवे एक आवी मल्यो, तपसी विरुद्ध वेश ॥ तेहने जइ चरणे नम्या, करी आदेश विशेष ॥ ६ ॥ आसन वासन देइ करी, तपसी कह्यो निज हाथ ॥ तव तपसी कहे सेवको, शी वंछो मुऊ आथ ॥ ७ ॥ तव द्विज कहे कर जोडीने, दो में नूदेव डुष्ट ॥ उपनंदने एहवुं करो, हुवे ज्युं यम तस रुष्ट ॥ ८ ॥

॥ ढाल उगणीशमी ॥

॥ गोकुल गामने गोंदरे रे ॥ ए देशी ॥ तव तपसी समऊी कहे रे, सांजलो दो तुमें आप ॥ मोरा वाला रे ॥ ए पातक किहां छूटीयें रे, श्यो दीजें प्रत्नुने जबाप ॥ १ ॥ मो० ॥ इम तपसी कहे विप्रने रे, म करो ए हनी तांत ॥ मो० ॥ पापनी छांहेडी मत रहो रे, जो हुवो विप्रनी जात ॥ मो० ॥ २ ॥ इ० ॥ महिष गवा मृगने हणे रे, हणे सूयर पंखी छाग ॥ मो० ॥ खट दर्शन शास्त्रें कह्यो रे, तेह पापनो नावे ताग ॥ मो० ॥ ३ ॥ इ० ॥ एकेक जीव तन उपरें रे, जेती रोमराजी होय ॥ मो०॥ वरष सहस तेतां गुणी रे, ए शैव मतनो ज्ञेय ॥ मो०॥४॥ इ०॥ होय विपाकें दश गुणुं

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

रें, एकण कीधे कर्म ॥मो०॥ सत सहस लख कोडी गमे रे,तीव्र नावना मर्म ॥मो०॥५॥इ०॥ जुउ एक बीज कोविंबनुं रे, गोली गल्युं जीने गेर ॥ मो० ॥ तो नृप जित शत्रुतणुं रे, लीधुं दशगुणुं वेर ॥ मो० ॥ ६ ॥ इ० ॥ जैन मतें पण इम कह्युं रे, जे करे पंचेंडि घात मो० ॥ तो तस पूरव कोडिनुं रे, चारित्र दूरें जात ॥ मो० ॥ ७ ॥ इ० ॥ ए अधिकार जाणी करी रे, अमें किम करियें पाप ॥मो०॥ रामें रोमें कीडा पडे रे, दें खत कुण ले संताप ॥ मो० ॥ ८ ॥ इ० ॥ तुम दोने मरवुं नथी रे, जाणो अमर ठे तन्न ॥ मो० ॥ पण य मदंम ठे सहुशिरें रे, देवो ठे एक दिन्न ॥मो०॥ए॥इ०॥ एहवो जबाप ते सांनली रे, जे कह्युं रुषियें वचन्न ॥ मो०॥ तव दो विप्र कांखा थया रे, विलखाणा दो मन्न ॥ मो० ॥ १० ॥ इ० ॥ तव मुख लेइ पाठा वल्या रे, ज्युं थया शीतल हीम ॥ मो० ॥ दो वि प्रने घरे आवतां रे, शो जोजन थइ सीम ॥ मो० ॥ ॥ ११ ॥इ०॥ विण खूने उपनंदशुं रे, राखे तें वेरनाव ॥ ॥ मो० ॥ पण हेवे जो जो तेहनी रे, शी गति होवे सहाव ॥ मो० ॥ १२ ॥ इ० ॥ हवे हरिनट्टें निज मंदिरें रे, मेली द्विजनी नाति ॥ मो० ॥ अशन वसन

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

घृत घोलशुं रे, संतोषी जली जाति ॥ मो० ॥ १३ ॥ ॥ इ० ॥ राजी थया सहु नातना रे, जेता द्विज कहे वाय ॥ मो० ॥ पण ते दो कुमति प्रतें रे, रह्यां ते व दन विलाय ॥ मो० ॥ १४ ॥ इ० ॥ तेंहवे हरिजट्ट बो लियो रे, कहे वर्गों मुफ कन ॥ मो० ॥ आ दो कुष्ट पापिष्टीयें रे, शे मुफ तातजी खून ॥ मो० ॥ १५ ॥ ॥ इ० ॥ तव तिहां द्विज सघला कहे रे, महारंगणीना जाति ॥ मो० ॥ हीणा चौदशना जण्या रे, शे न करी खी तांत ॥ मो० ॥ १६ ॥ इ० ॥ इम कहि द्विज सघ ला मली रे, कुटिलने कहे समकाय ॥ मो० ॥ हवे मत रहो अम न्यातिमां रे, देखत कीधो अन्याय ॥ ॥ मो० ॥ १७ ॥ इ० ॥ हवे तुमें ए पुरमां रही रे, मत करजो अन्न पान ॥ मो० ॥ जो ए वचन उलंघशो रे, तो घणा जडशे उपान ॥मो०॥१८॥ इ०॥ इम कहिने दो काढिया रे, देई धक्का जोर ॥ मो० ॥ श्याम वदन लेइ मंदिरें रे, आव्या दो नातिना चोर ॥ मो० ॥ ॥ १९ ॥ इ० ॥ तिणे पण जावा सज कस्या रे, गाडां ऊंट बलद्द ॥मो०॥ लेइ सजाइ आपणी रे, निकल्या पुरथी अरुद्द ॥मो०॥२०॥इ०॥ नीकलतां पुरमां थकी रे, लागी दो विप्रने हींग ॥मो०॥ गया कोइक देशांतरें रे,

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

ज्युं गयां जंटनां शिंग ॥ मो०॥२१॥इ०॥ दो कुमरीनी ब्राती ठरी रे, ठह्यां वलि मावित्र मन्न ॥ मो० ॥ जली थइ जे शल्य नीकल्युं रे, उल्लसि रोम राजी तन्न ॥ ॥ मो० ॥ २२ ॥ इ०॥ इम हरखी कहे नातिने रे, हरि जट्ट ते कर जोड ॥ मो० ॥ ठे नाति महीमें मोटकी रे, नाति ठे शिरनो मोड ॥मो०॥२३॥इ०॥ नातिथकी तरियें सदा रे, जो चाले कुलवट्ट ॥ मो० ॥ जो वहे आडो नातिथी रे, तो होवे दहवट्ट ॥ मो० ॥ २४ ॥ इ०॥ जे निजवर्ग दूरें तजी रे,करे वल्लन्न परवर्ग ॥मो०॥ ते नृप कुकर्दम परें रे, पामे ते डुःख अपवर्ग ॥ मो० ॥ ॥ २५ ॥ इ० ॥ नातिथी अधिको को नहिं रे, नाति ठे गंग प्रवाह ॥ मो० ॥ तरीयें बूडीयें नातिथी रे, नातिथी लहियें उठ्ठाह ॥ मो० ॥ २६ ॥ इ० ॥ इम स्तवना करी नातिनी रे, हरिजट्टें द्विजनी प्रसिद्ध ॥ ॥ मो० ॥ संप्रेडी निज वर्गने रे, राजी करि जस ली ध ॥ मो० ॥ २७ ॥ इ० ॥ ढाल कहि उगणीशमी रे, चोथा उल्लासनी एह ॥ मो०॥ लब्धि कहे जवि सां जलो रे, आगल होवे जेह ॥ मो० ॥ २८ ॥ इ० ॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे हरिजट्ट पासें रहे, पाडोशी ससनेह ॥ सुद

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

त्त नामा द्विज नलो, सकल कला गुणगेह ॥ १ ॥ सगपण तो कांई नथी, ले सगपणथी अधीक ॥ पा डोशीने नेहले, सगपण जाणे नजीक ॥ २ ॥ तस घर अहोनिश दो धिया, खंमा विशाखा जेह ॥ सुख दुःखनी जे वातडी, करवा आवे तेह ॥ ३ ॥ सुदत्त नो एक पुत्र ले,वसुदत्त एहवे नाम ॥ रूप कला गुण चातुरी, उपे ते अनिराम ॥ ४ ॥ ते दो मांहे विशेष ले, खंमानो घणो राग ॥ हास कुतूहल वातनो, कर तां नावे ताग ॥५॥ दो नारी वसुदत्तशुं, राखे ताली एक ॥ सरखा सरखी जोडली,तिणे करे हास्य विवेक ॥ ६ ॥ एक दिन ते वसुदत्तशुं, खंमा लेडी वात ॥ कर्म कुतूहल वारता, करतां थयो प्रजात ॥ ॥ ७ ॥ प्रह फाटो तव आपणे, आवी खंमा घेर ॥ रीष करी माता कहे, शी होशे तुझ पेर ॥ ८ ॥ एहवुं वचन कह्याथकी, खंमा रीसाणी मात ॥ अणबोली रहि मातथी, बार घडी निज धाम ॥ ए ॥ जोजन वेला अवसरें,खंमा न जमे कांय ॥ रीष उतारी मावडी, सहु जमियां तिण गाय ॥ १० ॥ एक दिन हरिजट्ट ने घरे, सुदत्त लेइ परिवार ॥ मिजलस करी बेठा तिहां, करवा वातो सार ॥ ११ ॥ तेहवे पण आव्यो

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

तिहां, उपनंद मलवा रूप ॥ साथ सहु उठी मल्यो, बेसाड्यो करी चूंप ॥ १२ ॥ हवे सहु बेग रंगमें, करतां वात टकोल ॥ तिण समे आव्या साधुजी, देवा समकित गोल ॥ १३ ॥

॥ ढाल वीशमी ॥

॥ सूडा रे तुं जइ कहेजे संदेशडो रे ॥ए देशी ॥

तव हरखे सउ उठीने, कर जोडी नामें शीशो रे ॥ गुरु पण नाविक देखीने रे, देवे सहुने धर्माशीषो रे ॥ १ ॥ नवि सुणजो रे, इहां गुरु पण लाज कमावें रे ॥ ए आंकणी ॥ मास खमणनुं पारणुं, करी बेग त्यां चित्रशाली रे ॥ साथ सहु पण तिहां कणे, गुरु पासें बेग संभाली रे ॥ २ ॥ न० ॥ धर्मकथा यथा स्थित कहि, सहु बूझव्या प्राणी सुजाणो रे ॥ समकित वासना पामीया, गुरुमुखथी सुणी वखाणो रे ॥ ३ ॥ न० ॥ तव द्विजणी कर जोडीने, पूछे खंभा विशाखानी माता रे ॥ आ दो पुत्री दोभागिणी, तस कदि होशे सुख शाता रे ॥ ४ ॥ न० ॥ तव ऋषि दो कुमरी तणी, तस कर्मनी रेखा जोय रे ॥ आजथी छे एक वर्षनुं, गुरु भांखे आउखूं होय रे ॥ ५॥न०॥ त्यारपछी सुख पामशे, जो जिन मारगमें वहे

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

शे रे ॥ मिथ्या मत जो छंमशें, तो मन वंछित लेहेशें रे ॥ ६ ॥ ज० ॥ इम रुषि कहे सुण जट्टणी, तुम मारग शुद्ध बतावूं रे ॥ जो ते मारगें चालशो, तो डुःखनी दोरी कपावूं रे ॥ ७ ॥ ज० ॥ तव जट्टणी कहे साधुजी, तुमें मारग शुद्ध जांखो रे ॥ काज सरें जेहथी घणुं, अम करुणा करी ते दाखो रे ॥८॥ ज० ॥ तव गुरु कहे सुणो जावुको, तुमें पूजो प्रजु शुज जाणी रे ॥ प्रजु पूज्या ते पामीया, इम लोकमें डे पण वाणी रे ॥ ए ॥ ज० ॥ सदगुरुवचन हृदे धरी, तुमें आपथी मनशुं जाणो रे ॥ प्रजु वंदन फल सांजली, तुमें मनु जव लेखें आणो रे ॥ १० ॥ जवियां रे तुमें जिन वंदन जणी जावो रे, ए तो मीठा मेवा पावो रे ॥ ए आंकणी ॥ वासरें उठी खाटथी द्वारे, मनशुं जिन जणी जावुं रे ॥ उलट आणी जावथी तो, चोथ तणुं फल पावुं रे ॥ ११ ॥ ज० ॥ उठे चैत्य गमण जणी ए तो, पहेरी शुद्ध ते वेशो रे ॥ छठ तणुं फल पामी ते लहे, एम केवली दें उपदेशो रे ॥ १२ ॥ ज० ॥ चोखा सोपारी कर लीया, तव अठमनुं फल पावे रे ॥ पगलुं दे जावाने देहरे, तव दशम तणुं फल आवे रे ॥१३॥ ज० ॥ द्वादश तप सम फल लहे, ए तो देहरा मारग

जातां रे ॥ अर्धे पंथें लहे देहरे, ए तो मास खमण फल आतां रे ॥ १४ ॥ न० ॥ देहरुं देखे दृष्टिमें, तव मास खमण फल लाने रे ॥ जव पहोंचे चैत्य बांहडी, तव खटमासी फल लाने रे ॥ १५ ॥ न० ॥ जिन वर बारणना फरसथी, ए तो वरसी तप फल होवे रे ॥ त्रण प्रदक्षिणा देयतां, तस शत वर्ष तप फल जो वे रे ॥ १६ ॥ न० ॥ सहस ते वर्ष उपवास जे, फल होवे जिन पूजे एतो रे ॥ पुण्य अनंतुं ते वरे, जिनस्तवना नावें करे तो रे ॥ १७ ॥ न० ॥ चैत्यमें काजो काढतां, फल शो उपवासनुं थावे रे ॥ आंगी रचे जो विलेपनें, सहस पोषण लाज उपावे रे ॥ १८ ॥ न० ॥ लाख उपोषण फल लहे, एक फूलनी माला चढावे रे ॥ वाजित्र गीत प्रभु आगलें, कीधे लाज अनंत गुण नावे रे ॥ १९ ॥ न० ॥ घृतदीपक प्रभु आगलें, करतां लहे मंगलमाला रे ॥ आरति करे प्रभु जिन तणी, तस जाये आरति वाला रे ॥ २० ॥ न० ॥ न्हवण करे जिनजी शिरें, तस होवे आतम शुद्ध रे ॥ धूप उखेवें प्रभु आगलें, ते सुरगुरु सम लहे बुद्ध रे ॥ २१ ॥ ॥ न० ॥ नाटक करतां पदवी लहे, जिन चक्रि हरिबल देवा रे ॥ गणधर सुर नृप पद लहे, प्रभु सेवाथी लहे

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

मीठा मेवा रे ॥ २२ ॥ ज० ॥ जो त्रण काल पूजा करे, जवसागर पार उतारे रे ॥ हलुवा कर्मी सद्दहे, ते जावे मुगति डुवारें रे ॥ २३ ॥ ज० ॥ रावण नें मंदोदरी, करी अष्टापद ते नृत्तो रें ॥ ता थै तान न चूकियां, जिन पदवीनी लहेवातो रे ॥ २४ ॥ ज० ॥ श्रेणिकरायें वीरनी, करी हेममे जवनी पूजा रे ॥ पद्म नाज तीर्थंकरु, होशे आवति चोवीशी राजा रे ॥ ॥ २५ ॥ ज० ॥ कुमारपाल पूरव जवें, कोडी पांचनी फूल चढावे रे ॥ देश अढारनो अधिपति, थयो फूल अढारथी फावे रे ॥ २६ ॥ ज०॥ इणि परें प्रजुनी पूजायकी,ए तो सघलां संकट जाजे रे ॥ स्वर्ग मुगति सुख पामीयें, वली संसारिक सुख गाजे रे ॥ २७ ॥ ज० ॥ ए अधिकार तें सांजली, सहुनां मन जावें जेदाणां रे ॥ जिन वंदन जिन जक्तिमां, तस आतम रंग रंगाणा रे ॥ २७ ॥ ज० ॥ गुरुनी शीख सोहामणी, मानी विप्रें सघली साची रे ॥ चोथा उल्लासनी वीशमी, कहि लब्धें शास्त्रें राची रे ॥ २ए ॥ ज० ॥

॥ दोहा ॥

॥ रुषिनी शीख सोहामणी, सांजलि सघला विप्र ॥ जिन वंदन अर्चाजणी, द्विज द्विजणी थयां क्षि

प्र ॥ १ ॥ कहे उपनंद सुणो प्रभु, शी विध कीजें सेव ॥ ते विधि कहो अमनें प्रभु, तिण विध पूजा देंव ॥ २ ॥ तव गुरु देव ते दाखवे, दोष रहित अ ढार ॥ जिन वंदन अर्चा तणो, शिखवे गुरु आचार ॥ ॥ ३ ॥ रमणी ऋद्धि तजी करी, जीत्या राग ने द्वेष ॥ देव तेहनुं नाम छे, बीजा देव ते रेख ॥ ४ ॥ देव तें नाम धरावीने, राखे कामिनी संग ॥ ते संसारी सुर कह्या, लुब्धाणा तस रंग ॥ ५ ॥ जे सुर जीवता जे हुवे, ते जलें राखे नारि ॥ पण थइ मूरति शैलनी, शे स्त्री राखे सार ॥६॥ मूआ गया परलोकमें, तो पण न गयो विकार ॥ ते शुं तारक तारशे, पडिया मोह म झार ॥ ७ ॥ वाहालो वयरी एकसम, लेखवे तें खरो देव ॥ तस चरणांबुज सेवतां,लहियें शिव ततखेव ॥ ८

॥ ढाल एकवीशमी ॥

॥ तुमें पीतांबर पहेरो जी, मुखने मरकलडे ॥ ए देशी ॥ सांभली गुरुनी वाणी जी ॥ हरिबल सांभलो ॥ बूझिया ते द्विज प्राणी जी ॥ ह० ॥ देवनी भांति उ भांति जी ॥ ह०॥ जाणी काढी भ्रांति जी ॥ह०॥१॥ तेहमां त्रणे जीव जी ॥ ह० ॥ लीधुं पण ते अतीव जी ॥ ह० ॥ चाकरी जिननी कीजें जी ॥ ह०॥ तव

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

मुखमें अन्न दीजें जी ॥ ह० ॥ ३ ॥ दो कुमरी उप
नंदें जी ॥ह०॥ ए त्रणे आणंदे जी ॥ह०॥ उलखी शु
६ आचरणों जी ॥ ह० ॥ थया पणधारी त्रणे जी
॥ ह० ॥३॥ इम उपदेश ते देइ जी ॥ह०॥ चाल्या गुरु
जान देइ जी ॥ह०॥ हरिभद्र सुदत्त आदें जी ॥ह०॥
सहु जिन पूजे आल्हादें जी ॥ ह०॥४॥ नव नवी पू
जा बनावे जी ॥ ह० ॥ नव नवी आंगी रचावे जी
॥ ह० ॥ नव नवां नृत्य करावे जी ॥ ह० ॥ इम
नित्य नावना नावे जी ॥ ह० ॥५॥ सहसनें षट्शों
एंशी जी ॥ ह०॥ सोवन मुद्रा विहसी जी ॥ ह० ॥
प्रभुने नंमारें हरखें जी ॥ ह० ॥ उपनंद मूके एक
वर्षे जी ॥ ह० ॥ ६ ॥ शोलशों फूल चढावे जी ॥ ह०॥
हेम रजतनां जे कहावे जी ॥ ह० ॥ शोलशों मु
गट नरावी जी ॥ ह०॥ कुंमल हार करावे जी ॥ ह०॥
॥ ७ ॥ कटिसूत्र ने करें कडली जी ॥ ह० ॥ बांहे
बाजुबंध जडली जी ॥ ह० ॥ इणिपरें नूषण सारां जी
॥ ह० ॥ प्रभुने चढावे प्यारां जी ॥ ह० ॥८॥ इणपरे
द्विजणी टोली जी ॥ ह० ॥ पहेरी पंचरंगी चोली
जी ॥ ह० ॥ पूजे जिनवर देवा जी ॥ ह० ॥ लें
हवा शिवसुख मेवा जी ॥ ह० ॥ ए ॥ तेहमें उपनंदें

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

साध्युं जी ॥ ह० ॥ पूजा नामकर्म बांध्यूं जी ॥ ह० ॥ गुरुमुखें जे पण लीधुं जी ॥ ह० ॥ साथें ते त्रिहुं जीव सीधुं जी ॥ ह० ॥ १० ॥ नवो नवनां दुःख टाली जी ॥ ह० ॥ थया त्रणे एक अवतारी जी ॥ ॥ ह० ॥ गुरुवचनें जे चाले जी ॥ ह० ॥ ते शिव रमणीशुं माले जी ॥ ह० ॥ ११ ॥ इम करतां दिन केता जी ॥ ह० ॥ सुकृतमें दिन वीता जी ॥ ह० ॥ सांनलो आगें जे होवे जी ॥ह०॥ नावि जिहां तिहां जोवे जी ॥ ह० ॥ १२ ॥ हवे सुदेव नूदेव दोइ जी ॥ ॥ ह० ॥ रोगिणीना जे धव होइ जी ॥ ह० ॥ ना तिना खूनी जाणी जी ॥ ह० ॥ काढ्या ते दुष्ट प्राणी जी ॥ ह० ॥ १३ ॥ निकल्या नातिथी हाख्या जी ॥ ॥ ह० ॥ क्रोधानलमें ते गाल्या जी ॥ ह०॥ गया ते कछप देशें जी ॥ ह० ॥ न जाणे को नामनी विशे जी ॥ ह० ॥ १४ ॥ तिहां जइ एक कापडी नेटी जी ॥ ॥ ह० ॥ तिणें शिखवी विद्या महोटी जी ॥ ह० ॥ बहु रूपिणी विद्या शिखी जी ॥ ह० ॥ आव्या ते दो नीखी जी ॥ ह० ॥ १५ ॥ कापडी वेश ते लेइ जी ॥ ह० ॥ आव्या ते डिंगमें बेइ जी ॥ ह० ॥ उपनं दने घर आगें जी ॥ ह० ॥ कपटें दो निक्षा मागे

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

जी ॥ ह० ॥ १६ ॥ मधुरी धुनें गीत गावे जी ॥ ॥ ह० ॥ उपनंदनी पोल रीझावे जी ॥ ह० ॥ रूपिणी विद्याजोगें जी ॥ ह०॥ उलखे नहि तस नोगें जी ॥ ॥ ह० ॥१७॥ एक दिन रातें ते पोलें जी ॥ ह० ॥ निडुक गावे दो उलें जी ॥ ह० ॥ एहवे उपनंद आ व्यो जी ॥ ह० ॥ कपटीयें दाव ते पाव्यो जी ॥ ह०॥१८॥ फरसीयें घाव त्यां घाल्यो जी ॥ह०॥ उपनंद यमघरे चाल्यो जी ॥ह०॥ श्वाननां रूप करी नाठा जी ॥ ह० ॥ कपटी दो त्यांथी त्राठा जी ॥ ह० ॥ १ए ॥ धाउं रे नाइ धाइ जुउं जी ॥ ह० ॥ उपनंद हरिश रणें हुउं जी ॥ ह० ॥ जयदेव आदें कुटुंब जी ॥ ह०॥ आव्या सहु करी बुंब जी ॥ह०॥२०॥ रोगिणी देखी दो मेटे जी ॥ ह० ॥ फाल पडी तस पेटें जी ॥ ह० ॥ जयदेव कहे जइ देखो जी ॥ ह० ॥ हणनारुं कुण तस पेंखो जी ॥ ह० ॥ २१ ॥ धाया जन बहु केडें जी ॥ ह० ॥ न लाधा गया कोइ चेडें जी ॥ ह० ॥ आरतिनगर कुंआरी जी ॥ ह० ॥ न पडे सुध कांइ जारी जी ॥ ह० ॥ २२ ॥ राते सामले रांम जी ॥ ॥ ह० ॥ लेइ गइ पाशेर खांम जी ॥ ह० ॥ आमथी गइ आम आवी जी ॥ ह० ॥ ते रीत थइ इहां गावी

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

जी ॥ ह० ॥ २३ ॥ आव्या जन बहु जोइ जी ॥ ॥ ह० ॥ कहे हणी गयो कोइ जी ॥ ह० ॥ सजन कुटुंब सहु रोवे जी ॥ ह० ॥ नाड्वे ज्युं खाल होवे जी ॥ ह० ॥ २४ ॥ फट रे देव तुं दुष्ट जी ॥ ह० ॥ विण खूने शे रुष्ट जी ॥ ह० ॥ सुनंद कहे रे नाई जी ॥ह०॥ शुं गयो लेह देखाई जी ॥ह०॥२५॥ इणि परें आक्रंद करतां जी ॥ह०॥ मृत कारज तस धरतां जी ॥ ह० ॥ धिग संसार असार जी ॥ ह० ॥ धिग जे लेखवे सार जी ॥ ह० ॥ २६॥ इम ते मनमें वि चारी जी ॥ ह० ॥ जयदेव आप संभारी जी ॥ह०॥ जयदेव सूनंद साथें जी ॥ ह० ॥ ले दीक्षा मुनि हाथें जी ॥ह०॥२७॥ खंभा विशाखा दो कुमरी जी ॥ह०॥ उपनंदनुं दुःख समरी जी ॥ ह० ॥ दीक्षा अज्ञा पासें जी ॥ह०॥ ले व्रत पाले उल्लासें जी ॥ह०॥२८॥ हरि नट्ट सुदत्त जेह जी ॥ ह० ॥ ले दीक्षा पण तेह जी ॥ ॥ ह० ॥ मोहनीकर्म संबंधें जी ॥ ह० ॥ उपनं दशुं मन बंधे जी ॥ ह० ॥ २९ ॥ चोथा उल्लासनी ढाल जी ॥ ह० ॥ एकवीशमी गुणमाल जी ॥ ह० ॥ लब्धी नवनय मेली जी ॥ ह० ॥ कहुं उपनय मन जेली जी ॥ ह० ॥ ३० ॥ इति ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ दोहा ॥

॥ इम कहे मुनिचंद्र केवली, सांजलो हरिबल रा य ॥ नावी माहापण आगलें, को नवि अधिको थाय ॥ १ ॥ जीती न शके नाविने, अनंत बली अरिहंत ॥ ते सरखा पण हारिया, नावि प्रबल वदंत ॥ २ ॥ पंच महाव्रत उच्चरी, पामे केवल नाण ॥ तो पण नावी नहि मिटे, जीवित सूधी जाण ॥ ३ ॥ केवली आयु ने समे, जे करे समुदघात ॥ ते पण नावि जोगथी, जाणजो नवि विख्यात ॥ ४ ॥ सुख दुःख पानें जे लख्यां, कुण टाले तस दूर ॥ त्रीजगमें व्यापी रह्यां, जि हां तिहां नावि हजूर ॥ ५ ॥ वीर जिणंदने पण र ह्यो, छम्मासी अतिसार ॥ केवल पाम्या तोहि पण, नावी न मटयुं लगार ॥ ६ ॥ नावीथी पूरव नवें, जे बांध्युं अंतराय ॥ वर्ष सूधी नूख्या रह्या, जे श्री रूष न कहाय ॥ ७ ॥ कृषीकर्म करतां थकां, कूर्मापुत्र सु जाण ॥ केवल लही घरमें रह्यो, त्रण रति नावि प्रमा ण ॥ ८॥ ते माटे हरिबल तुमें, जाणजो करीने ठीक ॥ नावी आगेवान छे, सहु ते जंतु नजीक ॥ ए ॥ जे जिम नावी नीपजे, टाली न शके कोय ॥ रोगिणी दोनी दाझथी, जुदेवें हणियो सोय ॥ १० ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ ढाल बावीशमी ॥

॥ तट जमुनानुं रे अति रलीयामणुं रे ॥ ए देशी ॥ ते उपनंदनो रे जीव चवी इहां रे, थया तमें हरिबल महोटें नाम ॥ साधुनी निंदा रे कीधी घणी रे, तव लह्युं धीवर कुलनुं धाम ॥ १॥ हरिबल सुणजो रे, तुम नवनी कथा रे ॥ ए आंकणी ॥ जे जीव मेले बे ते दल कर्म ॥ शुनाशुननां जे बंध बांधीया रे, नोगवे ते जीव निज निज मर्म ॥२॥ह०॥ जलचर जंतु रे तुमें हणता सदा रे, ते निज उदरने कारणें जोर ॥ हरिनट्ट संगी रे सुदत्तद्विज चवी रे, थयो इहां तुम तणो सा चो गोर ॥३॥ह०॥ तिणें तुमें दाख्यो रे जलने कांठडे रे, जीव दयानो महोटो धर्म ॥ तुमें पण साचा रे पण धारी थया रे, राख्यो जीवदयानो नर्म ॥ ४ ॥ ह० ॥ तस पुण्य योगें रे, जलनिधि देवता रे, प्रगट थयो तु म पूरव त्रात ॥ सुनंदनामें रे बंधु चवी इहां रे, सुर थ इ पूरी तुम मन खांत ॥ ५ ॥ ह० ॥ पूरव नवनी रे तुम दो रागिणी रे, खंमा विशाखा नामें जेह ॥ ते दो नारी रे थइ तुम मोहथी रे, वसंतसिरी कुसुमसिरी ते ह ॥ ६ ॥ ह०॥ श्री जिनकेरी रे नक्ति करी घणी रे, दो गोरी तुमें त्रण जीव॥शोलशें फूलें रे शोलशें देशनी रे,

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

परण्या नारी तेणें अतीव॥७॥ह०॥श्रीदत्तनामें रे वड व खती थयो रे, व्यवहारी जे विशाला मझ॥ ते तुम तात रे जयदेव चवि थयो रे, तिणें दीधुं रहेवा गृह तुम कझ॥८ ॥ह०॥ नगरि विशाला रे जे पुरनो धणी रे, जे थयो कामी पूरव नेग ॥ सुदेव नामें रे खंभानो धणी रे, ते थयो चवीने मदन वेग ॥ ए ॥ ह० ॥ माहादुष्ट बु द्धि रे नूदेव वाडवो रे, नारि विशाखानो पति जाण ॥ ते द्विज चविनें रे हीणी लेशथी रे, थयो कालसेन ते दुष्ट प्रधान ॥ १० ॥ ह० ॥ तिणे तुम मूक्या रे पूर व वयरथी रे, लंका गढ वली जमने घेर ॥ पूरव नव ना रे वयर प्रनावथी रे, तुमें पण वाल्युं सवायुं वेर ॥ ११ ॥ ह० ॥ नृप पण मोह्यो रे तुम स्त्री देखतां रें, पूरव नवनो मोह विकार ॥ ते दो नारी रे वय र संनालीने रे, मंत्री नृपने कीध खुआर ॥१२॥ह०॥ तव नृप समजी रे बूजी मनमां रे, जाणी महो टो तुम उपगार ॥ राज समर्प्युं रे जलनिधि देवथी रे, परणावी तुम कुमरी सार ॥ १३ ॥ ह० ॥ हरि नद्द सुणजो रे दो दुःखणी पिता रे, थयो ते वसंत सेन नूपाल ॥ हरिनद्द नारी रे हरिनद्दिणी चवी रे, थइ ते वसंतसेना गुणमाल ॥ १४ ॥ ह०॥ तस कुखें

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

जाई रे वसंतसिरी जली रे, खंभा नामें दुःखणी जी व ॥ वर्ष एक सुधी रे जिन पूजा रची रे, तव थइ कुमरी नृपनी अतीव ॥ १५ ॥ ह० ॥ वसुदत्त नामें रे सुत सुदत्तनो रे, थयो चवि हरिबल वणिक उछाह ॥ वसंतसिरीने रे हरिबल नंदशुं रे, प्रगट्यो पूरव मोह अथाह ॥ १६ ॥ ह० ॥ पण ते साथें रे संबंध पूरो नही रे, वणिकें कुमरी ठंभी ताम ॥ तव तुम मली यो रे योग कुमरी तणो रें, जलसुरें मेल्यो ईश्वरि गाम ॥ १७ ॥ ह० ॥ तव तुम साथें रे कुमरी ले चली रे, जव आव्या तुमें जर कांतार ॥ रवि जव ऊग्यो रे तव तुम देखतां रे, थइ मूरछागत कुमरी तिवार ॥ १८ ॥ ॥ ह० ॥ तव तुम साजें रे सागर देवता रे, आव्यो पूरव नवनो भ्रात ॥ तेणे सज कीधी रे कुमरी तत खिणें रे, परणावी तुम मन विख्यात ॥ १९ ॥ ह० ॥ खंभा नामें रे राख्या अबोलडा रे, मावडी साथें तिणे घडी बार ॥ तेहने जोगें रे मावित्रशुं रह्यो रे, विजोग कुमरीने वर्ष बार ॥ २० ॥ ह० ॥ विशाला पुरथी रे वली तुम तेडीया रे, तुम ससरो जे वसंतसेण ॥ तिणे तुम तेडी रे पूरवनेगशुं रे, दे तुम राज्यने कुमरी विशेण ॥ २१ ॥ ह० ॥ ऋद्धि नें रमणी रे रा

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

ज्य दो पामीयां रे, पूज्या पूर्वे जिन जगवान ॥ तस पुण्य जोगें रे सागर देवथी रे, जगमां वजाव्यां जीत नीशाण ॥ २२ ॥ ह० ॥ इणिपरें जांखुं रे हरिबल आगलें रे, पूरव नवनुं जे वृत्तांत ॥ मन्त्रीयें दीतुं रे तेहवुं ज्ञानथी रे, जाति समरणें लह्यो उपशांत ॥ ॥ २३ ॥ ह० ॥ धीवर बूझ्यो रे केवली वयणथी रे, संजम लेवा थयो उजमाल ॥ चोथे उल्लासें रे ढाल बावीशमी रे, कही लब्धें जोइ शास्त्र संभाल ॥२४॥

॥ दोहा ॥

॥ धीवर नृप मन चिंतवी, प्रणमी गुरुना पाय ॥ आव्यो आपण मंदिरें, समताशुं चित्त लाय ॥ १ ॥ श्रीबल सुबल निज पुत्रने, राज्य नलावी दोय ॥ अनउज लइ संजम तणी, हरिबल मन्त्री सोय ॥ २ ॥ वासुल सिरी कुसुमसिरी, दो पट्टराणी एह ॥ तस केइ जन नुमति लीये, संजम वरवा तेह ॥ ३ ॥ तव दो रे ॥ कंतने, जांखे प्राणाधार ॥ संयम पालवुं दोहिलुं जटा वहेवो करितार ॥ ४ ॥ मदन दशनें अयचणा, चंद्रा तां जिम दुर्जन ॥ तिम पियु संजम दोहिलुं, पालवुं जाणो अचंन ॥५॥ सुरगिरि तोलवो त्राजुवे, चढवो लेइ गिरि नार ॥ चालवुं खंमा धार ज्युं, तिम वहेवो

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

मुनि चार ॥ ६ ॥ पंच महाव्रत उच्चरी, रहेवुं वनह
ऊार ॥ बावीश परिसह फोजशुं, लडवुं थइ जूऊार ॥७॥

॥ ढाल त्रेवीशमी ॥

॥ हरियालो श्रावण आवियो ॥ ए देशी ॥ जीरे
वसंतसिरी कहे इणि परें, तुमें सांजलो प्रीतम वातो
रे ॥ घरे बेठा मन थिर राखीने, पालो जाव चारित्र
विख्यातो रे ॥१॥ इम वसंतसिरी कहे कंतने ॥ ए आंक
णी ॥ घरे बेठां चालतो धर्म ठे, जेहनुं मन ठे शुद्ध
चंगा रे ॥ हांजी लोक उखाणो पण कहे, मन शुद्ध
कथोटीमें गंगा रे ॥ २ ॥ इ० ॥ हांजी एक घरे बेठो
तप करे, एक जइ सेवें वनवासो रे ॥ पण कह्यो अ
॥ हो घरे तप करे, हांजी पण न कह्यो जलो वन
पूरव जो ॥ ३ ॥ इ० ॥ हांजी पाराशर विश्वामित्र
खिएों रे.होइ करे वनमां जाई रे ॥ हांजी मास मास
खंमा गों, रहे वनपत्र सूकां खाई रे ॥ ४ ॥ इ० ॥
ऐ घडी बरी तपस्या ते दो करे, लोही मांस गयां ते
जोगइ रे ॥ हांजी ते सरखा पण स्त्री थकी, चलीया
अति विषयनी पाइ रे ॥ ५ ॥ इ० ॥ हांजी खटरस
जोजन जे करे, तेहनुं मन किम होवे शुद्धो रे ॥ हांजी
मन वश राखे जे घरे रही, तेहनी कहे जिन जली

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

बुद्दो रे ॥ ६ ॥ इ० ॥ हांजी देश कछपें जाणीयें,
शेठ विजय ने विजया नारी रे ॥ हांजी एकण श
य्यायें रंगमें रहे, गृहमें थइ व्रतधारी रे ॥ ७ ॥ इ० ॥
हांजी शुद्ध स्वनाव को नवि दिये, ए तो प्रगटे सहज
स्वनावें रे ॥ हांजी शुद्ध स्वनाव जव उलखे, तव पर
माणंद पद पावें रे ॥ ८ ॥ इ० ॥ हांजी लौकिकने म
तें पण कहे, गार चूंसे केइ तन शीशो रे ॥ हांजी तो
पण शुद्ध होवे नही, लोटे गारमें अश्व चक्री हुंशो
रे ॥ ए ॥ इ० ॥ हांजी गंगाजलें जीले केइ जना, करे
मांहे तप शुद्ध होवा रे ॥ हांजी तो पण शुद्ध होवे
नही, रहे मेडकां मछी जल लेवा रे ॥ १० ॥ इ० ॥
हांजी उंधे मस्तकें केइ जना, करे तपस्या थइ उज
मालो रें ॥ हांजी इम जोतां उंधे मस्तकें, रहे वागुल
जइ तरुमालो रे ॥ ११ ॥ इ० ॥ हांजी केइ जन
जटा वधारता, करे तपस्या शुन्न चित्त लाई रे ॥
हांजी इम तप होवे तो न्यग्रोधें, वधे अहनिश जटा
वडवाइ रे ॥ १२ ॥ इ० ॥ हांजी केइ जन मुंम मुंमा
वता, करे मस्तकें चीयां टीलां रे ॥ हांजी इम धर्म
जो होवे नेकने, केश लूंचे खटमासें चीला रे ॥१३॥
॥इ०॥ हांजी निजनिज मतने पोषवा, ए तो चलवे

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

सहु शुद्ध धर्मो रे ॥ हांजी व्यंतर शुद्ध न जेल ख्यो, तव तिहां वधे मिथ्या नर्मो रे ॥ १४ ॥ इ० ॥ हांजी जब शुद्धातम आवे जीवने, तव केवलकम ला पावे रे ॥ हांजी ज्योतिमां ज्योति मले तदा, जि नमुखथी चिदानंद कहावे रे ॥ १५ ॥ इ० ॥ हांजी ते माटे तुमें नाथजी, तुमें ठो घणा महोटा नारे रे ॥ हांजी ठो तुमें सुकुमाल केलि ज्युं, तन तपथी गली जाय क्यारें रे ॥ १६ ॥ इ० ॥ हांजी घरे बेठां सुख नोगवो, करो जमणो हाथ ते आघो रे॥ हांजी मन शुद्ध नाव संजम लही, तुमें बांधो समकित पाघो रे ॥ ॥ १७ ॥ इ० ॥ हांजी ड्व्य चारित्र ते लेश्ने, फरे म टक वैरागी थाइ रे ॥ हांजी डुर्नर नरवाने केलवे, करणी कपटीनी संवेग लाइ रे ॥ १८ ॥ इ० ॥ हांजी प्रीतम तिणे न ऊघडे, ए तो उघडे चारित्र नावें रे ॥ हांजी नावचारित्रथी केइ तस्या, नवजलधि दर्शन नावें रे ॥ १ए ॥ इ० ॥ हांजी ड्व्य चारित्रना योग थी, जाये नवमा ग्रैवेयक सूधी रे ॥ हांजी नाव चा रित्रना संगथी, पामे अजरामर पद बुद्धि रे ॥ २० ॥ ॥ इ० ॥ हांजी नरत आरीसा नुवनमां, हुआ नाव थी केवल नाणी रे ॥ हांजी आषाढनूति एलाचीयें,

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

लह्युं नाटकें केवल प्राणी रे ॥ २१ ॥ ६०॥ हांजी कू र्मापुत्र कृषि खेडतां, पाम्यो केवलनाण स्वजावें रे ॥ हांजी वलकलचीरी पण इणि परें, पात्र लुंबतां के वल पावे रे ॥ २२ ॥ ६० ॥ हांजी मरुदेवी माता जे कृषजननी, गज बेठां केवल पाम्यां रे ॥ हांजी इत्या दिक मन शुद्धथी, नवो नवनां दुःख्र सवि वाम्यां रें ॥ २३ ॥ ६० ॥ हांजी ते माटे तुमें नूधणी, कह्युं मा नो अमारुं ए साचुं रे ॥ हांजी पंच महाव्रत पालतां, घणुं दोहिलुं होवे मन काचुं रे ॥ २४ ॥ ६० ॥ हांजी इत्यादिक वचनें करी, कहे वसंतश्री उजमालो रे ॥ हांजी चोथा उल्लासनी ए कही, त्रेविशमी ढाल्यें ढा लो रे ॥ २५ ॥ ६० ॥ इति ॥

॥ दोहा ॥

॥ वचन सुणी पट्टराणीनां, बोल्यो हरिबल ताम ॥ सुणो नइ तुमें जे कही, ते मानुं अनिराम ॥ १ ॥ पण मन माहरुं शुद्ध छे, जिम गंगानुं नीर ॥ तिम में संजम लेहवो, तरवा नवदधि तीर ॥ २ ॥ उत्तर मेह न उन्नहे, उनहे तो वरसंत ॥ शा पुरुष वयण न उच्चरे, उच्चरे तो ते करंत ॥३॥ एम कही ऊठयो तु रत, संजम लेवा सार ॥ संसार कारागृहथकी, निक

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

थ्यो ते निरधार ॥ ४ ॥ तव दो कुमरी चिंतवे, प्रीतम थयो दृढचित्त ॥ अहिकंचूकि परें छंमशे, वरशे सं यम मित्त ॥ ५ ॥ सिद्धवधूनो लालची, थयो आप णो नूनाथ ॥ तो हवे आपण दो जणी, वहीयें प्रीत म साथ ॥ ६ ॥ जिहां काया तिहां गंहडी, वहे ज्युं निशिदिन संग ॥ त्युं दंपति व्रतगेहमें, वहेशुं अवि हड रंग ॥ ७ ॥ इम जाणी दो रागिणी, पतिसाथें करि नाव ॥ नवजलधि तरवा ग्रहे, संजम महोटुं नाव ॥ ८ ॥ वली बीजी जे राणीयो, जे नव सिद्धि जीव ॥ ते पण पतिसाथें थइ, व्रत ग्रहवानें अतीव ॥ ॥ ए ॥ हरिबल केरो जे अछे, श्रीपति कुल्ल दिवान ॥ ते पण साथें सज थयो, लेहवा पद निर्वाण ॥१०॥ इणिपरें नाविक जीवडा, राणी आदें केय ॥ पंच स यां परिवारशुं, हरिबल संयम लेय ॥ ११ ॥ दीक्षा महोत्सव नलि परें, श्रीबल सुबलें कीध ॥ मणि मा णिक सोवन घणां, आशी जनने दीध ॥ १२ ॥ हवे हरिबल मोह उपरें,कोप्यो अतिही पूर ॥ काढ्यो कूटी मोहने, आत्मडिंगथी दूर ॥ १३ ॥

॥ ढाल चोवीशमी ॥

॥ कडखानी देशी ॥ मोह नृप उपरें चढतरी वा

जीयां, गाजीयां सूत्र नीसाण गडीयां ॥ पहेरीयां शीलसन्नाह ते हरिबलें, मनोबलें समकित अश्व चढिया ॥मो०॥१॥ कुहकी करुणाल सुरसाल समकित तणी, नेद विज्ञान रणतूर महोटा ॥ आतमा डिंगमें शब्द ए प्रगटीया, मोह नृप सैननां चरण तूटा ॥ मो० ॥ ॥ २ ॥ गज घटा गुण एकविश ते सज कस्या, तोडवा दुर्ग जे दंन केरो ॥ सहज नालें करी ज्ञान गोला नरी, चालियो मोह परें मही सेरो ॥ मो०॥३॥ बार जे व्रत्त उमराव साथें लीया, सज किया संवर सुनट साचा ॥ राग ने द्वेष दोय चोर बे जगतना, तेहने नेदवा नहीअ काचा ॥मो०॥ ४ ॥ फोज घणुं नियमनी, सोज घणुं दीपती, जीपती मोहनी सैन कोडी ॥ नाव नृप सैनशुं मही चढयो रंगशुं, जीपवा मोह नृप सैन्य दोडी ॥ मो० ॥ ५ ॥ ज्ञानने दर्शन चरण तीने करी, अखुट नंमार ग्रह्यो मन्न शुद्धें ॥ दादनी चूकवी आपवा जीवने, अनुनव रयण लइ सब लबुद्धें॥मो०॥६॥एहवे मोहने आवीचुगली करी,आश्रव पंच अति दुष्ट बुद्धी॥ जाग रें जाग तुं मोह उतावलो, सबल आयो तुज परें मही बुद्धी ॥ मो० ॥ ॥ ७ ॥ मोह तव कोपियो थंन रण रोपियो, उपियो

मोह निज सैन्य मेली ॥ पांच मिथ्यात नीशाण शब्दें करी, मल्ली नृप ऊपरें चढत वेली ॥ मो० ॥ ७ ॥ अष्ट मद हाथिया सुकृत घन घातीया, पातीया मान ज ग जंतु केरा ॥ एहवा हस्ती मदमस्त जऊकारिया, नावनृप सेनमें करत खेरा ॥ मो० ॥ ए ॥ साथें उमराव ले अष्ठ दश अघ तणा, नही मणा कांइ त्रिभुवन्न हरता ॥ फोज नव नोहकषायनी महाबली, साबली मोहनी जीत करता ॥ १० ॥ मो० ॥ राग ने द्वेष दो पुत्र ते मोहना, होजना करत संसारमांहे ॥ काम मंत्री प्रबल सबल दल मेलीयो, हेलीयो जि एें मनुराज प्राहें ॥ मो० ॥ ११ ॥ पांच पचवी शनी नालि किरिया करी, शोल कषायना कीध गोला ॥ दंन दारू नरी क्रोध अगनें करी, नाव नृप सैन्यमें करत होला ॥ मो० ॥ १२ ॥ इणि परें मोह नृप सैन्य नेलुं करी, चालीयो मल्लीशुं युद्ध करवा ॥ आमुही सामुही फोज दोये मली, मनसरें फोज दो मंमि लडवा ॥ मो० ॥ १३ ॥ मोहनृप नावनृप दोय पोरस चढया, आखड्या युद्धमें पूर बेइ ॥ लक्ष चोराशि जे जोनि चोगानमें, युद्ध करतां गयो काल केइ ॥ मो० ॥ १४ ॥ तो पण मो हनुं जोर वाध्युं घणुं, नाव नृप सैन्यनो अंत आ

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

यो ॥ तेहवे मन्त्रीनो नावनृप शुद्ध चढी, मोह नृप सैन्यने दूर ढायो ॥ मो० ॥ १५ ॥ सहज नालें करी ज्ञान गोला नरी, गुप्तदारू तपतें उमाडी ॥ आकना तूल ज्युं मोहना सैन्यने, नाव नृप मन्त्रीनो दें उमा डी ॥मो०॥१६॥ सत्य गुण हाथीयें अष्टमद हाथीया, पातिया ज्ञानअंकूश पूरें ॥ दंन गढ तोडियो डुरित डिंग मोडियो, फोडीयो मोहमद कुंन दूरें ॥ मो० ॥ १७ ॥ बार जे व्रत उमराव साथें चढ्या,सगवन संवर सुनट बूटा ॥ डुरित उमराव जे अष्टदश आकरा, बाकरी बां धता तेह खूटा ॥ मो० ॥ १८॥ राग ने द्वेष दो पुत्र मोहरायना, काम मंत्री सबल जगत रुंधी ॥ ध्यान कबाणथी विरति शर सांधीयां, वींधीयां तीन ते डुष्ट बुद्धी ॥मो०॥ १९॥ ढाल खीमा तणी खडग ले तप तणी, मन्त्रीयें मूलथी मोह छेद्यो ॥ आतम डिंगथी शल्य काढी परुं, अनुनव रंगमें मन्नि नेद्यो ॥ मो० ॥ ॥ २० ॥ काल अनादि जे दंम चोवीशमें, पीडतो जी वने मोह सिद्धी ॥ तेहने जीती मदमस्त मन्त्री थयो, नाव नृप शरणथी जीत कीधी ॥ मो० ॥ २१ ॥ इम परें धीवरु सबल परिवारथी, गुरु कने आयो करि

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

जीत मंका ॥ चोथा उल्लासनी ढाल चोवीशमी,लब्धि कहे युद्धनी स्वर्ण टंका ॥ मो० ॥ २२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ जित नीशाण वजावतो, द्रव्यथी भावथी जेह ॥ विरबल केरो पुत्रडो, आव्यो जिन चरणेह ॥१॥ श्री मुनिचंद्र जे केवली, तेहना प्रणमी पाय ॥ कहे मल्ली कर जोडिने, संयम नारि मेलाय ॥ २ ॥ तव तिहां मुनिचंद्र केवली, विलंब न कीध लगार ॥ क लशा चउ करी धर्मना, रची चोरी सुखकार ॥ ३ ॥ पंच सया परिवारशुं, मूकी मननो शोच ॥ स्वहस्तें पंच मुष्टिनो, हरिबलें कीधो लोच ॥४ ॥ अध्यातमनी पीठिका,तस मंमाण करेह ॥ मस्तकें वास ते जिन उ वी, करवा शिवगुण गेह ॥ ५ ॥ पंच माहा व्रत उच्चरी, फेरा फरीया चार ॥ वर नारी आरोगियां, सं वेग जे कंसार ॥६॥ गुरुना मुखथि कथा सुणी, शेठ तणो दृष्टांत ॥ चार वहू चिहु पुत्रनी, सरखी जोई तांत ॥ ७ ॥ पंचकण दीधावली तणा, दीधा वहूने हार ॥ एकें नाख्या एक खाइ गइ,राख्या एक विस्तार ॥८॥ आगम वेदनी कांमिका,करे मुख जिन उच्चार ॥ संयम स्त्री मल्लीयें वरी,वरत्या जय जयकार ॥ ए ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ ढाल पच्चीशमी ॥

समदम खंतितणा गुण पूरा, संगम रंगरगाए हे॥ए देशी

॥ राग धन्याश्री ॥ श्री मुनिचंद्र जे केवली पासें, लेे संजम उल्लासें रे ॥ केवलीयें पण ढील न कीधी, जिननी शिक्षा दीधी रे ॥ १ ॥ सुणो नवियां हरिबल, जे ऋषिराया ॥ ए आंकणी ॥ जैन मारग दीपाया रे ॥ पंच सयाशुं संयम लेइ, मनु नव सफल करेई रे ॥२॥सु०॥ पंच माहाव्रत सुरगिरि केरो, नार उपाड्यो नलेरो रे ॥ पंच सयाशुं हरिबल साधु, थया मुनि जनमें वाधु रें ॥ ३ ॥ सु० ॥ चौद पूर्वनी विद्या आपी, श्रुत केवली पद थापी रे ॥ विहार करे मुनि चंद्रजी संगें, हरिऋषि पंचशें रंगें रे ॥ ४ ॥ सु० ॥ दशविध जतिनो धर्म ते पाली, आतम नव अजु वाली रे ॥ तप अगनें करी कर्म प्रजाली, मोहनी जाल ते बाली रें ॥ ५ ॥ सु० ॥ शुकल ध्याननें चोथें पदें ते, हरिबल ऋषि शुन चडीया रे॥ हरिऋषि परि कर शुकल ध्यानें, ते पण कर्मशुं नडिया रे ॥ ६ ॥ ॥ सु० ॥ तेरमें गुणठाणे ते आया, केवल कमला पाया रे॥ सुर करे नंद कमलनी रचना, ज्ञानी दीवा कर गाया रे ॥ ७ ॥ सु० ॥ तिन शुवन ज्युं करजल

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

देखे, शिवरमणी पण चेखे रे ॥ पांमव सहस्र ते वर्षेज सूधी, द्ये नविने बोधबुद्धि रे ॥ ८ ॥ सु० ॥ मासनी संलेषणा करि अंतें, जइ बेठा शिव पंतें रे ॥ धन धन हरिबल परिकर करणी, जइ शिवरमणी परणी रे ॥ ए ॥ सु० ॥ जो जो नवियां जीव दयाथी, शा शा गुण ए प्रगट्या रे ॥ धीवर कुलमां जन्म लहीने, ज्योतिवधूमां उमट्या रे॥१०॥सु०॥तुमें पण नवियां इणिपरें निसुणी, जीवदयाशुं राचो रे ॥ उदरनें कारण करणी करतां, बंधन न पडे साचो रे ॥ ११ ॥ ॥ सु० ॥ धर्मनो मर्म ते जीवदया छे, खट दरिशणमें जाचो रे ॥ हरिबलनी परें ऋद्धि लहो तुमें, जीवदयाशुं माचो रे ॥ १२ ॥ सु० ॥ जीवदयाथी नवनिधि लहियें, सघले सूत्र छे साखी रे ॥ हरिबलनुं पण चरित्र छे महोटुं, जुउ निषिधमें झांखी रे ॥ पाठांतर ॥ जुउ विचार सार झांखी रे ॥ १३ ॥सु० ॥ ते अधिकार में नयणें निरख्यो, जेहवो शास्त्र में दीठो रे॥ तेहवो में अधिकार वखाण्यो, देशीयें करीने मीठो रे ॥ १४ ॥ ॥ सु० ॥ लाटापल्ली पुरनो वासी, पूनिम गछें सोहे रे ॥ पंमित नरसिंह धनजी केरो, तप गुणें करी मोहे रे ॥ १५ ॥ सु० ॥ तस आग्रहथी सयणा चारे,

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

रास रच्यो में रूडो रे ॥ वेधक रसिया धर्मी जनने, ए छे मधुनो पूडो रे ॥१६॥ सु० ॥ में तो करी छे बा लक क्रीडा, हुं शुं जाणुं जोडी रे ॥ पंमित होय ते शुद्ध करेजो, मत कोइ नाखो विखोडी रे ॥ १७ ॥ ॥ सु० ॥ रसनाने रसें अधिकुं उलुं, जे में नाख्युं अ नाख्युं रे ॥ ते मिछाडुक्कड कर जोडी, देउं पंच सम हें रे ॥ १८ ॥ सु० ॥ शुद्ध परंपर सोहम तखतें, प्रग ट्या हीरसूरिंदो रे ॥ तस शिष्य धर्मविजय ध्रमधोरी, दीपे ज्युं शारदचंदो रे ॥ १९ ॥ सु० ॥ तस शिष्य पंमित धनहर्ष ज्ञानी, सुमति सदा चित्त मानी रे ॥ तस शिष्य पंमित कुशल विजय कवि, प्रतिबोध्या अ नुमानी रे ॥ २० ॥ सु० ॥ तस भ्राता गणि कमल विजयशुन, ज्ञान विज्ञानमें लीना रे ॥ तस शिष्य पं मित लखमिविजय गुरु, संवेग रसमें जीना रे ॥ २१ ॥ ॥ सु० ॥ तस शिष्य पंमित दो गुण ग्याता, केसर अ मर दो भ्राता रे ॥ तस पदकिंकर लब्धिविजय कहे, चार उल्लास विख्याता रे ॥ २२ ॥ सु० ॥ शीलांगरथ संवत्सर दशकें, १८१० महाशुदि बीज भृगुवारें रे ॥ हरिबलना गुण जीवदया पर, गाया में एक तारें रे ॥ २३ ॥ सु० ॥ श्रीतपगछ नन दिनमणि सोहे, श्री

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

विजयधर्म सूरीशो ॥ तस गणधरना राजमां रसि यो, गायो मन्नि विशेषो रे ॥ २४ ॥ सु० ॥ वाव्य बंदर श्रीअजित प्रसादें, रही सीमाणा वासें रे ॥ रा णा श्रीगजसिंहने राज्यें,रास रच्यो में उल्लासें रे॥ २५॥ ॥ सु० ॥ हरिबलना गुण सुणतां पामे, जीवी सिद्ध समाणी रे ॥ ढाल पचवीशमी चोथे उल्लासें, लब्धि कहे गुण खाणी रे ॥ २६ ॥ सु० ॥ ढाल उंगणसाठ सातशें दोहा, हरिबल चरित्रथी नांख्या रे ॥ साडात्रण सहस्र श्लोक एकावन, ग्रंथाग्रंथ ए दाख्या रे ॥ ॥ २७ ॥ सु० ॥ ज्ञाता नुगता दाता सारु, संबंध र च्यो में वारु रे ॥ हलुआकर्मी जे हशे साचा, मान शे सघली ए वाचा रे ॥ २८ ॥ सु०॥ चउविह संघने मंगल होजो, दिन दिन लब्धिमें नलजो रें ॥ हरिबल नी परें संपद लेहेजो, लब्धिनी वाचा फलजो रें ॥ ॥ २९ ॥ सु० ॥ इतिश्री हरिबल चरित्रे जीवदयापरे चतुर्थ उल्लासः समाप्तः ॥ ४ ॥

॥ इति जीवदयापरे हरिबलरासः समाप्तः ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org